

प्रकाशक : डॉ० राजनारायण शुक्ला, सम्पादक

SH, A-5, कविनगर, गाजियाबाद (उ० प्र०)

दूरभाष : 9910777969

E-mail : harisharanverma1@gmail.com

WWW.IJSCJOURNAL.COM

सहयोग राशि (भारत में)

(व्यक्तिगत) (आजीवन 5100 रुपये)

(संस्थागत) (आजीवन 7100 रुपये)

कृपया सहयोग राशि बैंक ड्राफ्ट से ही भेजें।

बैंक ड्राफ्ट, संपादक "इण्डियन जर्नल ऑफ सोशल कन्सर्न्स" के पक्ष में देय होगा। आजीवन सदस्यता केवल दस वर्षों के लिए मान्य होगी। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द हो जाता है तो आजीवन सदस्यता स्वतः ही समाप्त हो जायेगी।

संपादकीय कार्यालय :

1. डॉ० हरिशरण वर्मा, प्रधान सम्पादक

F-120, सेक्टर-10, DLF, फरीदाबाद (हरियाणा) 121006

harisharanverma1@gmail.com 09355676460

WWW.IJSCJOURNAL.COM

2. डॉ० राजनारायण शुक्ला, सम्पादक

SH, A-5, कविनगर, गाजियाबाद (उ० प्र०)

क्षेत्रीय सम्पादक

1. डॉ० वाई.आर. शर्मा, A-24, रेजिडेंसल कैम्पस, न्यू कैम्पस, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू-180001, फोन : 09419145967
2. डॉ० सलमा असलम, ओल्ड टाउन बरामुला, कश्मीर पिन - 193101, मौ० 9682162934
3. डॉ० आरती लोकेश P. o. Box 99846, Dubai, UAE 97150-4270752
4. श्री मोहनलाल, 11 अशोक विहार, संजय नगर, पो. इज्जत नगर बरेली (उ० प्र०) फोन : 09456045552
5. श्री जितेन्द्र गिरधर, कार्यालय सहायक 105/26 जवाहर नगर, कॉपरेटिव बैंक के पीछे, रोहतक 09896126686
6. Dr. Vimla Devi, Asst. Professor (History) M.B.G.P.G College Haldwani Nainital (Uttarakhand) G-mail address. drvimla2015@gmail
7. डॉ० प्रिया कपूर, सहायक प्रोफेसर, डी० ए० वी शताब्दी कालेज, फरीदाबाद मौ० 9711196954
8. डॉ० रुक्मिणी हिन्दी-विभाग हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला-5
9. विमला टोप्पो, एस० आर० इंटरप्राइसेस म्युनिसिपल काम्पलेक्स सोप न० 4, डेरी फार्म, पोर्ट बलेयर, पी० ओ० जंगली घाट -744103 साउथ अंडमान
10. डॉ० राजपाल, सहायक प्रो० राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हिसार
11. डॉ० प्रवेश कुमारी, सहायक प्रो० (हिन्दी -विभाग), बाबा मस्तराथ, विश्वविद्यालय, रोहतक, (हरियाणा)
12. डॉ० निर्भय शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर (हिंदी), संघटक राजकीय महाविद्यालय भदपुरा, नवाबगंज, एम० जे० पी० रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली (उ० प्र०) पिन कोड - 262406. Mobile No: 9634160016 Email: dr.nirbhaysharma@gmail.com

संरक्षक मण्डल :

1. प्रो० डॉ० चक्रधर त्रिपाठी कुलपति, उड़ीसा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट, 763004, चलभाषा: 9437568809
2. डॉ० दिनेश मणी त्रिपाठी, प्रधानाचार्य एन० पी० के० आई कालेज, सरदार नगर बसडीला (गोरखपुर) उ० प्र०
3. डॉ० नरेश मिश्रा (पूर्व आचार्य, हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
4. डॉ० वाई.आर.शर्मा, (राजनीति शास्त्र विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू)
5. डॉ० सुधांशु कुमार शुक्ल चेयर हिन्दी, आई. सी. सी. वासा विश्वविद्यालय, वासा (पोलैन्ड) मौ० 48579125129
6. डॉ० तपन कुमार शण्डिल्य, कुलपति, डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय राँची, (झारखण्ड) 9431049871
7. डॉ० जंगबहादुर पाण्डेय (पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग) राँची विश्वविद्यालय, राँची - 834008 फोन : 09431595318
8. सुदेश रावत प्राचार्या एस. एन. आर. जयराम महिला कॉलेज, लोहार माजरा, कुरुक्षेत्र हरियाणा 36119 (सेठ नारंग राय लोहिया जय राम महिला कॉलेज)
9. Sh. Butta Singh gill, PPS, Dy Superintendent of Police. No 409 ,Street no 7 Ghuman Nagar , Sarhind Road, Patiala Punjab -147001.

परामर्शदात्री समिति :

1. डॉ० विजयदत्त शर्मा, पूर्व निदेशक, हरियाणा ग्रन्थ अकादमी पंचकूला (हरियाणा)
2. डॉ० सुधेश (पूर्व आचार्य, हिन्दी विभाग, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली)
3. डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल (पूर्व रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, वर्धमान कॉलेज, बिजनौर)
4. डॉ० राजकुमारी सिंह, प्रोफेसर एफ.टी.एम. विश्वविद्यालय लोधीपुर राजपूत मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश 9760187147
5. डॉ० माया मलिक, पूर्व प्रोफेसर हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
6. डॉ० ममता सिंहल, (प्रोफेसर एवं अध्यक्षा अंग्रेजी विभाग) जे० वी० जैन कॉलेज सहारनपुर
7. डॉ० विनीत बाला, सहायक प्रो. भूगोल विभाग, वैश्य पी.जी. कॉलेज, रोहतक

संपादकीय विशेषज्ञ समिति :

हिन्दी विभाग:

1. डॉ० राजेश पाण्डे (डी.वी. कॉलेज, उरई, जिला जालौन, उ० प्र०)
2. डॉ० अनिता, सहायक प्रोफेसर, (हिन्दी), श्री अरविन्दो कालिज दिल्ली (साध्य) मौ० :8595718895
3. डॉ० सुशील कुमार शर्मा (अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय शिलांग, मेघालय)
4. डॉ० शशि मंगला, पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, गोस्वामी गणेशदत्त स्नातन धर्म स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पलवल
5. डॉ० के० डी० शर्मा, पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, गोस्वामी गणेशदत्त, स्नातन धर्म स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पलवल
7. मुकेश चन्द्र गुप्ता (हिन्दी विभाग, एम.एच.पी.जी. कॉलेज, मुरादाबाद)
8. डॉ० गीता पाण्डेय (रीडर एवं अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, एस.डी.

9. डॉ० प्रवीण कुमार वर्मा (सह प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग) गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म महाविद्यालय, पलवल
10. डॉ० सुधा चौहान, पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग, वैश्य कालिज, भिवानी
11. डॉ० रूबी, (सोनेयर सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग कश्मीर)
12. डॉ० सुमन राठी, सहायक प्रो० हिन्दी विभाग, मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर रोहतक
13. डॉ० सुधा कुमारी (हिन्दी विभाग) एन०जी०एफ० डिग्री कालिज, उड्डू, अध्ययन केन्द्र मथूरा रोड, पलवल 982719456
14. डॉ० एम. के. कलशेट्टी, हिन्दी विभाग, श्री माधवराव पाटेल महाविद्यालय, मुरुम तह० अमरगा, जिला उस्मानाबाद (महाराष्ट्र)–413605
15. डॉ० मनोज पंड्या, व्याख्याता हिन्दी विभाग, श्री गोविन्द गुरु, राजस्थान महाविद्यालय, बांसवाड़ा–327001, मो० 09414308404
16. डॉ. कृष्णा जून, प्रो० हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
17. डॉ. विपिन गुप्ता, सहायक प्रोफेसर, वैश्य कॉलेज भिवानी
18. प्रो० (डॉ०) वन्दना शर्मा, म. न. 2, प्रोफेसर लॉज, किचम सी. डी. एम., मोदीनगर (उ.प्र.) 201204, मो० 2760411251
19. डॉ० जाहिदा जबीन, (प्रो० एवं अध्यक्षा, हिन्दी विभाग कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर–६)
20. डॉ० टी०डी० दिनकर, पूर्व प्रो० एवं अध्यक्षा, हिन्दी विभाग अग्रवाल कॉलेज, बल्लभगढ़)
21. डॉ० सुभाष सैनी, (सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग दयालसिंह कॉलेज, करनाल, हरियाणा
22. डॉ० उर्विजा शर्मा, (सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग शम्भु दयाल स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, गाजियाबाद
23. डॉ० ममता कुमारी, सहायक प्रो०, डी० ए०वी० शताब्दी महाविद्यालय, फरीदाबाद हरियाणा
24. डॉ० मधुकान्त, (वरिष्ठ साहित्यकार) 211- L मॉडल टारुन, रोहतक
25. डॉ० कंचन पुरी, विभागध्यक्ष, रघुनाथ गर्ल्स पी० जी० कालेज मेरठ
26. डॉ० प्रवेश कुमारी, सहायक प्रो० हिन्दी बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर रोहतक
27. डॉ० राजपाल, सहायक प्रो० राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हिसार
28. डॉ० प्रवेश कुमारी, सहायक प्रो० टिकाराम कन्या कॉलेज, सोनीपत, हरियाणा
29. प्रो. प्रणव शास्त्री, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष–हिन्दी विभाग, उपाधि महाविद्यालय, पीलीभीत – 262 001 उ. प्र. मो.98379 60530 drpranav&pbt23@rediffmail-com
30. प्रो. राखी उपाध्याय, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष – हिन्दी विभाग, डी. ए. वी. कॉलेज, देहरादून – 248 001 (उत्तराखण्ड) मो. 94111 90099 drrakhi.418@gmail-com
31. डॉ० सुनीता जसवाल, असिस्टेंट प्रोफेसर – हिन्दी विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला (हिमाचल प्रदेश) मो. 7018621542
32. डॉ० सुमन रानी, सहायक प्रोफेसर, अस्थाई, हिन्दी विभाग, गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म महाविद्यालय पलवल हरियाणा मो० 9050289680 sumanbhati808@gmail.com
33. डॉ० संगम वर्मा, सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, राजकीय महिला महाविद्यालय, सैक्टर 11, चण्डीगढ़ 9463603737.kavysavvy@yahoo.com
34. डॉ० प्रीति गुप्ता, हिन्दी व्याख्याता GGSSS राम नगर न०1 पहाड़गंज नई दिल्ली (शिक्षा निदेशालय दिल्ली सरकार) मो० 8058138017 sweetpriti80@gmail.com
35. संजय कुमार, व्याख्याता, GBSSS करावल नगर, दिल्ली (शिक्षा निदेशालय दिल्ली सरकार) संपर्क– 8769406872 ई मेल sanjaydholpuria51@gmail.com

अंग्रेजी विभाग:

1. डॉ. ममता सिंहल, अध्यक्षा, अंग्रेजी विभाग, जे.वी. जैन कॉलेज, सहारनपुर, उ.प्र.
2. डॉ. रणदीप राणा, प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
3. डॉ. जयवीर सिंह हुड्डा, प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
4. डॉ० रविन्द्र कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष अंग्रेजी विभाग, चौ० चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
5. डॉ. अनिल वर्मा (पूर्व रीडर, अंग्रेजी विभाग, जे.वी. जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सहारनपुर)
6. डॉ० जे. के. शर्मा, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक
8. डॉ. पी.के. शर्मा, (प्रो., अंग्रेजी–विभाग, राजकीय के.आर.जी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ग्वालियर)
9. डॉ. गीता रानी शर्मा, (सहायक प्रोफेसर) गो.ग.दत्त सनातन धर्म कॉलेज, पलवल
10. डॉ. किरण शर्मा, (एसोसिएट प्रोफेसर) राजकीय स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय रोहतक
11. डॉ० राजाराम, सहायक प्रोफेसर (अंग्रेजी) ओम स्ट्रलिंग ग्लोबल, विश्वविद्यालय, हिसार (हरियाणा)

वाणिज्य विभाग:

1. डॉ० नवीन कुमार गर्ग (वाणिज्य विभाग, शम्भुदयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद)
2. डॉ० ए.के. जैन, रीडर (वाणिज्य विभाग, जे.वी. जैन कॉलेज, सहारनपुर)
3. डॉ० दिनेश जून, एसोसिएट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फरीदाबाद
4. डॉ० एम.एल. गुप्ता, (पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, वाणिज्य एवं व्यवसायिक प्रशासन संकाय, एस.एस.वी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हापुड़ एवं संयोजक–शोध उपाधि समिति एवं संयोजक बोर्ड ऑफ स्टीडिज चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ)
5. डॉ० वजीर सिंह नेहरा, प्रोफेसर वाणिज्य विभाग, म.द.वि. रोहतक
6. डॉ० संजीव कुमार, प्रोफेसर वाणिज्य विभाग, म.द.वि. रोहतक
7. डॉ. गीता गुप्ता, (सहायक प्रोफेसर) वाणिज्य विभाग, वैश्य महिला महाविद्यालय, रोहतक)
7. डॉ. नरेन्द्रपाल सिंह, (एसोसिएट प्रोफेसर) वाणिज्य विभाग, साहू जैन कॉलेज, नजीबाबाद, उ.प्र.)

राजनीति शास्त्र विभाग:

1. साकेत सिसोदिया, (राजनीति शास्त्र विभाग, एस.डी. कॉलेज, गाजियाबाद)
2. डॉ० रोचना मित्तल (रीडर एवं अध्यक्षा, राजनीति शास्त्र–विभाग, शम्भु दयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद)
3. डॉ० राजेन्द्र शर्मा (एस.डी. कॉलेज, गाजियाबाद, उ०प्र०)
4. डॉ० कौशल गुप्ता, एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग, देशबन्धु महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली Mob.: 09810938437
5. डॉ० पी.के. वार्णय, एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग, जे.वी.जैन कॉलेज, सहारनपुर
6. डॉ० सुदीप कुमार, सहायक प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग, डी.ए.वी. कॉलेज, पेहवा (कुरुक्षेत्र) Mob.: 9416293686
7. डॉ० वाई०आर० शर्मा, एसो० प्रो०, राजनीति शास्त्र विभाग, जम्मु
8. डॉ. रेनू राणा, (सहायक प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग, प. नेकीराम शर्मा राजकीय महाविद्यालय रोहतक 124001
9. डॉ. ममता देवी, (सहायक प्रोफेसर, राजनीतिक शास्त्र विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

इतिहास विभाग:

1. डॉ० भूकन सिंह (प्रवक्ता, इतिहास विभाग, शम्भुदयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद)
2. डॉ० मनीष सिन्हा, पी.जी. विभाग, इतिहास, मगध विश्वविद्यालय बोधगया, बिहार-824231
3. डॉ० राजीव जून, सहायक प्रो० इतिहास, सी.आर. इन्स्टीट्यूट ऑफ ला, रोहतक
4. डॉ० मीनाक्षी (सहायक प्रोफेसर इतिहास विभाग) सी.आर. किसान कॉलेज, जीन्द
5. डॉ० रश्मि, (अध्यक्षा) इतिहास विभाग, हिन्दू कन्या महाविद्यालय, जीन्द (हरियाणा) पिन - 126102

भूगोल विभाग:

1. डॉ० पी.के. शर्मा, पूर्व रीडर एवं अध्यक्ष, भूगोल विभाग, जे.वी. जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सहारनपुर
2. रश्मि गोयल (भूगोल विभाग, एस.डी. कॉलेज, गाजियाबाद)
3. डॉ० भूपेन्द्र सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, राजकीय पी.जी. कॉलेज, हिसार
4. डॉ० विनीत बाला, सहायक प्रो. भूगोल विभाग, वैश्य पी.जी. कॉलेज, रोहतक
5. डॉ० प्रदीप कुमार शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक

शिक्षा विभाग:

1. डॉ० उमेन्द्र मलिक, एसिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, म.द.वि. , रोहतक
2. डॉ० संदीप कुमार, सहायक प्रो० शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली एसोसिएट
3. डॉ० तपन कुमार बसन्तिया, एसोसिएट प्रोफेसर, सेंटर फॉर एजुकेशन, सैट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ साउथ बिहार, गया कैम्पा, विनोभा नगर, वार्ड नं. 29, Behind ANMCH मगध कालोनी, गया-823001 बिहार Mob.: 09435724964
4. डॉ० (प्रो०) अनामिका शर्मा, प्राचार्या, एम.आर. कॉलिज ऑफ एजुकेशन, फरीदाबाद
5. डॉ० मनोज रानी, सहायक प्रोफेसर (अंग्रेजी) एम.एल.आर.एस. कॉलिज ऑफ एजुकेशन, चरखी दादरी (भिवानी)
6. डॉ० अनीता ढाका, (प्राचार्या, आर.जी.सी.ई. कॉलेज, ग्रेटर, नोएडा I)
7. डॉ० ममता देवी, (सहा. प्रो. बी.आई.एम.टी. कॉलेज कमलपुर गढ़ रोड़, मेरठ)

गृह विज्ञान

1. डॉ० श्रीमती पंकज शर्मा, (सहायक प्राफेसर), गृह विज्ञान (प्रसार शिक्षा) राजकिय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रोहतक

शारीरिक शिक्षा विभाग:

1. डॉ० सरिता चौधरी, सहायक प्रोफेसर, शारीरिक शिक्षा विभाग, आर्य गर्ल्स कॉलेज, अम्बाला कैंट, हरियाणा
2. डॉ० वरुण मलिक, सहायक प्रोफेसर, म.द.वि., रोहतक
3. डॉ० सुनील डबास, (पद्मश्री व द्रोणाचार्य अवार्ड) HOD in physical education "DGC Gurugram

समाज शास्त्र विभाग:

1. प्रवीण कुमार (समाजशास्त्र विभाग, शम्भुदयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद)
2. डॉ० कमलेश भारद्वाज, समाज शास्त्र विभाग, एस.डी. कॉलेज, गाजियाबाद

मनोविज्ञान विभाग:

1. डॉ० चन्द्रशेखर, सहायक प्रोफेसर साइक्लोजी विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू
2. डॉ. रश्मि रावत, (मनोविज्ञान विभाग, डी.ए.वी. कॉलेज, देहरादून)
3. अनिल कुमार लाल (प्रवक्ता, मनोविज्ञान विभाग, शम्भुदयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद)

अर्थशास्त्र विभाग:

1. डॉ० जसवीर सिंह (पूर्व रीडर अर्थशास्त्र विभाग, किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मवाना)
2. डॉ० सुशील कुमार (एस.डी. कॉलेज, गाजियाबाद, उ०प्र०)
3. डॉ० अखिलेश मिश्रा (प्राध्यापक, अर्थशास्त्र-विभाग, एस.डी.पी. जी. कॉलेज, गाजियाबाद)
4. डॉ० सत्यवीर सिंह सैनी, एसो०प्रो० (अर्थ०वि०, गोंग० सनातन धर्म पी०जी० कॉलेज, पलवल)

विधि विभाग:

1. डॉ० नरेश कुमार, (प्रोफेसर, विधि-विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
2. डॉ० विमल जोशी, (प्रोफेसर, विधि-विभाग भगत फूलसिंह महिला विश्वविद्यालय खानपुर, सोनीपत)
3. डॉ० जसवन्त सैनी, (सहायक प्रोफेसर, विधि-विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
4. डॉ० वेदपाल देशवाल, (सहायक प्रोफेसर, विधि-विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
5. डॉ. अशोक कुमार शर्मा, एसो. प्रोफेसर, विधि विभाग, जे.वी. जैन कॉलेज, सहारनपुर
6. डॉ. राजेश हुड्डा, सहायक प्रो०, विधि विभाग, बी.पी.एस. महिला विश्वविद्यालय, खानपुर कलां, सोनीपत
7. डॉ० सत्यपाल सिंह, (सहायक प्रोफेसर, विधि-विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
8. डॉ० सोनू, (सहायक प्रोफेसर, विधि-विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
9. डॉ० अर्चना वशिष्ठ, (सहायक प्रोफेसर, के०आर० मंगलम विश्वविद्यालय, सोहना रोड़, गुरुग्राम)
10. डॉ० आनन्द सिंह देशवाल, (सहायक प्रोफेसर, सी०आर० कॉलेज ऑफ लॉ रोहतक)
11. अनसुइया यादव, (सहायक प्रोफेसर, विधि विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा)

गणित विभाग:

1. डॉ० विनोद कुमार, रीडर एवं अध्यक्ष गणित विभाग, जे.वी. जैन कॉलेज, सहारनपुर
2. डॉ० विरेश शर्मा, लेक्चरर गणित विभाग, एन.ए.एस. कॉलेज, मेरठ
3. डॉ० सलौनी श्रीवास्तव सहायक प्रो०, गणित विभाग आर० बी० एस० कालेज आगरा
4. Dr. Dhrub Kumar Singh, HOD, Department of Mathematics, YBN University, Rajaulatu, Namkum, Ranchi, Jharkhand, India. Pin-834010
5. डॉ० रश्मि मिश्रा प्रोफेसर (एप्लाइड साइंस एंड हमनीटीएस), मैथमेटिक्स गनेशी लाल बजाज इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट ग्रेटर नॉएडा

कम्प्यूटर विभाग:

1. प्रो० एस.एस. भाटिया (अध्यक्ष, स्कूल ऑफ मैथमेटिक्स एण्ड कम्प्यूटर एप्लीकेशन, थापर विवि, पटियाला)
2. सर्वजीत सिंह भाटिया (प्रवक्ता, कम्प्यूटर साइंस, खालसा कॉलेज, पटियाला)
3. डॉ० बालकिशन सिंहल, सहायक प्रोफेसर, कम्प्यूटर विभाग, म०द०विश्वविद्यालय, रोहतक

संस्कृत विभाग:

1. डॉ० रामकरण भारद्वाज पूर्व रीडर एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, लाजपत राय कॉलेज, साहिबाबाद (गाजियाबाद)
2. डॉ० सुनीता सैनी, प्रो० संस्कृत विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
3. डॉ० सुमन, (सहायक प्रोफेसर, संस्कृत-विभाग, आदर्श महिला महाविद्यालय, भिवानी।)
4. डॉ० दिनेश मणि त्रिपाठी {प्रधानाचार्य} एल० पी० के० इंटर कॉलेज सरदार नगर बसडिला {गोरखपुर}
5. डॉ० दानपति तिवारी, प्रोफेसर, एवं अध्यक्ष, महात्मा गांधी काशी विद्यापिठ, वाराणसी, उत्तर-प्रदेश
6. डॉ० दिनेशचन्द्र शुक्ल, सहायक प्रोफेसर, महात्मा गांधी काशी विद्यापिठ, वाराणसी, उत्तर-प्रदेश

रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग:

1. डॉ० आर०एस० सिवाच, प्रो० एवं अध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, म०द०वि०, रोहतक

1254

दृश्यकला विभाग:

1. डॉ० सुषमा सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, दृश्यकला विभाग, म०द० विश्वविद्यालय, रोहतक

पंजाबी विभाग:

1. डॉ० सिमरजीत कौर, सहायक प्रो० (पंजाबी), ईश्वरजोत डिग्री कालेज, पेहवा (कुरुक्षेत्र)

संगीत विभाग:

1. डॉ० संध्या रानी, अध्यक्षा, संगीत विभाग, यूआरएलए, राजकीय पीजी कॉलेज, बरेली
2. डॉ० हुकमचन्द, एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष तथा डीन, संगीत विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा
3. डॉ० अनीता शर्मा, (संगीत-गायन प्राध्यापिका, जयराम महिला महाविद्यालय लोहारमाजरा (कुरुक्षेत्र)
4. डॉ० वन्दना जोशी, (सहायक प्राध्यापक, विभागाध्यक्ष, संगीत विभाग, एस.एस.जे. परिसर, अल्मोड़ा)

पत्रकारिता एवं जन संचार विभाग:

1. डॉ० सरोजनी नंदल, प्रोफेसर (पत्रकारिता एवं जन संचार विभाग) महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

उर्दू विभाग:

1. डॉ० मो. नूरुल हक, (एसोसिएट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, उर्दू, बरेली कॉलेज, बरेली)

कृषि विभाग

1. डॉ० गोविन्द प्रकाश आचार्य सह-आचार्य (कृषि-प्रसार) श्री गोविन्द गुरु राजकीय महाविद्यालय, बांसवाड़ा राजस्थान मो. 9460545836

दर्शनशास्त्र

1. Prof, Dr, Asha Devi department of Philosophy Govt P G college kotdwar pauri Garhwal Uttarakhand 246149

LIFE MEMBERS OF INDIAN JOURNAL OF SOCIAL CONCERNS

1. **Dr. Praveen Kumar Verma**
Associate Professor, Hindi Department, GGD Sanatan Dharam Post Graduate College, Palwal.
2. **Smt. Veena Pandey (Shukla)**
Hindi Teacher, Jawahar Navodaya Vidyalaya, Dhoom Dadri, Distt. Gautambudhnagar - 203207 (U.P.)
3. **Dr. Suman**
H.No. 1001, Radha Swami Colony, Rohtak Road, Bhiwani (Haryana)
4. **Dr. Subhash Chand Saini** (Hindi Department, Dyal Singh College, Karnal, Haryana)
5. **Dr. Vimla Devi, Asst. Professor (History)** M.B.G.P.G College Haldwani Nainital (Uttarakhand)
G-mail address. drvimla2015@gmail
6. **Princepal**, Associate Professor (Hindi), Aggarwal College, Ballabgarh (Haryana)
7. **Dr. Dinesh Mani Tirpathi (Principal)** L-P-K Inter College sardar Nagar, Basdila Gorkhpur
8. **Dr. Govind Prakash Acharya** F-63, Chandra Vardai Nagar, UIT, Colony, Shaheed Bhagat Singh Marg, Opposite Ramganj Thana, Taragarh Road, Ajmer (Rajasthan) Pincode--305003.
9. **Amardeep Singh** Mcf C -21, Near Deep Vatika, Bhagat Singh Colony, Ballabgarh 121004, Mob. 9873814066



आचार्य मनिष र. जोशी
सचिव

Prof. Manish R. Joshi
Secretary



सत्यमेव जयते



विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
University Grants Commission
(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)
(Ministry of Education, Govt. of India)

F.No. 1-1/2018(CARE/JOURNAL)-Part file 22 माघ 1946/11 February, 2025

सार्वजनिक सूचना

In supersession of the Public Notice dated 28th November 2018 for establishing UGC Consortium for Academic and Research Ethics (UGC- CARE), the Commission, in its 584th meeting held on 3rd October 2024, based on the recommendations of the expert committee, has decided to discontinue UGC-CARE listing of Journals and develop suggestive parameters for choosing peer-reviewed journals by faculty members and students. The suggestive parameters, developed by a group of experts and academicians, are now placed in the public domain for their feedback till **25th February, 2025 at email id: journal@ugc.gov.in.**

The stakeholders, including HEIs, faculty members, researchers, and students, may take note of it.


(मनिष जोशी)

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ स.
1.	रेवाड़ी नगर परिषद के परिप्रेक्ष्य में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन का एक अध्ययन सोनू, डॉ० प्रदीप कुमार शर्मा		9-13
2.	देवेश ठाकुर के साहित्य में वर्णित स्त्री विमर्श डॉ० डी० एस० भण्डारी		14-16
3.	तुलसी के काव्य में पर्यावरण डॉ० राम टहल दास		17-19
4.	स्वामी विवेकानंद के दृष्टिकोण में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता डॉ० गिरिराज सिंह		20-24
5.	'अंजना संधीर के हिन्दी प्रवासी काव्य में वैश्विक समस्याएँ' प्रोफेसर बाबूराम, सविता अधाना		25-28
6.	भगवानदास मोरवाल के उपन्यास में गतिशील समाज देवेन्द्र कुमार		29-31
7.	राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह का 'संस्मरण' साहित्य में योगदान ममता कुमारी		32-34
8.	उड़ता चल हरिल का विधात्मक वैशिष्ट्य प्रो. (डॉ.) अनिल सिंह		35-38
9.	संजीव के उपन्यास 'मुझे पहचानो' में सती प्रथा की विभीषिका सुमन कुमारी		39-41
10.	हिन्दी कथा का सिनेमाई रूपांतरण में चुनौतियाँ अंशु कुमारी		42-45
11.	'श्रीमद्भागवदमहापुराण का माहात्म्य' डॉ० आभा द्विवेदी		46-48
12.	भारतीय की समृद्ध विरासत में शिक्षा की भूमिका डॉ० सुवाति		49-51
13.	प्रेमचंदीय परम्परा का विकास : विजय कुमार संदेश की कहानियाँ डॉ० कंचन शर्मा		52-55
14.	साहित्य में यथार्थवाद और आदर्शवाद दीपिका व्यास		56-58
15.	स्त्रीत्ववाद की विभिन्न वैचारिक अवधारणाएँ डॉ० दीपक कुमारी		59-62
16.	(अमीर खुसरो का भारत विवरण:- एक ऐतिहासिक अवलोकन) शिवम् त्रिपाठी		63-64
17.	हिन्दी साहित्य और फिल्म रूपांतरण : एक अध्ययन डॉ० नरेश कुमारी		65-69
18.	असीम राना के साहित्य का सामाजिक रूप मीनाक्षी, डॉ० पी. सी. टंडन		70-73
19.	डॉ० आदित्य प्रचंडिया: साहित्यिक योगदान ज्योति, डॉ. माया मलिक		74-76
20.	महादेवी वर्मा के साहित्य में सामाजिक विमर्श डॉ० विनीता श्रीवास्तव		77-78
21.	पौराणिक साहित्य में अपराध, न्याय एवं दण्ड व्यवस्था पिंकी शर्मा		79-81
22.	हरिशंकर परसाई के निबंधों में कबीर और गांधी का मूल्यांकन डॉ० अनु		82-86
23.	संत निश्चल दास और संत ब्रह्मानंद सरस्वती के काव्य में दर्शन श्रीमती मनजीत, डॉ. सुमन राठी		87-89

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ स.
24.	त्रिगुणात्मक सृष्टि में खीरा जीरा और हीरा की महनीयता (ललित निबंध) डॉ० जंग बहादुर पाण्डेय		90-91
25.	संगीत और समार्ज डॉ० अनिता शर्मा		92-93
26.	Women in Police Profession: Equality and their Rights Dr. Mithlesh		94-99
27.	Competitiveness of Trade in Services-A Comparison of India and China Ms Jyoti, Dr. Madhu Ahlawat		100-105
28.	One Nation, One Election (ONOE) : The Future of Indian Democracy Kundan Kumar		106-108
29.	Trends of Poverty in India : A Comparative Study Dr. Bhupinder		109-113
30.	Role of Information Technology in Retail Industry Dr Shaveta Kakkar		114-121
31.	A Study of Employee's Turnover in Central Armed Police Forces Dr. Geeta Gupta, Dr. Nidhi Garg		122-125
32.	Terrorism As A Tool: The Pakistan-China Axis And Its Threat To India Dr.Harsimran Kaur, Vipula		126-130
33.	"Beyond the Landfills: Transforming Rural Waste Management in India" Ms.Gargi Sharma		131-138
34.	Development of Law pertaining to Arbitration and Its Impact on minimizing Role of Courts Dr. Santosh Kumar Sharma		139-143
35.	Crime Control System: Women Against Crimes in Rewari District Sangita Kumari, Dr. Pardeep Kumar Sharma		144-148
36.	Trends in Receipts of Central Government of India Dr. yogesh, Dr. Bhupinder		149-152
37.	Various laws in India for Women Empowerment Dr Kanwaljeet Kaur		153-157
38.	Navigating the Complexities of Indo-U.S. Relations in the Context of Global Geopolitics Aishwarya Awasthi		158-163
39.	A Compelling Introduction To Social Entrepreneurship Dr. Neha Sharma		164-167
40.	The Psychological Impact of Digital Pedagogies: ICT Tools for Inclusive and Sustainable Education Dr. Vaishali Gupta		168-174
41.	De-fuzzification Analysis Of Hull Scale And Sigma Scale Fuzzy Set Parameters For Assessing The Health Fitness Level Of Both Boys And Girls In Upper Primary School. Rita Rani* Monika Verma* Avinash Verma		175-180
42.	The Science Of Education Deepak, Dr. Pawan kumar		181-182

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ स.
43.	Construction Of Norms In Relation To Health-related Fitness Of Upperprimary School Male Students Construção De Normas Em Relação À Adequação Relacionada Com A Saúde Do Superioralunos Masculinos Da Escola Primária Prof. Monika Verma, Prof Avnesh Verma, Scholar Rita Rani		183–187
44.	Post-Pandemic Fiscal Position of Haryana Dr. Yogita Hudda and Dr. Monika		188–192
45.	From Plato's idea of philosopher king to leaders Deepak, Dr. Pawan kumar		193–194
46.	On Myth and History in thenovels of Indian English Writers Dr. Sunita Yadav		195–197
47.	Empowering Students Through Holistic Learning Approaches Mrs. Priya Mittal, Mrs. Suman		198–202
48.	विश्व महिला दिवस की प्रयोजनीयता डॉ० सोनी कुमारी		203–204
49.	आंचलिकता के सजग प्रहरी: रेणु डॉ० जंग बहादुर पाण्डेय		205–206
50.	मातोश्री अहिल्याबाई होल्कर और निर्माण कार्य डॉ० अमिता		207–211
51.	लक्ष्मी नारायण मिश्र का रचना संसार और उनका वैशिष्ट्य अमीर नाथ शर्मा		212–213
52.	आधुनिक भारत में नैतिक मूल्यों के ह्रास के कारणों एवं प्रभावों का समाजशास्त्रीय अध्ययन कविता रुस्तगी, डॉ० नाहिद परवीन		214–216
53.	भूमंडलीकरण और शिक्षा का प्रभाव एवं प्रभावों का समाजशास्त्रीय अध्ययन प्रो.राजकुमारी सिंह		217–219

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ स.
------	------	------	----------

रेवाड़ी नगर परिषद के परिप्रेक्ष्य में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन का एक अध्ययन

सोनू, डॉ० प्रदीप कुमार शर्मा

शोध सार:

भारत के नगरों और कस्बों में अपशिष्ट प्रबंधन एक बड़ी समस्या है। शहरीकरण, आर्थिक विकास और जनसंख्या वृद्धि अपशिष्ट उत्पादन से मिलती है। 80 प्रतिशत से अधिक ठोस कचरे को कम आय वाले देशों में खुले तौर पर जलाया जाता है, अक्सर अनियमित ढम्पों में या खुले तौर पर जलाया जाता है, बुनियादी ढांचे को प्रभावित करता है, सार्वजनिक स्वास्थ्य को बिगाड़ता है, पर्यावरण प्रदूषण के कारण प्राकृतिक संसाधनों की गिरावट तेजी से होती है, जलवायु परिवर्तन का कारण बनता है, और नागरिकों के जीवन की गुण योग्य ठोस प्रबंधन के लिए नगर परिषद का बजट लगभग 25 से 60 प्रतिशत है। विश्व बैंक ने कहा कि कुशल, टिकाऊ और सामाजिक रूप से समर्पित प्रणालियों की आवश्यकता होती है ताकि नगर परिषदों और नगर निगमों को यह आवश्यकता पूरी हो सके।

शब्द कूँजी: अपशिष्ट, शहरीकरण, जनसंख्या वृद्धि, स्वास्थ्य, प्राकृतिक संसाधनों, नगर परिषद, पर्यावरण प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन

प्रस्तावना: भारत जैसे विकासशील देशों में पिछले दशकों में औद्योगीकरण और मानवीय जनसंख्या की निरंतर वृद्धि ने नगरीकरण की प्रक्रिया को तीव्र कर दिया है। यह एक और नगरीय अवसंरचना पर दबाव बढ़ा है, जबकि ठोस अपशिष्ट निपटान एक बड़ी समस्या बन गया है। नगरों में तेजी से बढ़ने वाली जनसंख्या ने भारी मात्रा में ठोस अपशिष्ट बनाया है, जिसका प्रबंधन या निपटान स्थानीय निकायों और पर्यावरण के लिए एक चुनौती बन गया है। भारत में ठोस अपशिष्ट उत्सर्जन के बड़े अनुमान लगाए गए हैं, क्योंकि देश की जनसंख्या लगातार बढ़ रही है और शहरी क्षेत्र भी बढ़ रहे हैं। भारत सरकार की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार, देश में हर दिन 133760 मीट्रिक टन नगरपालिका ठोस अपशिष्ट बनते हैं, जिसमें से केवल 91152 टन का संग्रहण और 25884 टन का उपचार किया जाता है।

वर्तमान समय में लगभग सभी विकसित और विकासशील देशों में अनियोजित और अनियंत्रित शहरीकरण ने कई समस्याओं को जन्म दिया है। सड़कों पर फलता नालियों का गन्दा पानी, जगह-जगह अपशिष्ट के ढेरों से उठती दुर्गन्ध, धुआं, घुटन, शोर, खचाखच भरी मोटरगाड़ियों और रेल राशन के लिए लम्बी-लम्बी कतारे, आर्थिक समस्याओं का एक हिस्सा हैं। शहरों में ठोस अपशिष्ट का सही प्रबंधन न होना पर्यावरण प्रदूषण का प्रत्यक्ष स्थानीय कारण है, जो विद्वानों के लिए एक बड़ी चुनौती है। ठोस

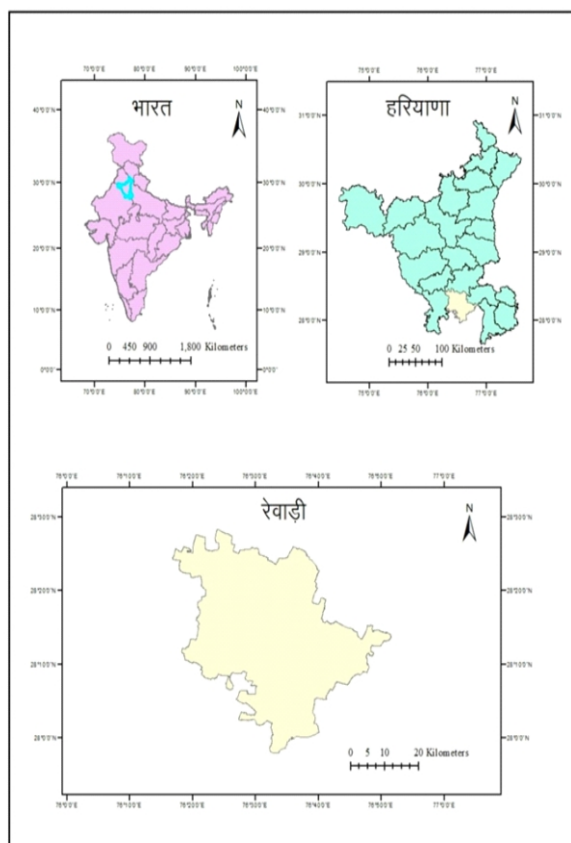
अपशिष्ट का अवैज्ञानिक निपटान पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य पर घातक है। चिकित्सा अपशिष्ट, इलेक्ट्रॉनिक अपशिष्ट, घरेलू अपशिष्ट, औद्योगिक अपशिष्ट और संस्थागत और व्यवसायिक अपशिष्ट के प्रभाव को कम करने के लिए इसका उचित प्रबंध आवश्यक है। यह एक प्रमुख चिंता का विषय बन गया है क्योंकि यह गंभीर पर्यावरणीय समस्याएं पैदा करता है और मानव स्वास्थ्य के लिए खतरनाक है।

रेवाड़ी नगर परिषद का इतिहास: अंग्रेज काल में रेवाड़ी एक नगर पालिका थी। 1987 में, राव तुलाराम पार्क में एक जनसभा में पूर्व विधायक रघु यादव ने मुख्यमंत्री चौधरी देवीलाल से रेवाड़ी को अलग जिला बनाने की मांग की। नवंबर 1989 में, विधायक की मांग पर रेवाड़ी को नया जिला घोषित किया गया। रेवाड़ी को अलग जिला बनाने के बाद 1994 में नगर पालिका से नगर परिषद बनाया गया। रेवाड़ी नगर परिषद का पहला चुनाव जुलाई 1995 में हुआ था। चुनाव 22 वार्ड पर होने का अनुमान था, लेकिन बाद में 24 वार्ड पर चुनाव हुए। वर्तमान समय में रेवाड़ी नगर परिषद में 31 वार्ड हैं। रेवाड़ी का इतिहास पुराना है। पुराने समय में रेवाड़ी एक शहर था। वहीं गुरुग्राम सिर्फ एक गांव था। गुरुग्राम का विकास उतनी तेजी से रेवाड़ी में नहीं हुआ। अंग्रेज काल में रेवाड़ी एक नगरपालिका था। रेवाड़ी नगर परिषद आज भी अंग्रेजों द्वारा बनाई गई नगरपालिका की इमारत में स्थित है, जो नगर में अग्रसेन चौक के पास है।

अध्ययन क्षेत्र: रेवाड़ी नगर हरियाणा प्रदेश का एक विकसित एवं महत्वपूर्ण नगर है। रेवाड़ी नगर रेवाड़ी जिले के बीचो-बीच बसा हुआ है। रेवाड़ी नगर 28°11' उत्तरी अक्षांश तथा 76°37' पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। रेवाड़ी दक्षिणी हरियाणा का एक प्रमुख नगर है जो राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एन.सी.आर.) में सम्मिलित है। यह हरियाणा राज्य की राजधानी से लगभग 212 कि.मी. तथा दिल्ली से 89 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। इसकी समुद्र तल से ऊँचाई 241.95 मीटर है। 2011 की जनगणना के अनुसार इस क्षेत्र के 143021 व्यक्ति 24.37 वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल पर निवास करते हैं। इस आधार पर नगर में 5868 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. के घनत्व से जनसंख्या निवास करती है। यह नगर चारों दिशाओं से स्थित मुख्य नगरों से सीधे सम्पर्क में है। अतः यह अनेक मार्गों का एक संगम स्थल है। नगर से मुख्य मार्ग दिल्ली, रोहतक, नारनौल, महेन्द्रगढ़, जयपुर इत्यादि को जाता है। नगर से इन स्थानों की ओर सड़क व रेल यातायात दोनों की सुगम परिवहन सुविधा उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त पाली, कोसली, धारुहेड़ा, मीरपुर, बावल इत्यादि कस्बे भी

नगर से पक्की सड़कों के माध्यम से जुड़े हुए हैं। यहां सर्वप्रथम रेलवे का विकास 1873 में हुआ था। यह रेलवे का एक प्रमुख जंक्शन वह आवागमन का एक प्रमुख केंद्र बन चुका है। यह एशिया में मीटर गेज का सबसे बड़ा जंक्शन होने का भी गौरव रखता था। यहां से नारनौल जयपुर महेन्द्रगढ़ हिसार रोहतक दिल्ली आदि नगरों की रेल सुविधाओं से जोड़ा गया है।

मानचित्र 1: अध्ययन क्षेत्र की अवस्थिति एवं विस्तार



स्रोत: शोधार्थी द्वारा आर्क जी आई एस की सहायता से निर्मित
रेवाड़ी नगर के अपशिष्ट पदार्थों के स्रोत: रेवाड़ी नगर में ठोस अपशिष्ट पदार्थों के स्रोतों को निम्नलिखित पांच वर्गों में विभाजित किया गया है जिनका विवरण नीचे दिया गया है:

(अ) घरेलू या आवासीय अपशिष्ट पदार्थ : घरों में हर दिन सफाई करने के बाद निकलने वाली गंदगी में साबुन, बैक्टीरिया कीटनाशक, खराब दवाईयां, उनके पैकेट, रैंपर, सब्जियों और फलों के छिलके, कपड़ा, प्लास्टिक की थैलियां, खाली डिब्बे, सब्जियां और फलों के छिलके शामिल हैं। इसके अलावा, वे अक्सर विवाह समारोहों और पार्टियों में भी अधिक हो जाते हैं। ये सभी सामग्री घरों से बाहर सड़कों पर या निश्चित स्थानों पर डाली जाती हैं। रेवाड़ी नगर में घरेलू अपशिष्ट 2,3,6,8,17,21,26

सेक्टर में सबसे अधिक होता है।

तालिका 1: रेवाड़ी नगर में ठोस अपशिष्ट का वर्गीकरण

क्रम संख्या	पदार्थ	मात्रा (प्रतिशत में)
1	जैविक अपघटन पदार्थ	49
2	धातु, रबर, कपड़ा आदि	11
3	पत्थर	07
4	रेत, बजरी	19
5	प्लास्टिक	09
6	राख और अन्य उत्पाद	05
7	कुल	100

स्रोत: नगर परिषद, रेवाड़ी



(ब) औद्योगिक इकाइयों द्वारा ठोस अपशिष्ट: इंजीनियरिंग, ऑटो, पेंट, फर्नीचर, चीनी, पटाखा, खाद्य और बेकरी, प्लाई, मशीन टूल और नट-बोल्ट आदि रेवाड़ी शहर की प्रमुख उद्योगों में से हैं। रेवाड़ी नगर को विदेशों में पीतल नगरी कहा जाता है। 2020 में रेवाड़ी नगर परिषद ने एक सर्वेक्षण किया था, जिसके अनुसार नगर की कालोनियों में लगभग 1000 औद्योगिक इकाइयां हैं। इनमें से लगभग 150 इकाइयां प्रदूषण को जन्म देती हैं। साथ ही, इनमें से लगभग 805 इकाइयों को ग्रामीण इलाकों में घरों में चलाया गया था। औद्योगिक अपशिष्ट में धातु, राख, पेंट, पेपर, क्रोमियम, कैडमियम, पारा, शीशा, रेडियोधर्मी, जहरीले और रसायनिक अपशिष्ट शामिल हैं।

हरियाणा राज्य औद्योगिक और अवसंरचना विकास निगम ने बावल क्षेत्र में औद्योगिक अपशिष्ट प्रभावित क्षेत्रों को रेवाड़ी में विकसित किया है। यहाँ के प्रमुख उद्योगों में बुड कार्विंग, होजरी, फुटवियर, फूड्स और कृषि आधारित उद्योग शामिल हैं। भारत मशीन टूल, जैन औद्योगिक उत्पाद, सानेवाल ऑटो इंजीनियरिंग, सागर स्टील और वायर और सोना ऑटोमेटिक्स प्राइवेट लिमिटेड भी शामिल हैं। इस औद्योगिक क्षेत्र में अक्सर फैक्ट्रियों से निकलने वाले अपशिष्ट को जला दिया जाता है, जिससे बहुत घातक गैसें निकलते हैं, जिसके बारे में स्थानीय लोग बार-बार

शिकायत करते रहते हैं। दूसरा, बैटरियों को गलाने का काम भी यहां किया जाता है, जो बहुत अधिक जहरीला धुंआ पैदा करता है। योगी पर्यावरण सोशल वेलफेयर सोसाइटी के सदस्यों ने प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड भी बनाया और प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के चेयरमैन से शिकायत की है।

उपरोक्त के अलावा, शहर में कई औद्योगिक इकाइयां हैं, जैसे रबर और प्लास्टिक उत्पाद, मेटल उत्पाद, लेदर उत्पाद, मशीनरी और मशीनरी पार्ट्स, आदि। जिनमें से कई ठोस अपशिष्ट निकलते हैं। इन उद्योगों से बहुत सारे उपयोग में ले गए और अपशिष्ट पदार्थ बाहर फेंक दिए जाते हैं, जिसमें धातु के टुकड़े, रासायनिक पदार्थ, तैलीय पदार्थ और जैव अपघटनशील पदार्थ शामिल हैं। जैसे-जैसे औद्योगिक विकास ने प्रकृति को बर्बाद किया है, वैसे-वैसे पर्यावरण संकट गहरा हुआ है।

(स) व्यापारिक प्रतिष्ठानों का ठोस अपशिष्ट : रेवाड़ी नगर के प्रमुख व्यापारिक प्रतिष्ठानों में गोकुल बाजार, ब्रास मार्केट, नया बाजार, कबाड़ी बाजार इत्यादि हैं इन प्रतिष्ठानों में अधिकतर व्यापारिक दृष्टि से अपशिष्ट के रूप में पॉलिथीन टेप वृद्धि कपड़े इत्यादि आते हैं। व्यापारिक प्रतिष्ठानों के अंतर्गत नगर में ठोस निम्नलिखित प्रतिष्ठानों से निकलता है:

(i) नर्सिंग होम एवं अस्पतालों का अपशिष्ट : नर्सिंग होम एवं अस्पतालों से कई प्रकार का ठोस अपशिष्ट निकलता है। नगर में अस्पतालों से निकलने वाले अपशिष्टों में रक्त एवं विभिन्न प्रकार के टिशू होते हैं। इन अपशिष्टों में इस्तेमाल में की गई सुईयां, खून एवं ग्लूकोज की थैलियां, मरे हुए भ्रूण, खून से सने कपड़े, रुईयां, शरीर के अंग, पुरानी एवं बेकार दवाईयां, हाथ-पैर के कटे प्लास्टर इत्यादि होती हैं। इसके अतिरिक्त और भी विभिन्न प्रकार का अपशिष्ट निकलता है।

(ii) इलेक्ट्रानिक अपशिष्ट : रेवाड़ी नगर में इलेक्ट्रानिक अपशिष्ट नगर का बड़ा बाजार नेहरू मार्केट, पर निकलता है। इलेक्ट्रानिक अपशिष्ट के अन्तर्गत टुटे-फूटे, पुर्जे, खाली गत्ते के डिब्बे, सेफ्टी कवर, टेप, इलेक्ट्रानिक तारे टी.वी. टेप, रेडियों के कलपूजे, बेकार टी.वी. रेडियों, मोबाईल इत्यादि। इलेक्ट्रानिक चीजे अपशिष्ट के रूप में निकलते हैं।

उपरोक्त के अतिरिक्त इस प्रकार का अपशिष्ट मुख्य: रोडवेज बस स्टैण्ड, एवं मुख्य बाजार इत्यादि स्थानों पर मिलता है

(iii) मृत पशु जनित अपशिष्ट : रेवाड़ी नगर में मांस उद्योग से निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। जिसमें प्रतिदिन असंख्य निरीह पशुओं की हत्या कर उनका मांस निर्यात किया जाता है। इन

उद्योगों से जनित मृत पशुओं की हड्डियों, बाल, खाल उनके आन्तरिक अवशेष, मांस, खून इत्यादि अपशिष्टों तत्वों के रूप में होते हैं। जो इस क्षेत्र को बुरी तरह से प्रभावित कर रहा है। दुर्गन्ध युक्त वातावरण हो जाने के कारण जनसामान्य का रहना दुर्भर हो गया है। जो पर्यावरण को प्रदूषित कर रहा है साथ ही नगर में अनेक प्रकार की बिमारियां भी उत्पन्न हो रही है।

(iv) होटल एवं रेस्टोरेट जनित अपशिष्ट : रेवाड़ी नगर एक प्रतिष्ठित नगर होने के कारण यहां पर कुछ विशिष्ट भागों में होटल एवं रेस्टोरेट स्थित है। इन होटल एवं रेस्टोरेट में से अपशिष्ट पदार्थों के रूप में पैकिंग का सम्मान, मिनरल वॉटर की बोतलें, प्लास्टिक प्लेट, गिलास, चम्मच, प्लास्टिक थैली, पॉलिथीन तथा बचे हुए खाद्य पदार्थ इत्यादि अपशिष्ट के रूप में मिलता है।

(v) फल एवं सब्जी मण्डियों का ठोस अपशिष्ट : फल एवं सब्जी मंदिरों से निकलने वाले अपशिष्ट में फलों के छिलके, सड़े गले पदार्थ, सूखे हुए फल, फूल, पत्तियां गत्ते के डिब्बे, पेटियां, फूस आदि नगर में स्थित मण्डियों से अपशिष्ट पदार्थ निकलता है। जिनके सड़ने गलने से वातावरण दूषित होता है। जिससे दिन प्रतिदिन नगर में अवशिष्ट पदार्थों की मात्रा में भारी वृद्धि होती है।

(vi) अन्य अपशिष्ट : इसके अन्तर्गत राख, निर्माण सामग्री, पुराने टायर, जुते, पेड़-पौधे का अपशिष्ट, रबर, खनिज, रसायन, बैटरी, पुराना लोहा, टीन, प्लास्टिक पुरानी रद्दी खाली मिठाइयों के डिब्बों, काकरी, शीशा, दवाईयां, पेन्ट्स के खाली डिब्बे इत्यादि आते हैं।

(द) कृषि जनित अपशिष्ट : इस श्रेणी में खाद्य प्रक्रिया से सम्बन्धी अपशिष्ट को लिया जाता है जैसे पेड़-पौधे की पत्तियां, मल-मुत्र एवं फसलों के अवशेष आदि। कृषि और खेतों से सम्बन्धित उत्पन्न अपशिष्ट विस्तार एवं विशिष्टता में अलग-अलग है। अधिकांश कृषि अपशिष्ट पुनः निर्माण व गोबर को खेत व घरेलू फसलों में खाद के रूप में प्रयोग करना है। हमारे देश में कृषि से सम्बन्धित ठोस अपशिष्ट वार्षिक स्तर पर लगभग 600 मिलियन टन के आस-पास है। इस अपशिष्ट में फसल अवशेष, कृषि सम्बन्धी सुखे-मैवे व नारियल तेल इत्यादि इसमें सम्मिलित है। इसके विपरीत रेवाड़ी नगर में नगर के आस-पास कृषि से उत्पन्न अपशिष्टों के निस्तारण की समस्या सिरदर्द बन गयी है। नगर में वार्डों से प्रतिदिन 10 से 15 किलोग्राम के मध्य में ठोस अपशिष्ट निकलता है जैसे- पेड़-पौधे की पत्तियां, सुखे फूल, कंकड़ पत्थर, घास-फूस, सुखी जड़े, पक्षियों के घोंसले

मधुमक्खी के टूटे हुये छत्ते, पक्षियों के टूटे हुये अण्डे इत्यादि निकलते हैं।

(य) पैकिंग अपशिष्ट : पैकिंग अपशिष्ट के अर्न्तगत विभिन्न पदार्थों का पैक करने की सामग्री को सम्मिलित किया जाता है जैसे— पॉलीथीन, प्लास्टिक, कागज दफती, अखबार, जूट, सन इत्यादि । नगर में इन पैकिंग की सामग्री का कई बार प्रयोग किया जाता है तथा कई बार एक बार उपयोग के बाद उन्हें फेंक दिया जाता है। परिणाम स्वरूप उनके निस्तारण की समस्या उत्पन्न हो जाती है।

निष्कर्ष: हरियाणा में घरेलू औद्योगिक, इलेक्ट्रॉनिक अपशिष्ट, बायो मेडिकल अपशिष्ट, कृषि ठोस अपशिष्ट पर्यावरण प्रदूषण व अपघटन का बड़ा स्रोत है। प्रदेश के मुख्य नगरों में रोहतक, हिसार, करनाल, अंबाला, फरीदाबाद, कुरुक्षेत्र, गुरुग्राम, झज्जर आदि में ठोस उत्पादन की मात्रा दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। वास्तविकता यह है कि प्रदेश के रोहतक, हिसार, करनाल, अंबाला, फरीदाबाद, कुरुक्षेत्र, गुरुग्राम, आदि जिलों में पिछले दो दशकों में बड़ी तेजी से जनसंख्या में वृद्धि होने के कारण नगरों का विस्तार भी उतनी ही तेजी से हो रहा है। परिणामस्वरूप नगरीय सीमाओं का विस्तार हो रहा है। बढ़ती आबादी के कारण इन नगरों में कचरे के ढेर भी उतनी ही तेजी से बढ़ रहे हैं लेकिन कचरा प्रबन्ध के लिए अपनाए जा रहे उपाय कचरा उत्पादन के औसत अनुपात आधे भी नहीं हैं। वहीं केन्द्र सरकार व राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं में भी तालमेल का अभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। परिणामस्वरूप योजनाओं का क्रियान्वयन निर्धारित समयावधि में नहीं हो पाता है। योजनाओं के लिए आवंटित बजट का या तो दुरुपयोग हो जाता है या फिर बजट खर्च ही नहीं हो पाता है। प्रदेश में कचरा प्रबन्ध मुख्यतः नगर निगम व नगर पालिकाओं की जिम्मेदारी है, जिसमें अन्य सरकारी व गैर-सरकारी विभाग व संस्थाएं भी भूमिका निमाती है।

सुझाव: नगर परिषद को ठोस अपशिष्ट निष्पादन के लिए निम्नलिखित ठोस कदम उठाए जाने चाहिए:

तीन पी (पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप) मॉडल को अपनाकर अपशिष्ट प्रबंधन की वर्तमान प्रणाली को प्रभावी बनाना चाहिए।

नागरिकों को जैविक और अजैविक कचरे के बारे में बहुत कुछ पता नहीं है। नागरिकों को जागरूक करना चाहिए, खासकर कामकाजी महिलाओं, गृहणियों और बच्चों को जैविक और

अजैविक कचरे के बारे में जानकारी देनी चाहिए। अपशिष्टों की समस्या को काफी हद तक हल किया जा सकता है, जैविक कचरे को स्रोत पर अपशिष्टों से अलग करके खाद बनाया जा सकता है।

प्रत्येक वार्ड में जैविक और अजैविक कचरे को अलग-अलग रखने के लिए नगर परिषद को हरे और नीले रंग के कूड़ेदान बनाने चाहिए। कूड़े की छंटाई के बारे में लोगों को शिक्षित करना चाहिए।

प्रत्येक वार्ड में कूड़ा जमा करने का स्थान होना चाहिए। वर्तमान में, गली या सड़क के किनारे चौक या किसी खाली प्लॉट में कचरा इकट्ठा किया जाता है, जो गंदगी और बदबू फैलाता है। ये कचरा इकट्ठा करने का अवैज्ञानिक तरीका है। कूड़ा इकट्ठा करने का स्थान निर्धारित करना चाहिए, ताकि लोगों को असुविधा न हो। अपशिष्ट इकट्ठा करने का स्थान ऐसा होना चाहिए कि नगर परिषद की गाड़ियां आसानी से अपशिष्ट को उठा सकें।

जैविक और अजैविक (हरी और नीली) कमरों के लिए अपशिष्ट निस्तारण के लिए अलग-अलग डिब्बे होने चाहिए। गारबेज डिस्पोजल, ठोस अपशिष्ट प्रबन्ध में काम करने वाले कर्मचारियों को भी करना होगा।

सन्दर्भ सूची

1. अरविंद, के.जे., शर्मा, सी., नाहर, एस., रमेश, पी., पुरजाजा, आर. और प्रभात, के.जी. (2008). भारतीय मेगा-शहरों में नगरपालिका ठोस अपशिष्ट प्रबंधन से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन: चेन्नई लैंडफिल साइटों का एक केस स्टडी, केमोस्फीयर. 71. पृष्ठ संख्या 750— 758.
2. अहमद, आर. जे. (2016). भारत में नगरपालिका ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की स्थिति और चुनौतियां: एक समीक्षा. कॉजेंट एनवायरनमेंट साइंस, 2(1).
3. अहसन, एन. (1999). भारतीय मेगासिटीज के लिए ठोस अपशिष्ट प्रबंधन योजना। भारतीय पर्यावरण संरक्षण जर्नल, 19 (2). 90-95.
4. अलघ, एल. (2013). पानीपत शहर के लिए शहर स्वच्छता योजना। आईआईटी रुड़की, भारत: एएचईसी.
5. एंसेल, सी. और गैश, ए. (2008). सिद्धांत और व्यवहार में सहयोगात्मक शासन। जर्नल ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन थ्योरी एंड प्रैक्टिस, 18.
6. बालासुब्रमण्यम, एम. और एंडरसन, बी. (2010). एक्सनोरा ग्रीन

पम्मल के चार इलाकों में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन साझेदारियों से
सीखना, 50–71

7. बनर्जी, एस. डी. (2017). नगरपालिका ठोस अपशिष्ट प्रबंधन में
निजी भागीदारी का दायरा: भारत का मामला, शहरी भारत, 117.
56–68

8. भट्टाचार्य, ए. (2019). दिल्ली के चारदीवारी शहर का
पुनर्विकास: योजना ढांचे और शासन चुनौतियों का आकलन।
इंडियन जर्नल ऑफ लैंडस्केप सिस्टम और पारिस्थितिकी
अध्ययन, 42(2).

सोनू

शोधार्थी,

भूगोल

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय

डॉ० प्रदीप कुमार शर्मा

एसोसिएट प्रोफेसर,

सामाजिक विज्ञान विभाग

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय,

अस्थल बोहर, रोहतक

पिन न० –124021



सारांश

किसी भी साहित्यिक रचना में रचनाकार का व्यक्तित्व दिखाई देता है। व्यक्ति पर जैसे उसके परिवेश अनुभव संस्कार की छाप दिखाई देती है, ठीक उसी प्रकार उसकी रचना पर भी उसकी छाप दिखाई देती है। किसी भी रचना को रचनाकार के व्यक्तित्व से अलग करके नहीं देखा जा सकता है। देवेश ठाकुर के सम्बन्ध में भी ठीक यही कथन लागू होता है। उनके सम्पूर्ण साहित्य में उनका व्यक्तित्व बोलता है। देवेश ठाकुर ने अपने कई उपन्यासों और कहानियों में स्त्री अस्मिता के प्रश्नों को छुआ है। उन्होंने बहुत मन से समसामयिक स्त्री विमर्श को प्रस्तुत किया है। उनके साहित्य में भिन्न भिन्न रूपों में स्त्री चरित्र मिलते हैं और उनके स्त्री पात्र पाठकों का ध्यान आकर्षित करने में भी सफल रहते हैं। हमारे पितृ सत्तात्मक समाज में स्त्री को दोगुना दर्जा प्राप्त है, परन्तु आज स्थिति दिन प्रतिदिन बदलती हुई दिखाई देती है। देवेश ठाकुर के साहित्य में वर्णित स्त्री विमर्श को शोध पत्र में प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है।

विषय विस्तार

वैदिक काल में स्त्री को पुरुष से अधिक सम्मान प्राप्त था, लेकिन धीरे-धीरे परिवार और समाज में उसकी स्थिति में परिवर्तन हुआ और समाज पितृ सत्तात्मक स्थापित हो गया। पितृ सत्तात्मक समाज में स्त्री की स्थिति दोगुना दर्जे की बन गई, और वह पूर्ण रूप से पुरुष पर आश्रित दिखाई देने लगी। देवेश ठाकुर ने ऐसे कई चित्र अपनी कहानियों और उपन्यासों में उकेरे हैं। यदि पुरुष को ऐसा आभास होता है कि महिला उसकी उपेक्षा कर रही है चाहे वह महिला पद प्रतिष्ठा में उससे बड़ी ही क्यों न हो तब भी वह कोई कारण जानने का प्रयत्न नहीं करता, वरन उसका अंह जाग उठता है। 'स्वभावतः उसके बारे में जानने की इच्छा मेरे भीतर कुल बुलाने लगी, लेकिन अपनी वरिष्ठता के अभिमान में मैं गंभीर ही बना रहा' बहुत समय बाद भी जब वह स्त्री कोई ध्यान नहीं देती तब उसका अंहकार बाहर निकलने लगता है।' उसकी उपेक्षा मुझे भीतर तक कचोट गई मैं एक विख्यात अखबार का अवकाश प्राप्त सम्पादक, बीसियों उपन्यासों और दर्जनों ग्रंथों का प्रतिष्ठित लेखक जिसकी अनेक पुस्तकों का अनुवाद अनेक विदेशी भाषाओं में हो चुका है—रशियन, जर्मन, फ्रेंच, और न जाने कितनी भाषाओं में परसो ही इक्यावन हजार रु० के सेठ मंगलदास साहित्य पुरस्कार से सम्मानित हुआ हूँ और यह छोकरी मेरी उपेक्षा कर रही है।'

कहानी के अन्त में उसे ज्ञात होता है कि जिस सेठ

मंगलदास साहित्य पुरस्कार को प्राप्त कर वह अंह भाव से भरा है वह पुरस्कार वह स्त्री ही देती है। कुछ दशकों से स्त्री घर की चार दिवारी से निकल कर सामाजिक राजनीतिक क्षेत्रों के साथ ही अपने परिवार में भी कई प्रकार की भूमिकाओं का निर्वाह कर रही है। स्त्री पुरुष तुलना में कितनी भी सफल क्यों न हो, वह कितनी सफलता प्राप्त कर ले पुरुष और पुरुष प्रधान समाज की नजर में वह अबला ही दिखाई देती है।

पितृ सत्तात्मक परिवार में लडकी की उमंगों का गला किस प्रकार घोंट दिया जाता है यह कातर बेला उपन्यास में दिखाया गया है। पिता की नजर में पुत्री के सपनों का कोई महत्व नहीं है। अपने पिता के व्यवहार के सोनाली अत्यधिक व्यथित है वह कहती है कि लेकिन लोग मेरा वाहय ही देख पाते हैं। अकेली सुनसान रातों में मेरे अन्दर एक खालीपन और अकेलापन को लेकर जो बवंडर उठता है उसे कोई नहीं जानता। सुबह उठकर मैं भी नहीं जानना चाहती हूँ कि रात भर मैं कौन से भ्रम को जीती रही हूँ, लेकिन इसके मेरे भीतर उगे इस नरम की सच्चाई तो समाप्त नहीं हो जाती।' कातर बेला उपन्यास में सोनल मेहता के बहाने देवेश ठाकुर महिलाओं की अत्यधिक और ज्वलंत समस्याओं की ओर ध्यान दिलाते हैं। समाज में स्त्री शारीरिक यातना ही नहीं सहती वरन मानसिक यातनाओं से भी वह टूट जाती है। समाज ही नहीं अपने सगे भी उसके साथ कैसा दोहारेपन का व्यवहार करते हैं यह कातर बेला में दिखाई देता है। सोनल के प्रेम को उसने पिता स्वीकार नहीं करते इसलिए वह सोनल के प्रेमी को कार एक्सीडेंट में मरवा देते हैं, उसके गर्भ को किसी अस्पताल में गिरवा देते हैं, ऊपर से अपनी पुत्री को सांत्वना देते हैं कि अच्छे बच्चे रोते नहीं जिंदगी रोने के लिए नहीं होती। जिन्दगी में जब किसी घटना से कुछ नहीं मिलता तो भी अनुभव तो मिलता ही है।' उनके उपन्यासों की नारी बंधनों में नहीं बंधना चाहती है वह उन्मुक्तता के आकाश में उड़ना चाहती है और वह अपने विचारों को खुलकर सामने रखती है। इसलिए की नायिका मीनाक्षी अपने परिवेश से दुखी है वह वेश्यावृत्ति करती है। वह कहती है कि मैं तुम्हारी प्रेमिका नहीं हूँ, एक वेश्या हूँ जो व्यक्ति विशेष की नहीं सम्पूर्ण समाज की होती है। मैं इतना पैसा चाहती हूँ कि अपनी संतान को राजकुमारी जैसा रख सकूँ। मैंने अपना जीवन अपने अजन्मे बालक को समर्पित कर दिया है मैं यह पाप अपने उस पुण्य को बटोरने के लिए कर रही हूँ।'

इसलिए की नायिका मीनाक्षी के प्रति लेखक की सहानुभूति दिखाई देती है। कुछ आलोचना मानते हैं कि मीनाक्षी के

प्रति उनकी यह सहानुभूति वैचारिक और सामाजिक सरोकारों के विपरीत है।⁶

पिता की इतनी बेरुखी के बाद भी सोनल टूटती नहीं है, वह जीवन जीने की सोचती है वह हादसा जो उसमें जीवन को नष्ट कर डालता है उसे भूलने का वह प्रयास करती है वह कहते हैं कि हम औरतों की यह खूबी तो होती ही है कि वह कुछ हादसों कुछ घटनाओं को अपने भीतर इस तरह छिपा ले जाती है जिसकी किसी दूसरे को हवा तक नहीं लगती, मर जाने पर वे घटनाएं उसके साथ ही दफन हो जाती हैं दुनियां को कभी कुछ पता नहीं चल पाता है। मेरे सन्दर्भ में तो पापा ने इस हादसे के श्रोत ही नष्ट करवा दिया था।⁷

अपनी पुत्री के प्रति किये गये इस व्यवहार के बाद भी सोनल के पिता द्वारा कोई प्रायश्चित्त नहीं किया जाता है। कातर बेला उपन्यास के बाद जंगल के जुगनू नामक उपन्यास में भी देवेश कुमार ने नारी अस्मिता के अनेक प्रश्न उठाये हैं। नारी को समाज से पूर्व अपने घर परिवार में अपनी पद प्रतिष्ठा के लिए संघर्ष करना पड़ता है। यह पूर्णतया सत्य है कि नारी को अपने परिवार में वह स्थान आज तक प्राप्त नहीं हुआ जिसकी वह हकदार है। यह उपन्यास नारी हृदय की गहराइयों से अवगत कराता है। कातर बोला उपन्यास भांति अपना अपना आकाश में प्रिया अपने पिता से प्यार नहीं पाती है, वह प्रकाश के चुंगल में फंस जाती है, लेकिन जब वह उसके चुंगल से मुक्त होती है तब कहती है कि आपने सच ही कहा था हर आदमी का आना अपना आकाश होता है, अपने संस्कार और अपना परिवेश होता है, अब जाकर मैं सच्चाई को समझ पाई हूँ। नारी अथाह शक्ति का भण्डार होते हुए भी पुरुष के षडयन्त्र का शिकार हो जाती हैं। पुरुष प्रधान भारतीय समाज की नारी मन पर जकड़न देखी जाती है। आज प्रेम सम्बन्धों के साथ विवाह सम्बन्धों में भी परिवर्तन दिखाई देता है। देवेश ठाकुर के अंततः उपन्यास की नायिका पदमा के लिए विवाह मात्र एक सामाजिक समझौता है। वह शादी के बाद भी अपने पुराने मित्र के साथ शारीरिक सम्बन्ध को बनाए रखना चाहती है, वह अपने नये जीवन साथी को कुछ विशेष महत्व नहीं देती है। देवेश ठाकुर के उपन्यासों में विवाह का आधार प्रेम नहीं है वरन एक सामाजिक समझौता दिखाई देता है।⁸

इसलिए उपन्यास में मीनाक्षी अपने ही अंकल के हवस का शिकार बनती है। स्त्री यदि विवश हो तो वह विद्रोह भी नहीं कर सकती है। वह कहती हैं कि मुझ जैसी लडकी कालॅगर्ल ही हो सकती है, न होती तो उसे समाज के कुत्ते भेडिये मुझ जैसी

अकेली लडकी को अंकल की तरह मुफ्त में नोच खाते। आजादी के बाद इस देश में जो संस्कारहीन नवधार्मिक वर्ग उभरा है वही मेरा ग्राहक है। उसी के पास सैक्स और शराब में हर रात हजारों रूपए उड़ाने का सामर्थ्य है। फिर मंत्री है और पैसा भी आता रहा है। मैंने पिछले वर्षों में मुम्बई में जो जीवन देखा है उससे अपने शानदार भविष्य के लिए कहीं कोई आंशका नहीं रह गई।⁹

स्त्री के लिए पुरुष का साथ जरूरी है, लेकिन यदि उसे पुरुष का साथ नहीं मिलता है तब भी वह अपने दुख का बोझ स्वयं ढोने के लिए तैयार रहती है। कुछ माह बीते उस विधवा ने एक बच्चे को जन्म दिया, लेकिन वह उसे लोगों से छिपाए रखती है। उसने बच्चे को कभी अपनी झोपडी से बाहर नहीं निकाला, न ही कभी उसे धूप दिखाई। जो दूसरों को खुश रहने और संघर्ष करने की प्रेरणा देती थी जब वह खुद खामोश शान्त और शिथिल हो गई है।¹⁰

विकलांग कहानी की नायिका विधवा होने पर विकलांग बच्चे को जन्म देती है, और पुनः विवाह इसलिए नहीं करती है कि कहीं वह फिर से विकलांग बच्चे को जन्म न दे। स्त्री अगर प्रेम करती है तो अपना सब कुछ समर्पित करने का प्रण करती है अपराध बोध की शकुन्तला अपनी पति की मृत्यु के बाद अपने देवर से प्रेम करती है और उसके साथ जीवन जीना चाहती है। ऐसा है देवर जी अकेली जवान औरत को गांव समाज वाले चौन से नहीं जीने देते उसका जीना मुश्किल कर देते हैं। तो मैं अगर तुम्हारे घर बैठे जावूँ मैंने हिम्मत जुटाकर कह ही दिया।¹¹ स्त्री विषम से विषम परिस्थिति में भी अपने पति का साथ नहीं छोड़ती है, जबकि पुरुष बुढ़ापे में अकेला जीवन यापन की कल्पना से ही सिहर जाता है। 'साथ-साथ' कहानी में अवस्थी का बेटा अंकुर कनाडा से घर आया है वह अपनी मां संगीता को साथ ले जाना चाहता है, संगीता से अलग होकर रहने की कल्पना से ही अवस्थी सिहर उठते हैं। जब वह संगीता से इन सम्बन्ध में पूछते हैं तो वह कहती है कि "बुढ़ापे के पगला गए हो क्या ? तुमने कैसे सोच लिया कि मैं उनके साथ जाने की सोच भी लूंगी? अंकुर ने तो हमारा अपमान ही किया है। तुम्हें आने के लिए नहीं पूछा और मुझे वहां ले जाकर आया ही तरह"¹²

निष्कर्ष

वर्तमान समय में सामाजिक स्थिति और उसकी सामाजिक भूमिका में जो परिवर्तन दिखाई देती है उसका मुख्य कारण उसकी आत्म निर्भरता है। शिक्षा की स्थिति में सुधार होने पर भी स्त्री की सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ है। हमारे समाज

पर जब पाश्चात्य शिक्षा संस्कृति का प्रभाव पड़ा उसके पश्चात नारी मुक्ति की गाथा गाई जाने लगी। हमारी संस्कृति में स्त्री पुरुष जिसमें दो पहलू हैं और दोनों एक दूसरे के अभाव में अधूरे हैं। पुरुष और स्त्री एक दूसरे के पूरक हैं। भारतीय समाज में बहुत पूर्व से ही स्त्री को पुरुष से अधिक अधिकार प्राप्त कर स्त्री पर देवी का आरोपण किया जाता रहा है। समाज में नर और नारी की भूमिका समान नहीं थी वरन नारी को अधिक महत्व प्राप्त था। नारी मुक्ति, नारीवाद, नारी विमर्श यह जितने भी शब्द हैं यह पाश्चात्य संस्कृति की देन हैं। स्त्री और पुरुष एक दूसरे के पूरक हैं यह भारतीय अवधारणा है और इसी अवधारणा को देवेश ठाकुर ने अपने साहित्य में पुष्ट किया है।

1. देवेश ठाकुर फैसला तथ ग्यारह कहानियां पृ0 —10
2. देवेश ठाकुर फैसला तथ ग्यारह कहानियां पृ0 —10
3. देवेश ठाकुर कातर बेला पृ0 —76
4. देवेश ठाकुर कातर बेला पृ0 —48
5. देवेश ठाकुर इसलिए पृ0 —50
6. डॉ० अरुणा दुबलिन रचना धर्म देवेश ठाकुर पृ0 86
डॉ० प्रवीण चन्द्र बिष्ट
7. देवेश ठाकुर कातर बेला पृ0 —
8. देवेश ठाकुर अपना अपना आभाश पृ0 158
9. देवेश ठाकुर इसलिए पृ0 49
10. देवेश ठाकुर फैसला तथा अन्य कहानियां पृ0 17
11. देवेश ठाकुर फैसला तथा अन्य कहानियां पृ0 43
12. देवेश ठाकुर फैसला तथा अन्य कहानियां पृ0 57

डॉ० डी०एस० भण्डारी

विभागाध्यक्ष हिन्दी

बालगंगा महाविद्यालय सेन्दुल

केमर टिहरी गढ़वाल उत्तराखण्ड

9917699690,8126543239

drbhandari1970@gmail-com

राणा भवन, निकट जल संस्थान

चमियाला, टिहरी गढ़वाल।

पिन-249125



सारांश

पर्यावरण का अर्थ है वह बाहरी स्थिति जो किसी जीव के जीवन विकास और अस्तित्व को प्रभावित करती है। पर्यावरण शब्द संस्कृत भाषा के परि उपसर्ग और आवरण से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है ऐसी चीजों का समुच्च जो किसी व्यक्ति या जीवधारी को चारों ओर से आवृत किये हुए हैं। मानव के परिवेश में पाए जाने वाले जीव जन्तु पादप, वायु, जल तथा भूमि पर्यावरण की संरचना करते हैं। मुनियों के शांतिपूर्ण और स्वस्थ अस्तित्व के लिए स्वच्छ पर्यावरण आवश्यक है। पृथ्वी पर जीवन को पोषित करने के लिए प्रकृति द्वारा पर्यावरण उपहार स्वरूप दिया गया है। हम अपने जीवन को जारी रखने के लिए जो कुछ भी उपयोग करते हैं वह सब पर्यावरण के अन्तर्गत आता है। जैसे—पानी, सूरज की रोशनी, भूमि, पौधे, जानवर जगत अन्य प्राकृतिक चीजें।

भारतीय संस्कृति में पर्यावरण को विशेष महत्व दिया गया है। प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति में पर्यावरण के अनेक घटकों जैसे वृक्षों को पुण्य मानकर उन्हें पूजा जाता है। पीपल के वृक्ष को पवित्र माना जाता है, वट के वृक्ष की भी पूजा होती है। जल, वायु, अग्नि को भी देव मानकर उनकी पूजा की जाती है। समुद्र, नदी को भी पूजन करने योग्य माना गया है। गंगा, सिंधु, सरस्वती, यमुना, गोदावरी, नर्मदा जैसी नदियों को पवित्र मानकर पूजा की जाती है। धरती को भी माता का दर्जा दिया गया है। प्राचीन काल से ही भारत में पर्यावरण के विविध स्वरूपों की पूजा होती है।

पर्यावरण को पंचतत्व (धरती, जल, अग्नि, वायु, आकाश) द्वारा निर्मित प्राकृतिक जगत भी कह सकते हैं। यह दुनिया, यह पर्यावरण, यह प्रकृति अन्योन्याश्रित एवं अविभाज्य अंग की तरह कार्य करती है। पर्यावरण का यह स्वरूप संतुलित आकार—प्रकार हमारे अस्तित्व और विकास के लिए आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है। भारतीय वाङ्मय में अनादिकाल से ही प्रकृति की अर्चना—आराधना की अवनरत भावधारा बहती रही है। सुजलाम् सुफलाम् शस्य श्यामलम् वाली पृथ्वी से हमारे साहित्यकारों के आत्मीय सम्बन्ध रहे हैं। इस दृष्टि से गोस्वामी तुलसीदास का योगदान भी अप्रतिम माना जाएगा। तुलसी के काव्य में न केवल प्राकृतिक पर्यावरण की ही बात की गयी है अपितु इसमें मानसिक, चारित्रिक, आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं मनोवैज्ञानिक पर्यावरण की भी बात की गयी है।

वाल्मीकि रचित रामायण से लेकर गोस्वामी तुलसीदास रचित रामचरितमानस में प्रकृति चित्रण, पर्यावरण, संवेतना, पर्यावरण संरक्षण का विस्तृत उल्लेख किया गया है। वास्तव में हिन्दू धर्म एक विशिष्ट पूजा पद्धति, आस्था तक ही सीमित नहीं है वरन्

जैसा कि भारतीय सर्वोच्च न्यायालय ने भी हिन्दू धर्म को परिभाषित करते हुए कहा है कि हिन्दू धर्म एक जीवन शैली है। हिन्दू धर्म की इस जीवन शैली में धर्म तथा पर्यावरण में सह—सम्बन्ध माना गया तथा सूर्य, जल, वायु, वृक्ष, अग्नि सभी को देवता मानकर पूजनीय माना गया केवल यही नहीं विभिन्न देवी—देवताओं को वाहक के रूप में विभिन्न पशु—पक्षियों की भी आराधना की पद्धति विकसित की गयी।

गोस्वामी जी कहते हैं कि रामचरित मानस के समय पर्यावरण पर्यावरण प्रदूषण कोई समस्या नहीं थी। पृथ्वी के अधिकांश भू—भाग पर वन क्षेत्र होता था। शिक्षा के केन्द्र आबादी से दूर ऋषि—मुनियों के वनों में स्थित आश्रम हुआ करते हैं। श्रीरामचन्द्र जी ने भी अपने भाईयों साहित गुरु वशिष्ठ जी से उनके आश्रम में ही शिक्षा ग्रहण की थी। समाज में ऋषि—मुनियों का बड़ा सम्मान था। प्रतापी राजा—महाराजा भी इन ऋषि भी इन ऋषि—मुनियों के सम्मुख नतमस्तक होने में अपना सौभाग्य समझते थे। यही कारण है कि जब श्रीराम को बनवास हुआ तो उन्हें सर्वाधिक प्रसन्नता इसी बात की हुई थी कि उन्हें वन—क्षेत्र में ऋषि—मुनियों के सत्संग का लाभ प्राप्त होंगे।

“मुनिगण मिलन विशेष वन, सवहि भांति हित मोर”

रामराज्य धरती पर अनायास स्थापित नहीं किया जा सकता है, इसके लिए प्राकृतिक पर्यावरण संरक्षण की संस्कृति विकसित करने की आवश्यकता है। जैसा कि तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में वर्णन किया है कि श्रीरामचन्द्र जी के विवाहोपरांत बारात लौटकर अयोध्या आती है तो अयोध्या नगरी में विविध पौधों का रोपन किया जाता है—

सफल रसाल पूंगफल केरा

रोपहु बीथिन्ह पुर चहुँ फेरा।

गोस्वामी तुलसीदास जी के काव्य में हम जाते हैं कि विभिन्न प्राकृतिक अवयवों को मात्र उपभोग की वस्तु नहीं माना गया है बल्कि सभी जीवों तथा वनस्पतियों से प्रेम का सम्बन्ध स्थापित किया गया है। पर्यावरण के अवयवों का उपभोग निशिद्ध होकर आवश्यकतानुसार कृतज्ञता पूर्वक उपभोग की संस्कृति प्रतिपादित की गयी है। जैसे कि वृक्ष से फल तोड़कर खाना तो उचित है लेकिन वृक्ष को काटना अपराध है—

रीझि—खीझी गुरुदेव सिष सखा सुसाहिव साधु।

तोरि खाहु फल होई भलु तः काटे अपराधु।।

पौधा—रोपन की संस्कृति को विकसित करने के लिए श्रीराम ने अपने वन प्रवास के दिनों में सीता जी व लक्ष्मण जी के साथ विस्तृत पौधा—रोपन की ओर संकेत करते हुए कहते हैं कि—

तुलसी तरुवर विविध सुहाय।

कहूँ—कहूँ सिय लखन लगाय ।

शुभ अवसर पर पौधा—रोपन की संस्कृति में आज के भयावह संकट पर्यावरण प्रदूषण से मुक्ति संभव है। गोस्वामी जी ने राम राज्य में वनों की छटा और उनसे मिलने वाले उपहारों का सजीव चित्रण करते हुए वर्णन किया है कि—

फलहि फरहि सदा तरु कानन ।

रहहि एक सँग गन पंचानन ।।

खग मृग सहज बयरु बिसराई ।

सबन्हि परस्पर प्रीति बढाई ।।

कूजहि खग मृग नाना वृंदा ।

अभय चरहि वन करहि अनंदा ।।

सीतल सुरभि पवन बह मंदा ।

गुंजत अलि लै चलि मकरंदा ।।

लता विटप मार्गे मधु चवहीं ।

मन भावतो धेनु पय स्त्रवहीं ।।

ससि संपन्न सदा रह धरनी ।

त्रेता भई कृत जुग कै करनी ।।

प्रगटी गिरिन्ह बिबिध मनि खानि ।

जगदातमा भूप जग जानी ।।

सरिता सकल बहहि बर बारी ।

सीतल अमल स्वाद सुखकारी ।।

सागर निज मरजादों रहहीं ।

डारहि रत्न तटन्हि नर लहहीं ।।

सरसिज संकुल सकल तड़ागा ।

अति प्रसन्न दम दसा बिभागा ।।

बिधु महि पुर मयूखन्हि रवि तप जेतनेहि काज ।

मांगे बारिद देहि जल रामचंद्र के राज ।।³

गोस्वामी तुलसीदास जी रामचरितमानस में प्रयाग स्थित गंगा—यमुना—सरस्वती के पवित्र संगम के विभिन्न सामाजिक आध्यात्मिक शैक्षिक दृष्टिकोण से अत्यंत लोकोपकारी तथा उपयोगी कहा गया है। प्रयाग की भूमि, वन, उपवन, जलवायु, वनस्पतियाँ, समूचा पर्यावरण सब के लिए आकर्षक व रमणीय है। सभी को सुख—शांति प्रदान करने के लिए साधनों से सुसम्पन्न है। जहाँ प्रतिवर्ष माघ मास में भरद्वाज मुनि के आश्रम में संत—समागम होता है। ज्ञान—विज्ञान पर चर्चा के साथ ही दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र और लोक—कल्याण जैसे विषयों पर भी गहन चिंतन होता है—

ब्रह्म निरूपण धरम बिधि बरनहिं तत्व विभाग ।⁴

गोस्वामी जी कहते हैं कि अगर हमें जीवन में सुख—समृद्धि, सरसता—सुंदरता चाहिए तो पर्यावरण का संरक्षण

हमारी प्राथमिकताओं—प्रतिबद्धताओं में शामिल करना होगा। सेतुबंध के पूर्व भगवान राम द्वारा समुद्र से प्रार्थना करना—

। यद्यपि तदपि जीति असि गाई

विनय करिय सागर सन जाई ।।⁵

।। प्रथम प्रणाम कीन्ह सिर नाई ।

बैठे पुनि तहँ दर्भ डसाई ।।⁶

यह संदेश देता है कि हम प्रकृति के साथ मनमानी नहीं कर सकते हैं और यदि मनमानी करेंगे तो निश्चित रूप से प्रकृति हमारा साथ नहीं देगी और हमारा नुकसान होगा। रामेश्वरम में सेतुबंध और शिवलिंग की स्थापना के पश्चात भगवान राम कहते हैं कि—

जो गंगाजल आनि चढ़इहहि ।

सो सायुज्य मुक्ति नर पइहहिं ।।⁷

जहाँ देवसलिला गंगा जी के जल को मोक्ष अर्थात् जीवन के अनन्य परम सुख दिलाने वाला बताकर उनके संरक्षण की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। वहीं अयोध्या आगमन पर रामजी कहते हैं—

जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि ।

उत्तर दिसि बह सरयू पावनि ।।⁸

गोस्वामी जी आपने काव्य के माध्यम से यह बताने की चेष्टा करते हैं कि हमारे गांव—नगरों की समृद्धि एवं रमणीयता में नदियों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। जब पर्याप्त जल से भरे रहते हैं तो धरती सस्य—श्यामला होती है, वनस्पतियाँ समृद्ध होती हैं, धन—धान्य की प्रचुरता होती है और उन पर निर्भर सभी जीव—जन्तु, पशु—पक्षी और उनके माध्यम से मनुष्य भी प्रसन्न रहते हैं—

। गिरि वन नदी ताल छवि छाए ।

दिन—दिन प्रति सब होत सुहाए ।।

खग—मृग वृन्द आनंदित रहहीं ।

मधुप मधुर गुंजत छवि लहहीं ।।⁹

।। मज्जन कीन्ह पंथ श्रम गयऊ ।

सुचि जल पिअत मुदित सब भयऊ ।।¹⁰

प्रकृति में उपलब्ध औषधीय गुणों से भरपूर वनस्पति का ज्ञान मानव जाति के स्वास्थ्य के लिए परम आवश्यक है। और इस ज्ञान का सर्वोत्तम स्रोत रामायण तथा रामचरितमानस माने जा सकते हैं। लक्ष्मण—शक्ति प्रसंग दयोतक हे कि प्रकृति में उपलब्ध दुर्लभ बूटी संजीवनी से मृत प्रायः शरीर भी जीवित हो सकता है। युद्ध के समय लक्ष्मण जी के मुर्छित होने पर लंका से वैद्य सुखेन को बुलाया जाना और संजीवनी बूटी द्वारा लक्ष्मण जी का उपचार करना आदि का उल्लेख करते हुए तुलसीदास जी ने लिखा है—

।राम पदारबिंद सिर नाउरु आई सुखेन ।
कहा नाम गिरि औषधी जाहु पवन सुत लेन ।।¹¹
।। तुरत वैद तव कीन्ह उपाई ।
उठि बैठे लंछिमण हरषाई ।।¹²

बालकाण्ड में ही वर्णित एक एक अन्य प्रसंग में ऋषि विश्वामित्र अपनी यज्ञ रक्षा हेतु राजा दशरथ से याचना करके उनके पुत्रों राम और लक्ष्मण को अपने आश्रम लाते हैं। वहाँ पर कोई राजसी व्यवस्था नहीं है, वह तो गहन वन में स्थित एक तपस्वी की तपोभूमि है। जहाँ जीवन यापन वहाँ उपलब्ध वस्तुओं पर ही निर्भर है। गुरु विश्वामित्र ने उन्हें कुछ औषधियों से विभूषित किया था जो बिना भोजन तथा जल के शरीर को स्वस्थ रख सकती थी—

जाते लाग न छुधा पिपासा ।
अतुलित बल तनु तेज प्रकासा ।।¹³

मानव समाज और पर्यावरण का आपसी समन्वय अति आवश्यक है। इसके विपरित जब पर्यावरण प्रदूषण होता है तब मौसम में होने वाले नकारात्मक परिवर्तन सम्पूर्ण विश्व को ग्रसित करते हैं। मानवीय चेतना और पर्यावरण के मध्य वियोग उत्पन्न होने पर वातावरण का गरम होना स्वाभाविक है जो कि आज विश्व की सबसे बड़ी समस्या बन चुका है। इस सत्य को तुलसीदास जी ने राम जी तथा सीता जी के वियोग के प्रतीक स्वरूप समझाते हुए लिखा है कि—

कहेउ राम वियोग तव सीता ।
मो कहूँ सकल भए विपरीता ।।
नव तः किसलय मनहुँ कृसानु ।
कालनिसा सम निसि ससि भून ।।
कुबलय बिपिन कुंत बन सरिसा ।
बारिद तपत तेल जनु बरिसा ।।
जे हित रहे करत तेई पीरा ।
उरग स्वास सम त्रिबिध समीरा ।।¹⁴

तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में पर्यावरणीय सम्पन्नता की पराकाशता को छुआ है। पर्यावरण के संरक्षण के लिए मानव सतत प्रयास, समर्पण और परिश्रम आवश्यक है। जब व्यक्ति और पर्यावरण के मध्य संगम होता है तब प्रकृति का स्वरूप मानव के प्रति सकारात्मक होता है। जहाँ—जहाँ श्रीराम ने निवास किया वही प्रकृति का सौन्दर्य की अद्भूत छटा विकीर्ण हो गई—

जहाँ जहाँ जाहिं देव रघुराया ।
करहिं मेघ तहे तहे नम छाया ।।¹⁵
सुंदर बन कुसुमित अति शोभा ।
गुंजत मधुप निकर मधु लोभा ।

कंद मूल फल पत्र सुहाए ।
भए बहुत जब ते प्रभु आए ।।¹⁶

इस प्रकार हम पाते हैं कि तुलसी के काव्य में प्रकृति के विभिन्न अवयवों—नदी, पर्वत, विभिन्न प्रकार की वनस्पति, जीव—जंतु, पशु—पक्षी आदि को देवी—देवताओं से जोड़कर, हमारे जीवन में उनकी उपयोगिता आवश्यकता तथा महत्व को सिद्ध करके गोस्वामी जी ने पर्यावरण संतुलन की आवश्यकता पर भी विशद रूप से प्रकाश डाला है। इसके साथ-साथ देश और समाज के लिए पर्यावरण की उपयोगिता—अनिवर्यता के कारण इसके संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया है।

संदर्भ सूची

01. रामचरितमानस (2 / 41)
02. रामचरितमानस (2 / 6 / 6)
03. रामचरितमानस (7 / 23 / 1—10)
04. रामचरितमानस (1 / 44)
05. रामचरितमानस (5 / 50 / 8)
06. रामचरितमानस (5 / 51 / 7)
07. रामचरितमानस (6 / 3 / 2)
08. रामचरितमानस (7 / 4 / 4)
09. रामचरितमानस (3 / 14 / 2+3)
10. रामचरितमानस (4 / 25 / 3)
11. रामचरितमानस (6 / 55)
12. रामचरितमानस (6 / 62 / 2)
13. रामचरितमानस (1 / 209 / 8)
14. रामचरितमानस (5 / 15 / 1—4)
15. रामचरितमानस (3 / 7 / 5)
16. रामचरितमानस (4 / 13 / 1+2)

डॉ० राम टहल दास
रामजानकी ठाकुरवाड़ी उदा
(मधेपुरा)



सारांश

स्वामी विवेकानंद भारतीय धर्म, संस्कृति और समाज के महान उद्धारक थे। उनका जीवन और कार्य भारतीय समाज के लिए एक प्रेरणा स्रोत बना, जिसमें उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा के महत्व को पुनः स्थापित किया। स्वामी विवेकानंद का मानना था कि भारतीय धर्म और आध्यात्मिकता केवल पूजा-अर्चना तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य आत्मा के विकास के साथ-साथ समाज के उत्थान के लिए मार्गदर्शन करना है (Vivekananda, 1899)। स्वामी विवेकानंद ने यह सत्य प्रकट किया कि धर्म का वास्तविक रूप वही है जो व्यक्ति को आत्मज्ञान की प्राप्ति के साथ-साथ समाज की सेवा के लिए प्रेरित करता है। उनका विचार था कि धर्म केवल आत्मा के उच्चतम विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज की स्थिति सुधारने के लिए भी महत्वपूर्ण है। स्वामी विवेकानंद के अनुसार, धर्म की असली ताकत तब तक प्रकट नहीं होती जब तक वह व्यक्ति को मानवता की सेवा में संलग्न न कर दे।

स्वामी विवेकानंद का यह दृष्टिकोण विशेष रूप से अद्वैत वेदांत से उत्पन्न हुआ था, जो यह सिखाता है कि आत्मा और परमात्मा के बीच कोई भेद नहीं है (Radhakrishnan, 1953)। अद्वैत वेदांत के सिद्धांत के अनुसार, सभी जीवन रूप एक ही ब्रह्म से उत्पन्न होते हैं और यह एकता ही हमारे आत्मज्ञान का मूल है। स्वामी विवेकानंद का यह मानना था कि यदि हम इस तथ्य को समझ पाते हैं और अपने भीतर के आत्मा को जान पाते हैं, तो हम न केवल अपने जीवन को सार्थक बना सकते हैं, बल्कि समाज के लिए भी एक सकारात्मक योगदान दे सकते हैं। उनके विचार में, यह आत्मज्ञान हमें न केवल आत्म-साक्षात्कार की ओर प्रेरित करता है, बल्कि यह हमें समग्र समाज के लिए कार्य करने की प्रेरणा भी देता है।

स्वामी विवेकानंद का यह मानना था कि धर्म केवल आत्मज्ञान की प्राप्ति का साधन नहीं है, बल्कि यह समाज के सुधार के लिए भी एक महत्वपूर्ण बल का काम करता है (Sharma, 2010)। उन्होंने यह बताया कि जब व्यक्ति आत्मा का सही रूप जानता है और उसका जीवन उच्च उद्देश्य के लिए समर्पित होता है, तो वह समाज में व्याप्त समस्याओं जैसे जातिवाद, भेदभाव और अशिक्षा को समाप्त करने की दिशा में योगदान कर सकता है। उनके अनुसार, धर्म का उद्देश्य मानवता की सेवा करना है, और इसी दृष्टिकोण ने भारतीय समाज में समरसता और समानता की आवश्यकता को रेखांकित किया।

स्वामी विवेकानंद ने अपने प्रसिद्ध उद्धरण, मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है, के माध्यम से यही सिद्धांत प्रस्तुत किया कि धर्म का

उच्चतम रूप तब प्रकट होता है जब हम अपने निस्वार्थ सेवा के माध्यम से समाज के विकास में भाग लेते हैं (Vivekanand, 1899)। यह विचार भारतीय समाज में सुधार की दिशा में एक नई सोच लेकर आया, क्योंकि उस समय समाज में जातिवाद, भेदभाव और धार्मिक असहिष्णुता जैसी समस्याएँ आम थीं। स्वामी विवेकानंद ने भारतीय समाज में इन कुरीतियों को समाप्त करने के लिए धार्मिक सहिष्णुता, समानता और समरसता के सिद्धांतों को प्रस्तुत किया।

स्वामी विवेकानंद ने यह भी कहा कि जब तक हम समाज में व्याप्त असमानताओं और भेदभाव को समाप्त करने की दिशा में कार्य नहीं करेंगे, तब तक धर्म का वास्तविक रूप प्रकट नहीं हो सकता। उन्होंने भारतीय समाज में बदलाव लाने के लिए धार्मिक और दार्शनिक दृष्टिकोणों को अपनाने की आवश्यकता जताई। उनके अनुसार, समाज के हर वर्ग और जाति के लोगों को समान अधिकार और अवसर मिलना चाहिए, और यह केवल तभी संभव है जब हम अपने धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण को मानवता की सेवा के लिए बदलें।

इसके अलावा, स्वामी विवेकानंद का यह विचार भी था कि समाज में शिक्षा, नैतिकता और आध्यात्मिकता का समावेश किया जाए, ताकि हम एक ऐसा समाज बना सकें, जो न केवल भौतिक रूप से समृद्ध हो, बल्कि मानसिक और आत्मिक रूप से भी संपन्न हो (Sharma, 2010)। उन्होंने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के भीतर निहित सामर्थ्य को पहचानने और उसे समाज के हित में लगाने के लिए प्रेरित करना है। स्वामी विवेकानंद के अनुसार, एक सशक्त और समृद्ध समाज वही है, जो आत्मज्ञान, शिक्षा और मानव सेवा के सिद्धांतों को अपनाता है।

स्वामी विवेकानंद के विचार आज भी भारतीय समाज के लिए अत्यधिक प्रासंगिक हैं। उन्होंने धर्म और समाज के बीच एक स्थायी संबंध स्थापित किया, जो न केवल समाज के उत्थान के लिए आवश्यक है, बल्कि यह व्यक्ति की आत्मा के विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है। उनके विचार यह दर्शाते हैं कि धर्म केवल पूजा या धार्मिक अनुष्ठान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक जीवनदृष्टि है, जो व्यक्ति को न केवल आत्म-साक्षात्कार की ओर प्रेरित करती है, बल्कि उसे समाज के उत्थान के लिए भी कार्य करने की प्रेरणा देती है।

स्वामी विवेकानंद –शैक्षिक दृष्टिकोण

स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा को भारतीय ज्ञान परंपरा का केंद्रीय तत्त्व माना। उनके अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य केवल बाहरी जानकारी देना नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के भीतर निहित पूर्णता को प्रकट करना है (टपअमांददकं, 1899)। स्वामी विवेकानंद का यह

विचार भारतीय शिक्षा के मूल सिद्धांतों के साथ मेल खाता है, जिसमें गुरुकुल, योग, ध्यान और आत्मविकास की महत्वपूर्ण परंपराएँ शामिल हैं। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी प्राप्ति के लिए नहीं, बल्कि व्यक्ति के चरित्र और आत्मविकास के लिए होना चाहिए।

विवेकानंद ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में कुछ अहम बदलावों की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य व्यक्तित्व के समग्र विकास को बढ़ावा देना है, जिसमें शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास शामिल हैं (Bhavanani, 2015)। भारतीय शिक्षा प्रणाली में गुरुकुल परंपरा, योग और ध्यान के अभ्यास को पुनर्जीवित करने का उनका दृष्टिकोण शिक्षा को एक नया आयाम देने वाला था। उन्होंने यह भी कहा कि शिक्षा एक दिव्य प्रक्रिया है, जिसमें मानवता के सेवा भाव को सर्वोच्च स्थान मिलना चाहिए।

स्वामी विवेकानंद के विचारों में आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ भारतीय शिक्षा के पारंपरिक तत्वों का समावेश था। यह विचार उनके भारतीय शिक्षा के समग्र दृष्टिकोण को स्पष्ट करता है, जो एक सशक्त और संतुलित समाज की नींव रखता था (Nikhilanand, 1953)। इसके अलावा, विवेकानंद ने शिक्षा के क्षेत्र में अपनी आस्थाओं को लेकर अन्य महापुरुषों से भी संवाद किया, जैसे कि महात्मा गांधी और गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर। वे शिक्षा को केवल सूचना देने का माध्यम मानने के बजाय इसे आत्मनिर्माण और चरित्र निर्माण के रूप में देखते थे।

सामाजिक समरसता: स्वामी विवेकानंद का दृष्टिकोण

स्वामी विवेकानंद ने भारतीय समाज में जातिवाद, धर्म, और लिंग के आधार पर भेदभाव को समाप्त करने के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा के समरसता और समानता के विचारों को प्रस्तुत किया। उनके अनुसार, भ्रान्त सेवा ही ईश्वर सेवा है, यह विचार समाज में व्याप्त असमानताओं को समाप्त करने के लिए प्रेरणादायक था (Vivekanand, 1899)। उनका मानना था कि समाज में समानता की आवश्यकता है, और इसके लिए सभी को एक दूसरे के अधिकारों और स्वतंत्रता का सम्मान करना चाहिए। स्वामी विवेकानंद के दृष्टिकोण में सामाजिक समरसता का यह सिद्धांत अद्वैत वेदांत से प्रेरित था, जो यह मानता है कि सभी जीवन रूप एक ही परमात्मा के अंश हैं। इसके अलावा, विवेकानंद ने भारतीय समाज में शारीरिक और मानसिक विकास को बढ़ावा देने के लिए योग और ध्यान की परंपराओं को जीवन का हिस्सा बनाने की वकालत की। उनका यह मानना था कि केवल बाहरी समृद्धि ही नहीं, बल्कि आत्मिक समृद्धि भी समाज में सामूहिक शांति और समरसता का कारण बनेगी (Sharma, 2010)।

वैश्विक दृष्टिकोण: स्वामी विवेकानंद की विश्वसनीयता और भारत का योगदान

स्वामी विवेकानंद ने भारतीय ज्ञान परंपरा को पश्चिमी समाज के साथ जोड़ने का प्रयास किया। उनका प्रसिद्ध उद्घरण, सभी धर्म सत्य के अलग-अलग रूप हैं, शिकागो धर्म संसद (1893) में भारतीय दर्शन और संस्कृति को प्रस्तुत करते हुए व्यक्त हुआ था। विवेकानंद ने धर्म, संस्कृति, और भारतीय ज्ञान परंपरा को पश्चिमी दुनिया के सामने प्रस्तुत किया और यह बताया कि भारतीय धर्म और दर्शन समग्रता, सहिष्णुता और मानवता के संदेश देते हैं।

स्वामी विवेकानंद का यह वैश्विक दृष्टिकोण न केवल भारतीय समाज को प्रोत्साहित करता था, बल्कि पश्चिमी विचारकों से भी समर्थन प्राप्त करता था। उन्होंने भारतीय संस्कृति और दर्शन को एक सशक्त मंच प्रदान किया और पश्चिमी दुनिया को यह समझाया कि भारत के पास अपने आध्यात्मिक और दार्शनिक दृष्टिकोणों के माध्यम से समग्र विश्व को दिशा देने की क्षमता है (Vivekananda, 1899)।

विवेकानंद के दर्शन में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता—स्वामी विवेकानंद के विचार आज की शिक्षा, समाज और धर्म में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते हैं। उनके विचारों में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है, क्योंकि वे मानते थे कि शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी प्रदान करना नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के व्यक्तित्व और चरित्र का निर्माण करने का माध्यम होना चाहिए। वे यह कहते थे कि शिक्षा वह है जो व्यक्ति के भीतर निहित पूर्णता को प्रकट करती है (Vivekananda, 1899)। स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा को एक समग्र प्रक्रिया के रूप में देखा, जो न केवल बौद्धिक विकास बल्कि मानसिक और आत्मिक विकास पर भी जोर देती है। उनका यह दृष्टिकोण आज की शिक्षा प्रणाली में नैतिकता, चरित्र निर्माण और आत्मविकास की आवश्यकता को रेखांकित करता है (ठींअंददप, 2015)। स्वामी विवेकानंद का यह विश्वास था कि किसी भी समाज के वास्तविक विकास के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षा केवल बाहरी ज्ञान नहीं, बल्कि आत्म-उन्नति की दिशा में भी मार्गदर्शन प्रदान करे।

आज की शिक्षा प्रणाली, जो अक्सर परीक्षा आधारित और तकनीकी ज्ञान पर केंद्रित होती है, में विवेकानंद के दृष्टिकोण के अनुरूप बदलाव की आवश्यकता है। उनका मानना था कि एक व्यक्ति को जीवन के उद्देश्य को समझने और अपने भीतर की आंतरिक शक्ति को पहचानने के लिए शिक्षा में नैतिकता और चरित्र निर्माण पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए

(Sharma, 2010)। उनके अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी का संचयन नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति को अपने उच्चतम रूप में विकसित करने के लिए प्रेरित करना चाहिए, जिससे वह समाज में सकारात्मक योगदान दे सके (Vivekananda, 1899)। इस दृष्टिकोण के लागू होने से न केवल व्यक्ति का आत्मविकास संभव होता है, बल्कि समाज में एक नैतिक और जागरूक नागरिक का निर्माण भी होता है।

स्वामी विवेकानंद का एक और अत्यंत प्रासंगिक विचार था, वह था समाज में असमानता और भेदभाव को समाप्त करने के लिए समरसता और समानता के विचारों को लागू करना। उनका यह सिद्धांत न केवल भारतीय समाज के लिए, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी बेहद महत्वपूर्ण है। स्वामी विवेकानंद का मानना था कि समाज में भेदभाव और असमानता तभी समाप्त हो सकते हैं, जब हम हर व्यक्ति को समान दृष्टि से देखें और समाज में समरसता स्थापित करें। उन्होंने कहा था, 'मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है', जो इस विचार को स्पष्ट करता है कि समाज की वास्तविक सेवा समानता, भाईचारे और सहयोग पर आधारित होनी चाहिए (टपअमांदंदकं, 1899)। इस दृष्टिकोण में विशेष रूप से जातिवाद, लिंगभेद और अन्य प्रकार के भेदभाव को समाप्त करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया था, जो आज भी हमारे समाज के प्रमुख मुद्दे हैं।

इसके अलावा, स्वामी विवेकानंद के विचारों में धार्मिक सहिष्णुता का महत्वपूर्ण स्थान था। उनका विश्वास था कि सभी धर्म सत्य के विभिन्न रूप हैं और एक दूसरे का सम्मान करना चाहिए। यह विचार आज के समय में और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गया है, क्योंकि आज की दुनिया में धार्मिक और सांस्कृतिक विविधताएँ अधिक बढ़ी हैं। स्वामी विवेकानंद ने यह कहा था, 'सभी धर्म सत्य के अलग-अलग रूप हैं', जो एक गहरी समझ और धार्मिक सहिष्णुता का प्रतीक है (त्कीतपीदंद, 1953)। इस सिद्धांत ने न केवल भारतीय समाज में, बल्कि पूरे विश्व में धार्मिक सहिष्णुता और परस्पर सम्मान की भावना को बढ़ावा दिया। आज के समाज में, जहाँ धार्मिक और सांस्कृतिक मतभेदों के कारण संघर्ष होते हैं, विवेकानंद के विचार समाज में शांति, समझ और सहयोग की आवश्यकता को स्पष्ट करते हैं।

स्वामी विवेकानंद का दृष्टिकोण आज भी समाज में समानता, समरसता, और धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा देने के लिए प्रेरणास्त्रोत है। उनके विचारों का अनुसरण करके हम एक सशक्त, जागरूक और समानता पर आधारित समाज की दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं।

चुनौतियाँ और संभावनाएँ—

स्वामी विवेकानंद के विचार आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं, और उनकी शिक्षाएँ समाज, शिक्षा, धर्म, और आध्यात्मिकता के क्षेत्र में मार्गदर्शन प्रदान करती हैं। हालाँकि, उनके विचारों की व्याख्या और क्रियान्वयन में कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ सामने आती हैं, जिन्हें आज के संदर्भ में हल किया जाना आवश्यक है। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए उनके दृष्टिकोण को समझना और आधुनिक युग में लागू करना आवश्यक है।

एक प्रमुख चुनौती यह है कि भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक संदर्भ में कैसे व्याख्यायित किया जाए। स्वामी विवेकानंद ने भारतीय दर्शन और संस्कृति के मूल तत्वों को पश्चिमी दृष्टिकोण के साथ जोड़ा, लेकिन आज भी भारतीय दर्शन के गहरे तत्वों को समकालीन समस्याओं और आधुनिक जीवन शैली के अनुसार ढालने में कठिनाई होती है (Vivekananda, 1899)। भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक शिक्षा, विज्ञान और सामाजिक सुधारों के साथ जोड़ने की आवश्यकता है, ताकि यह आज के समाज में प्रासंगिक बने। विवेकानंद का यह कहना था कि भारतीय संस्कृति में निहित आत्मा और ब्रह्म का सिद्धांत केवल धार्मिक ही नहीं, बल्कि यह मानसिक और सामाजिक सुधार के लिए भी एक प्रेरणास्त्रोत हो सकता है (Radhakrishnan, 1953)।

दूसरी चुनौती जो सामने आती है, वह है शिक्षा प्रणाली में नैतिकता का अभाव। स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा को केवल ज्ञान के रूप में नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण के रूप में देखा था। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति की मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक पूरी तरह से उन्नति करना चाहिए (Vivekananda, 1899)। आज की शिक्षा प्रणाली में इस प्रकार की समग्र दृष्टि का अभाव है, और इससे नैतिकता, संस्कार और चरित्र निर्माण की प्रक्रिया कमजोर हो गई है। स्वामी विवेकानंद ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन के लिए जिस समग्र दृष्टिकोण की वकालत की थी, वह आज भी प्रासंगिक है। उन्होंने यह बताया कि शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि व्यक्ति के भीतर निहित पूर्णता और आंतरिक शक्ति को जागृत करना है (Sharma, 2010)। इस दृष्टिकोण को आज की शिक्षा में लागू करना एक बड़ी चुनौती है, क्योंकि वर्तमान में शिक्षा मुख्य रूप से परीक्षा आधारित और तकनीकी ज्ञान पर केंद्रित हो गई है, जबकि विवेकानंद ने इसे चरित्र निर्माण और आत्मविकास के रूप में देखा था।

हालाँकि, इन चुनौतियों के बावजूद, स्वामी विवेकानंद के विचारों को समाज और शिक्षा में लागू करने की अपार

संभावनाएँ हैं। उनके दृष्टिकोण में समाज सुधार और शिक्षा की एक समग्र दृष्टि प्रस्तुत की गई है, जो आज के समय में अत्यंत आवश्यक है। उनका सिद्धांत यह था कि समाज में सुधार केवल शिक्षा और समर्पण से संभव है, और यह बदलाव व्यक्तित्व की उन्नति से ही उत्पन्न हो सकता है (Bhavanani, 2015)। उनके विचारों का अनुसरण करके हम एक ऐसे समाज की स्थापना कर सकते हैं, जो आध्यात्मिक रूप से समृद्ध और सामाजिक रूप से न्यायपूर्ण हो।

इसके अतिरिक्त, स्वामी विवेकानंद का संदेश आज भी वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण है, क्योंकि उनका ध्यान हमेशा समाज की समृद्धि और उन्नति के लिए आत्मज्ञान, समरसता, और मानवता के सिद्धांतों को बढ़ावा देने पर था (Nikhilananda, 1953)। उनका यह विश्वास था कि समाज का वास्तविक विकास तभी संभव है जब हम अपनी आध्यात्मिक चेतना को जागृत करते हुए दूसरों की सेवा में लगें। उनका यह विचार आज भी दुनिया भर में प्रेरणा देता है, और विभिन्न सांस्कृतिक और धार्मिक पृष्ठभूमियों वाले देशों में उनके विचारों को अपनाने से वैश्विक एकता और समृद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए जा सकते हैं।

निष्कर्ष

स्वामी विवेकानंद के दर्शन में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है, जो आज भी शिक्षा, धर्म, समाज और आध्यात्मिकता के क्षेत्रों में मार्गदर्शन प्रदान करती है। उनका जीवन और कार्य भारतीय संस्कृति और दर्शन के पुनःद्वार के प्रतीक रहे हैं, और उनके विचार न केवल भारत के लिए, बल्कि समग्र वैश्विक समाज के लिए महत्वपूर्ण हैं (टपअमांदंदक, 1899)। स्वामी विवेकानंद ने भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत किया, जो आज भी हमारे समय में समाज सुधार और व्यक्तिगत उत्थान के लिए प्रेरणास्त्रोत बना हुआ है।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार, भारतीय ज्ञान परंपरा का उद्देश्य केवल आत्मज्ञान की प्राप्ति नहीं था, बल्कि इसका उद्देश्य समाज में बदलाव लाना और एक सशक्त समाज की नींव रखना था। उनका मानना था कि धर्म केवल पूजा नहीं है, यह आत्मा का विकास है, और इस दृष्टिकोण ने भारतीय समाज में धर्म के प्रति एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया (Vivekananda, 1899)। उनके विचारों में भारतीय दर्शन के अद्वैत वेदांत का गहरा प्रभाव था, जो यह सिखाता है कि आत्मा और परमात्मा के बीच कोई भेद नहीं है (Radhakrishnan, 1953)। विवेकानंद का यह विश्वास था कि आत्मज्ञान न केवल व्यक्तिगत उन्नति के लिए, बल्कि समाज की

सेवा के लिए भी आवश्यक है।

स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा को एक सर्वोत्तम साधन के रूप में देखा, जिससे व्यक्ति के भीतर निहित पूर्णता प्रकट हो सकती है (Vivekananda, 1899)। उनका यह दृष्टिकोण आज की शिक्षा प्रणाली में चरित्र निर्माण, नैतिकता और आत्मविकास के महत्व को रेखांकित करता है। भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य केवल बाहरी ज्ञान नहीं, बल्कि आत्मिक और मानसिक विकास भी था। इस दृष्टिकोण ने भारतीय समाज में योग, ध्यान और समग्र शिक्षा को फिर से प्रासंगिक बनाया। विवेकानंद का यह विचार आज भी हमारे समय में शिक्षा के उद्देश्य पर विचार करने के लिए महत्वपूर्ण है (Bhavanani, 2015)।

विवेकानंद के विचारों ने समाज में जातिवाद, भेदभाव और असमानताओं को समाप्त करने के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा के सिद्धांतों को प्रस्तुत किया। उनके अनुसार, मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है, यह विचार न केवल भारतीय समाज में सुधार का प्रेरणा स्रोत बना, बल्कि यह समरसता और समानता के सिद्धांत को भी बढ़ावा देता है (Vivekanand, 1899)। स्वामी विवेकानंद का यह सिद्धांत आज भी हमारे समाज में व्याप्त भेदभाव को समाप्त करने और सभी नागरिकों के लिए समान अधिकार और अवसर की ओर मार्गदर्शन करता है (Sharma, 2010)।

स्वामी विवेकानंद ने भारतीय ज्ञान परंपरा को पश्चिमी दुनिया के समक्ष प्रस्तुत करते हुए यह बताया कि भारतीय दर्शन और संस्कृति में वैश्विक दृष्टिकोण है। उनका उद्घरण, सभी धर्म सत्य के अलग-अलग रूप हैं, इस दृष्टिकोण को सशक्त बनाता है, जो आज की वैश्विक धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता को स्वीकार करने का संदेश देता है (Vivekananda, 1899)। इस दृष्टिकोण ने भारतीय दर्शन को पश्चिमी समाज में मान्यता दिलाई और यह दिखाया कि भारतीय ज्ञान परंपरा न केवल भारत के लिए, बल्कि समग्र मानवता के लिए महत्वपूर्ण है।

स्वामी विवेकानंद के दर्शन का आज भी भारतीय समाज में गहरा प्रभाव है, और उनके विचारों को अपनाना न केवल भारत के लिए, बल्कि पूरी दुनिया के लिए एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है। उनके दृष्टिकोण से भारतीय ज्ञान परंपरा को समझने और उसे लागू करने से हम एक संतुलित और समृद्ध समाज की दिशा में अग्रसर हो सकते हैं (Nikhilananda, 1953)।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. Vivekananda] Swami- (1899)- Complete Works of Swami Vivekananda- Advaita Ashrama] Kolkata-
2. Bhavanani] Ananda Balayogi- (2015)- Vivekananda's Philosophy in Modern Education-

3. Radhakrishnan] S- (1953)- Indian Philosophy- OÙford University Press-
4. Sharma Arvind- (2010) Vivekananda and the Indian Renaissance- Motilal Banarsidass Publishers-
5. Nikhilaananda Swami- (1993) The Life of Vivekananda and the Universal Gospel- Advaita Ashrama-
6. Sivananda] Swami- (1956)- The Complete Works of Swami Sivananda- The Divine Life Society-
7. Bose, D- (1995)- Swami Vivekananda: A Reassessment- The Bhavan*s Journal-
8. Vivekananda Swami- (2004)- The Eternal Companion: The Life and Teachings of Swami Vivekananda-Advaita Ashrama-
9. De, S- (2012)- Vivekananda*s Vision on Education and its Impact- International Journal of Education and Research-
10. Dasgupta S- (2004)- A History of Indian Philosophy- Cambridge University Press-
11. Ganguli] — (2010)- The Philosophy of Swami Vivekananda- Abhinav Publications-
12. Natarajan] P- (2005)- Vivekananda*s Educational Philosophy: The Indian ConteÙt- Journal of Educational Philosophy-
13. Sen] A- ¼1997½- Development as Freedom- OÙford University Press-
14. Tattvabodhini Sabha- (1907)- Collected Works of Swami Vivekananda-
15. Thakur] S- (2018)- Social Reform and Education in the Thought of Swami Vivekananda- Indian Journal of Social Research-

डॉ० गिरिराज सिंह

असि.प्रोफेसर

(राजनीति विज्ञान)

महायोगी गुरु गोरखनाथ राजकीय

महाविद्यालय बिथ्याणी यमकेश्वर पौड़ी उत्तराखंड



शोध सार:

प्रवासी साहित्य विदेशी भूमि पर रह रहे प्रवासी लोगों द्वारा रचित वह साहित्य है जिसमें प्रवासी लोगों के जीवन और दशा का चित्रण किया गया है। विदेशों में अपने-अपने मूल स्थान को छोड़कर बस चुके लोगों को ‘प्रवासी’ के रूप में जाना जाता है। भारत देश से हर वर्ष हज़ारों की संख्या में लोग विदेश प्रवास के लिए देश छोड़कर जा रहे हैं। अपने मूल स्थान और संस्कृति से दूर अनजाने व अलग परिवेश और वातावरण में रहने पहुँचे ये लोग वहाँ के अनुरूप जीवन जीने में अनेक कठिनाइयों का अनुभव करते हैं। इनकी अनेक समस्याओं का चित्रण प्रवासी साहित्यकारों ने अपने लेखों, कविताओं, कहानियों, उपन्यासों आदि में भरपूर रूप से किया है। इन प्रवासी साहित्यकारों ने जो विश्व के अलग-अलग देशों में बस गए हैं, अपने व्यक्तिगत अनुभवों व अपने जैसे लोगों का यथार्थ चित्रण कर विश्व पाठकों का ध्यान अपनी तरफ खींचते हैं। इसके साथ-साथ इन साहित्यकारों द्वारा युगीन परिस्थितियों व ज्वलंत समस्याओं जिनसे पूरे विश्व पर प्रभाव पड़ता है का भी बड़ा ही चिंतनपरक वर्णन मिलता है। ऐसी ही एक सजग और जागरूक लेखिका डॉ० अंजना संधीर हैं। अंजना जी ने न केवल अपनी भारतीय, प्रवासी समुदाय की समस्याओं व साथ ही साथ वैश्विक रूप से प्रभावित करने वाली अनेक ज्वलंत मुद्दों का चित्रण अपने प्रवासी हिन्दी काव्य में किया है।

अंजना संधीर के प्रवासी काव्य में वर्णित वैश्विक समस्याएँ – अंजना संधीर अमरीका की प्रवासी हिंदी साहित्यकारा हैं, वह एक मनोविश्लेशक भी हैं और किसी भी बात या समस्या की तह तक जाने की प्रवृत्ति हमें उनके प्रवासी साहित्य में भी दिखाई देती है। अंजना जी का काव्य प्रवासी मन को तो दिखाता ही है साथ ही पूरे विश्व के लिए ध्यान देने आवश्यक मुद्दों व समस्याओं का भी बेबाकी से चित्रण करता है।

हम अंजना जी के वैश्विक विषयों के प्रति चिंतन निम्नलिखित बिंदुओं के रूप में समझ सकते हैं—

1. आतंकवाद व युद्ध के प्रति चिंता:— धार्मिक उन्माद में अंधा व्यक्ति मानव को मानव नहीं समझता अपने पागलपन में वह धर्म के प्रति इतना कट्टर हो जाता है कि स्वयं मनुष्य होकर भी अपने ही जैसे मनुष्यों को मौत के घाट उतार देता है। ऐसी ही भयावह स्थिति पर चिंता व्यक्त करती हुई कवयित्री 11 सितम्बर 2001 में अमरीका में ‘वर्ल्ड ट्रेड सेंटर’ के टॉवरों को ध्वस्त करने और बेगुनाह लोगों की हत्या करने वाले आतंकवादियों की घोर निंदा करते हुए उन्हें

मानता का शत्रु व बर्बर पशु के समान मानती हैं। वह अपनी कविता ‘वे सिर्फ टॉवर नहीं थे’ में कहती हैं—

“ये कैसे हाथ हैं, जो लील गए इनको

ज्ला गए, बुझा गए, मिटा गए रंगीन

सपनों कोकृ

ओ वहशियों! काँपे नहीं तुम...?

हिले नहीं तुम...?

इन्हें बरबाद करते हुए

दिल... कहाँ था तुम्हारा?”¹

आतंकवाद और युद्ध दोनों ही मानवता के शत्रु हैं इनका उद्देश्य केवल विनाश करना है। अंजना जी कहती हैं कुछ लोग अपनी कट्टरता को धर्मयुद्ध कह कर केवल विनाश करना जानते हैं जो हमारे समाज व हमारी जाति के लिए बहुत खतरनाक सिद्ध होते हैं। ऐसे आतंकवादी हमले जीवन भर के लिए लोगों के मन में कभी न भरने वाले जख्म व डर भर जाते हैं। हमारी एकता अखण्डता को खण्डित करने का यह घिनौना कृत कभी स्वीकृत नहीं किया जा सकता।

भारत में कश्मीर में रोज-रोज होने वाले आतंकी हमलों व युद्ध के कारण हज़ारों बेगुनाह लोगों की चिंताएँ जल रही हैं कितने ही जवानों को बम-धमाकों में धोखे से उड़ा देते हैं। जीवन का सृजन, विकास व खुशहाली के दुश्मन हैं ये सनकी लोग। अपनों की लाशें देखकर अपनों की क्या हालत होती है उस मार्मिक व हताश करने वाली स्थिति का चित्रण अपनी कविता ‘ये कैसे ख़त आने लगे हैं’ में एक सैनिक के परिवार की स्थिति पर अंजना जी लिखती हैं—

“ख़त प्रेम का संदेश लाते थे,

संधि की बात करते थे

और लाते थे कभी युद्ध का पैगाम,

बजाते थे युद्ध की बिगुल

पर खत... कभी मौत बन कर नहीं आए

कभी डर नहीं लगा ख़तों से

ये आज कैसे ख़त आने लगे हैं?

जिन में खुशबू नहीं ज़हर है

जिन्हें पकड़ने से, खोलने से लगता है डर?

ये कैसे आत्मघाती परम्परा शुरू की हैं

ओ वहशियों तुम ने?”²

विश्व शान्ति व मानवता के दुश्मन आतंकवाद व आतंकवादियों के विषय में अंजना जी ने अपने भावों को कविता का

रूप देकर इनके विरुद्ध अपना मत प्रस्तुत किया है सन् 2015 में हुए पेरिस हमलों की निंदा करती हुई अंजना जी लिखती हैं—

“ओ आतंक के वहशी

देखो अपना चेहरा कुरूप है कितना।”³

अंजना जी प्रार्थना करती हैं कि ऐसे मानवता के शत्रु बन वह स्वयं ही सर्वनाश की तरफ बढ़ रहे हैं उन्हें मानव पर दया करनी चाहिए अपने हथियार डाल कर अपने मन में दया व सेवाभाव जगाना चाहिए। अपने कृत्यों को समाप्त कर सच्ची मानवता की सेवा करने के लिए प्रेरित व संदेश देते हुए कहती हैं—

“मत करो अमानवीय व्यवहार, अत्याचार

रहने दो मानव को जिंदा

और धरती को यूँ ही हरियाली।”⁴

फिर इस प्रकार हम देखते हैं कि अंजना जी ने अपने काव्य में युद्ध व आतंकवाद पर अपनी तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है और इसे एक वैश्विक समस्या बताया है जिसका हल सब देशों को मिलकर खोजना चाहिए।

2. प्रवासी लोगों की समस्याओं से संसार को अवगत

कराना:— अंजना जी ने स्वयं के भोगे प्रवास अनुभवों में व प्रवासी जीवन का चित्रण करते हुए प्रवासी लोगों से सम्बंधित अनेक समस्याओं से संसार को अवगत कराया है कि विदेशी भूमि पर हर प्रवासी को सांस्कृतिक टकराव की समस्या, रंगभेद व नस्लवाद के भेदभाव व अवसादपूर्ण एकांकी जीवन की समस्या से गुजरना पड़ता है। अंजना जी ने बड़ी ही कुशलता से इन विषयों पर अपनी लेखनी चलाई है। वास्तव में अपने मन में भरे उस दुःख व अपमान जो कि विदेशों में स्वदेशियों का झेलना पड़ता है का चित्रण कर समस्त संसार में रह रहे प्रवासियों के जीवन की विडम्बना से सबको परिचित कराया है। अंजना जी लेखन व कविताओं में प्रवासी जीवन के सच्चे चित्रण पर डॉ० बजरंग शर्मा जी लिखते हैं, “अंजना जी आपका यह संकलन वास्तव में अमेरिका में रह रहे अप्रवासी भारतीयों की आंतरिक पीड़ा एवं अन्तर्द्वन्द्व जनित उनकी त्रासदी का एक ऐसा दस्तावेज है, जिसे आज क्या, आने वाले दिनों में भी हर वह व्यक्ति पढ़ना चाहेगा जो किसी न किसी रूप में वहाँ से सम्बन्ध है या होना चाहता है।”⁵— ‘प्रवासी’ जीवन विदेशी भूमि पर अनेक अन्तर्द्वन्द्वों का सामना करते हुए आगे बढ़ता है ये लोग कभी भी मूल निवासी के समान सम्मान व आदर नहीं पा पाते

इसलिए अपनी स्थिति को समझ कर अपने-अपने दायरों तक सीमित रहते हैं कवयित्री इस स्थिति का चित्रण करती हुई लिखती हैं—

“न हम गोरे हैं

न हम काले हैं

हम साँवले—सलोन देसी मतवाले हैं

जिनसे ये भी नफरत करते हैं,

द्वेष रखते हैं

अब हम इनकी संस्कृति अपनाएँ

या अपनी संस्कृति को बचाएँ

मुख्यधारा में आए या न आए

इनकी नजरों में मजदूर ही हैं

न सक्षम, न सुरक्षित

पर जीने के लिए मजबूर हैं।”⁶

विदेशी संस्कृति और देशी संस्कृति के टकराव के कारण और अपने अस्तित्व को बचाने के लिए प्रवासी समाज को अनेक समझौते करने पड़ते हैं। अपना पूरा जीवन प्रवास में बिता देने पर भी कभी अपनी संस्कृति को पूर्ण रूप से विलुप्त नहीं कर पाते हैं, वहीं नस्लीय भेद—भाव, रंगभेद आदि से अपमानित होना पड़ता है। अंजना जी अमरीकी लोग पर तंज कसते हुए कहती हैं कि प्रवासियों को धन, आवास, रंगीन सपने व सुविधाओं का लालच देकर अपने देश में सस्ते मजदूर पाने की लालसा में अपनाया जाता है जिनसे सिर्फ काम लिया जाता है सम्मान नहीं। ये देश नस्लीय भेदभाव व रंगभेद के कारण अपने ही देश के मूल लोगों का दमन कर देते हैं तो प्रवासियों को क्या अधिकार देंगे? अंजना जी लिखती हैं,

“ये तो गोरे हैं

ये जानते हैं सब कुछ

इसीलिए देते हैं इतनी सुविधाएँ

अपने दासों को

वरना....

खुद जीने के लिए

अपने ही देश में पकड़—पकड़ कर

बुरी तरह मार डाला हो जिन्होंने

यहाँ के स्थाई रेड इंडियन लोगों को

वे हमें सुविधाएँ देंगे?”⁷

अंजना जी ने अपनी कविताओं के माध्यम से प्रवासियों के अधिकारों व उनकी समस्याओं को हमारे सम्मुख लाकर चिंतन का विषय बना दिया है।

अति आधुनिकता से प्रकृति, पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं का चित्रण

अंजना संधीर जी का साहित्य जहाँ मन के कोमल भावों की अभिव्यक्ति बड़ी सूक्ष्मता व मनोवैज्ञानिकता से करने में सक्षम हैं वहीं वैश्विक समस्याओं पर अपनी जागरूकता व सर्तकता से भी पाठको पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। अंजना जी ने सामाजिक घटनाओं और परिस्थितियों पर चिंतन करते हुए अपनी कविताओं के माध्यमों से हमारा ध्यानाकर्षित करने का प्रयास किया है। अंजना जी ने मानव के विकास के नाम पर की जा रही प्रकृति व पर्यावरण की अनदेखी पर चिंता व्यक्त करते हुए कहती है—

“बना के सिमेंट की अट्टालिकायें

जला के बत्तियाँ उसमें

करते हो विकास की बातें

लगा के एसी, करते हो अपने आप को ठण्डा

तुम क्यों भूल रहे हो

तुम्हारे एसीओ की गर्म हवाएँ, गर्म वातावरण को

और भी गर्म कर रही हैं।”⁸

मानव जीवन को बिना प्रकृति संतुलन व संरक्षण के बचा पाना मुश्किल हो जाएगा। यह अंधा विकास हमारी पृथ्वी और पर्यावरण को प्रदूषित कर हमें बिमार कर हमें नष्ट कर देगा। कवयित्री हमें अपने पर्यावरण और प्रकृति के लिए हमारी जिम्मेदारी व जागरूक होने का संदेश देते हुए अधिक—से—अधिक पेड़ लगाने व प्रकृति से प्रेम करने की शिक्षा देती हुई कहती हैं—

“निकलो इस दम घोटु संस्कृति से बाहर

और लगाना शुरू करो नये पेड़

और करो बंद काटना घने पेड़ो को,

जंगलो को क्योंकि...

ये ही तुम्हारे प्राण रक्षक हैं

न बनाओ इनको जहरीला इतना

कि तुम्हारी पीढ़ियां जी भी न पायें।”⁹

अंजना जी प्रकृति प्रेमी है उन्होंने प्रकृति के सौंदर्य से जीवन में आशा, आकांक्षा और सकारात्मक शक्ति का आभास होता है। आधुनिकता की होड़ में चारों ओर बिजली से जलती रंगीन रोशनी से चाहे कितना भी चकाचौंध कर ले पर प्रकृति की चाँदनी सी सौम्यता व शीतलता कभी नहीं दे पाएगी इसी अनुभव को जीने व

प्रकृति के नजदीक आने के लिए प्रेरित करती हुई कहती हैं—

“छोड़ती नहीं अपनी शीतलता

तुम कभी अपने मन के कमरों

से झाँको

चाहे आधी रात को ही सही

टहलने का दिल हो जायेगा।”¹⁰

आज मानव यांत्रिक जीवन व भौतिक सुखों की लालसा में दिन—रात प्रकृति के विनाश पर उतारू हैं। अंजना जी अति विकास को पर्यावरण व प्रकृति के विनाश का कारण मानती हैं। प्रकृति व विकास का संतुलन यदि हमने नहीं किया तो मानव अस्तित्व के लिए गहरा संकट पैदा हो जाएगा। अपनी चिंता प्रकट करती हुई वह लिखती हैं—

“वातावरण को बचाना होगा

समुन्दरो को साफ रखना होगा

वर्ना प्लास्टिक भरता जा रहा हैं

जलचरों में

जो धीरे—धीरे इन्सान को भी खोखला

करता जा रहा हैं।”¹¹

अपने वातावरण को फिर से स्वच्छ नहीं बनाया तो हम संकट में आ जाएंगे प्रकृति संरक्षण का संदेश देती हुई अंजना जी कहती हैं—

“छायादार पेड़ लगाओ, वातावरण को बचाओ

जिंदा रहने के लिए यहीं जरूरी हैं

और... पानी को बचाना होगा

हाँ.... पेड़ लगाने होंगे, सुविधाओं से

बाहर निकलना होगा

सच! अब तो कुछ करना होगा।”¹²

निष्कर्ष:—

अपनी सृजनात्मक शक्ति व जागरूकता से अंजना जी ने अपने साहित्य विशेषतः कविताओं के माध्यम से वैश्विक समस्याओं को भी पाठको समक्ष रखकर एक सजग साहित्यकार के रूप में पहचान बनाई है। वैश्विक समस्याओं पर अपनी पेनी नज़र से विश्लेषण कर समाधान देने को सकारात्मक प्रयास किए हैं। विश्व में युद्ध, आतंकवाद, प्रवासी लोगो से संबंधित समस्याओं और पर्यावरण व प्रकृति क्षरण आदि आज के युग की ज्वलंत समस्याएँ हैं जिनका उल्लेख अंजना जी ने भी अपने काव्य के माध्यम से कर के अपने गम्भीर चिंतन का परिचय दिया है।

सन्दर्भ:-

1. डॉ० अंजना संधीर, अमरीका हड्डियों में जम जाता है,
पृष्ठ-145
2. वहीं पृष्ठ-147
3. डॉ० अंजना संधीर, निवेदन हैं, पृष्ठ-41
4. वहीं पृष्ठ-42
5. डॉ० अंजना संधीर, अमरीका हड्डियों में जम जाता है,
पृष्ठ-16
6. वहीं पृष्ठ-102
7. वहीं पृष्ठ-133
8. डॉ० अंजना संधीर, निवेदन हैं, पृष्ठ-64
9. वहीं पृष्ठ-64
10. वहीं पृष्ठ-66
11. वहीं पृष्ठ-126
12. वहीं पृष्ठ-126

प्रोफेसर बाबूराम

हिन्दी विभाग, शोध निर्देशक (डी० लिट्.)

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय

अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा

सविता अधाना

शोधार्थी

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय

अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा



शोध सार:

आज हम बहुत शिक्षित हो चुके हैं लेकिन इस धारणा को हम तोड़ नहीं पाए और शायद आने वाले समय में भी ये धारणा समाप्त नहीं होने वाली है। वो धारणा है वंश वृद्धि। प्राचीन काल से हमारी धारणा बन चुकी है की वंश की वृद्धि केवल पुरुष के द्वारा ही संभव है। लेकिन बच्चों पैदा करती स्त्री है फिर भी हम ये कैसे सोच सकते हैं कि वंश वृद्ध तभी होगी जब हमारे घर में पुरुष संतान पैदा होगी। इसी कारण आज भी प्रशासन की इतनी सख्ती और कठोर कानून बनने के बाद भी हमारे देश में पैसों के लालच में भ्रूण की जाँच होती है और स्त्री संतान की भ्रूण हत्या कर दी जाती है। ये सब अब भी शासन-प्रशासन की नाक के नीचे हो रहा है और कहीं-न-कहीं इसमें माता-पिता के साथ-साथ शासन-प्रशासन भी दोषी हैं। इतने कठोर कानून बनाने के बाद भी यह सब हो रहा है। इतने कठोर कानून बनने के बाद कोई व्यक्ति इतना साहस नहीं कर सकता कि वो ऐसा कार्य करे इसमें शासन या प्रशासन का कुछ तो सहयोग है तभी यह सब इतनी सरलता से हो जाता है।

अगर हमें हमारे समाज एवं देश को श्रेष्ठ बनाना है तो इस धारणा को सामाप्त करके स्त्री-पुरुष को वंश वृद्धि में समान रूप से महत्व देना होगा और स्त्री को भारत के संविधान के अनुसार समान अधिकार देने होंगे और हमारे विचारों में भी प्रगति को स्थापित करते हुए प्राचीन जड़ धारणाओं को समाप्त करना होगा और जिसे हम देवी कहते हैं और उसका शोषण करते हैं उसे एक मानव मान कर उसको उसके सभी अधिकार देने होंगे ताकि वो भी इस वातावरण में खुलकर सांस ले सके और देश की उन्नति में अपना पूर्ण योगदान दे सके।

भगवानदास मोरवाल वर्तमान समय के श्रेष्ठ साहित्यकार हैं उन्होंने बहुत से श्रेष्ठ उपन्यास और कहानियों की रचना की और समाज की उन विडम्बनाओं पर प्रहार किया जिन पर बहुत ही कम विचार हुआ और हुआ भी तो बहुत सीमित। मोरवाल का जन्म हरियाणा की भूमि पर हुआ और इन्होंने इस समाज को बहुत अधिक पास से देखा और उसे साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया।

‘शंकुतिका’ उपन्यास 2020ई० में प्रकाशित हुआ था। इस उपन्यास में स्त्री की उस समस्या का वर्णन किया गया है जिससे लगभग पूरा उत्तर भारत आज भी जुझ रहा है। जब भी कोई स्त्री गर्भ धारण करती है तो पूरा परिवार चाहता है की स्त्री की गर्भ से पुत्र ही पैदा हो और उसे दूसरी तरफ ये भी भय रहता है कि स्त्री के गर्भ से पुत्री पैदा न हो जाए और पहले से ही उस घर में एक पुत्री हो तो

परिवार बहुत अधिक भय से व्यकुल हो जाता है कि कहीं फिर से उसके घर पर पुत्री पैदा न हो जाए उसके साथ-साथ आस-पास के लोग भी यही दुआ करते हैं कि हे भगवान इन्हें पुत्र की प्राप्त हो और गलती से भी पुत्री पैदा न हो जाए।

उत्तर भारत में तो जब तक घर में लड़का पैदा न हो जाए तब तक बच्चों पैदा किये जाते हैं। यहां पर पुत्री को न तो संपत्ति में से हिस्सा मिलता है और न ही उसे अपने स्वयं के निर्णय लेने का अधिकार है। स्त्री के सभी निर्णय पुरुष के द्वारा लिए जाते हैं और उन निर्णयों का पालन करना स्त्री का सर्वप्रथम धर्म है अगर वो ऐसा नहीं करती है तो उसे ऐसा करने के लिए विवश किया जाता है। इससे बचने का एक मार्ग मोरवाल जी ने सुझाया है वो है-शिक्षा। शिक्षित स्त्री कुछ प्रतिशत इस शोषण से बच सकती है। अशिक्षित स्त्री के स्वतंत्र होने का तो कोई मार्ग नहीं है।

इस उपन्यास में दशरथ एवं भगवती के पुत्र के यहां दो लड़कियों का जन्म हो चुका है। पड़ोस में अग्रसेन के घर पर तीन-तीन लड़के पैदा हो चुके थे और रात को थाली बजती है तो पता चलता है कि अग्रसेन के घर चौथा लड़का पैदा हुआ और भगवती उदास हो जाती है और कहती है। “ऊपर वाला भी उसे ही देता जाता है जिसके पहले से एक नहीं कई-कई है। पता नहीं यह हमारी कब सुनेगा।”⁰¹ जिस घर में एक से अधिक लड़की पैदा हो जाती है वो पूरा परिवार लड़कियों के जन्म पर हमेशा शोक मनाता रहता है वो नहीं चाहते हैं कि उनके घर फिर से लड़की पैदा हो और पड़ोस में किसी घर में पहले से दो से अधिक लड़के हो और आगे भी कोई लड़का पैदा हो जाए तो परिवार को अपनी लड़कियों से घृणा हो जाती है। वो भी चाहते हैं कि उनके घर में भी लड़का पैदा हो। अग्रसेन की पत्नी दुर्गा भगवती के घर पुत्र के पैदा होने के उपलक्ष्य पर मिठाई देने आती है और कहती है अब की बार तुम्हारे घर पर भी लड़का ही होगा इस पर भगवती चिंता प्रकट करती है। “अगर इस बार भी नहीं हुआ न हम तो जीते ही मर जाएंगे। पहले से दो-दो लड़कियों को देखकर मेरे तो हाथ पाव फूल जाते हैं।”⁰² लड़के चाहे चार पैदा हो जाए उससे हर्ष बना रहता है पर लड़की एक से अधिक पैदा हो जाए तो सभी घर वालों की खुशियां लूट जाती है। वो और उनके पड़ोसी चाहते हैं कि लड़की तो किसी के घर में भी पैदा न हो केवल लड़के पैदा होते रहे।

दुर्गा भगवती को कह कर गई थी कि उसके घर अब की बार लड़का पैदा होगा और भगवती को यही डर रहता है कि उसके घर फिर से लड़की पैदा न हो जाए अगर ऐसा हुआ तो उसके घर पर

तीन लड़कियां हो जाएगी। वही होता है जिसका भगवती को डर था और लड़की के पैदा होने के बाद वो मातम मनाती है। “हाँ, किलकारियां तो गूँज रही हैं मगर लड़की की। जब-जब नन्हा कातर रूदन भगवती के कानों में गूँजता, तब-तब लगता कि जैसे यह नन्हा रूदन नहीं पीघले हुए शिशु की बूंदें कानों में टपक रही है।”⁰³ जिस घर में पहले से लड़की हो उस घर में फिर से लड़की पैदा हो जाए तो घर में खुशियां नहीं मातम मनाया जाता है उस घर में लड़की की किलकारियां गूँजती हैं तो वो घर वालों के लिए रूदन में बदल जाती है। अगर लड़का हो जाए तो वो किलकारियाँ उल्लास पैदा करती है। भगवती के घर तीन पोतियाँ पैदा हो गई थी जब की दुर्गा के यहां चार पोते पैदा हुए थे। जब परीक्षा परिणाम आया तो दुर्गा के पोते केवल उत्तीर्ण हो पाए और भगवती की पोती सिया और गार्गी नब्बे प्रतिशत अंक प्राप्त करती है और वकील एवं डॉक्टर बनना चाहती है इस कारन दुर्गा का दृष्टिकोण लड़कियों प्रति बदल जाता है। “एक बात कहूँ भगवती, तू है बड़ी नसीब वाली जो ऐसी हीरे जैसी पोतियां मिली है। जरूर तुने पिछले जन्म में मोती दान किये थे।”⁰⁴ जिन लड़कों के पैदा होने पर मिठाईयाँ बाँटी गई थी बहुत अधिक जश्न बनाया गया था वो अच्छे स्कूल में पढ़ते हुए एवं सभी सुविधा मिलने के बाद भी केवल उत्तीर्ण हो और कम सुविधाओं के बाद भी वो लड़कियाँ बहुत अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हुईं जिनके जन्म पर मातम मनाया गया था उनके प्रति घर-परिवार एवं समाज का दृष्टिकोण बदल गया था ये सब शिक्षा के माध्यम से संभव हो पाया है।

भगवती के बड़े पुत्र के यहाँ तीन पुत्री पैदा हो गई थी लेकिन छोटे पुत्र के यहाँ कोई संतान पैदा नहीं हुई तो घर वाले उसके लिए बच्चा गोद लेना चाहते हैं तो दुर्गा कहती है। “..... किसी लड़के-वड़के के चक्कर में मत पड़ना। लड़कों का सुख मैं कितना भोग रही हूँ, मैं ही जानती हूँ। अपनी पोतियों को देख रही है न। जहाँ तीन हैं, वहाँ चौथी भी सही।”⁰⁵ यह सब सुन कर भगवती कहती है। “वो बात तेरी सही है दुर्गा पर वंश बढ़ाने के लिए तो लड़के की ही जरूरत पड़ेगी।”⁰⁶ समाज और हमारे घर परिवार में यह माना जाता है की वंश वृद्धि केवल पुरुष संतान करती है पर ये सोच निम्न स्तर की है। जब भी कोई संतान पैदा होती है तो उसमें सबसे अधिक योगदान एक स्त्री का होता है और फिर भी हम मानते हैं कि वंश वृद्धि पुत्र के पैदा होने पर ही होती है। दुर्गा का दृष्टिकोण बदल गया था और धीरे-धीरे भगवती को भी लगने लगा था कि पुत्र-पुत्री में कोई अन्तर नहीं होता है। कुछ समय बाद भगवती अपने परिवार वालों को लड़की

गोद लेने की सलाह देती है। “.....अगर लेना है तो किसी अनाथाश्रम से कोई बच्ची ही गोद लेना।”⁰⁷ जो स्त्री तीसरी लड़की पैदा होने पर मातम मना नहीं हो वो समझ गई थी लड़की किसी प्रकार से किसी लड़के से कम नहीं होती है और वो चौथी भी लड़की ही गोद लेती है वो समझ गई थी कि लड़की भी समाज में घर परिवार का नाम रोशन करती है और यह सब संभव हुआ शिक्षा के कारण। भगवती का परिवार पुत्री को गोद ले लेता है और जिन रीति-रिवाजों का पालन पुत्र के पैदा होने पर किया जाते हैं वह सब उस लड़की के लिए किये जाते हैं-जैसे कुआं पूजन आदि। इस पर दशरथ भगवती को कहता है। “बात रीत की नहीं, बात आदमी की खुशी की है। वैसे तो ये रीति-रिवाज आसमान से तो उतर कर आए नहीं। इंसान ने अपनी खुशी के लिए बनाए हैं।”⁰⁸ भगवती के परिवार का लड़कियों के प्रति दृष्टिकोण स्वच्छ हो चुका था वो समाज के सामने एक मील का पत्थर स्थापित कर रहे थे वो लड़की के लिए कुआं पूजन करते हैं सभी को दावत देते हैं और लड़की का जन्मदिवस भी बनाते हैं।

जब भगवती की पोती विवाह के लायक हो जाती है तो भगवती और दशरथ को पता चला कि सिया ने विवाह के लिए लड़का स्वयं चुन लिया तो भगवती चिंतित हो जाती है। वो चाहती थी कि पोती का विवाह उन्हीं की जात-बिरादरी में हो पर दशरथ पोती के निर्णय के साथ खड़ा हो जाता है। “अब अगर ये सब भी इसका विरोध करेंगे न, तो अपनी पोती संग मैं अकेला खड़ा होऊँगा।”⁰⁹ दशरथ को अपनी पोतियों पर बहुत अधिक गर्व था। समाज में जैसे-जैसे समझ विकसित हो रही है और शिक्षा का प्रसार हो रहा है सब समझ रहे हैं कि स्त्री पुरुषों से किसी भी प्रकार से भी कम नहीं है और स्त्री को धीरे-धीरे सब अधिकार प्राप्त हो जाएंगे। सिया और गार्गी स्वयं अपनी पसंद के लड़कों से विवाह कर लेती हैं पर बुलबुल का विवाह परिवार के अनुसार अपनी जात-बिरादरी के लड़के से हो जाता है और उसका पति उसे दहेज के लिए तंग करता है इस पर सिया उस के ससुराल वालों को सबक सिखाना चाहती है उस पर भगवती कहती है। “रहने दे बेटी क्यों इसे इन कोर्ट-कचेरी के झंझट में डालती है। जब इसे उसी घर में रहना है, तो क्यों किसी से दुश्मनी मोल लेनी।”¹⁰ हमारे समाज में आज भी दहेज के लालची लोग रहते हैं और लड़की वाले डरते हैं कहीं पुत्री का जीवन नर्क न हो जाए लेकिन सिया के नोटिस पर बुलबुल के पति को समझा आ जाती है और वो क्षमा प्रार्थना करके उसे ले जाता है लड़कियों की समझ-बुझ से उनकी बहन का घर सुधर जाता है इस पर भगवती

को गर्व होता है।

निष्कर्ष— उत्तर भारत में आज भी वंश वृद्धि में केवल पुरुष का योगदान माना जाता है तभी तो पुत्री पैदा हो जाने को लोग संताप मानते हैं और पुत्र के पैदा हो जाने पर जश्न बनाया जाता। मोरवाल जी ने इस उपन्यास के माध्यम से बताया है कि वंश वृद्धि में जितना योगदान पुरुष का है उतना ही स्त्री का भी है। लड़कियों को शिक्षा किसी भी परिस्थिति में प्राप्त करनी चाहिए जिससे लोगों में जागरूकता पैदा होगी और स्त्री और पुरुष को समान अधिकार प्राप्त हो जाएंगे और हमारा समाज श्रेष्ठ से सर्वश्रेष्ठ हो जाएगा। यही भगवानदास मोरवाल की अभिलाषा थी।

1. भगवानदास मोरवाल, शकुंतिका, पृ० 05
2. वही, पृ० 07
3. वही, पृ० 19
4. वही, पृ० 27
5. वही, पृ० 39
6. वही, पृ० 39
7. वही, पृ० 47
8. वही, पृ० 68
9. वही, पृ० 86

देवेन्द्र कुमार
नजदीक पुराना बस स्टेशन,
कुम्हारों का मोहल्ला, सिविल लाइन के
पीछे भिवानी 127021(हरियाणा)
सम्पर्क सूत्र—9068859229
neh.devender309@gmail.com

सारांश

राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह का जन्म 1891 ई० में सूर्यपुरा (बिहार) के अत्यंत प्रसिद्ध कुलीन राज परिवार में हुआ था। उनके बाबा दीवान श्री रामकुमार सिंह जी 'कुमार' और पिता राजा राजेश्वरी प्रसाद सिंह 'प्यारे' दोनों ही साहित्य, संगीत और कला के मर्मज्ञ थे। उनके पूर्वजों का संबंध डुमराँव राज्य की दीवानी से चला आ रहा था। इसलिए उनके नाम के साथ 'दीवान' की उपाधि लगी रहती थी। 15 वर्ष की अवस्था में पितृ वियोग की असह्य वेदना को सहकर भी उन्होंने राज्य भार वहन करने में अनुपम कौशल का प्रदर्शन किया। उनकी परोपकार वृत्ति से प्रभावित होकर ब्रिटिश सरकार ने उन्हें 'राजा' की उपाधि से विभूषित किया।

व्यक्तित्व और शैली दो नहीं होते। संसार में जिसका नाम व्यक्तित्व है, साहित्य में उसी का नाम शैली है। राजा साहब ने इसे अच्छी तरह चरितार्थ किया है। अतः राजा साहब हिन्दी कथा साहित्य में 'शैली सम्राट' के रूप में स्मरण किए जाते हैं। सुरुचिपूर्ण एवं कलापूर्ण रोचक संस्मरणों में वे सिद्धहस्त थे। लक्ष्मी के साथ-साथ उन्हें सरस्वती का भी वरदान प्राप्त था। राजा साहब हिन्दी, संस्कृत, फारसी, बंगला, अंग्रेजी आदि भाषाओं के मर्मज्ञ थे। इसलिए उनकी शैली भाषाओं के समन्वय की शैली बन गयी थी। उन्होंने हिन्दी की विविध विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई।

राजा साहब कलम के जादूगर थे। भाषा पर उनका पूर्ण अधिकार था। शब्दों का चुनाव, भाषा का गुम्फन और भावों की सहज अभिव्यक्ति उनकी अपनी ऐसी विशेषताएँ हैं, जो कदाचित् हिन्दी के किसी दूसरे लेखक की कृतियों में कठिनाई से ही देखने को मिलेंगी। मुहावरे और पर्यायवाची तो राजा साहब की लेखनी के गुलाम थे। सूक्ष्म भावों को भी बड़े रोचक ढंग से बहुत सुहावनी भाषा में व्यक्त करते थे।

एक सम्पन्न परिवार में जन्म लेकर भी राजा साहब ने साहित्य के द्वारा मानवता की सेवा की। उपन्यास, कहानी, नाटक, संस्मरण आदि सभी विधाएँ तो जैसे उनकी लेखनी का स्पर्श पाकर कृतार्थ हो गईं। जीवन की जटिल से जटिल समस्याओं का समाधान उन्होंने अपनी प्रखर प्रतिभा से इस प्रकार प्रस्तुत किया है कि लगता है जैसे उन सब कठिनाइयों और समस्याओं में उन्होंने अपने जीवन को ही जिया हो। किसी लेखक या कलाकार की कला की चरम सार्थकता यही है।

उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उनकी रचनाओं के भाषा के अनुरूप ही उनके भाषण भी होते थे।

जिस किसी ने भी उनके भाषणों को सुना है वे उनकी जिन्दादिली, फुदकती भाषा और शेरों-शायरी से लबालब भावों के प्रशंसक अवश्य हुए होंगे। हिन्दी में बहुत ही कम साहित्यकार कदाचित् ऐसे हैं जो कि जिस सशक्त भाषा में लिखते हैं, उसी शैली और भाव भंगिमा को भी अपने भाषणों में बनाये रखते हों।

राजा राधिका रमण सिंह द्वारा लिखे गए संस्मरणात्मक रचनाओं में सावनी समौं, टूटा तारा, और सूरदास प्रमुख हैं। ये कला की दृष्टि से अत्यन्त उत्कृष्ट हैं। ये संस्मरण हिन्दी साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं। 'सावनी समौं' में राजासाहब की बस्ती का 40-45 वर्ष पूर्व का चित्रण है, जो 'लालू बाबा' के द्वारा प्रस्तुत किया गया था। रंगीन तबीयतवाले इस वृद्ध ने राजा साहब और उनके साथियों को यह कहानी सुनाई थी। इस कहानी के नायक गोपाल बाबू थे। राजा साहब ने इस कहानी को नया रूप दिया है और यह लालू बाबा की ओर से भी लिखी गयी है। इसमें सन् 1935 से 40-45 वर्ष पूर्व राजा साहब की बस्ती का क्या स्वरूप था, कैसे शौकीन आदमी थे, खास-खास त्योहारों में लोक जीवन में कैसी मस्ती की घटनाएँ छा जाती थीं- ये सभी बातें बड़ी ही मजेदार भाषा में लिखी गई हैं। 'सावनी समौं' का अर्थ है सावन के दृश्य या सावन के नजारे। गोपाल बाबू के चले जाने से सावन सूना हो गया। पुस्तक के पन्ने-पन्ने पर यह कसक दिखाई देती है। राजा साहब ने गोपाल बाबू के इस संस्मरण में तत्कालीन समाज का जीता-जागता चित्र प्रस्तुत किया है। इसमें उस समय की शिक्षा, हिन्दू-मुसलमानों के पारस्परिक प्रेम, खेल कूद के साधनों एवं शौकों (पतंगबाजी, कबड्डी, कबूतरबाजी, बटेरबाजी और इश्कबाजी) आदि का ब्योरेवार वर्णन किया गया है। इस पुस्तक में युवा-वृद्ध, नारी-पुरुष, रखैलों, नौकरानियों आदि का यथार्थ स्वरूप देखने को मिलता है। इसका सबसे बड़ा आकर्षण चित्रांकन शैली, उर्दू मिश्रित भाषा और छोटे-छोटे वाक्यों में गागर में सागर भरने का गुण है। चाहे उत्सव की तैयारी का वर्णन हो या नारी के सौन्दर्य का, चाहे प्राकृतिक वातावरण का अंकन हो या फिर चाहे व्यक्तित्व के अंतर्द्वन्द्व का- राजा साहब एक चित्र-सा खड़ा कर देते हैं।

'टूटा तारा' राजा साहब की दूसरी संस्मरणात्मक पुस्तक है। इसमें 'मौलवी मुरादबख्श' और 'देवी बाबा' के संस्मरण हैं। दोनों ही सामान्य व्यक्ति थे पर अपनी मानवीय विशेषताओं के कारण वे असामान्य थे। राजा साहब उच्च वर्ग के सम्माननीय प्रतिनिधि रहे हैं, इसलिए उनके सम्पर्क में अनेक सम्पन्न व्यक्तियों का आना स्वाभाविक था। परंतु उन्होंने उन पर लेखनी नहीं चलाई बल्कि दो

ऐसे व्यक्ति चुने हैं जो एक प्रकार से निरीह और नगण्य हैं। राजा साहब ने अपने साहित्य और संबंधी विचार को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि, “आखिर शीरमाल और मुतंजन के रस से तो आप प्रतिदिन परिचित होते ही हैं, पर हाँ, कभी-कभी रुचि में ताजगी लाने के लिए एकाध सूखी बाजरे की रोटी भी बेकार नहीं।”

मौलवी मुरादबख्श साहब मुसलमान होते हुए भी मनुष्य पहले थे। वे धर्म की संकीर्ण सीमाओं से ऊपर थे। उनकी दृष्टि में कुरान शरीफ का जितना मान था, रामायण का महत्व भी उससे कम न था। मौलवी साहब सूरत की दृष्टि से नहीं सीरत की दृष्टि से भी अच्छे थे। वे दिखने में काले थे—कुचकुच, कोलतार से पुते तो न थे। मगर जो रंग था, वह गाढ़ा ही था और वह रंग हर्गिज खुशरंग नहीं था। चेहरे की बनावट भी कुछ अजीब टेढ़ी-सी थी उस पर चमक तो थी नहीं नमक भी नहीं था। बकरो की—सी दाढ़ी और गर्दन तक जुल्फों की तैयारी छटाक भर के आदमी थे। उनका रहन-सहन अत्यंत सादा था। वे समय के पाबन्द थे। उनमें एक सच्चे गुरु के सभी गुण विद्यमान थे। वे अपनी बात के पक्के तथा बच्चों से बहुत स्नेह करनेवाले थे। अपनी तनखाह का एक अच्छा भाग वे गरीबों में बाँट देते थे। लेखक ने मौलवी साहब के अंतः बाह्य गुणों को बड़ी ही कुशलता से प्रस्तुत किया है जो कि इस प्रकार है— “गौलवी साहब में किफायतदारी तो कूट-कूटकर भरी थी। पर तनखाह का एक बंधा हिस्सा वे— पानी पड़े या पत्थर-गरीबों में जरूर बाँट देते। जब वे पाँच रुपए माहवार पर एक अदने-से गुरु थे, उस वक्त भी इस उसूल के गुरुत्व से जौ भर भी नहीं डिगे और जब वे तीस रुपए चरम तनखाह के एक ऊँचे शिक्षक के तबके में आ गए तो एक हिस्सा ईमान की तरह सँजोकर रखना और एक हिस्सा बगैर किसी पशोपेश के बेकसों पर खर्च कर देना उनका अलंघ्य नियम रहा। हाँ अपने ऊपर कानी चित्ती भी फाजिल खर्च करने को तैयार न थे— बला से दुनिया उनको पैसे का पिस्सू कहा करे।.....वे न कभी चाय और चुरट के चकमे में पड़े, न कभी पान और बीड़ी को मुँह में जगह दी।

वक्त की पाबंदी के साथ-साथ उनकी जबान की पाबंदी भी अटल थी। किसी से कभी दो-चार रुपए हथफेर ले भी लिए, तो वादे के दिन उसे चुकाकर ही तो मुँह में अन्न दिया। कहके मुकर जाना तो कभी किसी ने आज तक सुना ही नहीं। जब जिसे जबान दी- बस, हाथ काट कर रख दिया। उनकी जिंदगी की एक-एक घड़ी बराबर कर्तव्य के कूचे में कटी।”

‘देवी बाबा’ दूसरा संस्मरण है। यह संस्मरण राजा

साहब के परिवार से ही संबद्ध एक व्यक्ति का है जिनकी करुण कथा आद्यान्त आंसुओं से सिक्त है। उनका वह संबंधी अपनी पूरी रियासत से हाथ धोकर अपने परिवार में आ गया था। उसने अपनी सभी इच्छाओं को मारकर किस प्रकार त्याग का जीवन बिताया और अन्त में कैसी उपहासास्पद स्थिति में परलोक गया, इन सबका वर्णन विषादपूर्ण भाषा में किया गया है। राजा साहब ने लिखा है कि, “किसी को यह कब पता था कि यह बित्ते भर का आदमी अपनी बुलंदखयाली में हजारों से ऊँचा है; उसकी सिकुड़ी हुई छाती की तह में लाखों में एक चौड़ा दिल है, तमाम उम्र एक धनी संबंधी के दर पर हाथ फैलाने के लिए बाध्य होकर भी उसके हाथ ऊँचा ही रखा, जीवन के तमाम अरमानों को अपने दिल में दफना कर भी उसके चेहरे पर प्रसन्नता का एक पुलक तुरबत पर उगे हुए फूल की तरह बराबर खिला रहा और कितनी छोटी-मोटी बदगुमानियों और बदनामियों की टोकरी सर पर ढोता हुआ भी न रास्ते से कभी डिगा, न तिलमिलाकर गिरा ही। यह भी एक जीवत का तमाशा है कि अरमानों की जिस दुनिया में कभी बहार का पयाम आया ही नहीं, वह दुनिया के तमाम अरमानों को ताक पर रखकर भी आजादी के नगमों से झंकृत ही रही।..... मुझे इस आसमान के तले एक-से-एक पीड़ित एक-से-एक आर्त को देखने का अवसर मिला है। पर वह कोई भी दर्दभरी तस्वीर देवी बाबा की करुण मूर्ति के सामने खरी नहीं उतरी। सौ बात की एक बात यह कि वह अथ से इति तक आँसू और उसाँस की एक जीवित प्रतिमा है।”

कुल मिलाकर ‘टूटा तारा’ में लेखक का कला, साहित्य और संस्कृति के प्रति दृष्टि का स्पष्टीकरण बड़े स्वाभाविक ढंग से हुआ है। भाषा शैली बेजोड़ है। घटनाएँ रस का बाना पहनकर पाठक को रुलाती हैं, हँसाती हैं तथा मानवता का बोध भी कराती हैं। राजा साहब ने ‘टूटा तारा’ संस्मरण में लेखन कला का आदर्श प्रस्तुत किया है।

‘सूरदास’ राजा साहब की तीसरी संस्मरणात्मक पुस्तक है। इसमें राजा साहब ने अपने अंधा पंखा कुली का सजीव चित्र प्रस्तुत किया है। उसका असली नाम मुरारी था, किन्तु आँखें चली जाने के कारण उसका नाम सूरदास पड़ गया। लेखक ने उसके अंतर्मन की जो झाँकी प्रस्तुत की है, वह अन्यत्र दुर्लभ है।

‘सूरदास’ में अंधों के रोमांस का चित्रण है। सूरदास बड़ा धर्म कर्म माननेवाला इंसान है। उसके साथ एक ओर पंखा खींचनेवाली भी है, जिसका नाम ‘धनिया’ है। वह भी अंधी है। इसमें लेखक की सूक्ष्म, मर्म-भेदिनी दृष्टि देखते ही बनती है।

राजा साहब ने अंधों की गतिविधियों का अत्यंत सूक्ष्म चित्रण किया है। इसमें मानव के अंतर्मन में छिपी प्रेम भावना को अत्यंत स्वाभाविक एवं मनोवैज्ञानिक रूप में प्रस्तुत किया गया है। सूरदास और धनिया का दुर्लभ संयम, चारित्रिक दृढ़ता एवं मूक समर्पण सभी कुछ प्रशंसनीय है।

निष्कर्ष

राजा साहब द्वारा रचित ये सभी संस्मरणात्मक पुस्तकें अपनी एक अलग विशेषता रखती हैं। एक ओर जहाँ इनकी 'सावनी समी' में सामन्ती विलासों की ओर संकेत है, वहीं दूसरी ओर 'टूटा तारा' में दो सामाजिक दृष्टि से नगण्य परन्तु हृदय की दृष्टि से धनी एवं आन के पक्के व्यक्तियों की झांकी है तथा तीसरे 'सूरदास' में अन्धों के प्रेम का प्रदर्शन है। ये संस्मरण भावुकता, वर्णन शैली एवं भाषा सभी दृष्टियों से बेजोड़ हैं। इन संस्मरणों के आधारभूत व्यक्तियों में से प्रत्येक अपनी करुण छाप छोड़ता है। संस्मरण लेखन में राजा साहब का स्थान अद्वितीय है। उन्होंने जिन व्यक्तियों के संस्मरण लिखे हैं, उनके प्रति उनका आत्मीय भाव एक-एक शब्द में झलकता है। जमींदारों और ताल्लुकेदारों के चित्रण में लेखक का मन जितना रमा है, दीन-हीन उपेक्षित प्राणियों के प्रति भी उनके हृदय में उतनी ही सहानुभूति है। जीवन और जगत् को समझने के असंख्य सूक्त इन संस्मरणों में बिखरे पड़े हैं। राजा साहब की रचनाएँ कल्पना की कोरी भावुकतापूर्ण उड़ान पर आधारित न होकर यथार्थ एवं अनुभूति के ठोस धरातल पर टिकी हुई हैं। उन्होंने जो कुछ भी देखा, समझा और परखा, उसी का चित्रण बिना किसी लाग लपेट के अपनी रचनाओं में कर दिया है। सरल-से-सरल शब्दों में गहन से गहन बात को प्रकट कर देने की जो अद्भुत क्षमता राजा साहब की लेखनी में थी, वैसी अन्यत्र कठिनता से देखने को मिलेगी। भाषा उनके हाथों में खेलती रहती थी। वे जिधर चाहें, जैसे चाहें, उसे मोड़ देने और अभीष्ट कहलवा लेने में सिद्धहस्त थे। दलित, दुखित और पीड़ित मानवता के प्रति उनकी संवेदना उनकी कृतियों की सर्वोपरि शोभा है। उनके ये संस्मरण सजीव, संयत एवं सरस हैं। कला की दृष्टि से भी ये अति उत्तम हैं।

संदर्भ

1. सिंह, राजा राधिका रमण प्रसाद : टूटा तारा, श्री राजराजेश्वरी साहित्य मंदिर, सूर्यपुरा (शाहाबाद), प्रथम संस्करण, 1941 ई०, पृष्ठ सं०-23
2. सिंह, राजा राधिका रमण प्रसाद : टूटा तारा, श्री

राजराजेश्वरी साहित्य मंदिर, सूर्यपुरा (शाहाबाद), प्रथम संस्करण, 1941 ई०, पृष्ठ सं०-39-40

3. सिंह राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह : टूटा तारा, श्री राजराजेश्वरी साहित्य मंदिर, सूर्यपुरा (शाहाबाद), प्रथम संस्करण, 1941 ई०, पृष्ठ सं०-115-116, 117

ममता कुमारी (शोधार्थी)

(राँची विश्वविद्यालय राँची, झारखण्ड)

पति- विकास गुप्ता

पता- प्लैट नं०-C/2, देवा अपार्टमेन्ट, बरियातु रोड
(करमटोली चौक के समीप 'ब्रिजफोर्ड स्कूल जुनियर विंग के बगल में)

जिला- राँची (झारखण्ड), पिन-834008

मो० नं०- 8521443887

ई-मेल- mmtgupta57@gmail.com

सारांश :

एक विधा के रूप में यात्रावृत्त या यात्रा संस्मरण की शुरुआत आधुनिक काल के आरंभ से ही हो गई थी अर्थात् भारतेंदु युग में ही यात्रावृत्त या संस्मरण लिखे जाने लगे थे। आश्चर्य की बात यह है कि वस्तु और शिल्प – दोनों के ही स्तर पर भारतेंदु युग में उन्मुक्त ढंग से कई प्रयोग किए गए, जिन्हें आलोचना के दायरे में न लेकर स्वीकार किया गया। यात्रा संस्मरणों के नजरिए से भी यह काम हुआ। स्वयं भारतेंदु के द्वारा 'सरयू पार की यात्रा', 'लखनऊ की यात्रा', 'हरिद्वार की यात्रा' आदि उल्लेखनीय रचनाएँ रची गयीं। दूसरी तरफ, बालकृष्ण भट्ट की 'गया यात्रा', पंडित प्रताप नारायण मिश्र की 'विलायत यात्रा' आदि भी उल्लेखनीय हैं। इसी युग में कल्याण चंद्र तथा विगु मिश्र ने अपनी यात्राओं का वर्णन पद्य शैली में किया। इस तरह यात्रा संस्मरणों की समृद्ध परंपरा की शुरुआत भारतेंदु युग में ही हो गई थी। आगे के युगों में अपनी-अपनी अभिव्यक्ति और भावबोध के आधार पर इस विधा में तमाम प्रयोग होते रहे और यह प्रयोग स्वीकार्य भी हुए।

द्विवेदी युग में भी श्रीधर पाठक, लोचन प्रसाद पांडेय, देवी प्रसाद खत्री, गोपालराम गहमरी, गदाधर सिंह, स्वामी सत्यदेव परिव्राजक जैसे लेखक इस दिशा में सक्रिय रहे। उनके द्वारा लिखी गई रचनाओं में स्थानीय देश-विदेश की सामाजिक राजनीतिक और सांस्कृतिक परंपराओं का सजीव चित्रण देखने को मिला। यह यात्रा संस्मरण स्थान का परिचय तो देते ही थे परंतु समाज और संस्कृति का जिस शैली में इन्होंने वर्णन किया, उसने इन रचनाओं को कालजयी बना दिया। ठाकुर गदाधर सिंह की रचना 'चीन में तेरह मास' तथा स्वामी सत्यदेव परिव्राजक की रचनाएँ 'अमेरिका दिग्दर्शन', 'मेरी कैलाश यात्रा' तथा 'अमेरिका भ्रमण' इस दृष्टि से अत्यंत उल्लेखनीय हैं।

आगे के युगों में हिंदी साहित्य को राहुल सांकृत्यायन, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', बनारसीदास चतुर्वेदी, भगवतशरण उपाध्याय, रामवृक्ष बेनीपुरी, विष्णु प्रभाकर, निर्मल वर्मा, डॉ. नगेंद्र आदि ने अपने यात्रा-संस्मरणात्मक कृतियों से इस विधा को खूब समृद्ध किया। इसी कड़ी में विजय कुमार संदेश की रचना 'उड़ता चल हरिल' भी एक उल्लेखनीय रचना के रूप में अपना स्थान रखती है।

विषय प्रवेश :

यह रचना मूल रूप से दो भागों में विभाजित है। पहले भाग में उनकी भारत में की गई यात्राओं का वर्णन है। जबकि दूसरा भाग उनकी विदेश यात्राओं का लेखा-जोखा है। भारत की यात्राओं में हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला और डलहौजी की यात्रा पर आधारित 'कोहरे की

चादर में लिपटी चांदनी'; कश्मीर की यात्रा पर आधारित 'हिमाच्छादित उत्तुंग शिखर और धुली हरियाली'; अंडमान द्वीप समूह की यात्रा पर आधारित 'मेरी अंडमान यात्रा'; अजंता एलोरा की दिव्य झांकी प्रस्तुत करने वाला वृत्त 'अजंता – एलोरा : संगतराशी की दुनिया में एक विशिष्ट नाम'; झारखंड की प्राकृतिक सुषमा को व्यक्त करता 'झारखंड : जहां इको पर्यटन की अपरिमित संभावनाएँ हैं'; और सुंदर प्रदेश केरल की यात्रा पर आधारित 'केरल : समुद्र की अघातक लहरें और लहलहाते नारिकेल' आदि यात्रावृत्त उल्लेखनीय हैं।

भाग दो में मॉरीशस की यात्रा पर आधारित 'मॉरीशस : गिरमिटियों के देश में आठ दिन'; अबूधाबी और दुबई की यात्रा पर आधारित 'रेत पर लिखा समृद्धि का स्वप्नलोक'; रूस की यात्रा पर आधारित 'आधी रात को भी दिखता है सूरज'; श्रीलंका की यात्रा पर आधारित 'प्राचीन भारतीय बौद्ध-संस्कृति और हिंदी'; ऑस्ट्रेलिया की यात्रा पर आधारित 'ऑस्ट्रेलिया : समृद्ध प्रकृति, पर्यटन – स्थल और हिंदी'; ऑस्ट्रिया, जर्मनी, बेल्जियम और नीदरलैंड की यात्रा पर आधारित 'डेन्यूब का जादू और आकाश चूमते आल्प्स शिखर' तथा भूटान यात्रा पर आधारित 'बुद्ध के विचार जहां जीवन का अहम हिस्सा हैं' उल्लेखनीय यात्रावृत्त हैं। इस तरह इस कृति में विजय संदेश ने अपनी देश-विदेश की यात्राओं की अनुभूतिपरक प्रस्तुति की है। इन यात्रावृत्तों को पढ़ने से लेखक के भीतर की जिज्ञासु वृत्ति और नई-नई संस्कृति और देश-विदेश के प्रति उनकी ललक स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

कश्मीर के साथ साथ हिमाचल प्रदेश भारत की प्राकृतिक सौंदर्य सुषमा का अद्भुत निदर्शन है। हिमाचल प्रदेश, कश्मीर, उत्तराखंड जैसे राज्य न केवल प्राकृतिक पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं बल्कि यहां स्थित धार्मिक स्थल भी अपनी प्राचीनता और पवित्रता में अप्रतिम हैं। विजय संदेश ने अपने हर यात्रा संस्मरण में प्राकृतिक सुषमा का तो चित्रण किया ही है, परंतु साथ ही प्रसंगवश अन्य महत्वपूर्ण संदर्भों को भी याद करना वह नहीं भूले हैं। हिमाचल प्रदेश की यात्रा पर आधारित अपने संस्मरण में वे हिमाचल की धार्मिक आस्थाओं का चित्रण इन शब्दों में करते हैं, "इतिहास साक्षी है कि इस देश के ऋषि-मुनियों, मनीषियों और कवियों ने हिमाचल के हिमालय का स्तवन बार-बार किया है और उसे संस्कृति का मेरुदंड सहित भारत भाग्य-विधाता तक कहा है। इसके कई कारण हैं। पर प्रथम और प्रकट कारण यह है कि भगवान शिव और माता पार्वती का आवास-निवास होने के कारण हर भारतवासी के लिए यह सदियों से पूज्य है।"

इसी तरह कश्मीर यात्रा का वर्णन करते हुए लेखक

अद्भुत प्राकृतिक सौंदर्य से तो अभिभूत है ही, साथ ही कश्मीर के स्थानीय सुख-दुख को अभिव्यक्त करना भी वे नहीं भूले हैं। श्रीनगर पर आई प्राकृतिक आपदा और डल झील की दुर्गति कौन भूल सकता है। डल झील, श्रीनगर की आर्थिक व्यवस्था का केंद्र बिंदु है। कश्मीर आने वाले पर्यटक डल-विहार करते हुए कश्मीर की सुषमा का आनंद लेते हैं। परंतु वर्ष 2014 में आई प्राकृतिक आपदा के चलते डल झील का सौंदर्य नष्ट हो गया और न जाने कितने स्थानीय बेघर और बेरोजगार हो गए। डल झील की इस अवस्था का वर्णन लेखक ने इन दुखद शब्दों में किया है, “बीते कल के स्वर्णिम अतीत को समेटे हुए उसने बताया कि कल तक इस झील की सुंदरता देखते बनती थी। झील की जल-पट्टी पर स्थित सैकड़ों की संख्या में स्थापित व चलित रंग-बिरंगे खूबसूरत हाउस-बोट और शिकारे जो दूर-दूर तक नजर आते हैं और जिसका खूबसूरत नजारा किसी को भी मुग्ध कर सकता है, आज प्राकृतिक मार के कारण वीरान पड़े हुए हैं।..... हमने भी अनुभव किया कि जिसे हमने कई लेखों और टिप्पणियों में पढ़ा है, वह डल झील आज उपस्थित नहीं है। लगभग दो घंटे के ‘जल-सफर’ के बाद हमने बुझे मन से डल को छोड़ा इस शुभकामना के साथ कि जल्द ही इसका पुराना दिन लौट आए और एक बार फिर हम उस डल का दीदार कर सकें जिसे हमने किताबों में पढ़ा और लोगों से सुना है।”²

अंडमान की यात्रा के दौरान उन्होंने अनूठे ढंग से भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के महान त्याग और बलिदान को याद किया है। अंडमान में द्वीप समूह में स्थित सेल्यूलर जेल भारतीय क्रांतिकारियों के लिए नर्क से कम नहीं थी। उस समय ‘कालापानी’ की सजा बड़ी कठोर सजा मानी जाती थी। भारत की मुख्य भूमि से हटकर क्रांतिकारियों को अंडमान द्वीप समूह की इसी सेल्यूलर जेल में भेजा जाता था। महान भारतीय क्रांतिकारी विनायक दामोदर सावरकर और उनके भाई को अंग्रेजों ने उनकी क्रांतिकारी गतिविधियों के चलते कालापानी की सजा सुनाई थी और अंडमान की सेल्यूलर जेल भेज दिया था। अंडमान यात्रा के विजय संदेश ने भावपूर्ण तरीके से सावरकर बंधुओं के बलिदान को याद किया है, “भारतीय इतिहास में स्वतंत्रता-संग्राम और सेल्यूलर जेल एक-दूसरे के पूरक की तरह हैं क्योंकि आजादी के कट्टर और क्रांतिकारी सिपाही इस जेल के मेहमान हुआ करते थे। वीर विनायक दामोदर सावरकर और उनके भाई गणेश दामोदर सावरकर जैसे सैकड़ों देशभक्त और क्रांतिकारियों को अंग्रेजों ने इसी जेल के छोटे-छोटे कमरों में कैद करके सख्त पहरेदारी में रखा था।..... उनके क्रांतिकारी गतिविधियों के कारण अंग्रेज सरकार ने उन्हें एक साथ दो-दो आजीवन कारावास दिया था।

यानी, एकमुश्त पचास वर्ष की सजा। आजादी की लड़ाई और क्रांति की दुनिया में यह एक अनूठी मिसाल है क्योंकि इससे पूर्व किसी व्यक्ति को दोहरे कारावास की सजा नहीं सुनाई गई थी। वीर सावरकर के इस सजा की मियाद के लिए जिस जेल का चयन किया गया था, वह यही सेल्यूलर जेल था जिससे ‘कालापानी’ कहा जाता है। कालापानी यानी अमानवीय क्रूरता की सजा।”³ इसके अतिरिक्त अंडमान द्वीप समूह के विभिन्न द्वीपों के प्राकृतिक सौंदर्य का अद्भुत चित्रण भी किया है, “चतुर्दिक् हिंद महासागर से घिरा अंडमान द्वीप-समूह जैसा मैंने देखा और पाया यह अपनी प्राकृतिक और नैसर्गिक सुंदरता के कारण देश-विदेश के सैलानियों के दिलों-दिमाग में बसा हुआ है। इसका कारण यह है कि इसके 86 प्रतिशत भूभाग पर घने पेड़-पौधों की हरियाली है। परिणाम स्वरूप यहाँ कोई पर्यावरणीय संकट नहीं है। इसी तरह यह अपने गर्भ में अकूत संपत्ति संजोए हुए है, जिसमें मूंगा (कोरल), शैवाल और समुद्री जीव (कछुआ, ऑक्टोपस, मछलियाँ) आदि मुख्य हैं।”⁴

प्रकृति सदा सभी को अभिभूत करती है। जिसमें तनिक भी भावुकता और संवेदनशीलता है, प्रकृति उससे निरंतर संवाद करती है। विजय संदेश के यात्रा संस्मरण प्रकृति से निरंतर संवाद करते दिखाई देते हैं। चाहे कश्मीर हो या हिमाचल या फिर केरल, उन्होंने हर जगह इस तरह के प्राकृतिक चित्र वर्णित किए हैं कि जैसे प्रकृति से संवाद स्थापित किया जा रहा हो। केरल की चर्चा के दौरान उन्होंने केरल की विशिष्ट संस्कृति को आर्य और द्रविड़ संस्कृतियों के सम्मिश्रण के रूप में देखा है। और भारत के विभिन्न क्षेत्रों की विशिष्टता की चर्चा करते हुए केरल की विशिष्टता को बताया है, “इसमें संदेह नहीं कि नैसर्गिक और प्राकृतिक दृष्टि से केरल की खूबसूरती की चर्चा पर्यटकों और प्रकृति-प्रेमियों के बीच होती रही है। ऐतिहासिक दृष्टि से भी यह एक ऐसा प्रदेश है जिसकी सभ्यता-संस्कृति पर आर्य-द्रविड़ दोनों संस्कृतियों का यथेष्ट प्रभाव आज तक है। इसका कारण यह है कि यहां आर्यों और द्रविड़ों का स्थायी निवास सदियों तक रहा है।..... पूरे देश में केरल केले और नारियल की अपनी प्रचुर उपलब्धता और उसके भिन्न-भिन्न किस्मों के लिए प्रसिद्ध है।..... गीत-संगीत-नृत्य तो जैसे इनकी घुट्टी में बसता है। पंजाबी भांगड़ा, गुजराती गरबा, राजस्थानी घूमर, महाराष्ट्र की लावणी और असम-बिहार-झारखंड की कजरी, चैती, झूमर की तरह ही केरलीय गीत-संगीत-नृत्य प्रसिद्ध है। अपनी इसी सामाजिक-सांस्कृतिक विशिष्ट पहचान के कारण केरल सदियों से देशी-विदेशी पर्यटकों-आगंतुकों और तीर्थ-यात्रियों के बीच आकर्षण का केंद्र रहा है।”⁵

अजंता एलोरा पर लिखे अपने यात्रा संस्मरण में उन्होंने अजंता-एलोरा के इतिहास के साथ-साथ वहां की स्थापत्य कला का सुंदर चित्रण किया है। अजंता-एलोरा का वर्णन लोकभावना से जुड़ा हुआ है। वहाँ स्थित विभिन्न गुफाओं के धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व को उन्होंने विशिष्ट ढंग से अपने संस्मरण में व्यक्त किया है। विजय संदेश के इस यात्रावृत्त को पढ़कर सचमुच आश्चर्य होता है कि उस प्राचीन काल में कैसे इन गुफा चित्रों को उकेरा गया होगा। अब तो यह स्थल विश्व विरासत सूची में सम्मिलित है और यह न केवल भारत बल्कि विश्व की अनमोल धाती बन गया है।

डॉ. विजय कुमार संदेश की विदेशी यात्राओं के संस्मरणों में सबसे पहले मॉरीशस की यात्रा पर आधारित संस्मरण 'मॉरीशस : गिरमिटियों के देश में आठ दिन' है। उनकी यह यात्रा एकेडमिक प्रयोजनों पर आधारित एक कार्यक्रम में हिस्सा लेने के दौरान आयोजित हुई। इस संक्षिप्त संस्मरण में मॉरीशस के बारे में सारगर्भित जानकारी दी गई है। मॉरीशस का भूगोल, इतिहास और उसकी संस्कृति – इस संस्मरण का मुख्य आकर्षण है। अन्य सभी विवरण तो अपनी जगह ठीक हैं ही, परंतु इस संस्मरण में उन्होंने गिरमिटिया मजदूरों का अत्यंत भावनामय चित्रण किया है। एक एग्रीमेंट के अंतर्गत पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार के हजारों लोगों को अंग्रेज सरकार ने 19वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में मजदूरी करने के लिए मॉरीशस भेजा था। इसका उद्देश्य मॉरीशस का आर्थिक दोहन था और इस काम के लिए सस्ते भारतीय मजदूर काफी जरूरी थे। हजारों भारतीयों को उनके घरों से बेघर करके मॉरीशस भेजा गया पर इन गिरमिटिया मजदूरों की तारीफ यह है कि इन्होंने न केवल मॉरीशस को सरसब्ज किया बल्कि अपनी भारतीय संस्कृति की परंपरा को अक्षुण्ण रूप से बनाए रखा। उसे वहां और विकसित किया। भारत की यादों को उन्होंने मॉरीशस में विभिन्न प्रतीकों के माध्यम से सुरक्षित रखा। यात्रा संस्मरण में इन सभी चीजों का अत्यंत भावमय वर्णन हुआ है।

आज का भारत निरंतर सांप्रदायिक संघर्षों से जूझता दिखाई दे रहा है। भारत की धार्मिक विविधता पूरे विश्व में निसंदेह अप्रतिम है। विश्व का कोई भी दूसरा देश ऐसी धार्मिक विविधता नहीं रखता जैसा कि भारत में है। परंतु राजनीति और धार्मिक उन्माद के सम्मिश्रण ने भारत की इस विशेषता को कोढ़ के रूप में तब्दील कर दिया है। भारत की अखंडता आज खतरे में है। वह भारत जिसे धर्मनिरपेक्ष – प्रजातंत्र के रूप में जाना जाता था, आज धार्मिक उन्माद से ग्रस्त है। छोटी-छोटी घटनाएँ बड़े-बड़े दंगों का रूप ले लेती हैं। यह बड़ी ही संवेदनशील बात है। दुर्बई और अबूधाबी की अपनी यात्राओं के दौरान विजय संदेश ने इस

इस्लामिक देश की कुछ व्यवस्थाओं का चित्रण अद्भुत ढंग से किया है, जो हमें भी सोचने पर विवश करता है कि क्या सचमुच कट्टरता आवश्यक है? अबूधाबी का वर्णन करते हुए लेखक ने लिखा है, "शेख जायेद ग्रैंड मस्जिद आधुनिक और एकमात्र वास्तुकला और शैली के लिए दुनिया में लब्धख्यात है। शायद विश्व का यह पहला मस्जिद है जहां गैर मुस्लिम भी इबादत और दर्शन कर सकते हैं।"⁶ अबूधाबी और दुर्बई का वर्णन करते हुए उन्होंने वहां की रेगिस्तान सुषमा के साथ-साथ सामुद्रिक सौंदर्य का भी वर्णन किया है। किस तरह अपने अटल निश्चय से वहां के निवासियों ने अपने देश को रेगिस्तानी बियावान से सुंदर नखलिस्तान में बदल दिया है, इस यात्रावृत्त से यह जानना सुखद लगता है। वहां की व्यवस्था की विशेषता को व्यक्त करते हुए विजय संदेश लिखते हैं, "यह ऐसा देश है, जहां शासक भी आम आदमी की तरह घूमते हैं। आम हो या खास – राष्ट्रीय संपत्ति की संरक्षा और सुरक्षा में अपना राष्ट्रीय धर्म मानते हैं।"⁷

विश्व के देशों में रूस और भारत की मित्रता अत्यंत विशिष्ट स्थान रखती है। आजादी से पूर्व ही रूसी व्यवस्था में भारत के लिए गहरी सहानुभूति पैदा हो गई थी। भारत की आजादी के बाद रूस ने निरंतर भारत के विकास में सहयोग किया है। दोनों देशों ने एक दूसरे की संस्कृति का भरपूर सम्मान किया है। अपनी रूस यात्रा के दौरान विजय संदेश ने इस बात को भली भांति महसूस और अभिव्यक्त किया है। रूस में न केवल हिंदी भाषा को पसंद किया जाता है बल्कि अकादमिक रूप से उसका अध्ययन भी होता है। हिंदी के विभिन्न साहित्यकार वहां पाठ्यक्रम में सम्मिलित हैं और उनकी ख्याति है। इसके साथ ही हिंदी सिनेमा भी वहां काफी चर्चित है। अपने यात्रावृत्त में उन्होंने भारत की इन विभिन्न चीजों को वहां देखा और उसका वर्णन करते हुए लिखा है, "जहां तक रूस में हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार की बात है, तो 18वीं शताब्दी के पूर्व से ही इसके चिन्ह मिलने लगते हैं। गोकि 20वीं शताब्दी के प्रारंभ से ही मास्को स्टेट मानविकी विश्वविद्यालय के प्राच्य भाषा विभाग और लेनिनग्राद विश्वविद्यालय में हिंदी का पठन-पाठन होने लगा था। पठन-पाठन के साथ ही अनुवाद और शोध कार्य भी होने लगे थे। पी. वरान्निनकोव, वी. चेरनिसेव, ई. जी. चेलिशेव, ओ. जी. उत्तीफरोव, ए. वरान्निनकोव, एन. साजानोवा और यूरित्वेस्तकोव जैसे अनुवादकों और लेखकों ने रूस में हिंदी को काफी आगे बढ़ाया।"⁸ हिंदी की इस विशेषता का वर्णन करने के साथ-साथ हिंदी सिनेमा की लोकप्रियता पर भी लिखते हुए विजय संदेश कहते हैं, "हिंदी फिल्मों के महान नायक और शोमैन स्वर्गीय राज कपूर तथा हिंदी के कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद रूस में काफी

लोकप्रिय रहे हैं। जयशंकर प्रसाद, निराला, पंत, रांगेय राघव, राहुल सांकृत्यायन, फणीश्वरनाथ रेणु और दिनकर भी यहां काफी चर्चित रचनाकार हैं और उनकी रचनाएं पाठ्यक्रमों में शामिल हैं।⁹ अपनी लेखन शैली के अनुरूप इन विशिष्टताओं के अतिरिक्त रूस की सुंदरता का चित्रण भी लेखक ने अपने यात्रावृत्त में किया है।

इन्हीं यात्रावृत्तों में श्रीलंका की यात्रा पर आधारित संस्मरण भी है। श्रीलंका की यात्रा रामकथा को महसूस करने की यात्रा तो थी ही साथ ही महात्मा गौतम बुद्ध से जुड़े इतिहास को भी सजीव महसूस करने की यात्रा थी। लेखक ने अपनी श्रीलंका की यात्रा में इन दोनों ही ऐतिहासिक तथ्यों को महसूस करते हुए अपना यात्रावृत्त लिखा है जो पाठकों को भी अपनी संवेदना और उत्कंठा संप्रेषित करता है। किस प्रकार श्रीलंका तक बौद्ध धर्म पहुंचा, इसका सिलसिलेवार संक्षिप्त किंतु सारगर्भित वर्णन किया गया है। भारत और तत्कालीन सिंघल अर्थात् श्रीलंका के आपसी संबंधों को मधुर बनाने में किस तरह बौद्ध धर्म की भूमिका रही है, इसका भी हमें पता चलता है। सिंघल के राजा तिष्य ने सम्राट अशोक के आग्रह पर बौद्ध धर्म ग्रहण किया और इसके पश्चात् सम्राट तिष्य की पुत्री अनुला ने भी सम्राट अशोक की पुत्री संघमित्रा से दीक्षा ग्रहण की, यह सभी तथ्य सजीव ढंग से उस इतिहास को महसूस कराते हैं। यह तथ्य भी बेहद आश्चर्यचकित करता है कि रावण के देश में आज रावण को ही पसंद नहीं किया जाता। यह तथ्य स्पष्ट करता है कि कोई व्यक्ति सकारात्मक प्रसिद्धि और अमरता अपने गुणों से ही प्राप्त करता है। ऑस्ट्रेलिया और बेल्जियम, नीदरलैंड जैसे यूरोपीय देशों की यात्राओं पर आधारित संस्मरण भी इस पुस्तक में मौजूद हैं, जो विशिष्ट ढंग से इन देशों के बारे में जानकारी देते हैं। वहां की व्यवस्थाएं, सौंदर्य आदि संस्मरण का हिस्सा बने हैं। इस पुस्तक का अंतिम संस्मरण भारत के पड़ोसी देश भूटान की यात्रा पर आधारित है। भूटान प्राकृतिक रूप से अत्यंत संपन्न देश है, जहां आधुनिकता का प्रवेश एक सीमित मात्रा में ही हो पाया है। वहां के निवासी प्रकृति के दायरे में रहकर ही जीवन व्यतीत करना पसंद करते हैं। वहां का परिवेश तो इस संस्मरण में चित्रित हुआ ही है, साथ ही धर्म और संस्कृति का भी विशिष्ट वर्णन हुआ है। भूटान के संबंध में बहुत से तथ्य इस संस्मरण को पढ़कर जाने जा सकते हैं जिन्हें आमतौर पर जाना और समझा नहीं जाता है।

निष्कर्ष :

वस्तुतः 'उड़ता चल हरिल' यात्रा संस्मरणों की एक सार्थक पुस्तक है, जो पाठकों को इन विभिन्न स्थानों की यात्रा का आनंद प्रदान करती है। लेखक की वर्णन शैली अत्यंत आत्मीय है।

लेखक ने सहज और सरल शैली में वर्णन किए हैं। प्रकृति से अभिभूत होकर किए गए वर्णन अत्यंत सृजनात्मक बन पड़े हैं। एक तथ्य जो इन संस्मरणों के बारे में थोड़ा खटकता है, वह उनकी संक्षिप्तता है। लेखक ने अत्यंत प्रवाह पूर्ण शैली में संक्षिप्त ढंग से इन संस्मरणों का लेखन किया है। ऐसा लगता है कि अगर इनका आकार और वृहद होता तो शायद उन स्थानों के बारे में और विशिष्ट जानकारी से पाठक लाभान्वित होते। उनकी संक्षिप्तता को आलोचना के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए। अपने स्वरूप में यह संस्मरण परिपूर्ण हैं, परंतु कहीं न कहीं पाठकों की जिज्ञासुवृत्ति इन संस्मरणों के प्रवाह में कुछ और चाहती है, बस इतना ही समझा जाना चाहिए।

संदर्भ:

1. उड़ता चल हरिल— डॉ विजय कुमार संदेश; साहित्य भूमि, नई दिल्ली; पृष्ठ 17
2. उड़ता चल हरिल— डॉ विजय कुमार संदेश; साहित्य भूमि, नई दिल्ली; पृष्ठ 26–27
3. उड़ता चल हरिल— डॉ विजय कुमार संदेश; साहित्य भूमि, नई दिल्ली; पृष्ठ 32–33
4. उड़ता चल हरिल — डॉ विजय कुमार संदेश; साहित्य भूमि, नई दिल्ली; पृष्ठ 37
5. उड़ता चल हरिल — डॉ विजय कुमार संदेश; साहित्य भूमि, नई दिल्ली; पृष्ठ 50–51
6. उड़ता चल हरिल — डॉ विजय कुमार संदेश; साहित्य भूमि, नई दिल्ली; पृष्ठ 75
7. उड़ता चल हरिल — डॉ विजय कुमार संदेश; साहित्य भूमि, नई दिल्ली; पृष्ठ 77
8. उड़ता चल हरिल — डॉ विजय कुमार संदेश; साहित्य भूमि, नई दिल्ली; पृष्ठ 82
9. उड़ता चल हरिल — डॉ विजय कुमार संदेश; साहित्य भूमि, नई दिल्ली; पृष्ठ 83
10. खुश देश का सफ़र — पल्लवी त्रिवेदी
11. लोग जो मुझमें रह गए — अनुराधा बेनीवाल

प्रो. (डॉ.) अनिल सिंह
अधिष्ठाता, मानव्य विद्याशाखा
मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई
मो. — 7028029016

शोध सार

सती प्रथा एक ऐसी धार्मिक प्रथा है जिसमें एक पुरुष की मृत्यु होने पर उसकी विधवा पत्नी को उसके पति के शव के साथ जिंदा जला दिया जाता है। देखा जाए तो अभी तक हिन्दू ग्रन्थों में कहीं भी इसका उल्लेख नहीं मिलता है। कहा जाता है कि अगर कोई विधवा स्त्री स्वयं अपनी इच्छा से शव पर नहीं जाती है तो उसे जबरन भांग पिलाकर या बेहोशी की हालत में शव पर ले जाया जाता है। इसी 'सती प्रथा' को संजीव जी अपने उपन्यास 'मुझे पहचानो' में दिखाना चाहते हैं और धार्मिक मान्यताओं को खंडित करने और झूठी पर्दा प्रथा को हटाने का प्रयास करते हैं। संजीव जी ने 'मुझे पहचानो' उपन्यास में एक स्त्री के दर्द को बखूबी दिखाने का प्रयास किया है, कि कैसे एक स्त्री की शादी हो जाने के बाद से उनका पूरा जीवन अपने पति से जुड़ जाता है और उनके पति की मृत्यु के साथ-साथ उनके जीवन का भी अंत हो जाता है जैसे शादी में एक मंडप पर सात फेरे लेकर शादी होती है उसी प्रकार अपने पति की मृत्यु पर उसी चिता पर उसे जिंदा जलाया जाता है।

बीज शब्द – सती प्रथा, राजा राममोहन राय, चिता, मंदिर, विधवा, माता-पिता, अंधविश्वास, परम्परा, धर्म, जागरूकता।

सावित्री कुँअर का वह दिन मनहूस दिन था जिस दिन उसे किसी की नजर लग गयी, वह पढ़ना चाहती थी और उसके पिता भी उसे इलाहाबाद भेजना चाहते थे। वह दिन जैसे उसके जीवन की खुशियों पर शनि छा गया, स्कूल में कार्यक्रम था और सावित्री भारत माता बनी थी उसी कार्यक्रम में छोटे कुँअर ने भारत माता के वेश में ही देखा था। जब सावित्री प्रणाम करने के लिए आती है तो छोटे कुँअर सावित्री को देखकर अपने पिताजी से कहते हैं कि मुझे यही लड़की चाहिए, तब सावित्री के पिता ने कहा अभी तो बच्ची है, पर वह नहीं माने तो छोटे कुँअर के पिता जी ने बहुत समझाया। अन्य लोगों ने भी बहुत समझाया तब सावित्री के पिता ने हाँ कर दी और यहीं से सावित्री के जीवन में अशांति की शुरुआत हो जाती है। एक स्त्री चाहकर भी कुछ नहीं कर सकती। अगर विरोध करे तो अपने पिता के सम्मान पर बात आ जाती है, इसलिए विवाह के लिए स्वीकृति दे देती है।

इस उपन्यास में संजीव लिखते हैं – “अब्ल तो राजकुमारियाँ जन्म ही नहीं ले पातीं, जन्म ले भी लिया तो जी नहीं पाती और जी भी गयी; जैसे अभी लाल साहब की एक है, तो उसे काफी परदे में रखा जाता है।”

सावित्री को भी अगर परदे में रखा जाता तो वह आज इस अवस्था में न होती, वह अपनी जिन्दगी में बहुत खुश थी पढ़ाई

करना चाहती थी, उसके पिता उसे पढ़ने के लिए बाहर भेजने वाले थे। अगर उस दिन उसे उस वेश में न देखते तो शायद उसकी पहचान कुछ और होती। सावित्री कुँअर की शादी हो गयी और दो वर्ष बाद उसके पति की मृत्यु हो जाती है। जब वह विधवा हो जाती है तो उसके पेट में एक बीज (बच्चा) रहता है। “उससे पहले दिन सिंदूर, चूड़ी और सधवा के तमाम श्रृंगारों, प्रतीकों को हटाकर विधवा बनाया गया था और दूसरे दिन नहला-धुलाकर फिर से सुहागिन... जरी वाली ब्याहता साड़ी, माँग, कान, नाक, गले, कमर, हाथ-पाँव सब पर गहने। पूछने पर कोई जवाब न मिला सिवाय एक जवाब के 'ऐसा सौभाग्य सबको कहाँ मिलता है।'” सावित्री को कुछ भी समझ नहीं आ रहा था कि उसके साथ हो क्या रहा है, जब वह सोचती है और मन में विचार करती है तो मन में थोड़ी आशंका उत्पन्न होती है। वह भागने की भी बहुत कोशिश करती है पर सबमें असफलता ही हाथ लगती है। वह चीखती, चिल्लाती रही पर सबने उसे पकड़ लिया रोती चिल्लाती और कहती 'मेरे पेट में छोटे बीज कुँवर हैं' पर किसी ने एक न सुनी, सबने मिलकर उसे कुछ पिला दिया तो वह पूरे होश में न थी। ऐसा लग रहा था कि जिस दिन सावित्री को सती बनाया जा रहा था उस दिन जैसे प्रलय आ गया हो ऐसा मौसम था। सबने मिलकर उसे जलती आग में तो झोंक दिया पर ऊपर वाले को मंजूर ही कुछ और था एक अनर्थ होते-होते बच गया। जब चिता में सावित्री को देते हैं तब ऊपर से एक पेड़ चिता पर गिर जाता है और वह किसी नदी में बह जाती है पर यह किसी ने देखा नहीं कि सावित्री सती हो गयी या सीधे परलोक को गई। इसमें गाँव वालों का और एक अंधविश्वास जागा वह यह कि सावित्री सीधे स्वर्ग को गई। लोगों ने उस जगह को ही किसी धर्मस्थान से कम नहीं माना, जहाँ पर सावित्री को सीधे स्वर्ग जाते हुए देखा था। किसी को कुछ नहीं पता कि उस समय हुआ क्या था, बस सबको लगने लगा सावित्री सती होकर सीधे स्वर्ग चली गई, इसलिए इस जगह पर ही सती मंदिर बनाने का निर्णय किया गया। कहते हैं कि “साईं से भी बड़ा! तिरुपति से भी बड़ा! सबरीमाल से भी बड़ा! पद्मनाभ से भी बड़ा! सबसे बड़ा होगा अपना यह सती मंदिर।”

कैसी-कैसी धार्मिक मान्यताएँ होती हैं, कैसे पाखंड होते हैं, और अंधविश्वास भी क्योंकि जो विधवा स्त्री रो रही थी, चिल्लाती हुई हाथ-पाँव पटक रही थी तब किसी ने भी उसे बचाने की कोशिश नहीं की। जब वह रो-रोकर चिल्लाते हुए अपने आने वाले बच्चे को बचाने के लिए छटपटा रही थी, तब

किसी ने धर्म के बारे में नहीं सोचा। वह विधवा थी तो उसने क्या गुनाह किया, वह बच्चा जिसने इस दुनिया को देखा नहीं, पृथ्वी लोक पर अपना पैर नहीं रखा था, उस नन्हे बालक का क्या दोष था जो इंसानियत ही भूल गया था मनुष्य। जिंदा रहते किसी ने मदद नहीं की और अब उसी स्त्री का सती मंदिर बनाकर पूजा की जायेगी। सावित्री को जब सती बनने के लिए आग में झोंक दिया गया था तब चिता पर एक पेड़ गिर जाता है जिससे उछलकर वह नदी में गिर जाती है और बच जाती है, अधजली।

इस उपन्यास में नायिका सावित्री का एक कथन है – “जान जाएँ कि मैं जिंदा हूँ तो थूकेंगे और मर मई तो पूजा, माई-बाप भी। समाज भी पूरा पबस्त....! हमें तो अफीम पिलायी गयी पर उन्हें क्या पिलाया गया था, जिसका नशा अफीम से भी खतरनाक है।”⁴

कैसा समाज है यह? जिस माता-पिता ने जन्म से लेकर पालन-पोषण किया, जिसे पढ़ने के लिए इलाहाबाद भेजने वाले थे, आज वह बेटी अनजान हो जाती है, जिसकी शादी करने के बाद जब वह विधवा होकर सती बनायी जाती है तब वे भी समाज से मिल जाते हैं। जो दर्द अपने बच्चों का माता-पिता समझ सकते वह कोई और नहीं समझ सकता। माता-पिता चाहते तो अनर्थ होने से बचा सकते थे। जब सावित्री बच जाती है अपने पिता सहित अपने सारे रिश्तेदारों के यहाँ भी जाती है पर अपना से सब कोई इनकार करते हैं। जिंदा रहते हुए भी माता-पिता रहते हुए भी, वह अनाथ जैसी हो जाती है। उसी सावित्री की सती मंदिर बनाकर पूजा की जाती है, दीया जलाया जाता है। इस उपन्यास में एक कथन है – “कभी-कभी मन में आता है कोर्ट में जाकर खड़ी हो जाऊँ; मैं हूँ रानी सावित्री कुँअर। मैं ही अपनी मजार पर दीया जलाती हूँ। मैं ही! कितनी बार मरूँगी? कितना अजीब लगता है खुद का रोज-रोज जलना! कभी-कभी तो लगता है, तब से लेकर आज तक लगातार जलती ही रही हूँ मैं।”⁵

इस उपन्यास में राजाराम मोहन राय की भाभी आलोक मंजरी के सती होने की बात भी कही गई है। कहा जाता है जब उनकी भाभी को सती बनाया जा रहा था तब राममोहन वहाँ पर उपस्थित नहीं थे। वह बाहर गये हुए थे उनके आने तक का भी इंतजार नहीं किया गया था। जब वह वापस आते हैं तो सब खत्म हो चुका था। आलोक मंजरी को सती बनाया गया जब वह एक दिन में नहीं जली तो दूसरे दिन किसी ने देखा तो दुबारा जलाया गया था। राजा राममोहन राय सती प्रथा के विरोधी थे, अगर वहाँ उपस्थित रहते तो यह अनर्थ कभी न होने देते।

“सन् 1829 में वायसराय विलियम बेंटिक ने राजा राममोहन राय के कहने पर सती प्रथा को रोकने का कानून बनाया था।.... ‘विलियम बेंटिक ने न सिर्फ सती प्रथा पर रोक ही लगायी बल्कि नारी शिशु हत्या पर भी।”⁶

तत्कालीन लेखक जे पेगस के अनुसार – “कहीं भाग न जाएँ, सो औरत को मृत पति के साथ बाँध दिया जाता था, फिर भी कुछ भाग जाती अतः बाँसों से दबा कर जलती स्त्री को तब तक रखा जाता, जब तक जल न जाए।”⁷

ये कैसी परम्परा है जिसमें जो औरत जीना चाहती है, चिता पर से भागने की कोशिश करती है पर उस स्त्री से उसके जीने का हक छीन लिया जाता है और जबरन उसी आग में झोंक दिया जाता है और वहीं सती का मंदिर बनाकर पूजा भी जाता है। वही सती किसी तरह बचकर निकल जाती है पर अपने ही माता-पिता उसे पहचानने से इंकार कर देते हैं, वह बार-बार बोलती है— “पहचानिए मुझे, जिसे उसके जन्मदाता पिता ने नहीं पहचाना, जन्मदात्री माँ ने नहीं पहचाना, रियासतदारों ने नहीं पहचाना – पहचानिए मुझे।”⁸

आप चाहें तो इस आलोक मंजरी को फिर से मार कर जला दें।⁹ वह कहती रही मैं आप सबके समक्ष खड़ी हूँ आपलोग चाहें तो मुझे भी राजा राममोहन राय की भाभी आलोक मंजरी की तरह दुबारा जला सकते हैं।

सती प्रथा के पीछे संपत्ति हड़पने की भावना थी, राममोहन ने सती प्रथा का विरोध किया था 1828 में उन्होंने सतीदाह का एक विवरण ‘संवाद कौमुदी’ नामक पत्रिका में प्रकाशित किया था।¹⁰

राजा राममोहन राय ने सती प्रथा का विरोध किया और वह पहले से ही सती प्रथा का विरोध करते आए हैं वह अपने भाई की मृत्यु के समय अपने घर पर होते तो वह कभी भी अपनी भाभी को सती बनाने नहीं देते

- मृणाल पाण्डे ने लिखा है कि – “मन होने पर आज भी ग्रामीण पुरुष अपने घर में परिवार की मूक सहमति के तहत औरतों को चोटी से पकड़कर पीट सकते हैं और समाज की सांस्कृतिक स्वीकृति के बूते बाहर जाकर, उन्हें सती होने को उकसाने और फिर उस स्थल पर मंदिर बनाने के लिए चन्दा दे (या उगाह) सकते हैं ‘सती’ वस्तुतः पुरुष सत्ताकी सामन्ती शक्ति शृंखला का चरम स्वरूप है और जब तक लोकतन्त्र में सामन्तवाद संधि लगाता, सती की घटनाएँ यत्र-तत्र घटती रहेंगी।”¹¹

अगर देखा जाए तो अभी भी स्त्रियों की स्थिति में सुधार नहीं हुआ है, जो स्त्रियाँ आज के समय में आधुनिककाल में जागरूक

हुई हैं और वे अपने हक के लिए हमेशा जागरूक रहती हैं, बहुत सी स्त्रियाँ ऐसी होती हैं जिसे हमेशा प्रताड़ित किया जाता है वह न बोल पाती हैं, न लड़ झगड़ सकती हैं। राजा राममोहन राय ने संवाद कौमुदी' पत्रिका में सती प्रथा की समाप्ति के लिए अभियान चलाया था।

- सरला माहेश्वरी ने लिखा है कि – “भारत में आर एस एस और उसके देवेन्द्र स्वरूप जैसे भोपू इसी मानसिकता के लोग हैं, जो इतिहास को पीछे की ओर, गुलामी और बर्बरता की ओर मोड़ना चाहते हैं। इसमें स्त्री की मानवीय सत्ता के दमन का कोई स्थान नहीं हो सकता। सामंतवाद ने स्त्री को गुलाम बनाकर परिवार संस्था को विकृत किया था, उसे स्त्री-पुरुष के परस्पर प्रेम और समान अधिकारों की बुनियाद पर खड़ा करके ही मानवीय बनाया जा सकता है और तभी वह मानव सभ्यता के विकास के साथ बची भी रह सकती है।”¹²

निष्कर्ष :- इस प्रकार हम देख सकते हैं कि संजीव जी ने अपने उपन्यास ‘मुझे पहचानो’ में सती प्रथा की समस्या को हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास में सती होने पर अपने माता-पिता ही विरोध नहीं करते हैं बल्कि अगर वह बच भी जाती है तो पहचानने से भी अस्वीकार करते हैं। एक स्त्री का इससे बड़ा दुःख क्या हो सकता है कि उसे जन्म देने वाले माता पिता पहचानने से इनकार कर दें। एक स्त्री के जीवन में माता-पिता का स्थान और सम्मान सर्वोच्च रहता है वह जीवन में अपने माता-पिता पर सबसे ज्यादा विश्वास करती है। उसके जीवन में कोई भी समस्या आये है तो वह निश्चित रहती है क्योंकि उसे पता है कि मेरे जीवन में कोई संकट आए तो माता-पिता संभाल लेंगे। पर संजीव जी के उपन्यास ‘मुझे पहचानो’ को पढ़ने के बाद ऐसा लगता है कि वे कैसे माता-पिता थे जिन्होंने अपनी ही बेटी को सती बनाए जाने के समय विरोध न कर सके। जब अपने ही माता-पिता इन सब अंधविश्वास में विश्वास करते हैं तो हम दूसरों के माता-पिता से कैसे उम्मीद करें कि वह अपनी ही बेटे की पत्नी को अपने ही बेटे की मृत्यु के पश्चात् उसे अपनाकर बहू को बेटी बनाकर रखे जब अपने ही जन्मदाता माता-पिता ही अपनाते से अस्वीकार करे तो। बहुत सारी स्त्रियाँ अपने पति के न होने पर सन्यासी बन जाती हैं। वह भी अपनी इच्छा पर तो उसे कोई रोक नहीं, उसी प्रकार किसी स्त्री को जबरन सती नहीं बनाया जाना चाहिए, अगर वह स्वयं अपनी इच्छा से बनना चाहती हैं तो उसे कोई रोक नहीं, किसी भी प्रकार से कोई अंधविश्वास से नहीं।

संदर्भ सूची :-

- 1) संजीव, मुझे पहचानो, सेतु प्रकाशन नोएडा, उत्तर प्रदेश – 2020, पृ0सं0- 09
- 2) वही, पृ0सं0-56
- 3) वही, पृ0सं0-93
- 4) वही, पृ0सं0-60
- 5) वही, पृ0सं0-58
- 6) वही, पृ0सं0-123
- 7) वही, पृ0सं0-129
- 8) वही, पृ0सं0-175
- 9) वही, पृ0सं0-176
- 10) वही, पृ0सं0-130
- 11) पाण्डे मृणाल, जहाँ औरतें गढ़ी जाती हैं, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृ0सं0-68
- 12) माहेश्वरी सरला, नारी प्रश्न, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली-2007, पृ0सं0-150

सुमन कुमारी

शोधार्थी

हिंदी विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची



सारांश

हिन्दी कथा साहित्य का सिनेमाई रूपांतरण साहित्य और सिनेमा के संगम का एक अनूठा प्रयास है। यह केवल शब्दों को दृश्यों में बदलने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि कहानी की आत्मा को बनाए रखते हुए उसे सिनेमा की भाषा में प्रस्तुत करने की एक जटिल कला है। हिन्दी साहित्य में अनेक ऐसी कालजयी कृतियाँ हैं, जिनका सफल (और कभी-कभी असफल) सिनेमाई रूपांतरण हुआ है। साहित्य, सिनेमा को समृद्ध कथानक, चरित्र और भावनात्मक गहराई प्रदान करता है, जबकि सिनेमा साहित्य को व्यापक दर्शकों तक पहुँचाने का कार्य करता है। साहित्य और सिनेमा दोनों ही समाज का दर्पण होते हैं, लेकिन दोनों की प्रस्तुति का माध्यम अलग होता है। जहाँ साहित्य शब्दों के माध्यम से पाठकों की कल्पना को उड़ान देता है, वहीं सिनेमा दृश्य और ध्वनि के माध्यम से कहानी को जीवंत बनाता है। साहित्य में लेखक अदृश्य बिंबों का सृजन करता है, जबकि सिनेमा पूर्णतरु दृश्य माध्यम है। इसलिए साहित्य का सिनेमा में रूपांतरण सीधे-सीधे अदृश्य का दृश्यों में रूपांतरण होता है। वह भी कला या मूर्तिकला की तरह एक स्थिर चाक्षुष बिंब भर में नहीं, बल्कि पूर्णतरु जीवंत और प्रत्यक्ष नजर आते जीवन के घटनाक्रम में। जाहिर है कि यह रूपांतरण अत्यंत संवेदनशीलता और अपने माध्यम में गहन निपुणता की मांग इस सीमा तक करता है, कि जैसे फिल्म का निर्देशक उसे अपनी ही मौलिक कृति की तरह रचे। एक व्यक्ति जब पाठक के रूप में साहित्य पढ़ता है, तो वह अनायास स्वयं उस सृजन प्रक्रिया से संबद्ध हो जाता है। लेखक शब्दों के माध्यम से उसके सामने जो चरित्र प्रस्तुत करता है, उसे वह अपनी कल्पना शक्ति के माध्यम से अपने मानस पटल पर जीवंत करता है। उसके सामने जो घटनाएं लेखक प्रस्तुत करता है, उन्हें वह स्वयं अपनी कल्पना में आकार देता, और उन्हें घटते हुए देखता है। इस तरह सृजन की एक प्रक्रिया, जो लेखक द्वारा शुरू की जाती है, वह, पाठक की कल्पना में साकार होकर पूर्ण होती है। वही व्यक्ति जब फिल्म देखता है, तो उसकी सृजन प्रक्रिया उतनी क्रियाशील नहीं हो पाती। इसलिए कि उसके चरित्र अपने पूरे रूप और साज-सज्जा में उसके सामने प्रस्तुत किए जाते हैं। संपूर्ण घटनाक्रम दृश्य के रूप में उसकी आंखों के सामने चलती-फिरती-बोलती वास्तविक जिंदगी की तरह दिखायी जाती है। चूंकि वह फिल्म निर्देशक की कल्पना पर आधारित होता है, इसीलिए उन्हें सृजित करने में दर्शक की कोई हिस्सेदारी नहीं होती। उसे महज देखना और देख कर पसंद या नापसंद करना होता है। पुस्तक पढ़ कर उसने अपनी कल्पना में जो बिंब सृजित किए होंगे, अगर सिनेमा के बिंब उनके अनुरूप या बेहतर हुए, तब तो वह उससे संतुष्ट हो पाता

है, अन्यथा दर्शकों की अतृप्त भावना इस रूपांतरण प्रक्रिया को असफल घोषित कर देती है। लेकिन इससे इतर एक बड़ा दर्शक वर्ग वह होता है, जिसने साहित्य में उसे नहीं पढ़ा होता है। वह सीधे उस कहानी का परदे पर ही साक्षात्कार करता है। उसकी स्वीकृति सीधे इस पर निर्भर करती है कि निर्देशक उस साहित्य के कथानक, संवेदना और भावों को कितनी सफलतापूर्वक फिल्म में उतार पाया है। अगर बाहरी दबावों के चलते उसने अनावश्यक समझौते कर लिए हों, तो जाहिर है कि फिल्म अपेक्षित प्रभाव नहीं छोड़ पाती। साहित्य में सहूलियत यह है कि लेखक पृष्ठ-दर-पृष्ठ चरित्रों के मनोभावों में गहरे उतरता चला जा सकता है, जैसे निर्मल वर्मा के गद्य में होता है। जबकि सिनेमा को अपने पात्रों के मनोभावों को प्रकट करने के लिए उसके चेहरे पर नजर आते भाव ही पकड़ने होते हैं। वह सिर्फ बाहरी बिंब पकड़ सकता है। उसके मन के भीतर नहीं उतर सकता। लेकिन उसके पास चलते-फिरते चाक्षुष बिंब हैं, आवाज है, लाईटों के प्रभाव हैं, और अब तो आधुनिकतम तकनीक भी है, जो दृश्यों को शब्दों की बनिस्बत अधिक सशक्त ढंग से प्रस्तुत करने में सहायक होती है। सामान्यतया जिस दृश्य या भाव को प्रस्तुत करने के लिए लेखक को विस्तार में जाना पड़ता है, उसे कैमरा महज एक क्षण में अधिक वास्तविक रूप में प्रस्तुत करने की क्षमता रखता है। साहित्य के पाठक के लिए कोई समय सीमा नहीं होती। वह एक ही पुस्तक को कई दिनों तक पढ़ता चला जा सकता है, बल्कि अनेक बार पढ़ सकता है। एक तरह से वह कृति उसकी संवेदना का हिस्सा हो जाती है। जबकि सिनेमा के सामने उसी कृति को महज ढाई घंटे में प्रस्तुत करने की सीमा होती है। ऐसा करने के लिए उसे बहुत से विस्तार और अंशों को भी उसमें से निकाल देना होता है। साथ ही चुनौती यह भी होती है कि ये तमाम परिवर्तन करते हुए साहित्यिक कृति की मूल कथावस्तु, मूल भावना और मूल संवेदना के साथ कोई छेड़छाड़ न हो। अगर यह जरूरी संवेदनशीलता के साथ नहीं किया गया, तो फिल्म न तो अपेक्षित प्रभाव छोड़ पाती है, न साहित्यिक कृति के साथ न्याय कर पाती है। बावजूद ऐसी अनेक कठिनाइयों और सीमाओं के, साहित्य का फिल्मों में रूपांतरण होता है। अंग्रेजी में बड़े पैमाने पर होता है। वहां तो जैसे परंपरा-सी है कि क्लासिक कृतियों पर आधारित क्लासिक फिल्मों का निर्माण हो जाता है, और वह भी वैसी ही भव्यता, समझ और गुणवत्ता के साथ, जैसी रूपांतरण से अपेक्षित होती है। वे स्वयं प्रस्तुतीकरण और कला की उन ऊंचाइयों को छूती हैं, जैसी स्वयं साहित्यिक कृति। ऑस्कर अवार्ड प्राप्त फिल्मों में बड़ी संख्या साहित्यिक कृतियों से रूपांतरित फिल्मों की है। फिर हिंदी में कहां बाधा आती है? रूपांतरण, तो निःसंदेह होते हैं परन्तु उनका अनुपात

कम है। शरतचंद्र, रवींद्रनाथ टैगोर, प्रेमचंद या अमृता प्रीतम आदि पर अवश्य कुछ अच्छी फिल्में बनी हैं। लेकिन फिल्मों को बेहतरीन कथानकों की जरूरत होती है, और हिंदी साहित्य में ऐसे कथानकों का भंडार उपलब्ध होता है, जो फिल्मों से अछूता रह जाता है। समांतर फिल्मों के दौर में अवश्य आशा बंधी थी कि सामाजिक समस्याओं से जुझती गंभीर कलात्मक फिल्मों के युग का आगाज होगा, और वे तत्संबंधी साहित्यिक कृतियों को आधार बनाएंगी। कुछ ऐसी बेहतरीन फिल्में आई भी। लेकिन वह दौर दूर तक नहीं जा सका। हिंदी में फिल्मों को महज एक मनोरंजन का साधन मान लेने की जो अवधारणा बनी हुई है, वह गंभीर साहित्यिक कृतियों के फिल्मांकन में बाधा बनती है। फिल्मों को एक व्यवसाय मान कर, उसमें सैकड़ों करोड़ रुपए लगा कर, उसी अनुपात में मुनाफा कमाने की जो व्यावसायिक बाध्यताएं हैं, और उनके चलते जो तमाम तरह के अनुचित समझौते होते हैं, वे उन्हें साहित्यिक कृतियों के फिल्मांकन के लिए प्रेरित ही नहीं कर पाते। ऐसा करते समय वे दर्शकों की रुचि को भी खासा कमतर आंकते हैं। जबकि ऐसा है नहीं। जब भी किसी बेहतरीन कहानी पर लीक से हट कर बनी फिल्म आती है, तो दर्शक उसका स्वागत ही करते हैं। इससे आशा बंधती है कि आने वाले समय में साहित्यिक कृतियों के अधिक फिल्मांकन के लिए उर्वरक जमीन तैयार हो रही है। हिन्दी कथा साहित्य का सिनेमाई रूपांतरण एक रचनात्मक प्रक्रिया है, जिसमें साहित्यिक कृति को फिल्म की भाषा में ढाला जाता है। यह प्रक्रिया सरल नहीं होती, क्योंकि इसमें कहानी की आत्मा को बनाए रखते हुए उसे एक नए माध्यम में प्रस्तुत करना पड़ता है। हिन्दी कथा साहित्य और सिनेमा दोनों ही समाज की वास्तविकताओं, भावनाओं और कल्पनाओं को अभिव्यक्त करने के प्रभावी माध्यम हैं। साहित्य जहाँ शब्दों के माध्यम से पाठकों की कल्पना को विस्तार देता है, वहीं सिनेमा उन शब्दों को दृश्य, ध्वनि और अभिनय के माध्यम से जीवंत कर देता है। साहित्यिक कृतियों का सिनेमाई रूपांतरण केवल कहानी को फिल्म के रूप में प्रस्तुत करने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह साहित्य की आत्मा को बनाए रखते हुए उसे एक नए माध्यम में ढालने की कला है। यह रूपांतरण पाठकों के सीमित दायरे से निकलकर एक व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुँचता है, जिससे साहित्यिक कृतियाँ अधिक लोकप्रिय और प्रभावशाली बनती हैं।

सिनेमाई रूपांतरण की प्रक्रिया

हिन्दी कथा साहित्य को फिल्म के रूप में प्रस्तुत करने के लिए निम्नलिखित चरणों का पालन किया जाता है:

1. उपयुक्त कथा का चयन

ऐसी कहानी का चयन किया जाता है जो सिनेमाई रूप से प्रभावी

हो। कथानक में रोचकता और दृश्यात्मक संभावनाएँ होनी चाहिए।

2. पटकथा रूपांतरण

उपन्यास या लघु कथा को फिल्म की आवश्यकताओं के अनुसार परिवर्तित किया जाता है। कहानी की लंबाई को ध्यान में रखते हुए आवश्यक बदलाव किए जाते हैं। संवादों को अधिक स्वाभाविक और संप्रेषणीय बनाया जाता है।

3. दृष्टांकन और निर्देशन

निर्देशक अपने दृष्टिकोण के अनुसार कथा को फिल्मी रूप में प्रस्तुत करता है। सही कलाकारों का चयन (कास्टिंग) किया जाता है ताकि पात्रों की प्रामाणिकता बनी रहे। कैमरा एंगल, लाइटिंग और बैकग्राउंड स्कोर के माध्यम से भावनात्मक प्रभाव बढ़ाया जाता है।

4. संपादन और संगीत

फिल्म के प्रवाह को बनाए रखने के लिए उचित संपादन किया जाता है। संगीत और बैकग्राउंड स्कोर से कथा की गहराई को बढ़ाया जाता है।

सफल सिनेमाई रूपांतरण के लिए आवश्यक तत्व

1. मूल कथा की आत्मा को बनाए रखना
2. संवादों और पटकथा की प्रभावशीलता
3. सटीक कास्टिंग
4. सामाजिक और ऐतिहासिक संदर्भों की प्रामाणिकता
5. दृष्य-श्रव्य प्रभावों का सही उपयोग

हिन्दी कथा का सिनेमाई रूपांतरण एक जटिल और चुनौतीपूर्ण प्रक्रिया है क्योंकि इसमें साहित्यिक कृति को एक दृश्यात्मक माध्यम में ढालने की आवश्यकता होती है। यह केवल शब्दों को दृश्यों में बदलने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि इसमें मूल कहानी की आत्मा को जीवंत बनाए रखते हुए, उसे फिल्मी भाषा में प्रस्तुत करने की कला शामिल होती है। इस रूपांतरण में कई प्रकार की चुनौतियाँ आती हैं, जिनका वर्णन निम्नलिखित रूप से किया जा सकता है:

1. कथा की लंबाई और रूपांतरण की जटिलता

अधिकांश साहित्यिक कृतियाँ, विशेष रूप से उपन्यास, विस्तृत कथानक, चरित्र चित्रण और गहरी भावनात्मक परतों से युक्त होते हैं। लेकिन एक फिल्म की समयसीमा आमतौर पर 2-3 घंटे की होती है, जिससे पूरी कहानी को समाहित करना मुश्किल हो जाता है।

इस क्रम में उसे पर्दे पर प्रस्तुतीकरण के अनुकूल बनाने हेतु अनेक कारकों को ध्यान में रखना होता है जैसे –

संक्षिप्तिकरण का प्रयास: उपन्यासों की तुलना में फिल्मों की समयसीमा कम होती है, इसलिए कई घटनाओं को हटाना पड़ता है।

- कहानी की आत्मा बनाए रखना: आवश्यक कटौती करने के बावजूद कथा का मूल उद्देश्य और भावनात्मक प्रभाव बनाए रखना चुनौतीपूर्ण होता है।
- लघु कथाओं का विस्तार: यदि स्रोत सामग्री लघु कथा है, तो उसमें अतिरिक्त दृश्य और पात्र जोड़ने पड़ते हैं ताकि फिल्म की अवधि संतुलित हो सके।

2. पात्रों और उनके विकास की चुनौती—

साहित्य में पात्रों की मानसिक स्थिति और उनके आंतरिक संघर्ष को वर्णनात्मक रूप से प्रस्तुत किया जाता है, जबकि सिनेमा में यह दृश्य और संवादों के माध्यम से करना पड़ता है। जिसके अंतर्गत कुछ प्रमुख बिंदु निम्नवत हैं

- मनोवैज्ञानिक गहराई की प्रस्तुति: किताबों में पात्रों की सोच और भावनाएँ विस्तार से बताई जाती हैं, लेकिन फिल्मों में इसे संवादों, हाव-भाव और कैमरा एंगल्स से व्यक्त करना होता है।
- मुख्य पात्रों को प्राथमिकता देना: कई बार उपन्यास में अनेक सहायक पात्र होते हैं, लेकिन फिल्म में सीमित समय होने के कारण केवल मुख्य पात्रों पर ध्यान देना पड़ता है।
- कलाकारों का चयन (कास्टिंग): रु दर्शक साहित्यिक पात्रों के बारे में अपनी कल्पना बना लेते हैं, इसलिए अगर कास्टिंग उनकी अपेक्षाओं से मेल नहीं खाती, तो आलोचना का सामना करना पड़ता है।

3. साहित्यिक भाषा से दृश्य भाषा में बदलाव —

साहित्य और सिनेमा दो भिन्न माध्यम हैं। कृजहाँ एक में शब्दों के माध्यम से कल्पना विकसित होती है, वहीं दूसरा दृश्य और ध्वनि के माध्यम से कहानी कहता है। इसके अंतर्गत भी कुछ प्रमुख बदलाव किए जाने की आवश्यकता होती है जैसे —

- वर्णनात्मक शैली को दृश्यात्मक बनाना: रु उपन्यास में लंबे वर्णनात्मक हिस्से होते हैं, जिन्हें प्रभावी दृश्य और संवादों में बदलना कठिन होता है।
- आंतरिक विचारों की अभिव्यक्ति: रु उपन्यासों में पात्रों के विचारों और मानसिक संघर्षों को सीधे बताया जा सकता है, लेकिन फिल्म में इसे प्रतीकों, हाव-भाव और बैकग्राउंड स्कोर के माध्यम से दिखाना पड़ता है।
- संवादों का प्रभावी रूपांतरण: रु किताबों की भाषा अक्सर साहित्यिक होती है, लेकिन फिल्मों में उसे स्वाभाविक और संप्रेषणीय बनाना पड़ता है।

4. ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भों को बनाए रखना—

हिन्दी साहित्यिक कृतियाँ अक्सर किसी विशिष्ट समय, समाज या सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में स्थित होती हैं।

फिल्म रूपांतरण में उन संदर्भों को बनाए रखना एक चुनौती होती है। इस क्रम में आने वाली चुनौतियों को निम्न बिंदुओं से समझा जा सकता है—

- समय और स्थान की प्रामाणिकता: अगर कहानी ऐतिहासिक या किसी विशिष्ट कालखंड की है, तो सही परिधान, आर्किटेक्चर और सामाजिक संरचना को दर्शाना आवश्यक होता है।
- समकालीन दर्शकों के लिए प्रासंगिकता: रु कुछ साहित्यिक कृतियाँ पुराने सामाजिक ढांचों पर आधारित होती हैं, जिन्हें आज के दर्शकों के लिए प्रासंगिक बनाने के लिए परिवर्तन करने पड़ सकते हैं।
- संस्कृति और परंपराओं का सही चित्रण: रु भारतीय समाज की विविधता को ध्यान में रखते हुए, किसी भी कथा का सिनेमाई रूपांतरण करते समय उसकी मूल संस्कृति को विकृत न करना एक बड़ी चुनौती होती है।

5. व्यावसायिक दबाव और सिनेमाई स्वतंत्रता का टकराव—

कमोवेश रूप में फिल्म एक व्यवसाय का ही साधन है, इसलिए निर्माता एवं निर्देशक को ऐसी सामग्री प्रस्तुत करनी होती है जो व्यावसायिक रूप से सफल हो सके। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु रूपांतरित की जा रही साहित्यिक रचनाओं को अनेक बदलावों से गुजरना पड़ता है जैसे —

- लोकप्रियता बनाम प्रामाणिकता : कभी-कभी दर्शकों की पसंद को ध्यान में रखते हुए मूल कथा में बदलाव किए जाते हैं, जिससे उसका वास्तविक सार प्रभावित हो सकता है।
- मनोरंजन तत्वों की जोड़-तोड़ : प्रेम प्रसंग, गाने, हास्य और एक्शन जैसे व्यावसायिक तत्व जोड़े जाते हैं, जिससे मूल कथा की गहराई कम हो सकती है।
- फिल्मी क्लाइमैक्स का दबाव : साहित्य में अंत कई बार खुले या गंभीर होते हैं, लेकिन फिल्मों में संतोषजनक और नाटकीय क्लाइमैक्स की अपेक्षा होती है, जिससे मूल कथा में बदलाव करना पड़ सकता है।

6. इसके अलावा कुछ तकनीकी एवं बजट संबंधी सीमाएँ भी होती हैं विशेष रूप से ऐतिहासिक या फैंटेसी साहित्य का रूपांतरण करने में तकनीकी और बजट से जुड़ी कई समस्याएँ आती हैं। जैसे —

- विशेष प्रभाव (VFX) और सेट डिजाइन: काल्पनिक और ऐतिहासिक कथाओं के लिए उच्च गुणवत्ता वाले विजुअल इफेक्ट्स और सेट डिजाइन की जरूरत होती है, जिसका बजट अधिक हो सकता है।
- लोकेशन और शूटिंग का खर्च: किसी विशिष्ट कालखंड या

स्थान को दर्शाने के लिए वास्तविक लोकेशन या कृत्रिम सेट तैयार करना महंगा पड़ता है।

- तकनीकी सीमाएँ: यदि कोई कथा विज्ञान-फंतासी (sci&fi) या महाकाव्यात्मक (epic) शैली की है, तो उसकी भव्यता को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने के लिए अत्याधुनिक तकनीक की जरूरत होती है।

7. दर्शकों की अपेक्षाएँ और तुलना का दबाव –

साहित्यिक कृतियों के पाठकों के मन में पहले से एक छवि बनी होती है, जिससे फिल्म रूपांतरण को अक्सर तुलना और आलोचना का सामना करना पड़ता है। जिसके कारण निम्नलिखित बातें रूपांतरण के क्रम में चुनौतियाँ बनकर उभरती हैं –

- पाठकों की भावनाएँ : यदि फिल्म में कहानी को ज्यादा बदला जाता है, तो मूल रचना के प्रशंसक नाखुश हो सकते हैं।
- तुलना और आलोचना : अक्सर साहित्य पर आधारित फिल्मों को पुस्तक से कम प्रभावशाली कहकर आलोचना की जाती है।
- नवाचार की गुंजाइश: कुछ निर्देशक साहित्य को नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने की कोशिश करते हैं, लेकिन यह जोखिम भरा हो सकता है क्योंकि दर्शक मौलिकता से छेड़छाड़ पसंद नहीं करते।

हिन्दी कथा के सिनेमाई रूपांतरण में कई तरह की चुनौतियाँ आती हैं, लेकिन यदि इसे संतुलित ढंग से किया जाए तो यह बेहद प्रभावशाली हो सकता है। सफल रूपांतरण के लिए जरूरी है कि मूल कथा की आत्मा को बनाए रखते हुए, उसे सिनेमाई माध्यम की आवश्यकताओं के अनुसार ढाला जाए। यदि निर्देशक, पटकथा लेखक और निर्माता इन चुनौतियों को सही रणनीति के साथ संबोधित करें, तो वे एक उत्कृष्ट और यादगार फिल्म प्रस्तुत कर सकते हैं। साहित्य सिनेमा को समृद्ध कथानक, चरित्र और भावनात्मक गहराई प्रदान करता है, जबकि सिनेमा साहित्य को व्यापक दर्शकों तक पहुँचाने का कार्य करता है। हालाँकि, साहित्य से सिनेमा में रूपांतरण की प्रक्रिया चुनौतीपूर्ण होती है, लेकिन जब यह प्रक्रिया संवेदनशीलता, सृजनात्मकता और सिनेमा की तकनीकी क्षमताओं के सही उपयोग के साथ पूरी की जाती है, तो यह साहित्य और सिनेमा दोनों को समृद्ध बनाती है। सफल रूपांतरण न केवल साहित्य की लोकप्रियता को बढ़ाते हैं बल्कि समाज और संस्कृति पर भी गहरा प्रभाव डालते हैं। इसलिए, सिनेमाई रूपांतरण को केवल एक व्यावसायिक प्रयास न मानकर, उसे साहित्य और सिनेमा के बीच एक सेतु के रूप में देखा जाना चाहिए, जो कथा की गहराई को नए आयामों तक

पहुँचाता है। एक सफल रूपांतरण कथा की भावनात्मक और सांस्कृतिक गहराई को बनाए रखते हुए उसे नए दर्शकों तक पहुँचाने में सक्षम होता है, जिससे साहित्य और सिनेमा के बीच एक सशक्त संबंध स्थापित होता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :-

1. कुमार डॉ. विपुल (2014), साहित्य और सिनेमा अंतःसंबंध और रूपांतरण, दिल्ली : मनीष पब्लिकेशन
2. जोशी मनोहर श्याम (2000), पटकथा लेखन एक परिचय, नई दिल्ली : राजकमल
3. पांडे राजेन्द्र (2006), पटकथा कैसे लिखें, नई दिल्ली : प्रकाशक राधाकृष्ण
4. सिन्हा कुलदीप (2007), फिल्म निर्देशन, नई दिल्ली : प्रकाशक राधाकृष्ण
5. अग्रवाल प्रहलाद, सम्पादक (2009), हिंदी सिनेमा बीसवीं से इक्कीसवीं सदी तक, प्रगतिशील वसुधा एवं प्रहलाद अग्रवाल, इलाहाबाद, प्रकाशक साहित्य भंडार
6. पारख जवरीमल्ल (2006), हिंदी सिनेमा का समाजशास्त्र, लक्ष्मी नगर दिल्ली— 94, ग्रंथ शिल्पी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड
7. कुमार डॉ. विपुल (2014), साहित्य और सिनेमा अंतरू संबंध और रूपांतरण, दिल्ली: मनीष पब्लिकेशन
8. जोशी मनोहर श्याम, (2000) पटकथा लेखन एक परिचय, नई दिल्ली : राजकमल

अंशु कुमारी

शोधार्थी

विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग

भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा

ईमेल – anshukri1306@gmail-com



सारांश

भारतीय संस्कृति के स्वरूप को जानने के लिए पुराणों के अध्ययन की महती आवश्यकता है। पुराण भारतीय संस्कृति का मेरुदण्ड हैं। वह आधारपीठ हैं जिस पर आधुनिक भारतीय समाज अपने नियम को प्रतिष्ठित करता है।

पुराण का आविर्भाव—

पुराण के आविर्भाव का निर्देश वायुपुराण 1/14 तथा मत्स्यपुराण 3/3-4 में वेद के आविर्भाव से पूर्ववर्ती बताया गया है। ब्रह्मा ने सब शास्त्रों में पुराण का ही प्रथम स्मरण किया और अनन्तर उनके मुखों से वे वेद निःसृत हुए—

‘पुराणं सर्वशास्त्राणां प्रथमं ब्रह्मणा स्मृतम् ।

नित्यं शब्दमयं पुण्यं शतकोटिं प्रविस्तरम् ॥

अनन्तरं च वक्त्रेभ्यो वेदान्तस्य विनिःसृता ॥’

मत्स्य पुराण 3/3-4

पुराण शब्द की व्युत्पत्ति— पुराण शब्द की व्युत्पत्ति पाणिनि, यास्क तथा स्वयं पुराणों ने भी दी है। ‘पुरा भवं’ (प्राचीन काल में होने वाला) इस अर्थ में ‘सायं चिरं प्राहवेप्रगेऽव्ययेभ्यष्टुट युलौ तुट् च’ पाणिनि सूत्र (4/3/23) में पाणिनि के इस सूत्र से पुरा शब्द से ट्यु प्रत्यय करने तथा तुट् के आगमन होने पर ‘पुरातन’ शब्द निष्पन्न होता है परन्तु स्वयं पाणिनि ने ही अपने दो सूत्रों ‘पूर्वकालैक—सर्व जरत् पुराणनव केवलाः समानाधिकरणेन (2/1/49) तथा ‘पुराण प्रोक्तेषु ब्रह्मण कल्पेषु (4/3/105) में पुराण शब्द का प्रयोग किया है जिससे तुडागम का अभाव निपातनात् सिद्ध होता है। तात्पर्य यह है कि पाणिनि की प्रक्रिया के अनुसार ‘पुरा’ शब्द से ट्यु प्रत्यय अवश्य होता है परन्तु नियम प्राप्त तुट् का आगम नहीं होता। ‘पुराण’ शब्द ऋग्वेद में दशाधिक स्थानों पर मिलता है, जहाँ वह विशेषण रूप में प्रयुक्त है तथा उसका अर्थ है प्राचीन या पूर्वकाल में होने वाला।

यास्क के निरुक्त (3/19) के अनुसार पुराण शब्द की व्युत्पत्ति है— ‘पुराणवर्भवति’ अर्थात्— जो प्राचीन होकर भी नय होता है।

पद्म पुराण के अनुसार—

‘पुरा परम्परां वष्टि कामयते’

अर्थात् जो प्राचीनता की कामना करता है वह पुराण कहलाता है।

‘पुरा परम्परां वष्टि पुराणं तेन तत्स्मृतम्’

पद्म पुराण 5/2/53

पञ्चम शती में अमरकोश ने पुराण की पञ्चलक्षणात्मक व्याख्या की—

‘सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च ।

वंशानुचरितं चैव इति पुराणं पञ्चलक्षणं ॥’

पुराण की संख्या—

पुराणों की संख्या 18 अट्ठारह मानी गयी है। इन अष्टादश पुराणों के नाम प्रायः प्रत्येक पुराण में उपलब्ध होते हैं। देवी भागवत (स्कन्ध 1, अध्याय 3, 24वाँ श्लोक) में आद्य अक्षर के निर्देश से अष्टादश पुराणों का नाम निर्देश इस लघुकाय अनुष्टुप में निबद्ध कर दिया है—

‘मद्भयं भद्रयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम् ।

अनापदिल्लिङ्ग—कू—स्कानि—पुराणानि पृथक् पृथक् ॥’

मकरादि दो पुराण— मत्स्य तथा मारकण्डेय पुराण

भकारादि दो पुराण— भागवत तथा भविष्य

बकारादि तीन पुराण— ब्रह्म, ब्रह्मवैवर्त तथा ब्रह्माण्ड

व चतुष्टयम्— वामन, विष्णु, वायु तथा वाराह

अनातपत्लिङ्ग—कूस्क—अग्नि

नारद, पद्म, लिङ्ग, गरुड, कूर्म तथा स्कन्द आदि कुल अष्टादश पुराण की चर्चा उपलब्ध होती है।

श्रीमद्भागवद् पुराण का परिचय—

अष्टादश पुराणों में श्री कृष्ण के भगवान के रूप में चित्रित करने तथा उनकी ललित लीलाओं का विवरण देने में श्रीमद्भागवत अद्वितीय पुराण है।

देश— श्रीमद्भागवत के रचना क्षेत्र के विषय में भी पर्याप्त मतभेद है। भागवत दक्षिण भारत के भौगोलिक स्थानों तथा तीर्थों से उत्तर भारतीय तीर्थों की अपेक्षा विशेष परिचय रखता है।

काल— श्रीमद्भागवत का काल निर्देश बहिरङ्ग साक्ष्य पर भी निर्णीत है।

द्वैतमत के संस्थापक आनन्दतीर्थ (मध्वाचार्य—जन्म 1199 ई०) ने ‘भागवततात्पर्य निर्णय’ में श्री भागवत् के मूल तात्पर्य का निर्देश कर इसे पंचम वेद माना है। आचार्य रामानुज ने (1017 ई० जन्मकाल) अपने ‘वेदान्त तत्त्वसार’ में भागवत की वेद स्तुति (10/87) से तथा एकादश स्कन्ध से कतिपय श्लोकों को उद्धृत किया है जिससे भागवत् का तत्पूर्ववर्तितत्त्व होना सिद्ध है।

श्रीमद्भागवत महापुराण का वैशिष्ट्य एवं श्रेष्ठता

सूत जी ने श्रीमद्भागवत महापुराण की श्रेष्ठता का प्रतिपादन करते हुए कहा है—

राजन्ते तावदन्यापि पुराणानि सतां गणे ।

यावन्नदृश्यते साक्षाच्छ्रीमद्भागवतं परं ॥

भा०म०पुरा० 1/13/14

अर्थात् सन्तों के समूह में तब तक ही दूसरे पुराण सुशोभित होते हैं जब तक कि साक्षात् श्रीमद्भागवत का दर्शन नहीं हो जाता है। श्रीमद्भागवत का दर्शन हो जाने पर सन्त पुरुष जान लेते हैं कि श्रीमद्भागवत का दर्शन समस्त पुराणों की अपेक्षा श्रेष्ठ है। यह ऐसा

पुराण है कि इसका मनन—चिन्तन करके मनुष्य मानव जीवन के चरमोद्देश्य मुक्ति नामक पुरुषार्थ को प्राप्त कर लेता है। वह सदा सदा के लिए इस भयावही से मुक्त हो जाता है। 'किं बहुना' यह श्रीमद्भागवत पुराण समस्त शास्त्रों का सार है। मुक्ति के साधनों का स्पष्ट रूप से भक्ति ज्ञान तथा वैराग्य का जितना विशद वर्णन श्रीमद्भागवत महापुराण में है उतना वर्णन किसी भी दूसरे पुराण में नहीं। अतएव इस पुराण की श्रेष्ठता प्रख्यात है।

सूत जी के शब्दों में—

“सर्ववेदान्तसारं हि श्रीमद्भागवतमिष्यते ।

तद्वरामृततृप्तस्य नान्यत्र स्याद्रतिः क्वचित् ।।

भा०म०पु० / 12/13/15

वेदार्थों का निर्णय करने वाले शास्त्र को ही वेदान्त शब्द से परिभाषित किया गया है। यह श्रीमद्भागवत ग्रन्थ उन समस्त वेदान्तों का सार सर्वस्व है, जो साधक श्रीमद्भागवत के ज्ञान रस का पान करके तृप्त हो जाता है उसका अन्य किसी भी शास्त्र से प्रेम नहीं होता है। श्रीमद्भागवत की उपमा देते हुए सूत जी ने कहा—

निम्नगानां यथा गङ्गादेवानामुच्यते यथा ।।

वैष्णवानां यथा शम्भुः पुराणमिदं तथा ।।

भा०म०पु० / 2/13/16

अर्थात् जिस तरह सभी नदियों में पतित पावनी गंगा नदी श्रेष्ठ है तथा सभी देवों में अपने स्वरूप में ही स्थित रहने वाले भगवान् अच्युत श्रेष्ठ हैं, भगवद्भक्तों में जैसे निरन्तर परमात्मा चिन्तन करते रहने वाले शङ्ख जी श्रेष्ठ हैं उसी तरह सभी पुराणों में यह श्रीमद्भागवत पुराण भी श्रेष्ठ है।

यही नहीं—

“प्राणी चैव सर्वेषां यथा काशी ह्यनुत्तमा ।

तथा पुराणव्रातानां श्रीमद्भागवतं द्विजाः ।।”

अर्थात् हे शौनकादि महर्षियों जिस तरह सभी क्षेत्रों में काशी सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि काशी में मरने वाले जीवों की मुक्ति हो जाती है यह शास्त्र सम्मत तथ्य है। अतएव काशी क्षेत्र सर्वोत्तम है। इससे बढ़कर कोई दूसरा क्षेत्र नहीं है। उसी तरह पुराण समूह में श्रीमद्भागवत महापुराण सर्वोत्तम है।

श्रीमद्भागवत की महिमा का वर्णन करते हुए सूत जी ने शौनकादि महर्षियों को बतलाया कि—

श्रीमद्भागवतं पुराणममलं यद्वैष्णवानां प्रियं ।

यस्मिन् पारमहंस्यमेकमलं ज्ञानं परंगीयते ।।

तत्र ज्ञानविरागभक्ति सहितं नैष्कर्म्यमाविष्कृतम्

तच्छृण्वन् प्रपठन् विचारणपरं भक्त्या

विमुच्येन्नरः ।।

श्रीमद्भागवत (12/13/18)

अर्थात् यह श्रीमद्भागवत पुराण निर्दोष है। यह भगवद्भक्तों का अत्यन्त प्रिय पुराण है। इस पुराण में जीवन्मुक्त

परमहंसों के सर्वश्रेष्ठ अद्वितीय एवं माया के लेश से रहित ज्ञान का वर्णन किया गया है। इस ग्रन्थ की सबसे बड़ी विशेषता है कि इसका नैष्कर्म्य अर्थात् कर्मों की आत्यन्तिक निवृत्ति, ज्ञान, वैराग्य एवं भक्ति से युक्त है। जो पुरुष इसका श्रवण, पठन एवं मनन करने लगता है उसे भगवान् की भक्ति प्राप्त हो जाती है और वह मुक्त हो जाता है। श्रीमद्भागवत ग्रन्थ भगवत् तत्त्व विषयक ज्ञान का प्रकाशक है। इसके समान कोई भी पुराण नहीं है। सर्वप्रथम श्री भगवान् ने इसको ब्रह्मा जी के लिए प्रकाशित किया था। उसके पश्चात् वह ब्रह्मा जी के रूप में देवर्षि नारद जी को इसका उपदेश दिये। तदनन्तर उन्होंने नारद जी के रूप में भगवान् श्री कृष्ण द्वैपायन को इसका उपदेश किया। इसके पश्चात् उन्होंने व्यास के रूप में योगीन्द्र श्री शुकदेव जी को इसका उपदेश किया, फिर शुकदेव जी के रूप में करुणावशात्— राजर्षि परीक्षित को इसका उपदेश दिया।

वे श्री भगवान् परम शुद्ध और माया—मल से रहित हैं—

सूत जी के शब्दों में—

कस्मै येन विभासितोऽयमतुलो ज्ञानप्रदीपः पुरा ।

तद्रूपेण च नारदाय मुनये कृष्णाय तद्रूपिका ।।

योगीन्द्राय तदात्मनाथ भगवदराताय कारुण्यतः

तच्छुद्धं विमलं विशोकममृतं सत्यं परं धीमा' है ।

श्रीमद्भागवत

(12/13/19)

अर्थात् महाभाग व्यास जी आपकी दृष्टि अमोघ है। आप पवित्र कीर्ति हैं। आप सत्य परायण एवं दृष्टव्रत हैं। अतः आप सब सभी जीवों को संसार के बन्धन से मुक्त करने के लिए समाधि के द्वारा अचिन्त्य, शक्ति सम्पन्न श्री भगवान् की लीलाओं का स्मरण करें। ऐसा करने पर ही आपको परम शान्ति की प्राप्ति होगी। इसके पश्चात् श्रीमद्भागवत ग्रन्थ का प्रणयन करके व्यास जी ने परम शान्ति को प्राप्त किया। इस श्रीमद्भागवत पुराण में सकाम कर्मयोग, निष्काम कर्मयोग, साधक ज्ञान, सिद्ध ज्ञान, साधन शक्ति, वैधी शक्ति, प्रेम भक्ति, मर्यादा मार्ग, द्वैत—अद्वैत तथा द्वैताद्वैत का विस्तृत विवेचन है।

यह पुराण प्रेम की मधुरता से पद—पद पर रसमय प्रतीत होता है। इसमें कहीं भी रसाभाव की प्रतीति नहीं होती है।

—श्रीमद्भागवत ग्रन्थ आशीर्वादात्मक ग्रन्थ है। इसका नियमतः पाठ करने से लौकिक एवं पारलौकिक सभी प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। इस पुराण में अनेक प्रकार के अमोघ प्रयोग हैं।

उदाहरणार्थ— नारायण कवच, गजेन्द्र स्तुति,

पुंसवन—व्रत, पयोव्रत सप्ताह श्रवण आदि।

जो कोई भी व्यक्ति अपने वैदुष्याभिमान का परित्याग करके इस श्रीमद्भागवत पुराण का पाठ अर्थानुसन्धानपूर्वक करता है वह श्री भगवान् की कृपा को अवश्य प्राप्त करता है।

सर्वप्रथम श्री भगवान जी ने ब्रह्मा जी को चतुःश्लोकी भागवत का उपदेश किया था।

स्कन्द पुराण में श्री मद्भागवत के माहात्म्य को प्रतिपादित करते हुए कहा गया है—

नित्यं भागवतं यस्तु पुराणं पठतेन्नरः ।

प्रत्यक्षरं भक्तस्य कपिलादानजं फलम् ।।

अर्थात् जो भक्त प्रत्येक दिन श्रीमद्भागवत महापुराण का पाठ करता है उसको इस भागवत पुराण में जितने अक्षर हैं उतनी कपिला गौ दान करने का फल प्राप्त होता है।

दृष्ट्वां भागवतं दूरात् प्रक्रमेत सम्मुखं हियः ।

पदे—पदेऽश्वमेधस्य फलं प्राप्नोत्यसंशयम् ।।

अर्थात् जो मनुष्य दूर से ही श्रीमद्भागवत को देखकर उसके सामने जाता है, उसको पग—पग पर अश्वमेध यज्ञ करने का फल प्राप्त होता है, इसमें बिल्कुल सन्देह नहीं है।

श्रीमद्भागवत महापुराण की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए स्कन्द महापुराण में कहा गया है कि

“योऽर्चयन्ति गृहे नित्यं शास्त्रं भागवतं कलौ ।

आस्फोटयन्ति वल्गन्ति तेषां प्रीतो भवाम्यहम् ।।”

अर्थात् कलियुग में श्रीमद्भागवत को अपने गृह में रखने मात्र से ही वह वंश कुटुम्ब कल के भय से मुक्त होकर दूध, घी, मधु, धान्य से परिपूर्ण होकर समृद्ध जीवन व्यतीत करते हैं।

डॉ० आभा द्विवेदी

सहायक आचार्य,

संस्कृत विभाग, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय

कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर।



सारांश

प्राचीन काल से ही भारत विश्व में अपनी समृद्ध विरासत एवं शिक्षा प्रणाली के लिए प्रसिद्ध रहा है। यह भारतीय विरासत की महानता का ही प्रतीक है कि शिक्षा प्राप्ति के लिए विश्व के विभिन्न देशों से विद्यार्थी भारत आते थे। शिक्षा ही वह माध्यम रहा है जिसके द्वारा प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक भारतीय विरासत समृद्ध बनी रही है। हमारा देश अनेकों ऋषिओं और मुनियों की तपो भूमि रहा है। उनके ज्ञान की धारा वर्तमान में भी निरंतर प्रवाहशील है। आज की उपभोगतावादी संस्कृतियाँ भी उस प्राचीन ज्ञान के महत्व को स्वीकार करने के लिए बाध्य है। प्राचीन काल में भारतीय शिक्षा प्रणाली पर धर्म का गहरा प्रभाव रहा है। इसीलिए धर्म एवं शिक्षा का गहरा संबंध रहा है और दोनों साथ-साथ ही प्रसारित होते रहे। वेदों को भारतीय संस्कृति का आधार ग्रंथ स्वीकार किया गया है। वेद अथाह ज्ञान के भंडार हैं। इस कारण से आज भारत सहित विश्व के अनेक देश वेदों में निहित ज्ञान पर शोध कार्य कर रहे हैं। यह भारतीय विरासत की अपनी अलग ही पहचान है कि शिक्षा में धार्मिक विषयों के साथ-साथ आधुनिक विषयों को भी समान महत्व दिया जाता था। इसीलिए शिक्षा में प्रयोगात्मक एवं व्यावहारिक ज्ञान पर अधिक बल दिया जाता था। इसी विरासत एवं शिक्षा की छाप हमें नवीन शिक्षा नीति पर दिखाई पड़ती है।

यह भारत की महान विरासत का ही उदाहरण है कि अपनी समृद्ध शिक्षा प्रणाली के कारण ही हमारे देश को विश्व गुरु का दर्जा प्राप्त था। शिक्षा ज्ञानपरक एवं सुनियोजित होने के कारण मनुष्य के सर्वांगीण विकास का आधार है। भारतीय संस्कृति के संरक्षण एवं उत्थान में भी शिक्षा का विशेष योगदान रहा है। इसीलिए शिक्षा को वैदिक साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। विष्णु पुराण में वर्णन मिलता है कि “सःविद्या या विमुक्तये” अर्थात् शिक्षा ही मुक्ति का आधार है।¹ शिक्षा शब्द का प्रयोग विद्या, ज्ञान और विनय आदि अर्थों में किया जाता है। बालक के चरित्र निर्माण एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के लिए शिक्षा अनिवार्य है।² यह हमारी महान विरासत का ही प्रतीक है कि महाभारत में भी विद्या के महत्व को स्वीकार करते हुए कहा गया है कि विद्या के समान कोई दूसरा नेत्र नहीं है।³

भारतीय समाज में गुरु को विशेष महत्व दिया जाता रहा है। गुरु का पद समाज में आदरयुक्त एवं गरिमामय माना जाता था। गुरु अपने ज्ञान रूपी दीपक से विद्यार्थियों के जीवन में प्रकाश की किरणों को विकीर्ण कर देते हैं।⁴ इसलिए समाज में गुरु को आदर के साथ पूज्य भी माना जाता था। इसीलिए हमारे धार्मिक ग्रन्थों में भी गुरु की महिमा को स्वीकार किया गया है। गुरु ज्ञान देते

हैं और इसीलिए हमारे समाज में गुरु को भगवान से भी ऊँचा स्थान दिया गया है। अनेक धार्मिक ग्रन्थों का प्रारम्भ भी गुरु उपासना से ही होता है। महाभारत में एक अच्छे गुरु के गुणों का वर्णन किया गया है। गुरु को जीवन भर विद्याध्ययन करते रहना चाहिए जिससे उनके ज्ञान में निरंतर वृद्धि होती रहे।⁵ गुरु एवं शिष्य का संबंध पिता और पुत्र के समान होता था। हमारे धार्मिक ग्रन्थों में विद्या को सबसे उत्तम धन माना गया है। विद्या को चोर चुरा नहीं सकते और धन से खरीदा नहीं जा सकता है बल्कि दूसरों को देने पर यह अधिक बढ़ जाती है।⁶

उपनयन संस्कार से विद्या का प्रारंभ होता था। इस संस्कार के अवसर पर बालक और बालिकाओं को यज्ञोपवीत धारण कराया जाता था। धर्म के प्रभाव के कारण शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक में धार्मिक वृत्तियों का उत्थान करना था। विद्या में भौतिकता एवं आध्यात्मिकता दोनों का संवर्द्धन होता है जिससे बालक के व्यवहार में धर्मनिष्ठा व नैतिकता बनी रहे।⁷ भारतीय समाज में छात्रों के लिए ऐसी शिक्षा व जीवनचर्या अपनाई गई थी जो उनके सुदृढ़ चरित्र निर्माण में सहायक हो सकें। छात्र की बुद्धि, मनोदशा और शारीरिक विकास सही दिशा में हो यही भारतीय शिक्षा का मुख्य प्रयोजन था। शिक्षा का धर्म के साथ समावेशन भारतीय समाज की अपनी विशेष पहचान थी। धार्मिक नियमों और निर्देशों से छात्र के जीवन को सुव्यवस्थित एवं नियमित करने का प्रयास किया जाता था। इस माध्यम से छात्र में आत्मचिंतन, आत्मविश्वास, आत्मसंयम और न्याय-प्रवृत्ति की भावना विकसित होती थी। छात्र का आत्मविश्वास ही उसके समस्त गुणों का आधार माना जाता था।⁸

भारतीय शिक्षा प्रणाली में छात्रों में कर्तव्य भावना उत्पन्न करने पर बल दिया जाता है। जिससे वह सभी समुदायों के लोगों के प्रति उदारता और समानता का व्यवहार करें। शिक्षा प्राप्ति के समय ही बालक कठिन परिस्थितियों में उत्तरदायित्व निभाना सीख जाता था। इसीलिए गुरुकुल में छात्र अपने जीवन निर्वाह हेतु आवश्यक वस्तुओं का प्रबंध स्वयं ही करते थे। भिक्षा माँगना, अग्नि परिचर्या, गुरुकुल के दैनिक कार्य करना, आचार्य की गायों को चराना और नियमित रूप से धार्मिक कार्य करना आदि छात्रों के मुख्य कार्य होते थे।⁹ भारत का प्राचीन साहित्य बहुत ही ज्ञान युक्त रहा है। लेखन कला के अभाव में इस ज्ञान-विज्ञान को मौखिक परंपरा के माध्यम से ही हजारों वर्षों तक सुरक्षित रखा गया था।¹⁰ शिक्षा प्रणाली में धार्मिक विषयों के साथ-साथ अन्य विषयों को भी शामिल किया जाता था। इसीलिए चारों वेदों, वेदांग, इतिहास, पुराण, व्याकरण, गणित, दैवविद्या, भूत विद्या, नक्षत्र विद्या, सर्प विद्या, व्याकरण, युद्ध विद्या और चिकित्सा आदि विषयों की शिक्षा दी जाती थी।

हमारे देश में शैक्षणिक गोष्ठियों एवं शास्त्रार्थों का भी विशेष महत्व रहा है। शिक्षा एवं यज्ञ से संबंधित विभिन्न विषयों पर वाद-विवाद हुआ करते थे। इसके लिए शतपथ ब्राह्मण में 'ब्रह्मोदय' शब्द का प्रयोग किया गया है। प्रश्न पूछने के लिए एक निर्णायक समिति गठित की जाती थी। वाद-विवाद से ही न्यायशास्त्र विषय का उद्भव हुआ। गुरु, शिष्य और समाज के विद्वान उत्साहपूर्वक इन प्रतियोगिता में भाग लिया करते थे। इन प्रतियोगिताओं का आयोजन गुरुओं के आश्रम, यज्ञ स्थल एवं राजदरबार में किया जाता था।¹¹ प्रारंभ में भारतीयों को लिपि का ज्ञान नहीं था और इसलिए कंठस्थ प्रणाली से शिक्षा प्रदान की जाती थी। मौखिक पद्धति से ही व्याख्यान प्रणाली का विकास हुआ। भारतीय समाज में शिक्षा निःशुल्क प्रदान की जाती थी। जनसाधारण एवं राजाओं द्वारा दी गई आर्थिक सहायता के आधार पर ही शिक्षण संस्थाओं का खर्च चलता था। यह हमारी समृद्ध विरासत की ही विशेषता रही है कि शिक्षा निःशुल्क प्रदान की जाती थी। इसीलिए आर्थिक आधार पर किसी भी बालक को शिक्षा से वंचित नहीं किया जा सकता था।

भारतीय शिक्षा प्रणाली बहुत ही उच्च कोटि की थी। संस्कृत साहित्य में जो तकनीकी ज्ञान निहित है वह आधुनिक युग में अग्रसर रहने वाले अमेरिकी शास्त्रज्ञों से भी आधुनिक है। हमारे धार्मिक ग्रंथों में अनेक आधुनिक वस्तुओं का उल्लेख एवं उनकी निर्माण विधि का वर्णन किया गया है। भारद्वाज मुनि ने वृहद्विमान-शास्त्र ग्रंथ में 'रुक्मि' नामक विमान की उड़ान विधि का उल्लेख किया है।¹² शिवकर बापूजी तलपड़े ने इसी तकनीक के माध्यम से 1895 ई. में एक भारी मानव रहित विमान उड़ाया था।¹³ छात्रों को प्रत्यक्षीकरण द्वारा शिक्षित करने पर बल दिया जाता था। इसीलिए उन्हें स्वयं प्रयोग करके सीखने हेतु प्रेरित किया जाता था। इस प्रकार प्राचीन शिक्षा प्रणाली में भी आधुनिक युग की तरह प्रयोग विधि पर अधिक ध्यान दिया जाता था जिससे प्राप्त ज्ञान स्थिर हो सके। इस प्रकार के उदाहरण हमें नवीन शिक्षा नीति में भी देखने को मिलते हैं।

प्राचीन ग्रंथों में ऊर्जा के उपयोग की जानकारी प्राप्त होती है। इसीलिए विद्युत शक्ति से चलने वाले उपकरणों के लिए 'शक्त्योद् गम' शब्द का प्रयोग किया गया है। हमारे ग्रंथों में विद्युत के साथ-साथ भाप शक्ति, पवन शक्ति, सूर्यताप एवं चम्बकीय शक्ति से चलने वाले यंत्रों के उपयोग की भी जानकारी प्राप्त होती है। शुक्रनीति नामक ग्रंथ में आग्नेयशास्त्र बनाने की विधि का वर्णन मिलता है। महाभारत में धृतराष्ट्र को राजमहल में ही युद्ध का प्रत्यक्ष आँखों देखा विवरण संजय ने सुनाया था। जो आधुनिक दूरदर्शन तकनीकी के बिना संभव नहीं हो पाता।

वैदिक काल में बारह प्रसिद्ध ऊर्जा के केंद्र थे। जिन्हें हम बारह ज्योतिर्लिंग मानकर उनके प्रति भक्ति की भावना रखते हैं। इन लम्ब स्थानों पर लंब गोलाकार शिवलिंग प्रतिष्ठित है। यदि हम इन शिवलिंग के आकार पर विचार करें तो यह मुम्बई में ट्राम्बे की अणुभट्टी की तरह समान आकृति के है। हमारे यहाँ प्राचीन काल से ही गणित एवं ज्योतिष की उच्च कोटि की शिक्षा दी जाती थी। वैदिक ग्रंथों में पाँच साल का एक युग, प्रत्येक सौर वर्ष में 366 दिन और 27 नक्षत्रों का उल्लेख किया गया है। एक सौर वर्ष में 12 मास और 6 ऋतुएँ भी माने गए हैं।¹⁴

गणित का सर्वाधिक विकास गुप्तकाल में हुआ था। अतः विश्व इस क्षेत्र में भारत का ऋणी माना जाता है। आर्यभट्ट ने पाई का मान 3.1416 बताया था जो आधुनिक शुद्धतम मूल्य के अनुसार लगभग ठीक है। आर्यभट्ट बीजगणित और ज्योतिष शास्त्र के महान विद्वान थे और उन्होंने 'आर्यभटीय' ग्रंथ की रचना की थी। उन्होंने ही पृथ्वी की परिधि को चार-चार कोसों के 3300 योजन के बराबर माना था। ज्योतिष पर वराहमिहिर ने 'पंचसिद्धान्तिका' एवं 'वृहत् संहिता' और ब्रह्मगुप्त ने 'ब्रह्मस्फुट सिद्धान्त' नामक ग्रंथों की रचना की। इन ग्रंथों में ग्रहों की स्थिति, सूर्य और चंद्रग्रहण की गणना, नक्षत्रों इत्यादि का विवरण दिया गया है। भास्कराचार्य ने 'सिद्धान्त शिरोमणि' ग्रंथ में गणित के नियमों का उल्लेख किया है। चंद्रगुप्त द्वितीय का महरौली स्तम्भ यह प्रमाणित करता है कि भारतीयों को धातु विज्ञान के क्षेत्र में उच्च ज्ञान प्राप्त था। भारतीयों ने कच्चे माल से धातुओं को निकालने एवं उन्हें ढालने में दक्षता प्राप्त कर ली थी। इसी ज्ञान के कारण महरौली स्तम्भ लेख अपनी चमक के लिए प्रसिद्ध है और उस पर आज तक जंग नहीं लगी।¹⁵ इससे यह प्रमाणित होता है कि भारतीयों को प्राचीन काल में भी उच्च कोटि का तकनीकी ज्ञान प्राप्त था।

भारतीय लोगों को प्रारंभ से ही चिकित्सा का भी ज्ञान प्राप्त था। इसीलिए नियमित रूप से चिकित्सा की शिक्षा प्रदान की जाती थी। चिकित्सा के ज्ञान के लिए जीवक, चरक और सुश्रुत सम्पूर्ण देश में प्रसिद्ध थे। शल्य चिकित्सा सीमित प्राकृतिक निश्चेतक औषधियों के बिना भी बहुत ही प्रभावी थी।¹⁶ वैश्यों को व्यापार एवं किसानों को कृषि और पशुपालन की शिक्षा दी जाती थी।¹⁷ वाणिज्य शिक्षा में भूगोल, भाषा, गणित, लेखा और बैंकिंग सिद्धान्तों की शिक्षा शामिल थी।¹⁸

इस प्रकार से भारत की महान विरासत में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। जिसके कारण प्राचीन काल से ही वैश्विक स्तर पर भारत की एक अलग पहचान बनी हुई है। हमारी शिक्षा प्रणाली हमारी समृद्ध विरासत की ही विशेषता रही है।

शिक्षा का धर्म से संबंध होने के बावजूद भी उसमें आधुनिक काल के सभी विषय सम्मिलित थे। छात्र बहु-विषयक दृष्टिकोण से शिक्षा प्राप्त करते थे। अध्ययन के समय सैद्धांतिक पक्ष के साथ-साथ व्यावहारिक एवं प्रयोगिक पक्ष पर अधिक ध्यान दिया जाता था। इसीलिए यह शिक्षा प्रणाली छात्र के बहुमुखी विकास में सहायक सिद्ध होती थी। बालकों को इस प्रकार का ज्ञान दिया जाता था जिससे भविष्य में वह किसी भी प्रकार का कार्य सफलतापूर्वक कर सकते थे। प्राचीन शिक्षा प्रणाली में उन सभी गुणों का समावेश पाया जाता था जिन गुणों का आधुनिक काल में हमारी शिक्षा प्रणाली में अभाव हो गया था। अतः शिक्षा को अधिक उपयोगी बनाने के लिए नवीन शिक्षा नीति 2020 में विभिन्न पक्षों को प्राचीन शिक्षा प्रणाली से ही अपनाया गया है। हम इस प्रकार के प्रयासों से ही प्राचीन काल में भारत को प्राप्त विश्व गुरु का स्थान वापस प्राप्त कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची—

- विष्णु पुराण, (19/1/41)।
- अल्तेकर, अ.स., 'एजुकेशन इन ऐसियन्ट इंडिया', (दिल्ली-2009) पृष्ठ 4-5।
- महाभारत, (12/339/6), नास्ति विद्यासमं चक्षुर्नास्ति सत्यसमं तपः।
- अपर्णाक द्वारा उद्धृत, याज्ञवल्क्य स्मृति, 1.212, यथा घट प्रतिच्छन्ना रत्न राजा महाप्रभाः।
- दूबे, डा.राजदेव, 'स्मृतिकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति' (याज्ञवल्क्य स्मृति के विशेष संदर्भ में), (प्रतिमा प्रकाशन दिल्ली - 1988), पृष्ठ 130।
- हितोपदेश, कथामुखम् (4)।
- मनुस्मृति (2/69)।
- मिश्र, डॉ. जयशंकर, 'प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास', (प्रकाशक: बिहारी हिन्दी ग्रंथ अकादमी, राजेन्द्र नगर पटना-2006), दशम संस्करण, पृष्ठ 493।
- छान्दोग्य उपनिषद् (4/3/5), (4/10/2)।
- गोयल, डॉ. प्रीति प्रभा, 'भारतीय संस्कृति', (प्रकाशक : राजस्थानी ग्रंथागार-1992), प्रथम प्रकाशन, पृष्ठ 110।
- सिंह, डॉ. धीरेन्द्रकुमार, 'ब्राह्मण ग्रंथों में प्रतिबिम्बित समाज एवं संस्कृति', (शतपथ ब्राह्मण के विशिष्ट आलोक में), (पेनमैन पब्लिशर्स, नई दिल्ली-1990), प्रथम संस्करण, पृष्ठ 20।
- प्रश्न उपनिषद्, (1/1)।
- बिजनेस स्टैंडर्ड इंडिया, 26 अगस्त, 2020।
- ओक, पुरुषोत्तम नागेश, 'वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास', भारतीय साहित्य सदन नई दिल्ली-1986) पृष्ठ 198-200।
- बाशम, ए. एल., 'अद्भुत भारत', अनुवादक-वेकेशचंद्र पाण्डेय, (शिव लाल अग्रवाल कम्पनी आगरा-1967) पृष्ठ 513-14।
- पाठक, प्रो. रमेश चंद्र, 'गुप्तकालीन शिक्षा', (फारवर्ड बुक्स नई दिल्ली-2018), प्रथम संस्करण, पृष्ठ 62।
- शर्मा, आर. एस., 'शुद्राज इन ऐशियन्ट इंडिया', (मित्रा प्रेस कलकत्ता-1962), पृष्ठ 240।
- अल्तेकर, ए. एम., 'एजुकेशन इन ऐशियन्ट इंडिया', (नन्द किशोर एण्ड ब्रदर्स, बनारस-1934), पृष्ठ 148-49।

सुवाति,

अस्सिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग

ए0 एन0 डी0

कॉलेज हर्शनगर, कानपुर (उ0 प्र0) 208012

9759442530,

swatimzn91@gmail.com



सारांश :

“साहित्य सत्य और सौन्दर्य के शब्दों में जीवन की अभिव्यक्ति है; यह मनुष्य की आत्मा, उसके विचारों, भावनाओं, आकांक्षाओं का लिखित अभिलेख है; यह मानव आत्मा का इतिहास है और केवल इतिहास है। इसकी कलात्मकता, इसके विचारोत्तेजक, इसके स्थायी गुणों से इसकी पहचान है।” विजय कुमार ‘संदेश’ की कहानियों से गुजरते हुए शेक्सपीयर के ये कथन प्रत्यक्ष अनुभूत होते हैं। ‘मुखौटालाल के छह तुक्के’ काली कमाई का हथ, नहले पर दहला, पछतावे के आँसू और संकल्प की जीत जैसी कहानियाँ समाज के खट्टे-मीठे अनुभवों के साहित्यिक रूपांतरण हैं। कोई भी कहानी मात्र एक कहानी होने का बोध नहीं कराती बल्कि अपने साथ ऐसे बाँध लेती है गोया, यह हमारे ही जीवन का अभिन्न हिस्सा हो।

विषय प्रवेश :

‘मुखौटालाल के छह तुक्के’ कहानी मुखौटालाल यानी ‘सुखीलाल’ यानी पुष्परंजन ‘देवल’ की कहानी है। इस कहानी के छह चरण हैं। जो पढ़ने के बाद संस्मरण के छह टुकड़े प्रतीत होते हैं, जो मुखौटालाल के जीवन के छह हिस्से भी हैं। लेखक आशीष के रूप में स्वयं कथावाचक की भूमिका में हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि यह कहानी एक तरफ आज के सामाजिक जीवन की एक कटु यथार्थ को उजागर करती है तो दूसरी तरफ जीवन में घुन की तरह शामिल भ्रष्टाचार के दुष्परिणामों को भी सामने रखती है। कहानी की पहली घटना है मुखौटालाल यानी सुखीलाल का नाम परिवर्तन अपने सजातीय शिक्षक के द्वारा और यह कोई बुरी बात भी नहीं परन्तु इसका दूसरा हिस्सा जिसमें यह सजातीय शिक्षक जुगाड़ लगाकर सुखीलाल को दो मेधावी विद्यार्थियों के बीच परीक्षा में ‘सेट’ कर देता है, वह भ्रष्टाचार का पहला चरण है। शिक्षक द्वारा की गई यह व्यवस्था ही मुखौटालाल के जीवन का पहला तुक्का है। अपने शिक्षक द्वारा की गई यह व्यवस्था मुखौटालाल बहुत अच्छी तरह समझ लेता है और जीवन के विकास-क्रम में रूप बदल-बदल कर सुखीलाल जुगाड़ और तुक्कों को ही अपनी सफलता की सीढ़ी बना लेता है। इंटरमीडियेट में विज्ञान के सभी विषयों में ट्यूशन लेकर वह प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो जाता है। यहाँ ट्यूशन का तुक्का काम कर जाता है। यह आवश्यक नहीं कि मात्र तुक्का ही हो ट्यूशन से सचमुच विद्यार्थी को सहायता मिलती भी है, विशेषकर कमजोर विद्यार्थी को परन्तु लेखक यहाँ भी ‘प्राैक्टिकल में अच्छे अंक के रूप में मिला’— कहकर यह संकेत करते हैं कि सुखीलाल ने अपने विद्यालय के शिक्षकों से ही ट्यूशन लिया जिन्होंने उसे प्राैक्टिकल में अधिक

अंक दिए। इस तरह फिर एक भ्रष्ट व्यवस्था की पोल खोली लेखक ने। अब तीसरा तुक्का यह कि सुखीलाल के रटे-रटाये सभी प्रश्न आ गए परीक्षा में और वह स्नातक भी प्रथम श्रेणी में पास कर गया— “...उसका भाग्य प्रबल था। ‘ग्रेस मार्क्स’ लेकर प्रथम श्रेणी से पास भी कर गया। इस बार रट-रटाई का तुक्का काम कर गया था।” ...यह बात बहुत दूर तक विश्वसनीय नहीं लगती। चौथा तुक्का प्रतियोगी परीक्षा के संदर्भ में भी ऐसी ही घटना का जिक्र किया है लेखक ने कि तुक्केबाजी से उत्तरों को रेखांकित करता गया और इस बार भी पास कर गया। फिर रिसर्चर के रूप में नियुक्ति और फिर इसी कारण विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में नियुक्ति। पाँचवे तुक्के की कथा यँ है कि पुष्परंजन ‘देवल’ ने चापलूसों की मानकर ‘चोरी में ईमानदारी’ के रास्ते करोड़ों कमा लिए— “पुष्परंजन ने अपने लिए बंगला—कार—आभूषण क्या कुछ नहीं खरीदा। उसके पास चोरी से ईमानदारी की कमाई के बदौलत कई बड़े शहरों में जमीन, फ्लैट सब आ गया था। तुक्के में वह करोड़ों का मालिक जो बन गया था।” कहानी के अंतिम चरण में सुखीलाल अपने छठे तुक्के में मुँह की खाता है। चापलूसों द्वारा दोबारा कुलपति का कार्यकाल पाने के चक्कर में वह बुरी तरह ठग लिया जाता है। उसके चापलूस साथी उसे ही करोड़ों का चूना लगा जाते हैं। सुखीलाल यह सदमा बर्दाश्त नहीं कर पाता और उसका मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है। आशीष जो सुखीलाल के बचपन का मित्र है उसे यह कह कर कि मैंने सुन रखा है कि काली कमाई की यही अंतिम गति होती है। समझाने की कोशिश भी करता है परन्तु सुखीलाल ऊर्फ पुष्परंजन ‘देवल’ की मानसिक स्थिति नहीं संभलती।

सबसे पहली घटना को तुक्का माना जा सकता है परन्तु इसके बाद की सारी घटनाएँ तुक्केबाजी कम भारतीय कार्यप्रणाली में व्याप्त भ्रष्टाचार को ही अधिक उजागर करती है। इस कहानी की दूसरी घटना जहाँ विज्ञान के स्कूल वाले शिक्षकों के पास ट्यूशन पढ़ने और अधिक अंक आने की घटना का उल्लेख है, शिक्षा जगत में व्याप्त ‘ट्यूशन कल्चर’ को बेनकाब करती है। पहली सच्चाई यही है कि विषय वाले स्कूल या महाविद्यालय के शिक्षक के पास पढ़ने से उसमें अंक अच्छे मिलते हैं। दूसरी सच्चाई यह भी है कि ट्यूशन पढ़ने से बने-बनाये नोट्स मिल जाते हैं और तीसरी बात यह भी रेखांकित करने योग्य है कि संस्थान के शिक्षकों के अलावे अगर स्वतंत्र रूप में विषय के शिक्षकों, कोचिंग सेंटरों या पुस्तकालयों की सहायता से अध्ययन किया जाए तो ज्ञानवर्धन भी होता है। आज के समय में जब प्रतियोगिताओं का दौर है प्रतिभावान विद्यार्थियों को भी

दयूशन का सहारा लेना पड़ता है। अतः सुखीलाल के जीवन की यह घटना मेरी दृष्टि में उसका एक सोचा- समझा निर्णय था। उसे अपनी कमजोरी पता थी। अतः उसने व्यावहारिक तौर पर समाज में प्रचलित व्यवस्था का ही सहारा लिया। तीसरा 'रट-रटाई' का तुक्का भी पूरी तरह विश्वसनीय तो नहीं लगता फिर भी मान लिया जा सकता है परन्तु प्रतियोगी परीक्षा में तुक्केबाजी से उत्तीर्ण हो जाना मुझे बिल्कुल असंभव-सा ही लगता है। हाँ, सुखीलाल की कुलपति यात्रा अवश्य ही तुक्केबाजी-तकदीर की लगती है। परन्तु, उसके बाद की कथा फिर हमारे भ्रष्ट तंत्र की ही कथा दुहराती है। 'चोरी में ईमानदारी' तुक्का कतई नहीं है, यह भ्रष्टाचार का वह घुन है जो आज भारतीय सामाजिक व्यवस्था को प्रत्येक स्तर पर खोखला कर रही है। नित नए घोटालों की कथा इसका अन्यतम प्रमाण है। लेखक ने शिक्षा जगत में उच्च पदों पर व्याप्त भ्रष्टाचार को मेरी दृष्टि में सुखीलाल के माध्यम से हमारे सामने रखा है। यह सराहनीय है।

कहानी के अंत में सुखीलाल का मानसिक संतुलन बिगड़ना और आशीष द्वारा यह कहलवाना कि— "मैंने सुन रखा है कि काली कमाई की यही अंतिम गति होती है।"⁵ उपदेशात्मक और आदर्शात्मक है, और यही लेखक को प्रेमचंद की परम्परा से जोड़ती भी है। लेखक की प्रत्येक कहानी एक संदेश या उपदेश देती है। कहानी की पूरी जमीन चाहे कितनी ही पत्थरीली, नुकीली, कड़वे यथार्थ और भ्रष्टाचार के ताने-बाने से बुनी हो परन्तु परिणाम कहानी का प्रेमचंद की 'सेवासदन' की तरह आदर्शवादी, समाज की मर्यादा में रहकर ही होता है। ठीक ऐसी ही दूसरी कहानी है— 'काली कमाई का हथ्र'। इस कहानी में भी समस्या भ्रष्टाचार और लालच का ही है। वृंदावन मिश्र जी एक विद्वान ईमानदार, समाजसेवी व्यक्ति हैं। पूरे शहर में उनका सम्मान है। दूसरी तरफ बाबू रामविनोद सिंह मंजे हुए घाघ प्रशाखा पदाधिकारी हैं जो सहायक से पदोन्नति प्राप्त करते करते इस ओहदे तक पहुँच गए हैं। लेखक ने उनका चित्रण इस प्रकार किया है— "बाबू रामविनोद सिंह अक्सर अपने साथियों से एक कहावत कहते थे कि 'सौ गो हरामी मरेला, तब एगो किरानी पैदा ले ला' ...अपनी घाघ बुद्धि से बाबू रामविनोद सिंह यूनीयन के राज्य सेक्रेटरी भी बन गए थे। इस कारण जिला ही नहीं राज्य भर के कर्मचारियों-अधिकारियों के बीच उनकी गहरी पैठ थी। उसी पैठ-परिचय-प्रभाव का लाभ उठाकर प्रदीप को विभागीय ठेकेदारी दिलवाने में सफल हुए थे।"⁶ इस तरह प्रदीप जो गाँव के रिश्ते से रामविनोद सिंह का भतीजा लगता था उसको ठेकेदारी

के काम में लगा देते हैं और इस तरह प्रदीप गाँव से शहर आ जाता है। पाँच-दस वर्ष बीतते-बीतते उसके पास दौलत जमीन, बंगले सब हो जाते हैं। लेखक के शब्दों में— "प्रदीप की ठेकेदारी जब चल निकली तब मिट्टी भी सोने का रूप लेने लगी। एक ओर उसके ठेके की प्राक्कलित राशि में कई गुणा बढ़ोत्तरी होने लगी थी तो दूसरी ओर काम में घटियापन आने लगा था। उसके द्वारा बनाई गई कोलतार की सड़कें बनने के साथ ही उखड़ने लगी थी। घटिया काम का यह अद्भुत नमूना था। बड़ी बात यह कि बिल का भुगतान निर्माण से पहले ही हो जाता था। इन घटिया कामों पर आधिकारिक स्तर पर प्रश्न खड़ा करनेवाला कोई नहीं था। कमाई ऊपर से नीचे तक बँट रही थी तो कोई क्यों पूछे ? घटिया व कमजोर काम के एवज में मोटी रकम का बँटवारा जो होता था। जनता शिकायत लिखकर देती थी, तो उस शिकायती आवेदन को ठंडे बस्ते में डाल दिया जाता था।"⁵

हमारे कार्यालयों में, प्रशासनिक व्यवस्था में बड़े से छोटे अधिकारियों तक किस तरह भ्रष्टाचार व्याप्त है, लेखक के इस कथन से स्पष्ट है। अधिक धन कमाने के लालच में बाबू रामविनोद सिंह प्रदीप को ठेकेदारी दिलाते हैं और उसमें से अपना हिस्सा लेते हैं। धीरे-धीरे गाँव में सब्जी बेचने वाला सीधा-सादा लड़का भी इस खेल में कुशल खिलाड़ी बन जाता है और अकूत सम्पदा जोड़ लेता है। परन्तु लेखक इस कहानी में भी प्रारंभ से ही अच्छा-बुरा, ईमानदार-बेईमान, सच्चाई-भ्रष्टाचार जैसी अपनी धारणा और सोच को साफ-साफ पात्रों के माध्यम से पाठक के सामने रखते हैं। कहानी के प्रारंभ में दूसरे ही अनुच्छेद में वृंदावन मिश्र कहते हैं— "...काली कमाई से दौलत जल्दी-जल्दी आता जरूर है और कुछ ही दिनों में अपार धन भी इकट्ठा हो जाता है। झोपड़ी से महल, गाड़ी-बंगला सब सर्वसुलभ हो जाते हैं। अचानक मित्रों की संख्या बढ़ जाती है। किंतु, करोड़पति से खाकपति और महल से झोपड़ी तक आने में भी देर नहीं लगती है। ऐसी स्थिति जब आती है, तब अचानक आये मित्र भी साथ छोड़ देते हैं।"⁶ लेखक अपनी पूरी कहानी इन्हीं कुछ पंक्तियों में कह चुका है। आगे की कहानी जैसे इसी सिद्धांत की पात्रों-घटनाओं की सहायता से व्याख्या है। आगे कहानीकार लिखता है— "लेकिन, एक न एक दिन अति का अंत होता है। ईश्वर के घर में देर है अंधेर नहीं। पाप का घड़ा जब भी भरता है तब, फूटता है जरूर।"⁷ और प्रदीप के साथ भी ऐसा ही होता है। एक ईमानदार युवा इंजीनियर आता है और प्रदीप के सब उलट-फेर की पोल खुल जाती है। बाबू रामविनोद सिंह भी

उसका साथ छोड़ देते हैं। उन्हें भी अपने किए का दण्ड मिलता है। उनकी भी इन्क्वायरी लग गई थी, और रिटायरमेंट के बाद भी पेन्शन चालू नहीं हुआ था। वे स्वयं संकटों से घिर गए। फिर दुखों से पार पाने के लिए शराब पीने लगे तबीयत बिगड़ी, दिमागी हालत बिगड़ी और फिर एक दिन उनकी मृत्यु हो गई। दूसरी तरफ प्रदीप भी दुर्व्यसनों का शिकार हुआ। लेखक ने यहाँ प्रदीप की संलिप्तता संलिप्तता थाईलैंड और उज्बेकिस्तान के मसाज थेरेपी से भी दिखाई है। आगे प्रदीप के इन बुरी लतों की वजह से उसे ठेकेदारी का काम मिलना बंद हो जाता है। वहीं जमा पैसे खत्म होने लगे, गाड़ी, बंगला, जमीन एक-एक कर सब बिक गए और वह फिर 'रोड पर आ गया'।

इस कहानी के अंत में भी मुखौटालाल के छह तुक्के कहानी के आशीष की तरह ही वृन्दावन मिश्र एक सच्चे पड़ोसी होने के नाते प्रदीप को समझाते हैं। यहाँ तक कि प्रदीप को शास्त्रोपदेश से भी समझाते हैं—

“अन्यायोपार्जितं वित्तं दशवर्षाणि तिष्ठति।
प्राप्ते च एकादशे वर्षे समूलने विनश्यति।”

अंततः प्रदीप वापस अपने गाँव चला जाता है। वृन्दावन मिश्र के मुख से लेखक फिर एक उपदेश यानी 'मॉरल ऑफ द स्टोरी' कहलवाते हैं—

जो जैसा बीज बोता है,
वैसा ही फल पाता है।”

विजय संदेश जी की अन्य कहानियों में भी शीर्षक से ही कहानियों से मिलनेवाले उपदेश इसी तरह स्पष्ट हो जाते हैं जैसे 'नहले पर दहला' कहानी में— “...उसके इस मजाक से हम सभी भौंचक्क थे। उसने 'नहले पर दहला' जड़ दिया था। उसका पहला ही दाँव सब पर भारी पड़ गया था।...”⁸ इसी तरह 'पछतावे के आँसू' कहानी में— “विकल्पहीन शिशिर की आँखों में पछतावा है और पछतावे के आँसू।” संकल्प की जीत कहानी में भी कहानी का शीर्षक कुछ इस तरह प्रस्फुटित होता है— “सुगंधा शशि के संकल्प के जीत की अप्रतिम उदाहरण थी।”⁹

विजय संदेश की कहानियों की भाषा, कथ्य, वर्णनात्मकता जितनी सहज है उतनी ही कुशलतापूर्वक मुहावरों, लोकोक्तियों का प्रयोग वे अपनी कहानियों में किया करते हैं, जिससे कहानियाँ जीवंत हो उठी हैं। भाषा की सहजता के साथ

मुहावरों का सरलतापूर्वक प्रयोग उनकी कहानियों को न केवल भाषा की प्रांजलता देती है बल्कि प्रवाहमयता को भी खंडित न करते हुए प्रभावशाली बनाती है। जैसे—

- (1) जहाँ चाह वहाँ राह — आज शशि इसका जीता जागता उदाहरण है। (संकल्प की जीत)
- (2) उसके बूढ़े पिता जी को शशि के हाथ पीले करने की चिंता होने लगी। (संकल्प की जीत)
- (3) सुगंधा शशि के संकल्प के जीत की अप्रतिम उदाहरण थी। (संकल्प की जीत)
- (4) “...मैंम चंद्रा बनर्जी के इस मोटिवेशनल व्याख्यान से राशि पर जादू—सा असर हुआ और इस उत्प्रेरक वक्तव्य से वह काफी प्रभावित हुई। उसके अंतर्मानस में मैंम के कहे ये वचन संकल्प के मजबूत इरादे के साथ किसी कोने में चुपके से बैठ गए कि 'श्रम और संकल्प की जीत' निश्चित होती है।...” (संकल्प की जीत)
- (5) कहते हैं, होनहार बिरवान के होत चिकने पात और शिशिर की प्रतिभा ने अपना रंग दिखाना शुरू किया। (पछतावे के आँसू)
- (6) ...किंतु उसके मन, मस्तिष्क और हृदय में ग्रामोफोन में बजते रिकार्ड—प्लेयर की सूई के अटक जाने के बाद जैसे गाने का केवल एक ही बोल बार—बार सुनाई पड़ता है, वैसे ही शिशिर के अंतर्मन में एक ही स्वर बार—बार गूँज रहा है— 'अब पछताये होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत। (पछतावे के आँसू)
- (7) विकल्पहीन शिशिर की आँखों में पछतावा है और पछतावे के आँसू हैं। (पछतावे के आँसू)
- (8) ऐसा लग रहा था जैसे उसे लकवा मार गया हो— सारा शरीर सुन्न पड़ गया था। हम सबको काठ मार गया। (नहले पर दहला)
- (9) पूरा क्लास सन्न रह गया। (नहले पर दहला)
- (10) 'जहाँ कुमति तहाँ विपत्ति' — वाली कहावत प्रदीप के साथ चरितार्थ होने लगी। (काली कमाई का है)
- (11) कहते हैं, भगवान जब देता है तो छप्पर फाड़ के देता है और लेता है तब तन का कपड़ा तक उतार लेता है। (काली कमाई का है)
- (12) पाप का घड़ा जब भी भरता है तब, फूटता है जरूर। (काली कमाई का है)

जैसे प्रयोग ने उनकी भाषा को प्रभावशाली बनाया है। इनकी भाषा की दूसरी बड़ी विशेषता है सरलता, क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग न के बराबर है। बोलचाल की भाषा का प्रयोग ही स्वयं कथाकार ने कथावाचक के रूप में अपने लिए और संवाद के रूप में अपने पात्रों के लिए किया है। देशज शब्दों के प्रयोगे भी इन कहानियों को जन-जीवन को नजदीक से जोड़ती है— ऊ-परी, इ-परी, लस, बिचकाकर, चुप्पा, चट्टी, घाघ, बउवा आइनी हऽ, कहब, करिहा, टुल्ल, सोंटे, इत्यादि इसके अन्यतम उदाहरण हैं।

निष्कर्ष :

विजय संदेश की इन कहानियों में दो प्रकार की लेखन शैली देखने को मिलती है। पहली है, कथावाचक की शैली जैसे— 'मुखौटालाल के छह तुक्के' और 'काली कमाई का हश्र' और, दूसरी है— 'पलैश बैक' शैली जैसे— 'नहले पर दहला', 'पछतावे के आँसू' और 'संकल्प की जीत'। कभी-कभी दोनों शैलियों का मिश्रण भी इन कहानियों में देखने को मिलती है। परन्तु, इन सबसे अलग वह तथ्य जो विजय कुमार संदेश की इन कहानियों को महत्वपूर्ण बनाती है, वह है— 'प्रेमचंदीय लेखन परम्परा' का विकास। प्रेमचंद स्वयं कहते हैं— "मेरी अधिकांश कहानियाँ किसी घटना या अनुभव पर आधारित होती हैं। इसमें मैं नाटकीयता पैदा करने का प्रयास करता हूँ। कोई घटना कहानी नहीं हो सकती यदि वह किसी न किसी मनोवैज्ञानिक सत्य को न खोलती हो।" विजय कुमार संदेश की कहानियाँ, लालच, मेहनत, संकल्प, सपने, हर्ष, भय जैसे मनोवैज्ञानिक सत्य का अन्वेषण करती हुई हिन्दी कहानी लेखन परम्परा को समृद्ध करती हैं, इसमें संदेह नहीं।

संदर्भ संकेत :

1. मुखौटालाल के छह तुक्के, विजय कुमार संदेश, सेतु, पिट्सबर्ग, अमेरिका, फरवरी 2024 (ई-पत्रिका)
2. वही
3. वही
4. काली कमाई का हश्र, विजय कुमार संदेश, सेतु, पिट्सबर्ग, अमेरिका, अगस्त 2024 (ई-पत्रिका)
5. वही
6. वही
7. वही
8. नहले पर दहला, विजय कुमार संदेश, बेकसूर और अन्य कहानियाँ, साहित्यभूमि नई दिल्ली, 2023, पृ० 26.

9. संकल्प की जीत, विजय कुमार संदेश, नवकिरण, बस्ती (उ०प्र०) (सं०) लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, जुलाई-अगस्त 2022, पृ० 89.

डॉ० कंचन शर्मा,

प्रोफेसर,

मणिपुर विश्वविद्यालय, मणिपुर

संप्रति : आई.सी.सी.आर., हिंदी चेयर,

सोफिया विश्वविद्यालय, सोफिया, बुल्गारिया

मो. — 9434308852

सारांश

यथार्थवाद और आदर्शवाद का पारस्परिक संबंध अतल स्पर्श से भरा हुआ है। यथार्थ और आदर्श मानव जीवन के दो महत्वपूर्ण पहलू हैं। जहाँ यथार्थ का मतलब — जो जैसा है, वहीं आदर्श का मतलब — जो होना चाहिए, है। यथार्थ से ही आदर्श उत्पन्न होता है। यथार्थवाद में वस्तुओं को जो जैसा है, वैसा ही दिखाने पर बल दिया जाता है। जबकि आदर्शवाद में विचारों पर ज्यादा बल दिया जाता है। यथार्थवाद में जहाँ आदर्श का पुट नहीं दिया जाता है। वहीं आदर्शवाद में सत्य की अवहेलना नहीं की सकती है। आदर्शवाद और यथार्थवाद के मध्य का द्वंद्व, दिल और दिमाग तथा मन और मस्तिष्क के मध्य के द्वंद्व जैसा है।

बीज शब्द —साहित्य, यथार्थवाद और आदर्शवाद

प्रस्तावना

यथार्थवाद और आदर्शवाद का पारस्परिक संबंध अतल स्पर्श से भरा हुआ है। जब कोई साहित्यकार अपनी लेखनी चलाने की सोचता है तब उसकी कल्पनाएं यथार्थ के रूप में, समाज में उसने जो देखा, भोगा, अनुभव किया, उसके पक्ष और विपक्ष का मंथन करने के बाद, एक रचना का निर्माण करता है। किसी भी साहित्यिक रचना का मुख्य ध्येय साहित्य में सत्यम शिवम सुंदरम की स्थापना करना है। साहित्य समाज और देश काल की परिस्थितियों का प्रतिबिंब होता है। यथार्थ के बिना किसी भी तरह का लेखन करना संभव नहीं है। व्यक्ति, जब भी यथार्थ से विमुख होता है, तब वह एक कल्पना लोक में भ्रमण करने लगता है। वह, क्या है? की अपेक्षा, उसके मन में क्या होना चाहिए? पर अधिक बल देता है। क्या होना चाहिए ही आदर्श होता है। यथार्थ से ही आदर्श की जरूरत महसूस हुई और यथार्थ से ही आदर्श का उत्सर्जन हुआ। यथार्थ जब सजीव योग्य नहीं रहेगा, तो आदर्श से समाज के समग्र सृजन के लिए किसी न किसी महाशक्ति को अवतरित होना पड़ेगा।

बृहत् साहित्यिक निबंध में रामसागर त्रिपाठी लिखते हैं— “कलाकार जीवन को दो प्रकार से चित्रित करता है, एक में वह संसार को जैसा देखा है, वैसा ही चित्रित करता है। दूसरे में वह अपने चतुर्दिक जगत् को मनोनुकूल बनाने के लिए अपनी कल्पना, अपने आदर्शों और अपनी धारणाओं का प्रयोग करते हुए उसे उनके आधार पर अंकित करता है। प्रथम प्रकार को यथार्थवाद तथा दूसरे को आदर्शवाद कहते हैं।” अर्थात् ज्यों का त्यों चित्रण यथार्थवाद, तो काल्पनिक चित्रण आदर्शवाद कहलाता है।

यथार्थ और आदर्श मानव जीवन के दो महत्वपूर्ण पहलू हैं।

यथार्थ का मतलब है— जो जैसा है। जबकि आदर्श का मतलब है— जो होना चाहिए। यथार्थवाद एवं आदर्शवाद दार्शनिक विचारधारा के ही दो रूप हैं, लेकिन साहित्य में इनकी विचारधारा परस्पर विपक्षी मानी जाती हैं। यथार्थवाद में वस्तुओं को जो जैसा है, वैसा ही दिखाने पर बल दिया जाता है जबकि आदर्शवाद में विचारों पर ज्यादा बल दिया जाता है। यथार्थवाद में आदर्श का पुट नहीं दिया जाता है तो वहीं आदर्शवाद में जहाँ सत्य की अवहेलना नहीं की जाती है। आदर्शवाद और यथार्थवाद के मध्य का द्वंद्व, दिल और दिमाग तथा मन और मस्तिष्क के मध्य के द्वंद्व जैसा है।

यथार्थवाद अंग्रेजी के **REALISM** शब्द का हिंदी रूपांतरण है। जो दो शब्दों के मेल से बना है, **REAL+ISM**, जहाँ **REAL** शब्द का अर्थ है— वास्तविक, सत्य, असली तथा **ISM** का अर्थ है वाद। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि यथार्थवाद (**Realism**) का अर्थ है— वास्तववाद या वस्तु संबंधी यथार्थ, वह सिद्धांत है जो विचारों की अपेक्षा भौतिक वस्तुओं के अस्तित्व पर बल देती है। आदर्शवाद अंग्रेजी भाषा के शब्द **IDEALISM** का हिंदी रूपांतरण है, जो दो शब्दों के मेल से बना है, **IDEA/IDEAL+ISM** जहाँ **IDEA/IDEAL** का अर्थ है— विचार और **ISM** का अर्थ है वाद। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि आदर्शवाद का अर्थ है—विचारवाद अर्थात् विचारधारा, वह सिद्धांत है जो भौतिक वस्तुओं की अपेक्षा विचारों पर बल देती है। विचारों का संबंध मन से है जो कभी नहीं मरते। भौतिक जीवन परिवर्तनशील है तथा ज्ञान अल्प समय के लिए रहता है। जबकि विचार शाश्वत है।

अंग्रेजी शब्द कोश में कामिल बुल्के **Realism** का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखते हैं— “वास्तविकता, असलियत, यथार्थता, सच्चाई, यथार्थवादिता, यथार्थसत्ता, यथार्थतत्त्व और **Idealism** का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखते हैं—आदर्शवाद, विज्ञानवाद, प्रत्ययवाद।”

आदर्शवाद जहाँ संयुक्त अस्तित्व पर बल देता है, वहीं यथार्थवाद वस्तुओं की अलग अलग सत्ता पर। आदर्श का संबंध आध्यात्मिकता से माना जाता है तो यथार्थवाद का सरोकार भौतिकता से। आदर्शवाद जहाँ मानव जीवन की सर्वश्रेष्ठ स्थिति पर आश्रित है, वहीं यथार्थवाद सत्य और अनुभव पर आश्रित है।

बृहत् हिंदी कोश के अनुसार यथार्थवाद— “दार्शनिकी का वह सिद्धांत कि दुनिया में भौतिक पदार्थों का स्वतंत्र और वास्तविक अस्तित्व है। (सोचने या विचार करने वाला मन, जीवात्मा के चिंतन पर ही उनकी सत्ता अवलंबित नहीं है), कितने ही साहित्य—सेवियों

का वह सिद्धांत कि गुण-दोषमय इस संसार में हमें जो वस्तुएं जिस रूप में देख पड़ती हैं उनका इस रूप में चित्रण करना चाहिए, आदर्शवाद का पुट उसमें न दिया जाए।" आदर्श का अर्थ है— "आईना, मूल लेख, असल, नमूना, अनुकरणीय वस्तु आदि है तथा आदर्शवाद— वह वाद या मत, जिसके अनुसार रचना में आदर्श (अनुकरणीय) चरित्र आदि की स्थापना की जाती है।"

वर्धा हिंदी डिक्शनरी में यथार्थ का अर्थ है— "उचित, सत्य, जैसा होना चाहिए, ठीक वैसा। यथार्थवाद के बारे में लेखक लिखते हैं— जो वस्तु, विचार या सिद्धांत जिस रूप में है उसी रूप में स्वीकार करना। वह दार्शनिक सिद्धांत या मत जिसमें यह माना जाता है कि भौतिक जगत की स्वतंत्र सत्ता का अस्तित्व है और समस्त ज्ञान भौतिक तत्वों से होता है।" आदर्श का अर्थ है — "प्रतिमान, सर्वोत्तम स्थिति या बात जो अनुकरणीय हो, जैसे महापुरुषों के जीवन के आदर्श। वह जिसके गुण अवलोकनीय तथा ग्रहण करने योग्य हो, नमूना। आदर्शवाद का अर्थ है — आदर्श चरित्र आदि की स्थापना, नैतिकता, यथार्थवाद का विपर्याय, वह मत जिसके अनुसार रचना में आदर्श चरित्र की स्थापना की जाती है।"

डॉ नगेंद्र ने भी आदर्शवाद और यथार्थवाद को परस्पर विरोधी प्रवृत्ति माना है। वे कहते हैं — "आदर्शवाद और यथार्थवाद में मूल विरोध है। पहले का आधार भावगत दृष्टिकोण है और दूसरे के लिए वस्तुगत दृष्टिकोण अनिवार्य है।" आदर्शवादी कल्पना—विलासी और स्वप्नदृष्टा न होकर व्यावहारिक भी हो सकता है। उसके आदर्श, कल्पना और अतींद्रिय लोक के स्वप्न न होकर व्यवहार जगत के नैतिक समाधान भी हो सकते हैं।

शिव कुमार मिश्र के कथन — "यदि यह गतिशील है और मानव को उस गति की दिशा का ज्ञान है और उसके महत्व को समझता है, जिसकी ओर वह अग्रसर होना चाहता है तो निश्चित रूप से यह आदर्श उसके यथार्थ में निहित होगा।" अतः दार्शनिक दृष्टि से यथार्थ, वस्तु के स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकृत करता है वहीं आदर्श, वस्तु के सत्य के बजाय, उस सत्य के परे उपस्थित उसकी भावात्मक सत्ता को सच मानता है।

वक्त के साथ साहित्य में उपरोक्त दोनों वाद के परिप्रेक्ष्य की प्रगति हुई। जहां यथार्थवादी लेखक जीवन की सच्ची घटनाओं का चित्रण सुगम एवं नैसर्गिक रूप से करता है, वहीं एक आदर्शवादी लेखक समाज के आलोकित पक्ष, उद्यत आदर्श और मनोभावों का चित्रण करता है। यथार्थवादी लेखक, समाज की सभ्यता और संस्कृति के गुण और दोषों को पूरी

सत्यनिष्ठा से अभिव्यक्त करता है वहीं आदर्शवादी लेखक, सभ्यता और संस्कृति की गरिमापूर्ण परंपराओं और मर्यादाओं का आदर सम्मान सहित चित्रण करता है।

त्रिभुवन सिंह यथार्थ और आदर्श के कृत्रिम विभाजन का निराकरण करते हुए लिखते हैं — "उच्च कोटि का साहित्य वही हो सकता है जिसमें यथार्थ और आदर्श का समावेश हो।" हम कह सकते हैं कि हर पक्ष को भागीदार बनाना, श्रवण करना, देखना फिर उन सब पर मनन करने के बाद यथार्थ और आदर्श को विलीन रूप में चित्रित करना है। अतः मनुष्य के मनोभावों में तालमेल बनाए रखने के लिए साहित्य में इन दोनों की उपस्थिति आवश्यक है।

डॉ. यश गुलाटी लिखते हैं — "यथार्थ और आदर्श को दो पृथक पृथक दृष्टि बिंदु मानकर चला जाता है। इसी भ्रांति के कारण न यथार्थ, यथार्थ रह पाता है और न आदर्श, आदर्श।" अतः भावनाओं के बीच सामंजस्य स्थापित कर, साहित्य के इन दोनों वादों का चित्रण आसानी से किया जा सकता है।

गुलाब राय के अनुसार — "जीवन के ज्यों के त्यों बिना कल्पना का रंग चढ़ाये हुए यथावत चित्रण को यथार्थवाद कहते हैं और अपनी कल्पना के आधार पर उसका सुधरा हुआ रूप उपस्थित करने को आदर्शवाद कहते हैं।" यानी यथार्थवाद का काल्पनिक दृष्टिकोण रूपी रूपांतरण ही आदर्शवाद है।

डॉक्टर बैजनाथ सिंहल कहते हैं— कि विश्व की किसी भी भाषा के साहित्य पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट हो जाता है कि साहित्य में कभी जीवन की वास्तविक स्थिति के चित्रण का आग्रह अधिक रहा है और कभी भावना का पक्ष प्रबल रहा है। कुछ साहित्यकार अपने व्यक्तित्व की अपने चित्रण को तटस्थ रखकर, समाज को जिस रूप में देखते हैं उसी रूप में चित्रित करने का प्रयास करते हैं। समाज का ज्यों का त्यों रूप में चित्रित करने वाले साहित्यकार यथार्थवादी और उसे मनोनुकूल परिवर्तित रूप में चित्रित करने वाले आदर्शवादी कहलाते हैं। यथार्थवाद और आदर्शवाद में यही अंतर है कि यथार्थवादी साहित्यकार हमें बताता है कि समाज कैसा है तथा आदर्शवादी साहित्यकार बताता है कि समाज को कैसा होना चाहिए।

बृहत् साहित्य निबंध के अनुसार— "यथार्थवादी साहित्यकार उसे कहा गया है जो मानव जीवन एवं समाज का संपूर्ण वास्तविक चरित्र तटस्थ दृष्टि से उपस्थित करता है। अपना विषय काल्पनिक संसार से न लेकर वास्तविक जगत् से लेता है और अपने चित्रण में भावुकता को बाधक नहीं होने देता।

इस प्रकार यथार्थवादी रचना धरातल पर धरातल के लिए होती है। वह न तो वायवी होती है और न उसमें आकाश-कुसुम खिलाए जाते हैं। वह स्वप्न-दृष्टा नहीं होता है, वह तो वर्तमान की वास्तविकता का चित्रकार होता है।" बृहत् साहित्य निबंध के अनुसार— "आदर्शवादी प्रायः स्वप्रदृष्टा होता है। वह संसार में ईश्वरीय न्याय और सत्य की विजय देखना चाहता है। यदि वर्तमान दुःखमय भी हो तो भी वह उज्ज्वल भविष्य की सुंदर झांकी प्रस्तुत करता है। वह आशावादी होता है और उसे मनुष्य की सदाशयता पर अगाध आस्था होती है। वह हृदय (Change Heart) परिवर्तन के सिद्धांत पर विश्वास रखता हुआ मानव का चित्र उकेरता है।"

बृहत् साहित्य निबंध के निष्कर्ष में रामसागर त्रिपाठी लिखते हैं — "साहित्य वहीं उत्कृष्ट होगा जो यथार्थ और आदर्श दोनों को अपनाकर चले। उसका भवन यथार्थ की नींव पर खड़ा हो तो उस भवन के शिखर आदर्श आकाश की विस्तृत नीलिमा विस्तार और उन्मुक्त में सिर उठाये रहे। उसमें ऐसा आदर्श हो जो प्रगति की प्रेरणा दे, मानव की सदाशयता में आस्था जगाये। निष्कर्ष यह है कि साहित्य में या तो आदर्श और यथार्थ का (पुराने अर्थों में) समन्वय हो अथवा उनकी परिभाषाएं बदलकर (समाजवादी यथार्थ के समान) उन्हें नया अर्थ दिया जाए।" यथार्थवाद और आदर्शवाद के मध्य के संघर्ष को न्यूनतम स्तर पर लाकर, इनके मध्य यथातथ्य तालमेल स्थापित कर एवं विचारों पर गहन मंथन के बाद ही एक उच्च श्रेणी के साहित्य की रचना की जा सकती है। तभी वह रचना अपने महत्व को सिद्ध कर पाएगी। अतः यह कहना उचित होगा कि आदर्शवाद ही यथार्थवाद है क्योंकि विचार वस्तुओं से अधिक पवित्र और वास्तविक है।

निष्कर्ष

साहित्य समाज और देश काल की परिस्थितियों का प्रतिबिंब एवं मार्गदर्शक होता है। आदर्शवाद और यथार्थवाद में परस्पर गहरा संबंध है। यथार्थ के बिना किसी भी तरह का लेखन करना असंभाव्य है। व्यक्ति, जब भी यथार्थ से विमुख होता है, तब वह एक कल्पना लोक में भ्रमण करने लगता है। वह, क्या है? की अपेक्षा, उसके मन में क्या होना चाहिए? पर अधिक जोर देता है। क्या होना चाहिए ही आदर्श होता है। यथार्थ से ही आदर्श की जरूरत प्रतीत हुई और यथार्थ से ही आदर्श उत्पन्न हुआ। अतः यह कहना उचित होगा कि आदर्शवाद ही यथार्थवाद है क्योंकि विचार वस्तुओं से अधिक पवित्र और वास्तविक है।

सन्दर्भ:

1. रामसागर त्रिपाठी, बृहत् साहित्यिक निबंध, अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1966, पृ0-377
2. कामिल बुल्के, अंग्रेजी-हिंदी शब्द कोश, राँची, काथलिक प्रेस, 1985, पृ0-543 एवं पृ0-308
3. कालिका प्रसाद (स0), बृहत् हिंदी कोश, ज्ञानमंडल लिमिटेड बनारस, 2014, पृ0-1676
4. कालिका प्रसाद (स0), बृहत् हिंदी कोश, ज्ञानमंडल लिमिटेड बनारस, 2014, पृ0-140
5. राम प्रकाश सक्सेना (प्रधान संपादक) वर्धा हिंदी डिक्शनरी, 2003, पृ0-2467
6. राम प्रकाश सक्सेना (प्रधान संपादक) वर्धा हिंदी डिक्शनरी, 2003, पृ0-291
7. डॉ. यश गुलाटी, बृहत् साहित्यिक निबंध, सूर्य प्रकाशन, दिल्ली, 1986, पृ0-183
8. शिवकुमार मिश्र, यथार्थवाद, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011, पृ0-204
9. त्रिभुवन सिंह, हिंदी उपन्यास और यथार्थवाद, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2022, पृ0-224
10. डॉ. यश गुलाटी, बृहत् साहित्यिक निबंध, सूर्य प्रकाशन, दिल्ली, सन 1986, पृ0-181
11. गुलाब राय, काव्य के रूप, दिल्ली, आत्माराम एंड सन्स, स0 1950, पृष्ठ-188
12. डॉ. यश गुलाटी बृहत् साहित्यिक निबंध (यथार्थ और आदर्श) दिल्ली, सूर्य प्रकाशन 1987, पृ0-180
13. रामसागर त्रिपाठी, बृहत् साहित्य निबंध, अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1966, पृ0-378
14. रामसागर त्रिपाठी, बृहत् साहित्य निबंध, अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1966, पृ0-381
15. रामसागर त्रिपाठी, बृहत् साहित्य निबंध, अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1966, पृ0-384

दीपिका व्यास पत्नी डॉ. विक्रम जोशी,

पता — पारीक हाऊस, वार्ड न0-17, हरगोबिंद नगर,
चौटाला रोड, मंडी डबवाली, जिला सिरसा, हरियाणा,

पिन-125104,

मोबाइल न0 — 82956-52028



सारांश

समाज का कोई भी कमजोर व शोषित वर्ग अपनी अधिकार चेतना के साथ जाग्रत हो तो उसकी संज्ञा सार्थक हो जाती है। ऐसी ही संज्ञा को संज्ञायित करती हुई एक विशिष्ट अवधारणा है— स्त्रीत्ववाद। स्त्रीत्ववादी विमर्श का आधार वह विचारधारा है जो सत्ता के जनतांत्रिक संबंधों को समेट कर चले, जो न केवल इतिहास बल्कि जातीय स्मृति को पुनः परिभाषित करे तथा ऐसा वैश्विक दृष्टिकोण अपनाए, जो मृत्यु के बाद भी जीवन की आशा न छोड़े। स्त्री जानती है कि वह केवल देह के कारण स्त्री नहीं है, उसका स्त्री होना निर्भर करता है— संस्कृति, वर्ग और जाति पर जिस पर पितृसत्ता का कब्जा है। पितृसत्ता आज भी प्रत्येक स्तर पर स्त्री का शोषण करती है। सच तो यह है कि स्त्री का मसीहा अन्य कोई नहीं स्वयं स्त्री है।

भूमिका :— स्त्रीत्ववादी विमर्श का पहला और आधारभूत कार्य यह है कि महिलाओं को अपने अधीन करने वाली तथा उनका शोषण करने वाली संरचना को पहचाना जाए व उसे एक उचित एवं तर्क संगत नाम दिया जाए। परिणामस्वरूप बीसवीं सदी के आठवें दशक के मध्य में नारीवादी विशेषज्ञों ने 'पितृसत्ता' शब्द का प्रयोग किया। भारतीय समाज पितृसत्तात्मक है और यह संरचना समाज की एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें पुरुषों का स्त्रियों पर वर्चस्व रहता है। यही व्यवस्था स्त्रियों का शोषण एवं उत्पीड़न करती है। पितृसत्ता के बीच रहती हुई स्त्री की जुबान ने वर्षों से चुपचाप रहना सीखा है। कई पीढ़ियाँ गुजर गईं। फिर भी स्त्री मुखर नहीं हो पाई। इसका प्रमुख कारण है— परिवेश और संस्कार। पिछले तीन दशकों से स्त्री—मुक्ति विमर्श को साहित्य के केन्द्र में देखा जा रहा है। स्त्री का व्यक्तित्व बदलती हुई संवेदनाओं के अनगिनत आयामों में विकसित हुआ है। सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक स्तर पर हमारे देश के मानवधिकारों में कुछ बदलाव भी संभव हुए हैं। सामाजिक सम्बन्धों में परिवर्तन को भी लक्षित किया जा सकता है, स्त्री सजग हुई है, आत्मनिर्भर हुई है, और अपने अधिकारों के प्रति सचेतना के निर्माण के निरन्तर प्रयासों में लीन है। इस संदर्भ में वर्षों पूर्व महादेवी वर्मा की 'श्रृंखला की कड़ियाँ' में वर्णित एक प्रसंग पर हमारा ध्यान जाता है, जहां वे कहती हैं, "स्त्री स्वतन्त्रता का आकार स्त्रियोचित गुणों के आधार पर होना चाहिए। पुरुषों की बराबरी के नाम पर स्त्रियों को पुरुषों की अराजकपूर्ण त्रुटियों का अनुकरण नहीं करना चाहिए। भारतीय समाज के अध्ययन के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचती हूँ कि भारतीय स्त्रियों को सबसे पहले आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने की आवश्यकता है।"¹

सामाजिक जीवन में पुरुषों के बराबर सामाजिक पहचान

और आर्थिक क्षेत्र में पुरुषों के समान आत्मनिर्भरता मूल रूप से ये दो बातें स्त्री—मुक्ति के लिए अनिवार्य हैं। स्त्री—मुक्ति काफी हद तक आत्मनिर्भरता पर भी आश्रित है, आत्मनिर्भर स्त्री घर से बाहर निकलकर बाहर के वातावरण से परिचित होती है। तभी उसका अज्ञान दूर होता है। अपने पैरों पर खड़ी स्त्री कभी किसी पर बोझ नहीं बनती है, अतः समाज उसके अस्तित्व को भी स्वीकारेगा और उसे पहचान भी देगा।

'स्त्रीत्ववाद' : अवधारणा का स्वरूप

'स्त्रीत्ववाद' महिला उत्पीड़न के विभिन्न पहलुओं को समझने की दिशा में प्रयासरत एक गतिशील और स्त्रियों के पक्ष में निरन्तर परिवर्तनशील चिन्तन है। जिसमें उनके अधिकार इस चिन्तन के अग्र और उग्र दार्शनिक पहलू भी जुड़ते चले गए। प्रायः देखने में आता है कि हमारी वर्तमान व्यवस्था में स्त्रियों को घर की चार दीवारी से बाहर निकलने का अवसर भले ही मिल गया हो, परन्तु जहाँ अपने जीवन को रूप देने और अनेक स्तरों पर स्वत्वों के संदर्भ में निर्णय लेने की बात है उनकी स्थिति अभी तक ज्यों—की—त्यों बनी हुई है। पुरुष आज भी अपनी सख्त मुद्राओं में उनका भाग्य—विधाता बना हुआ है। स्त्री की पीड़ा, उसकी वेदना, उसका दर्द कहीं से भी कम नहीं हुए हैं। यहाँ तक कि उनकी स्थिति शोचनीय के साथ—साथ विचारणीय भी बन गई है और यह विषय एक ज्वलन्त विमर्श के ध्रुवान्तों के निर्माण के योग्य हो गया है।

"स्त्रियों से सम्बन्धित किसी भी समस्या या स्थिति को एक कोण से न देखकर भिन्न—भिन्न मानसिकताओं, दृष्टियों संस्कारों और प्रतिबताओं को उलट—पलट कर देखना, उसे समझने की कोशिश करना और फिर मानवीय संदर्भों में उसे प्रतिष्ठित करना ही स्त्री—विमर्श है।"²

'विमर्श' का अर्थ विचार—विनिमय है। पुराने समय का शास्त्रार्थ नये युग में 'विमर्श' बनकर आया है। इसके लिए 'संवाद', 'बातचीत', एवं 'बहस' शब्दों का भी खूब प्रयोग हुआ है परन्तु नई सदी में ये शब्द बचकाने लगने लगे हैं। अतः अति आधुनिकतावादियों ने 'विमर्श' जैसे शब्द में कुछ ताजगी, नयापन और आधुनिकता खोज ली है। इस अर्थ के अनुसार, 'स्त्री—विमर्श' का अभिप्राय है— स्त्री के सम्बन्ध में विचार—विनिमय, उसे केन्द्र में रखकर समझने के लिए किया गया संवाद या बहस। स्त्री—मुक्ति की यह लड़ाई संभवतः इसीलिए आधी दुनिया की लड़ाई है, क्योंकि मुक्ति की कामना प्रत्येक व्यक्ति की आंतरिक कामना होती है। अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए प्रत्येक व्यक्ति का स्वतन्त्र होना आवश्यक है। राष्ट्र और मानव समाज की उन्नति एवं विकास के लिए नारी मुक्ति आवश्यक है। नारी स्वतन्त्रता भारत के लिए विलासिता नहीं

है, अपितु राष्ट्र के भौतिक, वैचारिक और आत्मिक विकास एवं संतुष्टि के लिए एक अनिवार्य जरूरत बन गई है। इसकी पूर्ति के पक्ष में घरेलू हिंसा आदि अनेक ऐसे कानून बनाए गए हैं जिनसे नारी स्वतन्त्रता की रक्षा हो सकती है, परन्तु चूंकि समाज में कई युग प्रायः एक साथ पल बढ़ रहे होते अतः फलस्वरूप इस सबके बीच सत्ता, व्यवस्था और शासन लिखित विधान ही चलता है भले ही समाज अलिखित परंपरा से भी संचालित होता है। विधान में बाल-विवाह का निषेध है। समाज में बाल-विवाहों का क्रम फिर भी चल रहा है विधान में दहेज लेना निषेध है, समाज में विवाह के लिए दहेज की मुखर उपस्थिति सहज ही देखी जा सकती है। विधान में स्त्रियों के लिए उच्च शिक्षा के द्वार खुल चुके हैं। समाज उच्च शिक्षित स्त्रियों को उनका सहज अर्जित सम्मान देने के लिए तैयार नहीं है। अतः इस घात-प्रतिघात में निर्माण और ध्वंस साथ-साथ चल रहे हैं। जब वैधानिक स्थिति और सामाजिक स्थिति परस्पर विरोधी हो, तब सामाजिकों के अधिकार मात्र अलंकरण बनकर रह जाते हैं, ऐसी स्थिति में सरकारी कार्यवाही भी तब तक कारगर नहीं हो सकती, जब तक महिलाएं स्वयं अपने अधिकारों और संबद्ध दायित्वों के प्रति जागरूक नहीं होती।

स्त्रीत्ववाद की विभिन्न वैचारिक अवधारणाएँ

स्त्रीत्ववादी विमर्श का आंकलन यह बताता है कि ज्यों-ज्यों स्त्रीत्ववाद का विकास होता गया, इसकी शाखा-प्रशाखाएँ विभिन्न दिशाओं में फूटती गई। समय के साथ-साथ स्त्रीत्ववादियों के दृष्टिकोण में भी काफी परिवर्तन आया। अस्सी के दशक के बाद बहुतेरे स्त्रीत्ववादियों ने जिनमें आधिकारिक भूमिका स्त्री की ज्यादा रही, गृहस्थी और श्रम के बाजार के भौतिक विश्लेषण के बदले भाषा की संरचना, प्रतिनिधित्व का अधिकार एवं समस्या तथा सत्ता के विमर्श पर प्रश्न उठाये। इसके परिणामस्वरूप वैश्विक स्तर पर सामाजिक संरचना, पितृसत्ता और पूंजीवाद के विश्लेषण के बदले विभिन्न संस्कृतियों में विमर्श, विचारधारा और मनोविश्लेषण का एक पूरा इतिहास खुल गया। स्त्रीत्ववादी विचारकों ने स्त्री से संबंधित नए सिद्धान्तों को न केवल प्रतिपादित किया बल्कि स्त्री जीवन के विभिन्न प्रसंगों पर ज्ञान, कर्म और यथार्थ का लेखा-जोखा भी प्रस्तुत किया। यही कारण है कि विभिन्न स्त्रीत्ववादी विचारधाराओं को अलग-अलग नाम देने की कोशिश भी की गई है। उदाहरणार्थ— उदारवादी स्त्रीत्ववादी, उग्रवादी, स्त्रीत्ववादी, मनोविश्लेषणात्मक स्त्रीत्ववादी, समाजवादी स्त्रीत्ववादी इत्यादि। अतः इस अध्ययन में यहाँ इनका संक्षिप्त आकलन भी किया जाना आवश्यक है।

उदारवादी स्त्रीत्ववाद — उदारवादी स्त्रीत्ववादी का अपना एक लम्बा इतिहास रहा है। 18वीं-19वीं शताब्दी के विचारक हेरियट टेलर (1807-1859), जॉन स्टुअर्ट मिल (1806-1873) जैसे सभी स्त्रीत्ववादियों ने दार्शनिक जॉन लाक और रूसो के सामाजिक अनुबंध की आलोचना करते हुए कहा कि ये दार्शनिक अपने लेखन में वैयक्तिक स्वतन्त्रता और सामाजिक परिवर्तन की चर्चा तो करते हैं किन्तु उनकी उदारवादी राजनीति स्त्री-पुरुषों को समान अधिकार दिलाने में असमर्थ रही है। उदारवादियों ने ऐसी सामाजिक संरचना करनी चाही थी, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति का महत्व और उन्हें समान अवसर एवं सुविधाएं मिले। 18वीं सदी के प्रारंभ में उदारवादी स्त्रीत्ववादियों ने मानवीय गरिमा और समानता की उदारवादी धारणाओं व महिलाओं के जीवन की वास्तविकता के बीच व्याप्त अंतर्विरोधों को प्रखरता के साथ सामने रखा। जेंडर पर आधारित विभेद और परिवार व समाज में महिलाओं की दोयम स्थिति को तर्कसंगत ठहराने वाली आम धारणाओं को सामाजिक अनुकूलन और जड़ीभूत सांस्कृतिक मूल्यों की उपज के तौर पर समझने की भी कोशिश की। समानता और न्याय की धारणाओं के संदर्भ में उदारवादी स्त्रीत्ववादियों ने विवाह नामक संस्था के मूल्यांकन का प्रयास किया। ये सभी विचार महिलाओं की समानता, कानूनी सुधारों की मांग, समान अवसरों तक पहुँच, सार्वजनिक दायरों में शामिल होने के प्रति महिलाओं के अधिकार तथा मानव के तौर पर अपने अंदर निहित संभावनाओं को पूरा करने का अवसर आदि विभिन्न मसलों पर आधारित अभियानों का आधार बने।

“उदारवादी नारीवादियों का मानना था कि महिलाओं की असमानता, उन्हें समान अधिकारों से वंचित किए जाने व ऐसे अधिकारों से उनके अलगाव या उन पर अमल करने में उनके प्रतिरोध से पैदा होती है। दृष्टिकोणों, अपेक्षाओं और आचरण में जेंडर पर आधारित भिन्नताओं की निर्मिति में समाजीकरण और शिक्षा को प्रधान रूप से चिन्हित किया गया।”³

इसके फलस्वरूप महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के लिए कई प्रकार की गतिविधियाँ सामने आईं। इन विचारों की परिणति विशेष स्कूलों की स्थापना, शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी और मजदूरी, काम की स्थितियाँ, ट्रेड यूनियन और अन्य संगठनों को प्रेरित करते महिला मताधिकार संगठनों की स्थापना में हुई। सत्तर के दशक में उभरी नारीवाद की दूसरी धारा के दौरान भी उदारवादी नारीवाद की परंपरा जारी रही।

उग्रवादी स्त्रीत्ववाद : 1986 में टाइग्रेस ऐटकिन्सन के नेतृत्व में लिबरल ग्रुप से उग्रवादी स्त्रीत्ववाद अलग हो गया। ऐटकिन्सन

का मानना था कि इन छोटे-मोटे आन्दोलनों से कुछ नहीं होने वाला। पुरुषों के साथ (साम-दाम-दंड-भेद) आजमाए बिना स्त्रियों का दमन नहीं रुक सकता। लड़ाई पुरुषों से नहीं, पितृसत्तात्मक समाज से होनी चाहिए। योजनाबद्ध ढंग से इसकी एक-एक संस्था में— खासकर परिवार, चर्च और एकेडमी में— वैधानिक, राजनीतिक और आर्थिक ढंग से संरचनात्मक परिवर्तन घटित कराए जाने चाहिए। स्त्री को आमूल रूप से स्वयं को भी बदलना होगा, इसे ही स्त्रीत्ववाद की संज्ञा दी गई। उग्र स्त्रीत्ववादियों ने बहुतेरे सामाजिक मुद्दों— विशेषकर चिकित्सा, धर्म, प्रजनन, जातिवाद, पर्यावरण और राजनीतिक सिद्धान्तों पर भी जमकर लिखा गया।

“नारीवाद महिला उत्पीड़न के विभिन्न पहलुओं को समझने की दिशा में प्रयासरत एक गतिशील और निरंतर परिवर्तित होने वाली विचारधारा है जिनमें व्यक्तिगत, राजनीतिक और दार्शनिक पहलू भी शामिल हैं। लेकिन जो एक विचार इन सभी नारीवादी दृष्टिकोणों में समान है, वह यह है कि यह सभी मौजूदा स्त्री-पुरुष संबंधों को बदलने की दिशा में केन्द्रित है।”⁴

इस प्रकार ये सभी विचारधाराएं इस तथ्य से पैदा होती हैं, कि न्याय के लिए महिलाओं को स्वतन्त्रता व समानता दी जानी आवश्यक है।

मनोविश्लेषणात्मक स्त्रीत्ववाद

स्त्री मानस के विश्लेषण पर मनोविश्लेषण स्त्रीत्ववादियों ने पाया कि किसी भी व्यक्ति की अस्मिता उसके सचेतन मन के स्थायी गठन पर निर्भर है, जो जीवन के प्रारंभिक तीन वर्षों के भीतर ही ठोस आकार ग्रहण कर लेती है। जब तक स्त्रियाँ अपने मनोजगत का पूरा विश्लेषण नहीं करती तथा स्त्रीत्व की ठोस जड़ भूमिकाओं को नहीं नकारती, उनकी स्थिति ऐसे ही दयनीय रहेगी। सिंगमंड फ्रायड का यह कथन प्रसिद्ध है कि मनोविश्लेषण के क्षेत्र में इतने वर्ष काम करने के बाद भी मैं यह नहीं जान पाया कि स्त्री आखिर चाहती क्या है। फ्रायड मानव मन के चिकित्सक थे। अपने पेशे के दौरान वे सैकड़ों पुरुषों और महिलाओं के सम्पर्क में आए। उन दिनों स्त्रियाँ ही मनोचिकित्सा के लिए ज्यादा आती थी। अपने व्यक्तिगत जीवन में भी फ्रायड को कम से कम दो स्त्रियों का अनुभव तो था ही। फिर भी स्त्री उनके लिए रहस्य बनी रही क्योंकि वह सभ्यता के इतने जाने-अनजाने परदों से दबी रही है कि उनकी इच्छाओं तक का अनुमान लगाना कठिन है, विडम्बना यह है कि स्त्री का यह रहस्य प्रच्छता और प्रकट रूप में लोक पुरुष ने ही बनाया है। समाजवादी स्त्रीत्ववाद :- 1970 से 1980 तक अधिकतर

स्त्रीत्ववादी सिद्धान्तों की प्रमुख समस्या यह थी कि स्त्री को पुरुष-पराधीनता से मुक्ति मिले। समाजवादी, महिलाएँ, पूंजीवादी व्यवस्था की विरोधी रही हैं, हालांकि समाजवादी नारीवाद महिलाओं ने पूंजीवादी पितृसत्ता को समझने और बदलने का प्रयास किया है।

“समाजवादी नारीवादियों का मानना है कि पूंजीवाद और पितृसत्ता एक दूसरे को मजबूती प्रदान करते हैं। भले ही पुरुष वर्चस्व के रूप में पितृसत्ता पूंजीवाद के पहले से ही उदित होती है। लेकिन यह पूंजीवाद के संचालन में मददगार साबित होती है और वह पूंजीवाद द्वारा न केवल समर्थन पाती है, बल्कि सुदृढ़ होती है।”⁵

समाजवादी स्त्रीत्ववाद सामाजिक संरचना में निहित दलन की प्रक्रियाओं का विश्लेषण बड़े व्यवस्थित तरीके से करता है। एक बाह्य जगत में उत्पादन की तथा दूसरे गृहस्थी में, जहां वह दिन-रात बिना किसी मूल्य के श्रम करती है। संतान का भरण-पोषण तथा परिवार के सदस्यों की देखरेख एवं अन्य प्रकार का सेवा कार्य है स्त्री-श्रम का खुलेआम शोषण करवाता है। स्त्री को यह धारणा स्वीकार नहीं, दूसरी ओर पुरुषों ने मातृत्व को कुछ विशिष्ट गुणों के रूप में सर्वोच्च शिखर पर आसीन तो कर दिया, परन्तु कालान्तर में यह महज एक औपचारिक महिमा मंडन ही बनकर रह गया। माँ के रूप में स्त्री-श्रम का दोहन आज भी होता है। स्त्री न केवल भावनात्मक रूप से बल्कि सामाजिक एवं आर्थिक रूप से भी ठगी जाती है। इस प्रकार समाजवादी स्त्रीत्ववाद स्त्री के श्रम के शोषण पर प्रकाश डालता है।

“कानून का सम्बल तथा नारी की बौद्धिक क्षमताएँ नारी के व्यावसायिक उत्कर्ष के मार्ग तो खोल सकती हैं लेकिन समाज में उसकी स्थिति सुधार नहीं सकती। इसके लिए अनिवार्य है— पुरुष की दृष्टिगत उदारता।”⁶

पुरुष जब नारी को अपनी सहयोगी, संगिनी, और साथी समझेगा, तभी समाज में सामंजस्य व्यवस्था शुरू होगी और विकास की गति बढ़ेगी। नारी का जीवन किसी भी समाज में कम संघर्षशील नहीं रहा है। उत्थान-पतन के कितने दौरों से गुजरती हुई नारी आज के वर्तमान में अपनी जैसी भी स्थिति तक पहुँच पाई है वह उसकी निजी उपलब्धि है। उसका संघर्ष अगले समयों के आह्वान में पुरुष की तुलना में किसी भी तरह कम नहीं आंका जा सकता।

किसी समाज में पुरुष विशेषाधिकार और स्त्री अधीनीकरण के आलोचनात्मक विश्लेषण के आधार पर सामाजिक राजनीतिक बदलाव के लिए एक विचारधारा और आंदोलन दोनों को समाहित कर सकती है। आज की स्त्रीत्ववादी

सोच पुरुषवादी सत्ता को समाप्त करने का लक्ष्य रखती है। सीखना चाहिए और एक बार फिर लक्ष्य प्राप्ति के अभियान में उन्हें जुटने देना चाहिए।”

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि आज स्त्रीत्ववाद को एक तेज़ी से विकसित होती हुई प्रमुख एवं स्वायत्त आलोचनात्मक विचारधारा के रूप में देखा जाना चाहिए। इस अवधारणा में विचारों का एक विस्तृत फलक समाहित है और इसके सामने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक संभावनाएं हैं। नारी के लेखन ने दूसरे विषयों को कड़ी चुनौती दी है और सामाजिक जीवन की व्याख्या और उस पर प्रश्न खड़ा करने के नए रास्ते खोले हैं। स्त्रीत्ववाद एक ऐसी अवधारणा के रूप में उभर रहा है जो अपने भीतर सम्पूर्ण विश्व में स्त्री-चेतना का उद्देश्य समग्र परम्पराओं, मान्यताओं, रूढ़िगत वर्जनाओं तथा अत्याचारों के प्रति विद्रोह की चेतना, पुरुष द्वारा निर्मित शोषक संस्थापनाओं आदि से मुक्त होना है। अपनी प्राकृतिक उच्चता को स्थापित करने की चेतना तथा जीवन-मूल्यों के वरण की चेतना जागृत करना ही सर्जनात्मक स्त्रीत्ववाद की नींव है।

सन्दर्भ – सूची :-

1. सम्पादक— महीप सिंह: संचेतना :-नई दिल्ली एच-108, शिवाजी पार्क, पंजाबी बाग अप्रैल 2008, अंक 1 पृ0-4
2. रोहिणी अग्रवाल— हिन्दी उपन्यास में कामकाजी महिला, दिल्ली- 110006 दिनमान प्रकाशन, 3014, चखैवाल, प्रथम संस्करण, 1993, पृ0 स0-9
3. संपादक— आर्य साधना, निवेदिता मेनन, जिनी लोकनीता (नारी राजनीति: संघर्ष एवं मुद्दे हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, प्रथम संस्करण- 2001, पृ0 स0-25
4. यथावत, पृ0 स0-49
5. यथावत, पृ0 स0-31
6. सं0 विश्वनाथ प्रसाद तिवारी: महादेवी रचना संचयन ,नई दिल्ली- 110001, साहित्य अकादमी, रविन्द्र भवन, 35 फिरोजशाह मार्ग, पृ0 सं.-266
7. जर्मन ग्रीयर : बधिया स्त्री; अनुवाद : मधुबी जोशी, नई दिल्ली- 110002, 1-बी नेता जी सुभाष मार्ग, प्रथम संस्करण-2002, पृ0 स0-275

डॉ० दीपक कुमारी

सहायक प्रोफेसर (हिन्दी विभाग) चौ० बंसीलाल
विश्वविद्यालय, भिवानी

Email:kumarideepak1982@gmail.com



सारांश

तेरहवी सदी के मध्य में जब भारत के नागरिकों में गंगा-जमुनी तहजीब की समझ विकसित हो रही थी और साथ ही साथ देश प्रेम की भावना जन्म ले चुकी थी। इसी समय अबुल हसन जो अमीर खुसरो उपनाम से प्रसिद्ध है इसी भौगोलिक क्षेत्र में जन्म लेते हैं। खुसरो एक प्रसिद्ध कवि, सूफी इतिहासकार एवं दार्शनिक थे। उन्होंने अनेक भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। एक सच्चा राष्ट्रप्रेमी होने के नाते उन्होंने अपनी रचनाओं को भारतीय पर्यावरण में ढालने का सफल प्रयास किया। “सैयद हसन असकरी का कहना है कि जिस प्रकार से इलियट और डासन ने बेनकीती के बारे में कहा है कि वह कवि और इतिहासकार दोनों थे। क्या यही बात खुसरो के बारे में कही जा सकती है। एक आधुनिक पश्चिमी विद्वान पी० हार्डी ने लिखा है कि अमीर खुसरो ने इतिहास नहीं लिखा, उसने काव्य की रचना की है।”¹ इन टिप्पणियों से स्पष्ट है कि इतिहास उनके सरोकार का विषय नहीं था। उन्होंने इतिहासकार होने का दावा भी नहीं किया है। वह स्वयं स्वीकार करता है महत्वपूर्ण ऐतिहासिक विषयों पर उसने असंवद्धता प्रकट की किन्तु संभव है कि उनकी कृतियों से किसी न किसी ऐतिहासिक सामग्री की समानता प्रकट हो सके इसलिए आवश्यक है कि थोड़ी बहोत छानबीन कर ली जाए। खुसरो ने कुछ ऐतिहासिक मसनबियों की रचना की जिसमें किरान-उस-सादेन, मिफताउलफुतुह, आशिका, नूहसिपेहर तथा तुगलगनामा प्रमुख हैं। उसने अपने लेखन में कई पक्षों को उभारा है जो भारतीय इतिहास की दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण हैं। इन तमाम मसनबियों से खुसरो के देश भक्ति के बयानों का जिक्र मिलता है किन्तु इस दृष्टि से खुसरो की नूहसिपेहर (नव आकाश) अधिक महत्वपूर्ण सिद्ध होती है।

खिज़्र खाँ के साथ गुजरात के राजा करण की पुत्री के विवाह के वर्णन में अमीर खुसरो ने उस समय की वैवाहिक विधि तथा प्रथाओं का विस्तार के साथ उल्लेख किया है। वह लिखता है कि “बादशाह के आदेशानुसार खिज़्र खाँ के विवाह की तैयारियाँ होने लगी, दीवारों पर नाना प्रकार के चित्र बानाये गये, खेमे तथा शामियाने लगाये गए”।² वह तरह तरह के कृतब दिखाने वाले लोग थे बाजीगर, तलवार चालाने वाले विभिन्न प्रकार के स्वांग करने वाले, गायकों की मधुर तान छोड़ने वाले थे।³ नाना प्रकार के हिन्दुस्तानी बाजे बजते थे। नगर की स्वच्छता, सजावट, नगरवासियों के उत्साह, बाजों, खेल-तमासों तथा नाच गानों, बारात के जुलूस, निकाह, विदा की अन्य रसमों का बड़ा ही सजीव और विशद वर्णन किया है।⁴ नूहसिपेहर भारतीय राष्ट्रवाद पर खुसरो की भावनाओं को व्यक्त करती है। अपने दूसरे सिपेहर में देहली की

प्रशंसा करते हुए खुसरो लिखता है कि “देहली के समान कोई नगर नहीं है। खिता, खुरासान त्रिमिज, तबरेज, बुखारा तथा ख्वारिज्म कोई भी देहली का मुकाबला नहीं कर सकते।”⁵ तीसरे सिपेहर में भारत वर्ष की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए उसे पृथ्वी का स्वर्ग घोषित करता है। वह लिखता है कि “हिन्दुस्तान स्वर्ग के समान है, यहां की जलवायु खुरासान से कहीं अच्छी है। यहां के अमरुद और अंगूर की उपमा नहीं की जा सकती। आम, केला, इलाईची, कपूर, लौंग यहां अधिकता में पाये जाते हैं। यहां बहोत से मेवे मिलते हैं जो अन्य स्थानों पर नहीं पाये जाते हैं। पान के समान संसार में कोई अन्य वस्तु नहीं है”।⁶ वह भारत को अंक पद्धति तथा शतरंज के अविष्कार का जन्मदाता बताता है। हिन्दुस्तान वाले सभी भाषाएँ बड़ी कुशलता से बोल सकते हैं किन्तु संसार के अन्य भाषा वाले हिन्दुस्तान की भाषा नहीं बोल सकते। भारतीय कला की प्रशंसा में कहता है कि यहाँ के राजगीर और संगतराश समस्त मुसलमान जगत में पायें जाने वाले शिल्पकारों से उन्नत हैं। हम भारतीय दूसरे देशों में ज्ञान प्राप्ति के लिये नहीं जाते वरन दूसरे देशों के लोगों को यहां आना पड़ता है।⁷ शून्य का ज्ञान सर्वप्रथम हिन्दुओं को ही प्राप्त हुआ। खुसरो बताते हैं कि हिन्दसा, दिमन्ना तथा शतरंज संसार वालों ने हिन्दुस्तान से ही सीखा। संगीत की प्रशंसा में कहता है कि “यहां का संगीत केवल मनुष्यों को ही नहीं वरन पशुओं को भी उत्तेजित कर देता है। इस देश में बहोत से ऐसे पक्षी हैं जो मनुष्य के समान वार्ता कर सकते हैं”।⁸ पक्षियों में तोता-मैना तथा कौआ, मोर आदि का जिक्र किया है। जानवरों में बन्दर तथा ऊँट को मनुष्य के आदेशों का पालन करने वाला बताया है। भारत में प्रचलित जादू-टोने का वर्णन करते हुए सती प्रथा की प्रशंसा की है। भारत की आबो-हवा की तारीफ करते हुए खुसरो कहते हैं कि यहाँ का मौसम इतना संतुलित है कि एक गरीब किसान एक पुरानी चादर ओढ़कर अपने मवेशी चराते हुए चारागाह में ही अपनी रातें गुजार देता है।

निष्कर्ष

इस तरह अमीर खुसरो ने अपने लेखन में कई पक्षों को उभारा है जो भारतीय इतिहास की दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण हैं। भारत की तात्कालीन सामाजिक स्थिति का बड़ा ही जीवन्त चित्रण प्रस्तुत किया है। इस रचना में खुसरो भारत के लिए अपने अथाह प्रेम को व्यक्त करता है। अपनी मातृभूमि की प्रशंसा में गीत गाता है तथा विश्व के अन्य देशों पर भारत की श्रेष्ठता सिद्ध करता है। वह बड़े फक्र के साथ जिक्र करता है कि मैं तुर्क भी हूँ और हिन्दुस्तानी भी हूँ किन्तु अगर नूहसिपेहर के व्याख्यान को देखा जाए तो मालूम पड़ता है कि उसे अपने हिन्दुस्तानी होने पर ज्यादा फक्र था। अमीर खुसरो ने अपने व्यक्तित्व, अपने कार्य के जो नमूने प्रस्तुत किये उनकी हमारे

मुल्क कों आवश्यकता है। “खुसरो ने जिस भारत का जिक्र किया है वह वैसा ही दिखता था जैसा आज दिखता है”।^१ के०एस० लाल खुसरो की सृजनात्मक उपलब्धियों पर टिप्पणी करते हुए कहते हैं कि यदि उसकी छुट-पुट गलतियाँ, शब्दाडम्बर, अलंकारिक भाषा और काव्यात्मक अतिशयोक्ति को छोड़ दे तो खुसरो की कृतियाँ वास्तव में उसके समय के राजनैतिक और समाजिक इतिहास का सच्चा मित्र हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. रहीस सिंह, मध्यकालीन भारत—दिल्ली सल्तनत, पियर्सन एंजिडिया एजुकेशन सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड, नोएडा, 2012, पृ०. 266
2. अमीर खुसरो, दिवलरानी खिज़्र ख़ाँ, अलीगढ़, 1917, पृ०.153
3. वही, पृ०.156
4. सैयद अतहर अब्बास रिजवी, खिलजी कालीन भारत, अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी, अलीगढ़, 1955, अनुदित मूल ग्रन्थ की समीक्षा— पृ०.06
5. अमीर खुसरो, नूहसिपेहर, इस्तामिक रिसर्च एसोसिएशन, 1940, पृ०.143—147
6. वही, पृ०.160—161
7. वही, पृ०.166—167
8. वही, पृ०.180—181
9. इरफान हबीब, देशदेशान्तर—इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस—.. अमीर खुसरो, राज्यसभा टेलीविजन, 10 जनवरी 2017

पता

शिवम् त्रिपाठी

6393600746

प्राचीन इतिहास एवं पुरातत्व विभाग

गौरीशंकर महाविद्यालय, काजीकमालपुर—सीतापुर

261001

सारांश :

साहित्य और सिनेमा बीसवीं सदी की अभिव्यक्ति की अलग-अलग विधाएँ हैं जिससे मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ भाषा और साहित्य का भी विकास हुआ है। औद्योगिकीकरण के प्रभाव से सिनेमा का भी विकास चरम सीमा पर हो रहा है लेकिन सिनेमा और साहित्य का संबंध भी पुराना है। साहित्य विश्व की सबसे प्राचीन कलाओं में से एक है। सिनेमा ने साहित्यिक कृतियों पर फिल्मों के माध्यम से करुणा, और यथार्थ के चित्रण प्रस्तुति कर दिखाया है। सिनेमा हमारे समय की लोकप्रिय और जीवंत कला है। जो दर्शक के सामने अपना असीमित प्रभाव छोड़ता है। सभी भाषाओं के साहित्य पर ही अच्छी फिल्में बनी हैं। मगर यह भी सत्य है कि हमारे देश में साहित्यिक कृतियों पर बहुत कम फिल्मों का निर्माण हुआ है। जिस प्रकार साहित्य से सिनेमा अपने आप में एक पुनः रचना करता है। आधुनिक सिनेमा द्वारा समाज के विभिन्न वर्गों के दृश्य की भावनाओं को दिखाता है। दुनिया का शायद ही कोई ही देश होगा। जहाँ आज सिनेमा ने समाज की हर गतिविधियों के चित्र लोगों के सामने न रखे हों। सिनेमा ने चलचित्र से ही संवेदना, युद्ध, त्रासदी, शान्ति, गोरे और काले का भेद एक फिल्म के माध्यम से हमारे समक्ष रखे हैं। सिनेमा ने ही कला और रचना द्वारा साहित्य को अनेक रूपों में दर्शाया है।

मुख्य शब्द : साहित्य फिल्म रूपांतरण।

विस्तार :

आज भारत का चलचित्र उद्योग विश्व सिनेमा से प्रतिस्पर्धा कर रहा है। सिनेमा विज्ञान की अद्भुत देन है। फिल्मों के निर्माण में अनेक प्रकार के वैज्ञानिक यंत्रों का प्रयोग होता है। शक्तिशाली कैमरे, स्टूडियो, कंप्यूटर, संगीत के उपकरणों आदि के मेल से फिल्मों का निर्माण होता है। इसे पूर्णता प्रदान करने में तकनीकी विशेषज्ञों, साज-सज्जा और प्रकाश व्यवस्था की बड़ी भूमिका होती है, फिल्म बनाने में हजारों लोगों का सहयोग लेना पड़ता है। यह जोखिम भी होता है कि लोग इसे पसंद करते हैं या नापसंद करते हैं अतः सिनेमा क्षेत्र में एक व्यवसाय की सभी विशेषताएँ पायी जाती हैं। शुरुआत में मूक सिनेमा का प्रचलन था। लोग केवल चलता-फिरता चित्र देख सकते थे। बाद में आवाज वाली फिल्में बनने लगीं।

चित्र के साथ ध्वनि के मिश्रण से इस क्षेत्र में क्रांति आई। इससे फिल्मों में गीत-संगीत का दौर आरंभ हुआ। लोगों का भरपूर मनोरंजन होने लगा। नौटंकी थियेटर आदि मनोरंजन के परंपरागत साधन पीछे छूटने लगे। सिनेमाघरों का फैलाव महानगरों से लेकर छोटे-बड़े शहरों तक हो गया। बाद में श्वेत-श्याम फिल्मों की जगह जब रंगीन फिल्में बनने लगीं तो सिनेमा उद्योग ने नई ऊँचाइयों को

छुआ। सिनेमा का विश्व भर में प्रसार हुआ है। दुनिया की लगभग सभी भाषाओं में फिल्में बन रही हैं। भारत में भी सभी प्रमुख भाषाओं में फिल्में बनती हैं। इनमें भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी में बनी फिल्मों का सबसे अधिक बोलबाला है। भारत की व्यवसायिक राजधानी मुंबई इसका केन्द्र है। इसीलिए यह मायानगरी के नाम से प्रसिद्ध है। सिनेमा आम लोगों में बहुत लोकप्रिय है। लोग सिनेमाघर या टेलीविजन पर बहुत सारी फिल्में देखते हैं। युवा वर्ग हर नई फिल्म को देखना चाहता है। लोग फिल्मों के गाने भी पसंद करते हैं। पुरानी फिल्मों के गाने तो लोगों की जुबान पर होते हैं। नए गाने युवाओं को बहुत भाते हैं। टेलीविजन पर फिल्मों तथा फिल्म आधारित कार्यक्रमों का प्रसारण होता ही रहता है।

सिनेमा को समाज का दर्पण माना जाता है। समाज में जो कुछ अच्छी-बुरी घटनाएँ घटती हैं उनकी झलक फिल्मों में देखी जा सकती है। साथ ही साथ इनमें कल्पनागत बहुत सी ऐसी बातें दिखाई जाती हैं जिससे दर्शकों में भ्रम पैदा होता है। हिंसा और अश्लीलता की भी सिनेमा में प्रचुरता होती है। चूँकि युवा वर्ग नए फैशन की नकल करता है इसलिए उस पर सिनेमा का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। जहाँ लोग सिनेमा से अच्छी बातें सीखते हैं वहीं दूसरी ओर इसके बुरे प्रभाव से भी अछूते नहीं रहते। सिनेमा का निर्माण एक कला है। यह एक महँगी कला है। एक फिल्म के निर्माण में ही करोड़ों रुपये व्यय किए जाते हैं। फिल्म की कहानी तैयार की जाती है फिर इसमें काम करने वाले लोगों का चुनाव किया जाता है। फिल्म की कमान निर्देशक के हाथ में होती है। साथ ही अभिनेता, अभिनेत्री, सह-अभिनेता और अन्य कलाकार अपने-अपने अभिनय से फिल्म में जान डालने का कार्य करते हैं। गीत-संगीत देने वालों का भी प्रमुख स्थान होता है। अच्छी पटकथा तथा अच्छे निर्देशन से फिल्म सफल हो जाती है। फिल्म सफल होने पर निर्माता को अच्छी कमाई होती है। फिल्मों की लोकप्रियता के साथ-साथ फिल्मी कलाकारों की भी समाज में बहुत प्रतिष्ठा है। लता मंगेशकर, मोहम्मद रफी, किशोर कुमार, मुकेश, मन्ना डे, आशा भोंसले जैसे गायक-गायिकाओं को उनके सुमधुर गीतों के कारण याद किया जाता है। दिलीप कुमार, अमिताभ बच्चन, राजेश खन्ना, वहीदा रहमान, हेमा मालिनी जैसे कलाकारों से जनता लगाव महसूस करती है। इस तरह सिनेमा वर्तमान समय में मनोरंजन का सबसे बड़ा साधन बना हुआ है। सिनेमा उद्योग निरंतर फल-फूल रहा है। आनेवाले समय में इसके विकास की ढेरों संभावनाएँ हैं।

साहित्य और सिनेमा :

साहित्य और सिनेमा ऐसे माध्यम हैं जिसमें समाज को बदलने की ताकत सबसे अधिक होती है। कहना गलत न होगा कि सिनेमा,

साहित्य से अधिक प्रभावशाली और आम जनता तक सरलता से पहुंचने वाला माध्यम है, हालांकि साहित्य के चिंतक, लेखक और आलोचक सिनेमा को साहित्य का हिस्सा मानने से हमेशा हिचकते रहे हैं, यह जानते हुए भी कि सिनेमा का आरंभ ही साहित्य से होता है। साहित्य और सिनेमा कहीं न कहीं हमेशा ही एक दूसरे के विस्तार में सहयोग करते रहे हैं। कहना सर्वथा उचित ही होगा कि साहित्य और सिनेमा एक दूसरे के पूरक हैं। भारत में बनने वाली पहली फीचर फिल्म भी आधुनिक हिंदी साहित्य के जनक भारतेन्दु हरिश्चंद्र के नाटक 'हरिश्चंद्र' से प्रेरित थी। प्रारंभ से ही हिंदी सिनेमा में लिखित और अलिखित साहित्य की भूमिका अहम रही है। आज भारत में फिल्म उद्योग ने सौ साल का सफर तय कर लिया है। भारत जैसे बहुभाषी और बहु-सांस्कृतिक परंपरा वाले देश में इसकी व्यापक पहुंच ने इसे लोगों के मनोरंजन का सर्वाधिक लोकप्रिय माध्यम बना दिया है और इसमें हिंदी का व्यापक योगदान है। 1931 में पहली बोलती फिल्म 'आलम आरा' से आज तक सर्वाधिक फिल्में हिंदी भाषा में ही बनाई गईं। इस तरह हिंदी भारत ही नहीं भारत के मुख्य सिनेमा की भी भाषा है।

विश्व में हिंदी सिनेमा ही भारतीय सिनेमा का प्रतिनिधित्व करता है। अक्सर जब हम हिंदी सिनेमा में साहित्य के योगदान की बात करते हैं तो इसे लिखित साहित्य से जोड़ देते हैं। जबकि साहित्य चाहे लिखित हो या अलिखित वह हमेशा से समाज को प्रभावित करता रहा है। प्रारंभ में बोलती फिल्मों का शुरुआती दौर 'पारसी थिएटर' की विरासत भर था, जिसमें अतिनाटकीयता और गीत-संगीत का ज्यादा समावेश था। पहली बार हिंदी सिनेमा में स्थापित लेखक के रूप में कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद का प्रवेश हुआ। वर्ष 1933 में हिंदी के सर्वाधिक लोकप्रिय साहित्यकार प्रेमचंद की कहानी पर 'मोहन भावनानी' के निर्देशन में फिल्म मिल मजदूर बनी। निर्देशक ने मूल कहानी में कुछ बदलाव किए जो प्रेमचंद को पसंद नहीं आए। 1934 में प्रेमचंद की ही कृतियों पर नवजीवन और सेवासदन बनीं लेकिन दोनों फिल्में फ्लॉप हो गईं। जो शुरुआत हुई थी, वह जारी रहे। भगवतीचरण वर्मा, पांडेय बेचन शर्मा, फणीश्वरनाथ रेणु, अमृतलाल नागर, चतुरसेन शास्त्री जैसे साहित्यकारों की रचनाओं पर भी फिल्में बनीं। हिंदी सिनेमा में हिंदी साहित्यकारों का सुनहरा दौर सातवें दशक में नजर आता है। जिसमें उपन्यासकार कमलेश्वर का अहम योगदान है। उपेन्द्रनाथ अशक और अमृतलाल नागर के बाद कमलेश्वर ही ऐसे साहित्यकार थे जिन्होंने सिनेमा की भाषा और जरूरत को बेहतरीन ढंग से समझा। गुलजार ने कमलेश्वर की कृति पर 'आंधी और मौसम' बनाई तो दोनों फिल्में मील का पथर

साबित हुई।

सातवें दशक में जहां एक ओर हिंदी कथा-साहित्य में बदलाव आ रहा था वहीं हिंदी भाषी फिल्मकारों की संख्या भी बढ़ रही थी। फिल्मकार 'बासु चटर्जी' बांग्ला भाषी थे लेकिन उन्होंने हिंदी साहित्य का गहरा अध्ययन किया था। उन्होंने मन्नू भंडारी की कहानी यही सच पर 'रजनीगंधा' बनाई, जो काफी लोकप्रिय साबित हुई। हिंदी फिल्मों की इस नई धारा को समांतर सिनेमा भी कहा गया। इसी दौर में हिंदी साहित्य को सबसे ज्यादा महत्व और निष्ठाभरी समझ फिल्मकार मणि कौल ने दी।

मणि कौल ने बाद में मोहन राकेश, विजयदान देहा, मुक्तिबोध और विनोद कुमार शुक्ल की रचनाओं पर फिल्में बनाई। कुमार शहानी ने निर्मल वर्मा की कहानी 'माया दर्पण' पर फिल्म बनाई। इसके अलावा दामुल परिणति, पतंग, कोख जैसी फिल्में भी साहित्यिक रचनाओं पर बनीं। साहित्य और सिनेमा के रिश्ते को जोड़े रखने में दूरदर्शन की बड़ी भूमिका रही है। इसमें तमस चंद्रकांता, राग दरबारी, कब तक पुकारूं मुझे चांद चाहिए, कक्काजी कहिन जैसे धारावाहिक हिट रहे।

हिंदी फिल्मों का वर्तमान परिदृश्य काफी बदल चुका है। सिनेमा में हिंदी साहित्य पर आधारित अधिकांश फिल्मों का सफर बहुत आसान नहीं रहा। अधिकांश फिल्में असफल साबित हुईं। यही कारण है कि हिंदी में साहित्यिक कृतियों पर सबसे कम सफल फिल्में बन पाई हैं। इसकी बड़ी वजह कहानी के कथ्य को समझने में विफलता रही। दूसरा बड़ा कारण सिनेमा को उपन्यास की भांति पेश करना था। फिल्म, शब्दों का दृश्य विधा में अनुवाद नहीं हो सकती। यह फिल्म की विधा को कमतर करके देखने के साथ ही साहित्य को भी कमतर देखने के समान होगा। फिल्मकार रचना को शब्दों के पार ले जाना चाहता है। जबकि साहित्य जगत फिल्म में भी साहित्य को जस का तस देखना चाहता है। एक हद तक यह लगभग असंभव अपेक्षा ही है। हम सभी जानते हैं कि भारतीय दर्शक वर्ग हिंदी सिनेमा को उसकी कल्पनाशीलता, रोमांटिसिज्म के कारण ज्यादा पसंद करता है। सवाल है कि हिंदी सिनेमा की अखिल भारतीय पहुंच बनाने में हिंदी के साहित्यिक स्वरूप के अलावा इसके कौन-से स्वरूप का ज्यादा योगदान है। राष्ट्रभाषा, जनभाषा संपर्क भाषा या राजभाषा ? सहज जवाब है जनभाषा। साहित्यिक कृतियों पर फिल्म बनाने के पीछे पहली शर्त है निर्माता-निर्देशक का रचना के मर्म तक पहुंचने के साथ ही साहित्यकार के मानसिक बुनावट को भी समझना। बाजारवाद, तकनीकी विकास, उदारवाद का व्यापक और स्पष्ट प्रभाव हिंदी सिनेमा पर देखा जा सकता है जो हिंदी कभी भारतीय सिनेमा की प्राण तत्व मानी जाती थी। उसका

स्थान अब खिचड़ी भाषा या हिंग्लिश ने ले लिया है। शुरु से ही भारतीय समाज में साहित्य की प्रखर भूमिका रही है।

साहित्य एवं सिनेमा दो भिन्न-भिन्न कलारूप हैं अतः जब एक कला को किसी कृति का दूसरी कला की कृति में रूपांतरण होता है तो बड़े स्तर पर परिवर्तन आवश्यक हो जाता है। विश्व की प्राचीनतम और नवीनतम कलाओं के भिन्न-भिन्न स्वरूपों का तुलनात्मक अध्ययन करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि दोनों कलारूपों में यद्यपि पर्याप्त अंतर है किंतु यह अंतर इतना अधिक भी नहीं है कि फिल्मांतरण असंभव हो जाए। कुछ फिल्म विचारक अवश्य यह मानते रहे कि चूँकि साहित्य और सिनेमा पूर्णतया भिन्न प्रतीक व्यवस्थाओं का प्रयोग करते हैं फिल्मांतरण संभव हो नहीं सकता है। इसका कारण वे यह बताते रहे हैं कि प्रतीकायित वस्तु को उसके प्रतीकों से पृथक् करना संभव ही नहीं है।

किंतु यह कहना अनुचित नहीं होगा कि यह दृष्टिकोण एक अतिवादी दृष्टिकोण प्रतीत होता है क्योंकि फिल्म इतिहास में इसके अनेकानेक उदाहरण मौजूद हैं जब साहित्यिक कृतियों का सफल फिल्मांतरण किया गया है। फिर वह चाहे भारतीय सिनेमा हो अथवा विश्व सिनेमा। यह कहा जा सकता है कि साहित्यिक कृतियों का फिल्मांतरण संभव तो है किंतु सभी प्रकार की साहित्यिक कृतियों का फिल्मांतरण संभव नहीं है। कविताओं का फिल्मांतरण तो असंभव है ही मनोवैज्ञानिक एवं भाषाई सौंदर्य अथवा चमत्कार वाले उपन्यास जैसे राग दरबारी का फिल्मांतरण भी सरल कार्य नहीं है।

कविताओं में तो चूँकि प्रतीकायित वस्तु और प्रतीकों अथवा रूप एवं कथ्य में लगभग अभेद की स्थिति रहती है इसलिए उनका फिल्मांतरण तो अकल्पनीय माना ही जाएगा साथ ही मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का फिल्मांतरण असंभव तो नहीं किंतु कठिन अवश्य होता है चूँकि जैसा कि देखा गया है कि सिनेमा चाक्षुष माध्यम होने के कारण बाह्य घटना प्रधान उपन्यासों एवं कहानियों के अधिक अनुकूल होता है। हालाँकि गोदार, सत्यजीत रे, बर्गमैन जैसे विश्व के बड़े-बड़े निर्देशकों ने बारंबार यह सिद्ध करके दिखा दिया है कि मनोवैज्ञानिक कथा साहित्य को भी सफलतापूर्वक फिल्माया जा सकता है। किंतु फिर भी यह किसी भी निर्देशक के लिए चुनौतीपूर्ण कार्य ही होता है और इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि कोई बड़े से बड़ा फिल्म निर्देशक किसी मनोवैज्ञानिक उपन्यास का कितना ही उत्कृष्ट फिल्मांतरण क्यों न करे वह फिर भी उतना प्रभावोत्पादक नहीं हो सकता जितना कि मूल उपन्यास में किया गया चित्रण प्रभावशाली होगा।

भाषा से किसी व्यक्ति और समाज का रिश्ता, उसके

अस्तित्व से गुंथा हुआ है। भाषा उन्नत वही है, जहां समाज उन्नति की राह पर है। हमने रामायण, महाभारत, पंचतंत्र जैसी गाथाओं को मौखिक रूप से संरक्षित रखा। आज भी हमारे देश में हजारों सालों की लोकोक्तियाँ, मुहावरे जिंदा हैं, क्योंकि हमारा देश श्रुति परंपराओं का है। भारतीय सिनेमा ने भी प्रारंभ में इन्हीं परंपराओं, किस्सों-कहानियों पर फिल्में बनाने की परंपरा कायम रखी। इसलिए साहित्य की प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष भूमिका प्रारंभ से रही है। ऐसे में भी घबराए बिना हमें आगे देखने की जरूरत है।

हिंदी सिनेमा को शिखर पर ले जाने वाले साहित्य को पुष्पवितदृपल्लवित करना जरूरी है। आज हिंदी फिल्में, हिंदी भाषा, साहित्य और संस्कृति का लोकदूत बनकर विश्वस्तर पर हिंदी की पताका फहरा रही है। ऐसे में जरूरत है इसकी पुनर्व्याख्या करने की। तभी हिंदी सिनेमा कुछ नकरात्मकता के बाद भी अपने मजबूत सकारात्मक पक्षों के बल पर अपनी खोई हुई विरासत को पा सकेगा और अपनी जड़ों को सिंचित कर पाएगा। इसके लिए कलमकारों को भी अपनी कलम को उस ओर मोड़ने की जरूरत है जहां भारतीय समाज उठता-जागता है। कलमकारों को फिर अपनी कलम उस ग्रामीण समाज की ओर मोड़ना होगा जहां आज भी बहुसंख्यक समाज रहता है। तभी हिंदी भाषा और साहित्य के संबंधों से भारतीय सिनेमा नया आकार ले पाएगा।

सत्यजीत रे ने सद्गति को प्रेमचन्द की मूल संवेदना के अधिक निकट रखा है, उसमें फिल्म के सभी मूल नजर आते हैं। इस प्रकार ऐसी कहानियाँ अथवा उपन्यास जिनका अधिकांश सौंदर्य उनकी भाषा शैली में निहित हो वे भी फिल्मांतरण के अनुकूल नहीं होते क्योंकि फिल्मांतरण की प्रक्रिया में उनका सारा भाषाई सौंदर्य जाता रहता है। परिणामस्वरूप ऐसी साहित्यिक कृति का फिल्मांतरण देखकर पाठकों को निराशा ही हाथ लगती है। फिल्म चूँकि चाक्षुष माध्यम है। अतः उसमें किसी साहित्यिक कृति के भाषाई सौंदर्य को बचाए रख पाना न तो संभव है और न वांछनीय। अधिक से अधिक यही किया जा सकता है कि उस कृति के संवादों का सौंदर्य बनाए रखा जाए किंतु इसकी भी अपनी सीमाएँ हैं क्योंकि उपन्यास के सभी संवाद तो फिल्म में नहीं लिए जा सकते।

यदि सिद्धांत रूप में इस बात को स्वीकार भी कर लें कि सभी संवादों को फिल्म में लिया जा सकता है तो भी मूल कृति का भाषाई सौंदर्य अथवा चमत्कार फिल्म में नहीं आ सकेगा क्योंकि वह तो बहुत बड़ी सीमा तक लेखक की वर्णन शैली में निहित होता है। और वर्णन शैली को फिल्मांतरित कर पाना किसी प्रकार भी संभव नहीं है।

फिल्मांतरण के संबंध में आवश्यक इतना ही है कि निर्देशक मूल कृति में जो परिवर्तन करे उसके ठोस कलात्मक व सिनेमाई कारण मौजूद हों। इसके अतिरिक्त हम निर्देशक पर किसी प्रकार का प्रतिबंध नहीं लगा सकते। वह मूल कृति को किस रूप में स्वीकार करता है यह पूर्णतया उसके विवेक पर निर्भर करता है और इस बात पर भी निर्भर करता है कि उसके संवेदनात्मक उद्देश्य क्या है और वे लेखक के संवेदनात्मक उद्देश्यों से कितने भिन्न अथवा समान हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि फिल्मांतरण के संबंध में दो प्रकार की स्थितियाँ दिखाई पड़ती हैं। एक तो यह कि एक कलारूप से दूसरे में अंतरित होने के कारण मूल कृति का रूप न्यूनाधिक परिवर्तित हो जाता है जो अनिवार्य ही है और दूसरी स्थिति यह है कि मूल कृति में जानबूझकर परिवर्तन किए जाते हैं क्योंकि निर्देशक के संवेदनात्मक उद्देश्यों के लिए यही उचित है। ये परिवर्तन कथानक से लेकर नए पात्रों की रचना करने तथा देशकाल और वातावरण बदलने तक जा सकते हैं अर्थात् इन परिवर्तनों की कोई निश्चित सीमा नहीं तय की जा सकती। यह अवश्य है कि मूल कृति से कुछ न कुछ समानता तो रहनी ही चाहिए अन्यथा फिल्म को मूल कृति पर आधारित कहना भी कठिन होगा।

फिल्मांतरण के संबंध में चाहे कितनी ही भिन्न-भिन्न अवधारणाएँ हों किंतु व्यावहारिक दृष्टि से देखने पर फिल्मांतरण की प्रक्रिया के संबंध में निष्कर्षतः यही कहा जा सकता है। यह समझना अत्यंत आवश्यक है कि मूल कृति के प्रति निष्ठा का अर्थ यह बिल्कुल नहीं है कि मूल कृति में किसी प्रकार का संशोधन परिवर्धन न किया जाए बल्कि इसके विपरीत सत्य तो यह कि परिवर्तन न केवल अनिवार्य हैं बल्कि वांछनीय भी हैं। निष्ठा अधिकाधिक मूल संवेदना के प्रति हो सकती है और ऐसा भी हमेशा नहीं होता। वस्तुतः फिल्मांतरण के संबंध में हमें अपने दृष्टिकोण में आमूलचूल परिवर्तन करना आवश्यक है। हमें यह समझना ही होगा कि सिनेमा साहित्य का अनुगामी नहीं है, उसकी अपनी स्वतंत्र सत्ता है और केवल इसी कारण से कोई निर्देशक अपनी कलात्मक अथवा अभिव्यक्तिपरक स्वतंत्रता नहीं खो देता है कि उसकी फिल्म किसी साहित्यिक कृति पर आधारित है। मूल कहानी निर्देशक की हो या किसी साहित्यकार की उस पर बनने वाली फिल्म निर्देशक की रचना होती है। अतः यह उसके अधिकार क्षेत्र में आता है कि यह फिल्म को क्या रूप दे।

निष्कर्ष :

अतः उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर यही कहा जा सकता है कि एक बार फिर बड़े पैमाने पर हिंदी कथा साहित्य पर

फिल्में बन सकें इसके लिए नव सिनेमा आंदोलन जैसे एक और आंदोलन की आवश्यकता है। हालाँकि सकारात्मक बात यह है कि पिछले चार-पाँच वर्षों में फिल्मों में एक और नई लहर देखी जा रही है जिसके कारण यह आशा बंधी है कि एक बार फिर साहित्य पर आधारित गंभीर फिल्मों का निर्माण होगा। देशभर में अनेक मल्टीप्लेक्सों के निर्माण से भी आज कला फिल्मों के वितरण और प्रदर्शन के लिए आठवें दशक से बेहतर स्थितियाँ मौजूद हैं। अतः आज परिदृश्य इतना निराशाजनक नहीं है जितना कि वह कुछ समय पहले था। आज एक बार फिर फिल्मकारों की नई पीढ़ी अत्यंत यथार्थवादी और प्रयोगात्मक फिल्मों का निर्माण कर रही है जो बंबईया सिनेमा के चिरपरिचित मुहावरे से नितांत भिन्न हैं। इन नए निर्देशकों ने क्षीण पड़ गए कला फिल्म आंदोलन को आगे ले जाने का बीड़ा उठाया है। अतः आशा की जा सकती है कि निकट भविष्य में ही ये निर्देशक हिंदी साहित्य के आधार पर कुछ श्रेष्ठ फिल्मों का निर्माण करेंगे। और इस प्रकार बड़े पैमाने पर हिंदी साहित्य के फिल्मांतरण की जो परंपरा नव सिनेमा आंदोलन से प्रारंभ हुई थी वह आगे बढ़ सकेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. हरीश कुमार, सिनेमा और साहित्य, संजय प्रकाशन, दिल्ली।
2. अनुपम ओझा, भारतीय सने. सद्वांत राधाकृष्ण प्रकाशन, 731 अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, इलाहाबाद पटना, पहला संस्करण 2002।
3. अरुण कुमार, सिनेमा और हिंदी सिनेमा, प्रकाशन राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, जयपुर।
4. आलोक राय, प्रेमचन्द की बीस उर्दू, हिंदी कहानियों का सामान्तर पाठ, हंस प्रकाशन, 18, न्याय मार्ग, इलाहाबाद, पहला संस्करण 2002।
5. चिदानन्द दास गुप्ता, सत्यजीत राय का सिनेमा, प्रकाशन नेशनल बुक ट्रस्ट, 5 ग्रीन पार्क नई दिल्ली, पहला संस्करण 2006।
6. पंकज राग धुनों की यात्रा, हिंदी फिल्मों के संगीतकार 1931-2005, राजकमल प्रकाशन, 1. बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली, पहला संस्करण 2006।
7. प्रसून सिन्हा, भारतीय सिनेमा एक अनन्त यात्रा, श्री प्रकाशन, साऊथ गांवड़ी एक्सटेंशन, दिल्ली।
8. बच्चन सिंह, आधुनिक हिंदी आलोचना के बीज शब्द, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली तृतीय संस्करण 2004।
9. भीष्म साहनी, प्रेमचन्द्रः प्रतिनिधि कहानियाँ, राजकमल प्रकाशन, सुभाष मार्ग, नई दिल्ली।

10. मधुरेश, हिंदी कहानी का विकास, लोकभारती प्रकाशन 1. बी नेताजी सुभाष मार्ग दरियागंज, नई दिल्ली पंचम संस्करण, 2008
11. मनमोहन चड्ढा. हिंदी सिनेमा का इतिहास, सचिन प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1990 ।
12. महेंद्र मिश्र, सत्यजीत राय, पाथेर पांचाली और फिल्म जगत, राजकमल प्रकाशन, 1. बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली, इलाहाबाद पटना, पहली आवृत्ति, 2007 द्य
13. विवेक दूबे, हिंदी साहित्य और सिनेमा (हिंदी कथा और साहित्य के फिल्मांतरण के संदर्भ में) संजय प्रकाशन, दिल्ली भारत 2009 ।
14. धीरेंद्र कुमार, साहित्य पर बना सिनेमा सत्यजीत रे, लता साहित्य सदन गाजियाबाद 2014 ।
15. सुधीश पचौरी, दूरदर्शन की भूमिका, सचिन प्रकाशन दरियागंज, नई दिल्ली 1991 ।

डॉ० नरेश कुमारी

सहायक प्रोफेसर (हिंदी विभाग)

राजकिय महिला स्नात्कोत्तर महाविद्यालय

रोहतक हरियाणा ।

शोध सार

असीम राना की रचनाएं साहित्य में अमूर्त अभिव्यक्ति ही नहीं है अपितु यह रचनात्मकता स्वयं से अनवरत संघर्ष करने की आंतरिक प्रक्रिया है। उनके साहित्य में उस द्वन्द्व को मुखरता प्राप्त हुई है, जिससे दैनिक जीवन में प्रत्येक संवेदनशील व्यक्ति का सामना होता है। उन्होंने अपने व्यक्तिगत भावों और जीवन अनुभूतियों के मोतियों को अपने लेखनी से सजाने सँवारने का भरपूर उपक्रम किया है। समाज के प्रत्येक रूप का अत्यंत सूक्ष्म अवलोकन करते हुए उन्होंने अपनी अनुभूति के माध्यम से कलाबद्ध किया है। साहित्यकार जिस समाज में जन्म लेकर पल-बढ़कर शिक्षा प्राप्त करके तथा विभिन्न तरह की अनुभूतियों को संजोकर अपनी कृतियों में उस समाज के जीवंत चित्र को प्रस्तुत करता है। वह समाज से ग्रहण कर उसी को अपनी लेखनी मानता है वापस लौटा देता है असीम राना की कृतिया भी साहित्य में सहजता से प्रस्तुत होती है समाज के प्रत्येक पहलू चाहे वह सकारात्मक या नकारात्मक ही क्यों न है उन्हें चित्रित करती है।

मुख्य शब्द : आंतरिक, संवेदनशील, सूक्ष्म, अनुभूति, राष्ट्र, भ्रष्टाचार, जनतन्त्र, औद्योगिकरण, पर्यावरण, संस्कृति, अनैतिकता, रूढ़िवादिता, विकृतियाँ, दार्शनिक, उपभोक्तावादी, निर्वाह, आधुनिकीकरण, स्वतन्त्रता, निर्भयता, समृद्धि, प्रतिष्ठित, सक्रिय, नेतृत्व, निश्छल, आध्यात्मिक, ग्रामीण, शहरीकरण, दुरुपयोग, लोकतांत्रिक, संगठन, सर्वजन

मूल आलेख

हिंदी साहित्य में असीम राना की कृतियाँ उन सभी पहलुओं को उभारती हैं जो समाज में दिखई देती हैं जैसे परिवार, नारी स्थिति, युवा वर्ग, बाल मनोविज्ञान, शिक्षा महत्त्व, ग्रामीण व नगरीय जीवन, एकाकीपन राष्ट्र निर्माण, राष्ट्र प्रेम, देश सेवा, भ्रष्टाचार, जनतंत्र, औद्योगिकरण, पर्यावरण, लोक संस्कृति, लोक गीत, नर सेवा, रीति-रिवाज, अनैतिकता व अनाचार, परम्परा व रूढ़िवादिता, पाश्चात्य संस्कृति प्रभाव, मानव विकृतियाँ, दार्शनिक रूप, उपभोक्तावादी संस्कृति व विविध रूप समाहित है। परिवार में प्रत्येक रिश्ते व सम्बन्ध को निभाकर जीवन निर्वाह सम्भव हो पाता है उसमें भाई-बहन, पिता-पुत्र सम्बन्ध, भाई-भाई सम्बन्ध, पति-पत्नी सम्बन्ध जैसे कई सम्बन्ध समाहित होते हैं। जो असीम राना जी ने अपने साहित्य में दिखाए हैं प्रत्येक रिश्ता या सम्बन्ध अद्वितीय और गहरा होता है जो परिवार व्यवस्था का महत्त्वपूर्ण हिस्सा होता है, सभी एक-दूसरे के साथ मिलकर पारिवारिक उत्सवों, त्योहारों और

सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेते हैं, ये सम्बन्ध विश्वास, निष्ठा और सांझेदारी के आधार पर स्थापित होते हैं। ये रिश्ते एक-दूसरे पर पूर्ण विश्वास और समर्थन करते हैं, साथ ही जिम्मेदारी और संवेदनशीलता की भावना को प्रोत्साहित करते हैं भाई-भाई के रिश्ते को असीम राना के इस कथन से स्पष्ट होता है –

“पहले जब भी मुझे कोई सपना आता था

मैं अपने भाई को सुनाता था

जब कभी-कभी इस भाई का सपना आता है

जो आँख खुलते ही टूट जाता है

अपने साथ नींद ले जाता है

अपने बाद आंसू छोड़ जाता है।”¹

इन पंक्तियों से भाई के अलग होने का दुख वर्णित हुए है इसी तरह परिवार के सभी रिश्ते व सम्बन्धों के अलग होने का दुख भी प्रकट होता है। इस दुख में व्यक्ति परिवार सभी सम्बन्धों का वर्णन है। समाज में परिवर्तन के साथ परिवार और सम्बन्धों की परिभाषाएं भी बदल रही हैं। व्यापारीकरण, शिक्षा की प्रगति और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की बढ़ती प्रासंगिता के कारण प्रत्येक सम्बन्ध में आधुनिकीकरण आया है। परम्परागत भूमिकाओं के साथ, आधुनिक समय में सम्बन्धों को नई दिशा देने के लिए समाज में प्रवृत्तियों और मान्यताओं का अनुकरण किया जा रहा है। सभी नये आयामों में अपना उत्तरदायित्व निभा रहे हैं। समाज का एक पहलू नारी रूप भी है जिसमें असीम राना के साहित्य में नारी के प्रति दृष्टिकोण पक्षपात से रहित दिखाई देता है। वे लैंगिक भेदभाव की समस्या को पाठकों के समक्ष निर्भयता से रखते हैं। यह समस्या ऐसी है जो हमारे समाज को गहराई से प्रभावित करती है। यह भेद न केवल व्यक्तिगत स्तर पर होता है बल्कि सामाजिक संरचना और व्यवस्थाओं में भी प्रकट होता है। जो समाज में समृद्धि और समानता को बाधित करते हैं। इन सभी स्थितियों को असीम राना जी ने अपनी कविताओं में बखूबी वर्णित किया है –

“बेटा आँखों का नूर, बेटा आँखों का नीर क्यों?

बेटा आँखों का सपना, बेटा आँखों की किरकिरी क्यों?

बेटा आँखों में बसता, बेटा आँखों में चुभती क्यों?

बेटे के लिए आँखें तरसती, बेटे पर आँखें बरसती, क्यों?

बेटे का जन्म आशाओं को सहलाए, बेटा का जन्म आँसुओं से नहलाए, क्यों?”²

अतः इस भेदभाव को कम करने के लिए हमें समाज में

जागरूकता फैलानी चाहिए। यह सशक्तिकरण शिक्षा व सजमता से ही सम्भव हो सकती है। स्त्री का आदर्श स्वरूप एक संयमित और संतुलित भूमिका से प्रतिष्ठित होता है जिसमें परम्परागत मूल्य, सांस्कृतिक धारणाएं, सामाजिक स्थिति और मानवीय सम्मान के मानक शामिल होते हैं।

युवा वर्ग उत्साह और प्रेरणा से भरा होता है। इनका उत्साह कई रूपों में दिखता है जो इसे विशेष बनाता है। युवा वर्ग का उत्साह उनके सपनों और लक्ष्यों से जुड़ा होता है अपने भविष्य को लेकर उत्सुक होते हैं और उनके मन में विभिन्न प्रेरक विचार चलते रहते हैं। युवा वर्ग का उत्साह उनके सामाजिक और राजनीतिक संकल्पों में भी दिखता है। युवा लोगों में समाज सुधार और न्याय के प्रति उत्साह रहता है। वे समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए सक्रिय रहते हैं और अपनी आवाज को सुनाने के लिए उत्सुक होते हैं। युवाओं की इसी खासियत को लेखक ने अनुभव किया है और अध्यापन काल के अपने छात्रों के सान्निध्य का भरपूर उपयोग करते हुए युवा मन की अबाधित हिलारों को अपनी लेखनी से साहित्य में उतारा है—

“मैं नहीं तो कौन, मैं नहीं तो कौन

मैं नहीं तो कौन नवल भर ले के आएगा

मेरे बिना कौन है नायक नवीन क्रांति का

कौन प्रसारित करे संदेश विश्व शांति का

तर्कबाण से करूँ अनीतियों को मौन, मैं नहीं तो फौन।”³

राष्ट्र के प्रति युवाओं का उत्तरदायित्व बहुत महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि युवा वर्ग देश के भविष्य के निर्माता और नेतृत्व की भूमिका निभाता है। युवा वर्ग का कार्य नवाचारिता और विकास के क्षेत्र में योगदान करना होता है। यह उनका दायित्व है कि वे समस्याओं का समाधान ढूँढें और नए तरीके से विकास करें। ये समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में सक्रिय होते हैं और न्याय, समानता और शांति को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित होते हैं।

असीम रामा जी केवल युवा मन के ही नहीं बाल बन के भी सूक्ष्म जानकर व कुशल चितेरे हैं। आसी राना जी अध्यापक होने के कारण दीर्घावधि तक बालकों के मध्य रहे और उनकी अनेक गतिविधियों से जुड़े रहे और उनकी आवश्यकताओं का निकट से अध्ययन करने का भरपूर अवसर प्राप्त हुआ, जिसे उन्होंने अपने साहित्य में ढाला है। उनका कहना है कि ज्ञान की जो बात विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम में भाषण के माध्यम से बताई जाती है यदि उस सामग्री को छंद में ढालकर काव्य के रूप में प्रस्तुत किया जाए तो सम्भव है वह उन्हें रुचिकर व सहज

लगेगी। इनकी हिंदी वर्णमाला का गीत, अंग्रेजी वर्णमाला का गीत, हर दिन को हिंदी का दिन, कर्म सम्राट, भारत के राज्य, बिजली बचत करो, टीचर दीदी का गीत, बारह मास का गीत, रंगों का गीत, भारत की नदियाँ, भारत की भाषाएँ, तितली रानी, जाने अपने भारत को, पर्यायचार्वी गीत, व्यथा बंदर की कविताएं बालमन को दर्शाती है।

“निर्मल है निश्छल है कोमल है बच्चा

पिता के बुढ़ापे का संबल है बच्चा

बदल देता मुस्कान में आँसुओं को

सदा करता मानव का मंगल है बच्चा।”⁴

बालमनोविज्ञान बालकों के मानसिक विकास, भावनाओं और व्यवहार को समझने का काम करता है। वह अपने परिवार, समाज और विश्वास में विकसित होता है। इस अवस्था में उसकी समझ व प्रतिभा का विकास होता है।

असीम राना जी ने शिक्षा का जीवन में महत्व भी दर्शाया है यह हमें न केवल ज्ञान और विशेष कौशलों की प्राप्ति में सहायक होती है बल्कि हमें सामाजिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से विकसित भी करती है। शिक्षा के कई रूप मौलिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, सामाजिक शिक्षा आदि है। शिक्षा हमें समाज में अधिक सक्रिय और सजीव भागीदार बनाती है। यह मनुष्य व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह सोचने की क्षमता, समस्या समाधान के योग्य व आध्यात्मिक विकास में सहायता करती है। एक शिक्षक एवं साहित्यकार के रूप में असीम राना शिक्षा फैलाने के लिए कृतसंकल्प रहे हैं —

“होकर ज्योतिर्मान दीप से दीप जलाएंगे

हम सूरज बन शिक्षा की किरणें फैलाएंगे

एक—एक शिक्षित यदि एक—एक को और पढ़ाए

अनपढ़ता का अंधकार भारत में नजर न आएगा।”⁵

शिक्षा के समक्ष समस्याओं को हमें समझना व सुधारना होगा व शिक्षा का प्रचार करना ही हमारा उद्देश्य होगा। यह असीमा राना जी मानना है। असीम राना ने ग्रामीण व नगरीय जीवन का साहित्य में यथार्थ वर्णन किया है। वे ग्रामीण महत्व को भली—भांति समझते हैं। ग्रामीण जीवन को नगरीय परिवेश के परिप्रेक्ष्य से अधिक सुगमता से समझा जा सकता है। नगरो की घनी आबादी, विकसित ढांचे, व्यापारिक क्षेत्र ज्यादा गति, शोर—शराबा और गाड़ीबाजी की भीड़ होती है। गांवों में घरेलू उपयोग के लिए बड़े आकार व परिवार के बीच सम्बन्ध भावात्मक

व गहरे होते हैं। शहरी लोगों का जीवन संकीर्ण होता है। गांवों में सामाजिक संरचना अधिक संगठित होती है और समुदाय के अनुसार व्यवस्था होता है। यहां के लोगों के बीच विशेष परम्पराएं रीति-रिवाज, लुभवने त्योहार, लोकगीत और संस्कार होते हैं जो समाज को एक जूट रखते हैं सांस्कृतिक परम्पराएं कभी भी असीम रानी की दृष्टि से ओझल नहीं होती—

“नहीं शहर में ठौर बावले, निकाल गाँव की ओर बावले
वहाँ मखमली दूब बिछी है, सड़कें यहाँ कठोर बावले
अब भी शायद शेष बची है वहाँ प्रीत की डोर बावले
खड़ी खेत में बुला रही है निर्मल उजली भोर बावले।”⁶

अतः शहरी जीवन एकाकीपन से भरा हुआ है कोई किसी के साथ संवेदनशील नहीं है। लोक संस्कृति व लोकगीत ग्रामीण क्षेत्रों में देखे जाते हैं शहरी लोगों की संज्ञान से अब अछूता है। पर्यावरण ग्रामीण क्षेत्र में शुद्ध, साफ, स्वच्छ ही रहा है जबकि शहरी क्षेत्र में पर्यावरण दूषित है वाहनों की रफतार ने पर्यावरण को शुद्धता से परे कर दिया है। गांवों की रीति-रिवाज, परम्परा व रुढ़िवादिता को लेखन ने अपने साहित्य में बखूबी दिखाया है। व्यक्ति अनैतिकता, अनाचार, पाश्चात्य संस्कृति प्रभाव व मानव विकृतियों का बढ़ता प्रभाव को ग्रामीण व शहरीकरण के माध्यम से दिखाया है।

राष्ट्र निर्माण व राष्ट्र प्रेम राष्ट्र विकास में योगदान देता है। वीर सैनिक देश की सेवा व समर्थन के लिए अपने जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना करते हैं। वे देश की रक्षा के लिए समर्पणशीलता एवं पराक्रम से अपना कर्तव्य निभाते हैं। उनकी कर्तव्यनिष्ठा उन्हें समाज की सेवा में लगाव और समर्पण के साथ राष्ट्र की सुरक्षा और समृद्धि की दिशा में काम करने के लिए प्रेरित करती है यह असीम राना के साहित्य में यथावत है—

भारत माँ के चरणों में सर्वस्व स्वयं बलिदान किया
इस विजयी विश्व तिरंगे का हमने ऐसे निर्माण किया

X

X

X

घिस-घिस कर हड्डियां, रक्त का आओ दान करें
यौवन की दें भेंट, राष्ट्र ध्वज का सम्मान करें।⁷

टसीम राना की रचनाओं में न केवल सैनिकों के शौर्य का वर्णन है अपितु उनके प्रति श्रद्धा एवं सम्मान भी है व राष्ट्र प्रेम, देश सेवा, राष्ट्र उत्थान का आधार स्तम्भ है। जब किसी व्यक्ति या संगठन द्वारा अधिकारों का दुरुपयोग किया जाता है तो राष्ट्र सेवा नहीं भ्रष्टाचार बढ़ता है। व्यक्ति धन, सत्ता या सामाजिक स्थिति को

प्राप्त करने के लिए अनैतिक कार्य करने लगता है यह समाज और राजनीतिक व्यवस्था के लिए एक विकट समस्या होती है। भ्रष्टाचार से समाज और राजनीतिक व्यवस्था को स्थिरता, विश्वास और समानता के आधार पर काम करना मुश्किल हो जाता है। इससे अर्थव्यवस्था पर बुरा प्रभाव, सार्वजनिक सेवाओं पर प्रभाव, न्यायिक प्रक्रिया में बाधा, राजनीतिक प्रणाली का खोखलापन बढ़ता है। यह सब सख्त कानूनी कारवाई, पारदर्शिता, शिक्षा और जागरूकता, तकनीकी उपाय, निगरानी और प्रतिबंध, लोकतंत्रिक संस्थाओं का मजबूतीकरण से कम किया जा सकता है। साहित्यकार की भी इसमें विशेष भूमिका होती है क्योंकि यह लोगों को जागरूक करता है, उन्हें भ्रष्टाचार के प्रभावों के बारे में समझाता है और समाज में बदलाव को बढ़ावा देता है यह कथा, उपन्यास निबंध, लेख, नाटक, कविताओं, साहित्य संगठन से जागरूक कर सकते हैं यथा—

“घौटालों का घना अंधेरा जाकर ज्योति जलाए कौन
घपलों के घनघोर घटा है किरण नई ले आए कौन

X

X

X

आज पेटहित है सर्वोपरि आज देशहित नीचे है
स्वार्थ के मद में हर कोई अपनी आंखें भीचे है
न्याय गर्जना करके जो सोए है उन्हे जगाए कौन
घपलों की घनघोर घटा है किरण नई ले जाए कौन।”⁸

अतः असीम राजा ने मानव जीवन के हर क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार की गांठ की परत दर परत खोलने का सफल प्रयास किया है और साहित्य के माध्यम से लोगों को जागरूक करने का प्रयास किया है। इस भ्रष्टाचार से परे होकर जनतंत्र को अपनाना है। अपने कार्य व कर्तव्य में आगे बढ़ना है।

निष्कर्ष

असीम राना जी का मानना है कि जब कोई साहित्यकार अभिव्यक्ति की तड़प लेकर लिखना आरम्भ करता है तो वह उन्हीं आदर्शों और संकल्पों को अपने लेखन की विषय वस्तु बनाता है जिनकी वह अपेक्षा रखता है और जिन्हें वह अपनी रचनाओं के माध्यम से सार्वजनिक भी करना चाहता है वैसे ही असीम राना ने सर्वजन हित की बात कही है और समाज के प्रत्येक पहलू व घटक का अपने साहित्य में वर्णित किया है घर परिवार से लेकर राष्ट्र का वर्णन इनके साहित्य में चित्रित है कोई भी पहलू इनसे अछूता नहीं रहा है जो साहित्य में अपना विशेष योगदान देने में अग्रणी रहे हैं। साहित्यकार समाज की प्रत्येक

समस्या को देखकर, अनुभव कर साहित्य में यथार्थ रूप भर उतारता है और उसका समाधान दिखाता है वही श्रेष्ठ साहित्यकार होता है जो असीमा राना ने विशेष रूप से वर्णित की है।

अवधी-भोजपुरी-राजस्थानी सब इसकी धाराएँ,
हुई अनूदित हिन्दी में भारत की मूल भावनाएँ
सबसे अधिक निकट होठों के, ऐसी मेरी हिन्दी है
संस्कृति माता के ललाट पर, जैसे कुमकुम बिन्दी है।⁹

सन्दर्भ :

1. असीम राना, असीम चुटकियाँ, पृ0 सं0 78
2. असीम राना, छात्र सौरभ, पृ0 सं0 59
3. असीम राना, छात्र सौरभ, पृ0 सं0 57
4. असीम राना, छात्र सौरभ, पृ0 सं0 25
5. असीम राना, छात्र सौरभ, पृ0 सं0 15
6. असीम राना, निर्मल छंद तरंगिणी, पृ0 सं0 44
7. असीम राना, छात्र सौरभ, पृ0 सं0 34
8. असीम राना, अशेष, पृ0 सं0 142
9. गीत सौरभ, पृ0 19

मीनाक्षी

शोधार्थी, हिंदी

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय,
अस्थल बोहर, रोहतक

डॉ० पी. सी. टंडन

प्रोफेसर, हिंदी

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय,
अस्थल बोहर, रोहतक

शोध सारांश :

‘होनहार बीरवान के होत चिकने पात’ उक्ति को चरितार्थ करता लेखक का व्यक्तित्व समाज ही नहीं साहित्य में अपना एक श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करने में सफल दिखाई देता है। साहित्यकार समाज का चितेरा कहा जाता है स वह अपनी प्रज्ञा शक्ति के माध्यम से समाज में व्याप्त सम एवं विषम के प्रत्येक आयाम के भीतर एक सौंदर्य की खोज करता है। वह समाज के लिए एक दर्पण का कार्य करता है। समाज को जब भी प्रेरणा की आवश्यकता होती है तो वह अपने साहित्य से उनके सुप्त मन और आत्मा को जागृत करने का प्रयास करता है। आदित्य जी का साहित्यिक योगदान अप्रतिम है। ‘अक्ल की दुकान’, ‘कितने रूप : कितने रंग’, ‘खिली धूप’, ‘साहित्य और संस्कृति का अंतःसंबंध’, ‘नदी के किनारे’, ‘आस्था के शिलापंख’ उनके विविध संग्रह हैं जिनमें कविताएँ, कहानियाँ, निबंध आदि समाज के विविध आयामों को संजोए पाठक को जहाँ रोचकता प्रदान करते हैं वहीं दूसरी ओर प्रेरणा प्रदान करते हैं।

शब्द कुंजी : साहित्य, योगदान, जीवन मूल्य, उदारता, परोपकार, राष्ट्रहित, विषमता, कुप्रथाएँ, बाल-मनोविज्ञान, सकारात्मकता, प्रेरणात्मक, चितेरा, साहित्य-संसार, संस्कार, समाज

साहित्यकार का व्यक्तित्व उसके कृतित्व से जाना जाता है स उसके आदर्श, उसके संस्कार समाज में उसको एक विशिष्ट स्थान पर आसीन होने में सहायक रहते हैं। वह समाज से भिन्न दिशा में विचारशील रहता है और इसी कारण से शायद वह अपने समाज को एक दूरदर्शी की भांति समझ पाता है।

‘खिली धूप’ (101) कविताएँ

‘खिली धूप’ आदित्य जी का एक सौ एक कविताओं का संकलन है स कवि ने इन सभी कविताओं में बाहर से भीतर झाँकने का प्रयास किया है। पहला काव्य संग्रह होने पर भी इनका काव्यलेखन अत्यंत प्रौढ़ है। छंदमुक्त ये कविताएँ कवि के मधुर-तिक्त अनुभवों की अभिव्यक्ति है। शब्दों के माध्यम से कवि ने ऐसे आरेख निर्मित किए हैं जो बिंब प्रधानता के कारण सजीव हो उठे हैं सउदारता और परोपकार मानव चरित्र के महान जीवन मूल्य हैं। यह महान गुण व्यक्तित्व के लिए अलंकार समान हैं। जिसमें शक्ति है यदि वह विनम्र नहीं तो व्यर्थ है। स्वार्थपरता समाज में हावी हो चली है और मानव स्वजन के उद्देश्य को ही भुला चुका है। कवि ने औदार्यता के इसी महान गुण की पैरवी की है—

दामिनी ने / कहा भास्कर से

श्रीमन! आज आप / दिन में भी

मलिन क्यों? मुस्कराकर उन्होंने

दिया उत्तर यों / प्रिय मेरे

देता हूँ तुम्हें / चमकने का अवसर।

कितने रूप: कितने अंग(काव्य संग्रह)

प्रस्तुत काव्य-संग्रह ‘कितने रूप: कितने रंग’ मिली-जुली भावनाओं की अभिव्यक्ति है। आदित्य जी ने गीत, बालगीत, कविताएँ, दोहे, मुक्तक तथा हाइकू के रूप में शब्दबद्ध करते हुए अपने युग को पाठक के साथ प्रेषित करने का प्रयास किया स पहला गीत ‘अभिशापों में पलने दो’ कवि अपनी स्पष्टवादी वाणी में व्यक्त करते हुए जीवन के अभिशापों को भी सहर्ष स्वीकार करता दिखाता है स मुक्तक जीवन के आदर्शों पर चलने, आत्म-विश्लेषण करते हुए अग्रसर रहने की प्रेरणा देते हैं स कवि भ्रष्ट समाज को लताड़ते हुए कहते हैं कि इससे किसी भी समाज अथवा राष्ट्र का हित होना संभव नहीं स अतः सजग रहने की आवश्यकता है:—

भ्रष्टाचार से विकास रुका स्व-राष्ट्र का

छीना-झपटी से काम बना दुःख-मात्र का

विकास का पैसा चंदजेबों तक रह गया

विकास निर्माण से, विषय बहस-मात्र का:

मन के विकारी होने और स्वभाव से चंचल होकर विचलित होने जाने के गंभीर भाव को भी कवि ने अत्यंत सरलता से ‘हाइकू’ कविता में बयों कर दिया है—

“फिसल जाता / है रेशमी-डोरी सा / मन चिकना”

पार्श्वप्रभा(उपन्यास)

डॉ० आदित्य अपने नाम की ही भांति साहित्य में एक प्रचंड आभायुक्त व्यक्तित्व रखते हैं स संस्कारपरायण परिवार में जन्म लेने का सौभाग्य इन्हें जीवन में आगे बढ़ने के लिए सदैव प्रेरित करता रहा स अपनी परंपराओं का पालन इन्होंने जीवनपर्यंत किया स श्रीजैनेन्द्रकुमार एवं आचार्य कल्याण सागर की प्रेरणा से ‘पार्श्वप्रभा’ नामक प्रथम उपन्यास की रचना की गई :

आंजनेय(उपन्यास)

आदित्य जी का दूसरा उपन्यास ‘आंजनेय’ नाम से प्रकाशित हुआ स इस उपन्यास की कथा मूलतः जैनधर्म के ‘पद्मपुराण’ पर आधारित है: पौराणिक पात्र समय के पन्नों से निकलकर मानो जीवंत हो उठे हों स महावीर हनुमान, रावण, सुग्रीव जैसे पात्रों के जीवन संदर्भों के साथ-साथ अंजना का त्याग, समर्पण एवं तप सतीत्व की प्रशंसा करता है: पुरुषार्थ जीवन का सबसे बड़ा

मंत्र है जिससे व्यक्ति अपने अभीष्ट को प्राप्त कर सकता है:

महासमर(उपन्यास)

आचार्य विद्यानंद मुनि महाराज की प्रेरणा से इन्होंने तीसरा उपन्यास 'महासमर' लिखा स इस उपन्यास की कथा भरत एवं बाहुबली के युद्ध पर आधारित है सवास्तव में यह उपन्यास हमारे प्राचीन जीवन मूल्यों की आदर्श स्थापना तो करता ही है साथ ही मानवीय जीवन की परिणति, अपने महान जीवन मूल्यों के प्रति श्रद्धा, आस्था का महिमामंडन भी इस उपन्यास के मूल में है।

नदी के किनारे(कथा संग्रह)

प्रस्तुत कथा संग्रह सामाजिक पृष्ठभूमि पर आधारित है: एक आमजन का जीवन जिन भी बातों से प्रभावित होता है अधिकांशतः इस कहानी संग्रह के विषय हैं। आदित्य जी अपने इस कथा संग्रह के विषय में 'स्वकीय' में लिखते हैं—

"बचपन में सुनी कहानियों में कल्पनाओं का पुट अधिक था, पर जब मुझे यथार्थ का बोध हुआ, तब मैंने जाना कि बचपन में सुनी हुई सभी कहानियाँ मात्र कल्पना की उड़ान थीं स नदी के किनारे' संग्रह की कहानियाँ वर्तमान विसंगतियों के दौर में अपने आस-पास के परिवेश को उजागर करती हुई सामने आएँगी। समाज के वास्तविक धरातल पर उसका कुछ भी मूल्य नहीं। समाज की विषमता, कुप्रथाएँ, बुराईयाँ, घटनाक्रम आदि सभी विषयों को मैंने अपनी कहानियों में स्थान देने की कोशिश की है। अक्ल की दुकान (बाल कथा संग्रह)

डॉ० घमंडीलाल अग्रवाल इस पुस्तक के संदर्भ में लिखते हैं दृ"डॉ० आदित्य प्रचंडिया का यह प्रथम बाल कहानी-संग्रह है, जिसमें अनेक भावनाएँ छिपी हुई हैं। कहानियों में बालमनोविज्ञान का निर्वाह किया गया है। कहानियों की भाषा-शैली सरल, सरस एवं प्रवाहमयी है।" 'चतुरसेन' कहानी होशियारी और चतुराई ऐसे गुण हैं जिनसे दूसरों का दिल जीता जा सकता है। ये ऐसे अस्त्र हैं जो प्रत्येक विकट और विपरीत परिस्थिति में एक सुरक्षा कवच का काम करते हैं। सद्गुण जीवन में व्यक्ति को सभी परिस्थितियों में जीना सिखाते हैं।

आस्था के फूल(लघुकथा संग्रह)

आदित्य जी का 'आस्था के फूल' लघुकथा संग्रह समाजोन्मुखी विषयों पर आधारित है। इन कहानियों में जहाँ समय के उतार-चढ़ाव की जाँच पड़ताल मिलती है वहीं समाज के सफ़ेद दृस्याह रंग के भीतर झाँकने की एक ललक भी दिखाई देती है। हमने अक्सर सुना है, लगने को बड़ीदृसेदृबड़ी बात मन

को बुरी न लगे और लग जाए तो एक छोटी बात भी मन को विचलित कर जाती है। इन लघुकथाओं में संकुचित अभिव्यक्ति की सीमाओं पर उठने वाले सवालों को सूझदृबूझ से ध्वस्त करने का प्रयास किया गया है।

भावों के शिलालेख(निबंध संग्रह)

निबंध लेखन का प्रारम्भ तो आदित्य जी द्वारा 1978 में ही हो चुका था। प्रस्तुत निबंध संग्रह की पाण्डुलिपि 1992 में ही तैयार हो चुकी थी लेकिन इसका प्रकाशन कुछ वर्षों बाद संपन्न हुआ। इस निबंध संग्रह में 30 निबंध संकलित हैं सनिबंध 'कितने झूठे कितने सच्चे' की भाषा संवादात्मक है। परस्पर संवाद पाठक को बाँधे रहती है। भाषा की बानगी देखिए —"बंधुओं! आप किस सोच में पड़ गए हैं। सचमुच हमारा जीवन क्या प्रामाणिक है। जानते हैं कि झूठ हमारे जीवन में कितना घर कर गया है। एक बालक ने दरवाज़ा खटखटाया। माँ ने पूछा —'कौन है?' उत्तर में बालक बोला, 'कोई नहीं माँ! मैं हूँ।"

आस्था के शिलापंख(निबंध संग्रह)

इन निबंधों के शीर्षक हैं —'फूल और काँटे', वाणी का विवेक, श्रद्धा, अति से बचिए, मनुष्य, दीक्षा, धर्म, पाप से मुक्ति, दुश्मन। इन निबंधों में एक भावनात्मक संचार है। निबंधकार ने विषय का पल्लवन करते हुए उन बिंदुओं को छूने का प्रयास किया है। इनके निबंध 'फूल और काँटे' निबंध की भाषा देखिए —"समझनेवाला ही काँटों की तासीर समझ सकता है। आप यदि जिंदगी के फूल को प्रफुल्लित रखना चाहते हैं तो हर जगह सकारात्मक ऊर्जा का संप्रेषण करें। आपका दायरा ऐसा होगा कि न आप काँटों में उलझेंगे न औरों को उलझाएँगे। गुलाब के चारों ओर काँटे देख बच्चे ने अपने कोमल हाथों को पुनः समेट लिया। दुश्मन को कभी काँटा मत समझना। जो विरोध करता है वो आगे बढ़ता है, क्योंकि काँटे कदमों की रफ़्तार बढ़ा देते हैं। कष्टों के काँटे ही तुम्हें कीमती बना सकते हैं। शून्य से शिखर तक की यात्रा करा सकते हैं।"

विचार और बोध(निबंध संग्रह)

आदित्य जी ने 'विचार और बोध' नामक निबंध संग्रह में प्रेरणात्मक निबंधों को संकलित किया है। 'विचार और बोध' निबंध संग्रह के तीस से अधिक निबंध विविध कालों में रचित निबंध हैं। समय के उतार-चढ़ाव में जो भी प्रसंग आए उन्हें इन्होंने अपने निबंध का विषय बनाया। इनके निबंधों के विषय में यदि बात करें तो 'नई सदी और हम', 'धर्म', सुखी जीवन के तीन सूत्र', 'क्रोध का बारुद', 'गुरु का महत्त्व', पिता: सत्ता और महत्ता', 'शिक्षा, शिक्षक

और शिक्षार्थी, 'पुत्र का महत्त्व', 'बोलने की कला' आदि निबंध किसी व्यक्ति के लिए अमृत का कार्य करते हैं स इनके 'बालक' निबंध की भाषा की बानगी देखिए — "बालक की तुलसी बोली में अद्भुत माधुर्य होता है। संस्कारी बालक जिस घर में है, वह घर संपन्न घर कहलाता है। बचपन में पड़ी बुरी आदतें पचपन में भी सताती हैं। बालक की वासना और तृष्णा शांत होती है। बचपन में ज्ञान क्यों ठहरता है, क्योंकि वह निष्कपट होता है। सत्य की अभिव्यक्ति बचपन में स्वाभाविक होती है। बचपन जीवन—निर्माण की नींव है। क्रूरता का व्यवहार करने वाले माता—पिता बालक को क्रूर बना देते हैं।"

दीये यादों के(संस्मरण और रेखाचित्र)

प्रस्तुत ग्रंथ 'दीये यादों के' आदित्य जी के भावनात्मक, संवेदनात्मक, आदरभाव से ओत— प्रोत महापुरुषों के चरणों में समर्पित संस्मरण एवं रेखाचित्र हैं। इन संस्मरणों की विषयवस्तु उनके जीवन पथ पर मिले साथी, धर्मगुरु, संपादक, मित्र तथा परिवार से जुड़े सदस्य शामिल हैं।

लहरों पर सागर(जीवनी)

आदित्य जी के जीवन के आदर्श उदाहरण स्वयं उनके पिता डॉ० महेंद्रसागर स्वयं रह। आदित्य जी ने 'लहरों पर सागर' में उनके आदर्श और बहुआयामी व्यक्तित्व का सूक्ष्मातिसूक्ष्म विश्लेषण किया है। वह इस पुस्तक के आरंभ में लिखते हैं —"बाहर से जो कुछ दीखता है उसका कई गुना वह भीतर हैं। प्रज्ञापुरुष विद्यावारिधि डॉ० महेंद्रसागर प्रचंडिया के भीतर झाँकने की खिड़की हैं—उनका कृतित्व, लेकिन उसमें से गहन अन्तराल को झाँकना एक तीखी, एकाग्र और सुचिंतित दृष्टि का काम है। एक सिद्ध साहित्यिक पुरुष डॉ० प्रचंडिया के राग— विराग का जीवन, विद्रोह और आस्था का जीवन, प्राचार्य और आचार्य का जीवन—समूचा इस चितरे की तूलिका द्वारा आकर्षक चित गया था। भाव—भित्ति के ऊपर जैसे लंब कूर्च अपने वर्ण फेंकता चला गया था और नायक की जिंदगी की दीवार रंगारंग हो उठी थी।"

आदित्य जी का व्यक्तित्व एक आदर्श साहित्यकार की भांति ही दृष्टव्य होता है। वे अपने युग के प्रति सदैव सजग दिखाई देते हैं। 'हर दिन एक नई प्रेरणा और एक नई सीख' देता है इस बात को हम आदित्य जी के साहित्य संसार का अवलोकन करके समझ सकते हैं।

संदर्भ

1. डॉ० आदित्य प्रचंडिया, पार्श्वप्रभा

2. वही, उपन्यास, आंजनेय
3. वही, उपन्यास, महासागर
4. वही, कथा संग्रह, नदी के किनारे
5. वही, लघुकथा संग्रह, आस्था के फूल

ज्योति

शोधार्थी (हिन्दी विभाग)

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय

अस्थल बोहर, रोहतक (हरियाणा)

डॉ० माया मलिक

शोध निर्देशिका

प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय

अस्थल बोहर, रोहतक (हरियाणा)



सारांश –

महादेवी वर्मा ने अपने गद्य साहित्य में जिस काल को समेटा है उस काल में अछूतों को अत्यंत हेय दृष्टि से देखा जाता था। किन्तु महादेवी ने अपनी गद्य कृतियों में उनके प्रति वेदना, करुणा, प्रेम सहृदयता प्रभृति को रेखांकित करते हुए उसे नये सिरे से परखने और समझने का प्रयास किया गया है।

महादेवी वर्मा आधुनिक युग की प्रमुख कवयित्री के रूप में अधिक ख्यात है। परन्तु जब साहित्य अध्येता उनके गद्य साहित्य से थोड़ा भी परिचय प्राप्त करता है तो स्पष्ट हो जाता है कि कवयित्री का गद्यकार रूप भी कम महत्वशाली नहीं है। कतिपय आलोचक तो उन्हें अपेक्षाकृत सफल गद्यकार मानते हैं। उनकी अल्पसंख्यक गद्य रचनाओं में से अधिकांश "अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, में संगृहीत है। महादेवीजी ने इन अतीत चित्रों को लिपिबद्ध करके प्रकाश में लाने के दो कारण स्पष्ट किये हैं। "जब समय अपनी तूलिका फेर कर इन अतीत-चित्रों की चमक मिटा दे, तब इन संस्मरणों के धुंधले आलोक में मैं उन्हें फिर पहचान सकूँ।" (1) दूसरे "यदि इन अधूरी रेखाओं और धुंधले रंगों की समष्टि में किसी को अपनी छाया की एक रेखा भी मिल सके, तो यह सफल है अथवा अपनी स्मृति की सुरक्षित सीमा से इसे बाहर लाकर मैंने अन्याय ही किया है।" (2)

महादेवी के गद्य साहित्य में मानवीय संवेदनाओं का वह रूप मिलता है, जो 1930 ई० के बाद प्रेमचन्द, निराला, वृन्दावनलाल वर्मा, बेनीपुरी आदि की कृतियों में उभर रही थी। गाँव के गरीब किसानों के घर, झोपड़े, बरतन-बासन, गहने, कपड़े-लत्ते, मेहनत-मशक्कत और अभावों पर दृष्टि डालकर उन्होंने तत्कालीन यथार्थवादी सौन्दर्य-दृष्टि का परिचय दिया है। घीसा, बिबिया, मुन्नू का भाई, धनिया, जंगिया, कुली भाई आदि रेखाचित्रों में उसी दृष्टि के संकेत मिलते हैं। मानुसगंध के साथ-साथ मिट्टी की खुशबू भी इनके व्यक्तित्व में विद्यमान है। गंगापार के गाँव का वर्णन करती हुई महादेवी लिखती है – "दूर-पास बसे हुए गुड़ियों के बड़े-बड़े घरों के समान लगने वाले कुछ लिपे-पुते, कुछ जीर्ण-शीर्ण घरों से स्त्रियों का झुण्ड पीतल तांबे के चमचमाते मिट्टी के नये लाल और पुराने भदरंग घड़े लेकर गंगाजल भरने आता है, उसे भी मैं पहचान गयी हूँ। उनमें कोई बुटेदार लाल, कोई कुछ सफेद और कोई मैल और सूत में अद्वैत स्थापित करने वाली, कोई कुछ नई और कोई छेदों से चलनी बनी हुई धोती पहने रहती है।" (3)

महादेवी की संस्मरणात्मक कृतियों में केवल ग्राम –

सभ्यता का निरूपण ही नहीं हुआ है, वरन् उसके अन्तस्थल में बैठकर उसकी सूक्ष्मातिसूक्ष्म अनुभूतियों का विश्लेषण भी हुआ है। ग्रामीण जीवन के अत्यंत छोटे से छोटे प्रसंगों पर भी महादेवी की दृष्टि गयी है। उनके रेखाचित्रों में परिवार के अन्तः संघर्ष का एक चित्र दृष्टव्य है :- "जीना दो दिन का है, मरने की कोई सीमा नहीं। यदि दो दिन मिट्टी के बिल- जैसे घर में रहकर, किसी चक्की में चना, जो पीसकर और रेंड के धुएँ से धुँवाई रोटी ससुर और उसके निठल्ले लड़के को खिलाकर वह मरने के उपरांत स्वर्ग की रानी होने का अधिकार प्राप्त कर लेती है, तो वही लाभ में रही।" (4)

महादेवी अपनी रचनाओं के माध्यम से जिन उत्पीड़ित जनों के बीच पहुँचती है वे सब देहाती क्षेत्र के हैं, जहाँ भू-स्वामी वर्ग और गरीब तथा भूमिहीन किसान के बीच तीव्र वर्ग-विरोध आज भी मौजूद है। घीसा, लक्ष्मा, सबिया, अलोपी, रधिया बदलू, जंगबहादूर, धनसिंह, जैसे टाईप चरित्र आज भी अपनी परिस्थितियों के बोझ तले दबे हैं और अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत हैं। घीसा की विधवा माँ अपने ही समाज की निष्ठुर अफवाहों के बीच दूसरों के घर लीप-पोतकर अपना और अपने बेटे का पेट पालती है। वह अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहती है।

चीनी फेरीवाला के प्रसंग में महादेवी ने मानवीय चेतना का अत्यंत कारुणिक चित्र प्रस्तुत किया है। चीनी फेरीवाला बचपन में रात के समय अपनी बहन की गोद में सिर रखकर अपनी भूख भुलाता था। बहन को घर चलाने के लिए शरीर का धन्धा करने के लिए मजबूर होना पड़ता है और इसी धन्धे की वजह से उसकी बहन सदा के लिए उससे कैसे बिछुड़ जाती है। तब वह बहन की खोज में मारा-मारा फिरा है और जब चीनी जनमुक्ति सेना के आह्वाहन पर उसे अपनी मातृभूमि की मुक्ति के लिए आने का बुलावा मिलता है तो वह अपने देश वापस चला जाता है। लेखिका ने जब पूछा – "तुम्हारे तो कोई है ही नहीं, फिर बुलावा किसने भेजा? चीनी की आँखें विस्मय से भर कर पूरी खुल गई – हम कब बोला, हमारा चाईना नहीं है? हम कब ऐसा बोला सिस्टर? मुझे स्वयं अपने प्रश्न पर लज्जा आई, इसका इतना बड़ा चीन रहते वह अकेला कैसे होगा।"

उपर्युक्त प्रसंगों जैसे अनेक मार्मिक स्थल महादेवी के ललित गद्य में विद्यमान हैं। महादेवी ने भारत में नारी पुरुष के संबंध, समाज में उनकी स्थिति इत्यादि बातों का भी विस्तृत विवेचन किया है। स्वयं स्त्री होने के बावजूद वे स्त्री का अन्य पक्ष नहीं लेती किन्तु वे स्त्री पर होने वाले अत्याचारों का विरोध जरूर करती है। यथा – "एक पुरुष के प्रति अन्याय की कल्पना से ही सारा पुरुष-समाज

उस स्त्री से प्रतिशोध लेने को उतारु हो जाता है और एक स्त्री के साथ क्रूरतम अन्याय का प्रमाण पाकर भी सब स्त्रियाँ उसके अकारण दण्ड को अधिक भारी बनाये बिना नहीं रहती।” (5)

समाज की जटिल अव्यवस्था के ऊपर महादेवी ने गहरी चोट की है। लेखिका ने एक पक्ष में नारी को दृष्टि में रखकर समाज की व्याख्या की है वहीं दूसरी ओर उन्होंने समाज को निरपेक्ष दृष्टि से भी देखने का प्रयास किया है। वे व्यक्ति और समाज के संबंध को अटूट मानती है, क्योंकि एक के अभाव में दूसरे की उपस्थिति सम्भव नहीं।

महादेवी की गद्य कृतियों में जो पात्र और परिस्थितियाँ अंकित हैं, उनको लेखिका ने सीधे-सीधे धूल-मिट्टी से उठाकर ज्यों का त्यों प्रस्तुत किया है। समाज में अधिकांश मनुष्य जो पशुओं की तरह जीने के लिए अभिशप्त हैं, उनसे उन्हें अपार स्नेह है। किन्तु वहीं जिन लोगों के कारण उनकी ऐसी नियति बन गयी है। उनके प्रति तीव्र आक्रोश भी है। अत्यंत दरिद्र, उपेक्षित, कठोर परिश्रम से किसी तरह जीविका चलाने वाले से लेकर विधवा या परित्यक्ता स्त्रियाँ और मनुष्य की क्रूरता के शिकार पशु-पक्षी तथा इनकी रचनाओं के विषय है, जिनके माध्यम से उनकी करुणा और विद्रोह को अभिव्यक्ति मिली है।

हमारी सामाजिक व्यवस्था इतनी विकृत और जटिल हो गयी है कि इनमें एक के अपराध के लिए दूसरे को दण्ड देना न्याय संगत समझा जाने लगा है। बड़े लोग तरह-तरह के उपायों से दूसरों के धन को हड़प जाते हैं, परंतु उन्हें कोई भी चोर नहीं कहता लेकिन यदि कोई गरीब किसी की चीज चुरा लेता है तो सारा समाज एक स्वर से उसे चोर घोषित कर उसे दण्ड देने के लिए व्याकुल हो उठता है। आर्थिक सम्पन्नता का दूसरा नाम चोरी है। बिना दूसरों का धन चुराये कोई भी अमीर नहीं बन सकता। इसी कारण जब लेखिका से एक परिचित वकील पत्नी ने कहा था कि “आप चोरों की औरतों को क्यों नौकर रख लेती हैं?” तो उन्होंने जो उत्तर दिया था वह इस प्रकार है— यदि दूसरे के धन को किसी न किसी प्रकार अपना बना लेने का नाम चोरी है, तो मैं जानना चाहती हूँ कि हम में से कौन सम्पन्न महिला चोर पत्नी नहीं कही जा सकती है?” महादेवी ने इस कथन के माध्यम से वर्तमान व्यवस्था पर गहरी चोट की है।

महादेवी जी की कोमल करुण स्मृतियों का वितान एक और समाज का श्रमजीवी वर्ग, नेत्रहीन, अलोपदीन, कुंजडे, बदलू कुम्हार और कर्मठ पहाड़िन — लक्ष्मा पर तना है और दूसरी ओर उनके हृदयगत आर्त्तनाद बाल-विधवा मारवाड़िन, मातृहीन

बिन्दा, परित्यक्ता भक्ति, सबिया, बाल-विधवा माँ और वेश्या-पुत्री की सिसकियों में मुखर हो उठी है।

निष्कर्ष — समाज की मूलभूत समस्याओं का चित्रण करने के कारण महादेवी का गद्य साहित्य यथार्थवादी समाज के विकास में योग देता है। शोषक और शोषित, परम्परा, रूढ़ि और उसके शिकार व्यक्ति इनके स्मृति गद्य के मुख्य मुद्दे हैं, जिन पर महादेवी ने कलम चलायी है। इस दृष्टि से प्रेमचन्द, निराला, प्रसाद, उग्र आदि साहित्यकारों की परम्परा में महादेवी का विशिष्ट योगदान है।

संदर्भ ग्रंथ सूची —

1. महादेवी वर्मा, अतीत के चलचित्र, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2013 (अपनी बात)
2. महादेवी वर्मा, अतीत के चलचित्र, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2013 (अपनी बात)
3. महादेवी वर्मा, अतीत के चलचित्र, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2013 पृष्ठ—56
4. महादेवी वर्मा, स्मृति की रेखाएँ, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2013 पृष्ठ — 48
5. महादेवी वर्मा, स्मृति की रेखाएँ, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2008, पृष्ठ — 28

डॉ० विनीता श्रीवास्तव
धनबाद, झारखण्ड
मो०— 7870912153



सारांश

प्राचीन भारतीय वाङ्मय में अष्टादश पुराणों का अपना एक विशिष्ट स्थान है। पुराणों में ज्ञान-विज्ञान, लोक-व्यवहार समाज एवं संस्कृति के सभी पक्षों का सांगोपांग विवेचन मिलता है, इसी कारण समस्त ज्ञान का भण्डार होने के कारण ही पुराणों को भारत की सभ्यता, संस्कृति और वैभव आदि का दर्पण कहा गया है।

वास्तव में यदि देखा जाए तो कोई ऐसा समाज नहीं है। जिसमें अपराध या अपराधियों की समस्या न हो। इन्हीं समस्याओं या अपराधों से निजात पाने के लिए तत्कालीन समाज में कुछ विशेष नियम व्यवस्था भी होती है।

इतिहास और पुराण वेदों का उपबृंहण करने वाले ग्रन्थ हैं जिनके कारण वेदों को भली प्रकार से समझा जा सकता है।

ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार,

“वेदाः प्रतिष्ठिता सर्वे पुराणे नात्र संशयः।”

पुराणों में भारतीय संस्कृति की अमूल्य निधि तो है ही साथ में भारत की सत्य और शाश्वत आत्मा निहित है। इसलिए पुराणों को पञ्चम वेद स्वीकार किया जाता है। देवीभागवत् पुराण के एक श्लोक में आद्य अक्षर के निर्देश से अष्टादश पुराणों का नामोल्लेख किया गया है –

मद्वयं भद्रयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्

अनापद्-लिंग-कू-स्कानि पुराणानि पृथक्-पृथक्।

अर्थात् मत्स्य, मार्कण्डेय, भविष्य, भागवत्, ब्रह्म, ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त, वराह, वायु, वामन, विष्णु, अग्नि, नारद, पद्म, लिंग, कूर्म और स्कन्द ये अष्टादश पुराण हैं। पुराणों में ज्ञान विज्ञान, लोक व्यवहार समाज एवं संस्कृति के सभी पक्षों का सांगोपाङ्ग विवेचन मिलता है इसी कारण समस्त ज्ञान का भण्डार होने के कारण ही पुराणों को भारत की सभ्यता, संस्कृति और वैभव आदि का दर्पण कहा गया है।

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की उस अपरिहार्य शक्ति का नाम धर्म है, जिसने सम्पूर्ण भूत भौतिक विश्व को धारण किया हुआ है। इसी चेतना ने मनुष्य को हित व कल्याण की ओर अग्रसर किया है। अवस्थानार्थक धृञ् धातु से ‘मन्’ प्रत्यय करने पर धर्म शब्द की निष्पत्ति होती है। यदि ‘ध्रियते मानवैः य स धर्मः’ यह विग्रह करे तो यह अर्थ होगा कि जिस विश्वास विशेष को लेकर मनुष्य अपने क्रियाकलापों में प्रवृत्त होता है, यह विश्वास विशेष ही धर्म है। धर्मविदों का मानना है कि संसार में सभी जड़ व चेतन पदार्थों का अस्तित्व जिस शक्ति या तत्त्व विशेष पर अवलम्बित है, उसी शक्ति

या तत्त्व का नाम धर्म है। संसार में प्रत्येक पदार्थ में अपनी कुछ आन्तरिक प्रवृत्ति वाली शक्ति निहित होती है, जैसे अग्नि में उष्णता, जल में शीतलता, मनुष्य में मनुष्यता, इसी आन्तरिक वृत्ति का नाम धर्म है। इसी धर्म की वृद्धि से तत्तत् पदार्थों की मनुष्यों में वृद्धि होती है और इसके ह्रास से ही उनका ह्रास होता है। मनुस्मृति में भी कहा गया है –

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।

धर्म के उपदेश के लिए चारों वेद, स्मृतियाँ और पुराण आदि प्रवृत्त हैं। मनुस्मृति तथा गौतम स्मृति में कहा गया है – “वेदोऽखिलो धर्ममूलम्” छान्दोग्योपनिषद् में कहा गया है –

त्रयो धर्मस्कन्धाः यज्ञोऽध्ययन दानमिति।

रामायण के किष्किन्धाकाण्ड में कहा गया है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्म में स्थित रहना चाहिए क्योंकि इसके अभाव में व्यक्ति, समाज, नैतिकता अथवा राज्य के प्रति अपने कर्तव्य को पूरा नहीं कर सकता है।

याज्ञवल्क्य स्मृति में धर्म के दस लक्षणों का निर्देश किया गया है –

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।

धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।

ये धर्म के लक्षण सार्वदेशिक तथा सार्वकालिक हैं। इस प्रकार धर्म को केवल कर्म, जाति व व्यक्ति की संकुचित सीमा में न रखकर उसे सार्वभौम बना दिया गया ताकि मनुष्य किसी भी देश में रहे, किसी भी जाति में रहे या किसी भी वर्ण में रहे, उसे अपने अभ्युदय के लिए धर्म के नियमों का पालन करना चाहिए क्योंकि धर्म से ही मानसिक शांति एवं सुख की प्राप्ति होती है तथा समाज भी व्यवस्थित रूप से उन्नति करता है इसलिए सभी धर्मशास्त्रकारों ने धर्म को प्रधान बताकर धर्म के अनुसार आचरण करने के लिए कहा है। इसलिए प्रतिदिन उत्तम आचरण करना चाहिए तथा निन्दित आचरण का त्याग कर देना चाहिए। धर्म के अन्तर्गत ही नियम, नैतिकता तथा कर्तव्य आदि सभी आ जाते हैं।

अपराध का स्वरूप

धर्म के विपरीत आचरण को ही अधर्म कहते हैं। अधर्म का सम्बन्ध ‘पाप’ अथवा ‘अपराध’ से ही है। सदाचरण से धर्म में वृद्धि होती है तथा परिवार व समाज फलने-फूलने लगता है तथा बुरे आचरण किए जाने पर समाज में अशान्ति व अराजकता फैल जाती है। आचार- शास्त्रीय ग्रन्थों में अपराध के लिए ‘व्यवहार’ शब्द का प्रयोग मिलता है। कात्यायन ने ‘व्यवहार’ शब्द की दो परिभाषाएं दी

है, जिनमें एक व्युत्पत्ति के आधार पर है और विधि की ओर प्रमुख रूप से संकेत करती है तथा दूसरी परम्परा के आधार पर झगड़े या मुकदमे या विवाद से सम्बन्धित हैं। उपसर्ग वि का प्रयोग 'बहुत' के अर्थ में, अव का 'सन्देह' के अर्थ में तथा हार का हटाने के अर्थ में प्रयोग हुआ है अर्थात् यह बहुत से सन्देहों को हटाता है।

वास्तव में यदि देखा जाए तो कोई ऐसा समाज नहीं है जिसमें अपराध या अपराधियों की समस्या न हो। पौराणिक समाज में अग्निपुराण के अनुसार किसी की निक्षेप (धरोहर) का जानबूझकर उपभोग करना अपराध माना गया है। अग्निपुराण व मत्स्यपुराण में चोरी को दण्डनीय अपराध मानते हुए कठोर दण्ड देने के निर्देश दिए गए हैं। अग्निपुराण में जो भृत्य वेतन लेकर काम नहीं करता तथा मत्स्यपुराण में जो स्वामी अपने सेवक को समय पर वेतन नहीं देता है या उसे कुसमय पर निश्कासित कर देता है तो यह एक दण्डनीय अपराध है। अग्निपुराण एवं मत्स्यपुराण के अनुसार शादी विवाह में वरपक्ष या कन्या पक्ष के व्यक्ति एक दूसरे के प्रति विश्वासघात करते हैं तो वे दण्ड पाने के अधिकारी हैं। मत्स्यपुराण में कन्या के साथ बलात् सम्भोग करने पर कृत्य को करने वाला तथा उस कन्या का रक्षक समान दोषी मानकर दण्ड देने का विधान है। मत्स्यपुराण के अनुसार कुएँ के सम्बन्ध में किसी प्रकार की अव्यवस्था उत्पन्न करना या चोरी इत्यादि अपराध है। अग्निपुराण एवं मत्स्यपुराण के अनुसार राजद्रोह करना एक दण्डनीय अपराध है।

न्याय एवं दण्ड व्यवस्था

प्राचीन भारत की राज्य व्यवस्था में धर्म का सर्वोच्च स्थान रहा है। समाज के सभी वर्ग और सारी कार्य प्रणाली के मूल में धर्म के नीति निर्देश समाचित थे। सत्य ही धर्म है तथा किसी विरोध में, किसी विवाद में सत्य की खोज करना ही धर्म का अनुसरण है। यही न्याय व्यवस्था का प्रारम्भ होता है।

'नियमेन ईयते इति' अर्थात् जिसे नियम से चलाया जाए, वह न्याय है।

'नीयन्ते प्राप्यन्ते विविक्षातार्था येनेति' अर्थात् जिसके द्वारा की जा रही बात जिस तरह से समझाई जाती है, वह न्याय है।

न्याय शब्द का अर्थ है सत्य असत्य की युक्ति अर्थात् सत्य की खोज ही न्याय है और प्रजा एवं युक्ति युक्तता उसके साधन हैं। लिखित, भुक्ति (कब्जा) एवं साक्षी ये तीन प्रकार के प्रमाण न्याय के लिए आवश्यक माने गए हैं। इनके अभाव में दिव्य

प्रमाण आदि द्वारा एवं उसके भी अभाव में राजा अपने ढंग से निर्णय करता था।

'दण्ड' शब्द का प्रयोग प्राचीन ग्रन्थों में विविध अर्थों में हुआ है। ऋग्वेद के एक मन्त्र में शत्रुओं के दमन के अर्थ में 'दण्ड' शब्द का प्रयोग हुआ है, इस मन्त्र का भाष्य लिखते हुए सायणाचार्य कहते हैं –

दमः दमनम् बाधनमिच्छत्।

निरुक्तकार यास्क ने दण्ड शब्द की व्युत्पत्ति धारणार्थक 'दद्' धातु से मानी है। दण्ड के द्वारा ही सारी प्रतिभाओं को धारण किया जाता है। यास्क के अनुसार 'दम' धातु से भी दण्ड शब्द की व्युत्पत्ति सिद्ध होती है जिसके द्वारा अपराधियों का दमन किया जाता है। औपमन्यव का मत है –

'दण्डो ददतेधरियति कर्मणः। दमनादित्यौपमन्यवः।'

गौतमधर्मसूत्र में दमन करने के कारण ही दण्डविधि को दण्ड कहा गया है जिसके द्वारा निरंकुश लोगों को वश में किया जाता है।

पौराणिक साहित्य में प्रजापालन एवं राष्ट्र की रक्षा करना राजा का कर्तव्य कहा गया है। राष्ट्र की रक्षा माता-पिता के समान करना उसका धर्म है तथा सभी प्रकार की बाधाओं से राज्य की रक्षा करना उसका महत्वपूर्ण कार्य है। मत्स्यपुराण के अनुसार राज्य को दो भागों में बाँटा गया है – पुर एवं जनपद। राजा की राजधानी को पुर कहा जाता है तथा अन्य साम्राज्य को जनपद या राष्ट्र। पुर की शासन व्यवस्था स्वयं राजा करता था तथा साम्राज्य की बागडोर राजा द्वारा नियुक्त अधिकारियों के हाथ में होती थी। अग्नि पुराण के अनुसार राजा को एक गाँव, दस गाँव, सौ गाँवों एवं सम्पूर्ण राज्य का एक मुखिया नियुक्त करना चाहिए। मत्स्यपुराण में कहा गया है कि जिसको जिस कार्य में विशेष कुशलता हो, उसे राजा जाँच कर उसी कार्य में नियुक्त करें। न्यायकार्य का सम्पादन सभा के द्वारा किया जाता था। अग्निपुराण में कहा गया है कि राजा को सभा में जाकर ब्राह्मण, अमात्यमन्त्री तथा प्रजाजनों से मिलना चाहिए। श्रेष्ठ ब्राह्मणों को धर्माधिकारी बनाया जाता था। मत्स्यपुराण में कहा गया है कि धर्माधिकारी के गुणों से सम्पन्न व्यक्ति को सभासद बनाना चाहिए। अग्निपुराण के अनुसार सभापद पद पर नियुक्त व्यक्ति धर्मज्ञ, लेखक, अक्षरवेत्ता एवं मित्र होना चाहिए।

पौराणिक समाज में कठोर दण्ड व्यवस्था थी। राजा के लिए अपने धर्म में स्थिर न रहने वाला हर व्यक्ति दण्डनीय था चाहे वह धार्मिक व्यक्ति, ब्रह्मचारी, गुरु आदि ही क्यों न हो। ऐसा

भी नहीं था कि दण्डनीय व्यक्ति को दण्ड न मिले और अदण्डनीय को दण्ड मिल जाए। पुराणों में दण्ड व्यवस्था का संचालन वर्ण भेद पर आधारित था। मत्स्यपुराण में ब्राह्मण के लिए प्राणदण्ड का विधान नहीं है, उसे केवल देश से निष्कासित किया जाता था।

पुराणों में विशेष रूप से शरीरांग विच्छेद दण्ड एवं प्राणदण्ड का ही वर्णन मिलता है। मत्स्यपुराण के अनुसार महापातकी के लिए प्राण दण्ड का ही विधान है। अग्निपुराण के अनुसार चोर जिस अंग से मनुष्यों का अपकार करता है, उसके उसी अंग को काट देना चाहिए। इसी प्रकार आर्थिक अपराधों में आर्थिक दण्ड का विधान मिलता है।

निष्कर्ष

पौराणिक समाज में कठोर दण्ड व्यवस्था थी। अपने धर्म के विपरीत आचरण करने वाला हर व्यक्ति अपराधी माना जाता था और उसे दण्ड दिया जाता था। पुराणों में दण्ड व्यवस्था का संचालन वर्ण भेद पर आधारित था। शरीरांग विच्छेद एवं प्राणदण्ड तक भी उल्लेख मिलता है।

सन्दर्भ सूची

1. ब्रह्मवैवर्त पुराण, पृ० 7
2. देवीभागवत पुराण, 1/3/21
3. उणादिपदानुक्रमकोश, पृ० 310
4. मनुस्मृति, 8/15
5. वही, 2/6
6. गौतम स्मृति, 1/1
7. छान्दोग्योपनिषद्, 2/23/1
8. रामायण, किशिकन्धा काण्ड, 17/34
9. याज्ञवल्क्य स्मृति, 1/122
10. पी०वी० काणे, धर्मशास्त्र का इतिहास, भाग-2, पृ० 705
11. अग्निपुराण, 90/8-11
12. वही, 227/5-6
13. मत्स्यपुराण, 226/99
14. अग्निपुराण, 90/12, मत्स्यपुराण, 226/9
15. मत्स्यपुराण, 226/10
16. अग्निपुराण, 227/15-16
17. मत्स्यपुराण, 226/15, 226/18
18. वही, 226/124-125
19. वही, 226/99
20. अग्निपुराण, 227/49
21. मत्स्यपुराण, 226/159-161
22. शब्द कल्पद्रुम, द्वितीय काण्ड
23. वही
24. ऋग्वेद, 6/47/16
25. निरुक्त, पृ० 68
26. गौतम धर्मसूत्र, 2/2/28
27. मत्स्यपुराण, 220/40-41
28. वही, 217/1-26
29. अग्निपुराण, 223/1
30. मत्स्यपुराण, 215/83

31. अग्निपुराण, 235/8
32. मत्स्यपुराण, 215/14
33. वही, 215/25
34. अग्निपुराण, 85/5
35. मत्स्यपुराण, 225/5
36. वही, 227/213
37. वही, 227/161-162
38. अग्निपुराण, 227/33-36
39. मत्स्यपुराण, 227/12-13

डॉ० पिकी शर्मा
(संस्कृत विभाग)

आर०डी०एम० पब्लिक कन्या महाविद्यालय
कालाका रोड़, रेवाड़ी (हरियाणा)
पिन - 123401
मोबाईल नं०: 8295096622



सारांश

एक सजग आलोचक वही है, जो अपने समय में होने वाले नकारात्मक सांस्कृतिक परिवर्तन को आईना दिखाए। जो भी असत् है उसे सत्य की कसौटी पर परखने अथवा लोगों के समक्ष तर्क का दर्पण रखते हुए उन्हें अपनी सोच को पुनः विचार करने के लिए प्रेरित करें। परसाईजी ने संस्कृत में होने वाले सांस्कृतिक अवमूल्यों और ह्रास पर भी अपने विचार प्रकट किए हैं वह एक ऐसे जागरूक साहित्यकार थे जिन्होंने अपने युग के परिवर्तनों को, उनके संकटों को सूक्ष्म दृष्टि से देखते हुए प्रखर व्यंग्य के रूप में अभिव्यक्त किया।

हिंदी साहित्य में विविध विधाओं को स्थान दिया गया है। कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, आरंभ में केवल मनोरंजन के साधन मात्र थे किंतु कालांतर में जब इनके पाठकों की संख्या में वृद्धि होने लगी तब इन्हें समाज निर्माण और प्रेरणा के रूप में भी प्रयोग किया जाने लगा। समाज में परिवर्तन लाने, वैचारिक क्रांति हेतु हिंदी साहित्य एक नए रूप में सामने आया। राजदरबारी संस्कृति में जहाँ केवल काव्य रचना और नाटक ही मन बहलाव के साधन थे वहीं बाद के वर्षों में ज्ञान प्रदान करने हेतु रोचक कहानियों का जन्म हुआ। 'पंचतंत्र' का सृजन इसी उद्देश्य से किया गया। आदिकाल में रासो ग्रंथ और चरित काव्यों ने अपना स्थान प्रतिष्ठित किया जो भक्तिकाल आते-आते संतों ने इस दिशा में दोहा छंद और पद को अपनाते हुए काव्य सृजन किया। इस युग में केवल निर्गुण परम्परा के अनुयायी ही शामिल नहीं थे अपितु सगुण परंपरा में भी महान भक्त कवियों ने अपने आराध्य के लिए लिखा और गया। संत काव्य इस संदर्भ में एक नया कलेवर लेकर प्रस्तुत हुआ जिसमें समाज की विसंगतियों, कुरूपताओं, दुर्व्यवहार के विरुद्ध नकार का स्वर मुखरित हुआ। संत बिना किसी लाग-लपेट के अपनी असहमति प्रकट करने के लिए प्रसिद्ध थे जिनमें कबीर शिरोमणि थे। कबीर काव्य में जिस व्यंग्य के दर्शन होते हैं वह अन्यत्र देखने को नहीं मिलता। अपने समय में कबीर ने जो भी विकृत और कुरूप व्यवहार और आचरण देखा उसके खिलाफ अपनी वाणी को बोलने दिया। कबीर ने जाति-पाँति, धर्म-आचरण, आडंबर, कुरीतियों के विरुद्ध अपनी वाणी रूपी तलवार को चलाते हुए एक ऐसी लोक क्रांति को जन्म दिया जिसके फलस्वरूप उन्हें क्रांतिकारी और बावला कहा जाने लगा। हिंदी साहित्य में उनका स्थान सर्वोपरि है। भारतेंदु युग में भारतेंदु ने अपनी व्यंग्यात्मक शैली में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ मोर्चा खोला और अपनी पहेलियों, मुकरियों, नाटकों के माध्यम से जनता में प्रेरणा का संचार करने का प्रयास किया स यही कारण था कि चेतना का

जो अलाव कबीर ने जलाया उसको बनाए रखने में पुनर्जागरण काल का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। भारतेंदु के बाद व्यंग्य के धरातल को संभालने का कार्य मुख्य रूप से, बेबाकी और शर्करा मिश्रित तीखी वाणी से हरिशंकर परसाईजी ने किया स आधुनिक कबीर के रूप में नागार्जुन भी हिंदी साहित्य के पटल पर दिखाई देते हैं किंतु जैसा रचना कर्म हरिशंकर परसाई जी ने किया वैसा हिंदी साहित्य में अन्यत्र मिलना संभव नहीं। जीवन के ताप ने उन्हें ऐसी सूक्ष्म दृष्टि दी जिसके फलस्वरूप समाज में वासंती बयार को चलाने का प्रयास वे आजीवन करते रहे। अपने व्यंग्यात्मक निबंधों, कहानियों, लेखों आदि से उन्होंने समाज में चेतना रूपी आँधी को चलाए रखा ताकि ज्ञान की हवा चलने से विकारों और माया के परदे उड़ जाएँ और नेत्र सत्य को पहचान पाएँ।

कबीर और परसाई जी

कबीर के जीवन से प्रभावित परसाई जी अपने व्यंग्यों में मध्यकालीन कबीर को एक बार पुनः जीवित करते हुए उन्हीं की वाणी के माध्यम से समाज में जो भी कुछ अतरंगा दिखा उसके विषय में लिखना आरंभ किया। वह अपने निबंध 'कहत कबीर' के आरंभ होने की घटना का वर्णन करते हुए लिखते हैं — 'सन् 1961 में नई दुनिया जबलपुर के संपादक और मेरे मित्र मायाराम सुरजन ने हम दोनों के मित्र श्री बाल पांडे के साथ तय किया कि मैं उनके पत्र में प्रति सप्ताह व्यंग्य स्तंभ लिखूँ। नाम का सवाल उठा तो मेरे सिर पर चढ़कर 'कबीरदास' बोला। कबीर के सीधे बेलौस, बेबाक, फक्कड़पन से भरे व्यंग्यों का मैं भक्त रहा हूँ। इतना ताकतवर कोई और हुआ नहीं क्योंकि और किसी ने सीस काटी कै भूईं धरा और न अपना घर फूँका।' इस प्रकार से स्तंभ का रूप निश्चित हुआ कि कबीर हर सप्ताह जनता से बात करें। सप्ताह की कोई घटना का छोर पकड़कर उसमें निहित प्रवृत्ति को व्यापक आयाम देकर उस पर व्यंग्य आरंभ किया जाए।

बहुआयामी भारतीय संस्कृति में आरंभ से ही बहुत-सी धार्मिक मान्यताएँ प्रचलित हैं। इस संदर्भ में कबीर को 'क्रांतिकारी' कहा गया क्योंकि उन्होंने समाज में जो भी कुछ गलत देखा उसके लिए कमर कस ली। अपनी कठोर वाणी से उन्होंने धर्म में जो भी अनमेल था, उसकी निंदा की। धर्म के नाम पर होने वाला कर्म, पवित्रता और धर्म का मक्कारी भरा जामा ओढ़े लोग धार्मिक और धर्म के ठेकेदार कहे जाने वाले महंत, मुल्ले जो कि शोषण के मुख्य कार्यवाहक रहे, उन सब को उन्होंने अपनी वाणी से लताड़ लगाई। धर्म के अंधविश्वास में डूबी जनता को उन्होंने खूब चेताया स अज्ञानी

और अशिक्षित लोगों को उन्होंने तीखे व्यंग्यों से जगाने का प्रयास किया। उसी प्रकार परसाई जी ने भी कबीर की ही भांति एक सशक्त आलोचक की भूमिका निभाई। धर्म के नाम पर मनुष्य के भीतर जो भीरुता का गुण आया उससे वह आत्मविश्वासविहीन होता चला गया। धर्म और अंधश्रद्धा के फलस्वरूप ब्राह्मणों द्वारा चलाया जाने वाले तथाकथित रीति-रिवाज, कर्मकांड और इतने पर भी जब उनका मन नहीं भरा तो स्वर्ग-नर्क और पाप-पुण्य का चक्कर जनता को ठगने के लिए सबसे बड़ा मायाजाल था। जगह-जगह धर्म के नाम पर होने वाले जादू-टोने, तंत्र-मंत्र आदि की गतिविधियाँ कबीर जैसे सच्चे साधक को परेशान करती रहीं और उन्होंने अपनी वाणी रूपी तलवार को अपनी म्यान से बाहर निकाल लिया। गंगा नदी में स्नान करना अपने पापों को धोना प्राचीन मान्यता है जो कि आज के समय में भी प्रासंगिक है, किंतु इस संदर्भ में परसाई जी ने अपने विचार प्रकट करते हुए 'स्नान' नामक निबंध में इस बात पर व्यंग्य करते हुए लिखते हैं कि जब वे प्रयाग गए तो वहाँ से गंगा स्नान किए बगैर लौट आए जिसका परिणाम उनको सामाजिक निंदा के रूप में झेलना पड़ा स ऐसे में वे पूछते हैं कि उनका क्या जो बिना टिकट गंगा स्नान कर आते हैं तो क्या उनको पुण्य अर्जित होता है।

आध्यात्म दर्शन में जीवात्मा माया में फँसने के कारण मोक्ष प्राप्त नहीं कर पाती इसके लिए उसको विकारों से भरे घर को जलाने की आवश्यकता होती है जो ज्ञान रूपी अग्नि द्वारा ही संभव है। परसाई जी इस संदर्भ में कहते हैं किंतु उनका क्या जो स्वयं को त्यागशील बताते हुए संन्यासी की पदवी पर आसीन करते हुए इसी माया के फेरे में फँसकर केवल दूसरों को उपदेश ही देते हैं। कथनी और करनी में अंतर रखने वाले असी पुण्यात्माओं को परसाईजी ने अपने निबंध 'बेईमानी की परत' में आईना दिखाया है स संन्यासी महात्मा उपदेश देते हुए भक्तों को समझाते हैं कि यह शरीर मिथ्या है, नाशवान है, क्षणभंगुर है। जिह्वा के स्वाद में फँसा मनुष्य भांति-भांति के व्यंजन खाता है, सुगंधित द्रव्यों से स्वयं के शरीर को सुगंध में सराबोर करता है किंतु इस बात की उपेक्षा करता है कि अंत में तो यह देह कीड़े-मकोड़े ही खाएँगे स महात्मा जी उपदेश दे रहे होते हैं और सामने से शिष्य रबड़ी का गिलास उनके समक्ष रखता है जिसको वह एक ही साँस में गटक लेते हैं। लेखक अचंभित हो जाता है। शिष्य ने उनके मन के भाव पढ़कर उन्हें समझाते हुए कहा कि गुरु जी अपना शरीर कीड़े-मकोड़ों के लिए पुष्ट कर रहे हैं ताकि उन्हें आनंद आए।'

वैदिक संस्कृति से अभिभूत मनुष्य धार्मिक अनुष्ठान से कभी भी पीछे नहीं रहा। हर अच्छे और बुरे अवसर पर भारतीय संस्कृति में यज्ञ और हवन की परंपरा रही है और इसे लोककल्याणकारी भी माना जाता है। 'बेईमानी की परत' निबंध में केवल धार्मिक कर्मकांडों पर ही नहीं अपितु सामाजिक व्यवस्था पर भी व्यंग्य किया गया है क्योंकि कहीं ना कहीं सामाजिक व्यवस्था जो कि संस्कृति का ही परिचायक है, उन्हें पोषित करती है और निठल्ले के घर में अनाज और घी भर जाता है और निर्धन व्यक्ति भूखा मर जाता है। इस धार्मिक अंधविश्वास का विरोध करते हुए परसाईजी कहते हैं कि 'ऐसे लाखों रुपए का खाद्यान्न लोककल्याण और लोकमंगल के नाम पर धार्मिक कर्मकांड की भेंट चढ़ा दिया जाता है, जिससे बहुमूल्य खाद्य पदार्थ व अन्य पदार्थों को निरुद्देश्य व्यर्थ ही आग में झोंक दिया जाता है। अपने निबंध 'महायज्ञ या पाखंड यज्ञ' में इस संदर्भ में वह संकेत करते हैं। 'यज्ञ' का अर्थ घी को आग में झोंकना मात्र नहीं है। वह जाति मूर्ख और अभागी है जो बहुमूल्य खाद्य पदार्थों को आग में झोंक देता है। मणों घी जला दिया जाता है और इस देश के बच्चों को घी खाने को नहीं मिलता स कितने मण अन्न झोंक दिया जाता है और इधर मनुष्य भूख से मर रहे हैं। कहाँ का लोकमंगल है, इसमें?' परसाई जी कबीर की ही भांति ऐसे धर्म के झूठे आडंबरों का विरोध करते रहे वह ऐसे धर्म को मानने से इंकार करते हैं जो धर्म गरीब को दो जून भोजन दे, वही 'सच्चा धर्म' मानते हैं। दया, प्रेम करना, मानवीयता, भाईचारे जैसे महान गुण जो भारतीय संस्कृति के परिचायक माने जाते हैं उनकी पुनर्स्थापना के लिए जन-जन को प्रेरित करने का बीड़ा उठाया।

देश विभाजन का समय ऐसा समय था जब मानवीय मूल्यों का ह्रास हुआ। सांप्रदायिक सद्भावना वाला देश साम्प्रदायिकता की विभीषिका में जलने लगा। दोनों ओर की जनता न ऐसा बुरा वक्त शायद ही कभी देखा हो। लाखों लोग इस साम्प्रदायिकता की भेंट चढ़ गए। लाखों लोगों को अपने घर छोड़ने पड़े और यह आँधी यहीं नहीं थमी अपितु स्वंत्रता के एक वर्ष के अंदर ही जब दूसरी बड़ी घटना गाँधी की हत्या की हुई। अपने ही देशवासी के हाथ जब एक महात्मा की मृत्यु हुई तो भारतीय संस्कृति के परिचायक महान जीवन मूल्यों पर एक प्रश्न चिह्न अंकित हो गया। परसाई जी ने इस संदर्भ में 'शर्म-शर्म संस्कृति' में इस सांस्कृतिक अवमूल्यन को खूब अपमानित किया। वे कटु शब्दों में इस कृत्य की आलोचना करते हुए लिखते हैं, 'वे जीवन मूल्य घातक हैं जिनके प्रणेता गाँधी जी थे। दया,

करुणा, मानवीयता, धर्मनिरपेक्षता, प्रेम उनके लिए गांधीजी थे, पर इससे देश का नुकसान हो रहा था इसलिए गोडसे जैसे महान देशभक्त ने उन्हें मार कर देश को बचा लिया। धन्य है! वह महान बलिदानी। यही सच्ची संस्कृति की लहर है। गोडसे सही था, उसकी मान्यताएँ सही थीं। वही मान्यताएँ हमारी जाति के हित में हैं और वे मान्यताएँ हैं—घृणा, नफरत, संकीर्णता, सांप्रदायिकता, हिंसा, द्वेष, हत्या। इसके तत्व तो और भी निराले हैं जिनमें ओछापन, टुच्चापन, नफरत, अविश्वास, कमीनापन, नीचता, द्वेष हिंसा, हत्या आदि को यदि स्वीकार कर लिया जाए तो क्या हम मनुष्य रहेंगे? शायद हम कुत्ते हो जाएँगे। नहीं, वे भी वफादार होते हैं... मुझे तो कोई जानवर इतना पतित मालूम नहीं होता।'

स्वतंत्रता संघर्ष का आधार जो आदर्श थे, स्वतंत्रता के बाद उससे बिल्कुल विपरीत समाज में दिखाई देने लगा। आदर्श का स्थान भ्रष्टाचार ने ले लिया। जिस प्रेम, भाईचारे, आत्मीयता, सहयोग और करुणा जैसी भावनाओं को आज़ादी के दीवानों ने संजोया था, उसका स्थान लूट-खसोट, अवसरवाद, भाई-भतीजावाद, स्वार्थ जैसी कुंठित प्रवृत्तियों ने ले लिया। शिक्षा और धर्म का क्षेत्र जो पवित्र माना जाता है, वह भी इस बीमारी से अछूता न रह सका। परसाई जी के शब्दों में, 'जिसके पास है वह भी 'रोता' है और जिसके पास नहीं वह भी 'रोता' है। अपनी-अपनी बीमारी है।' परसाईजी ने अपने देश के इन जैसे लोगों को आईना दिखाया। भक्तिकाल में जो कार्य कबीर ने किया वही आधुनिक काल में परसाईजी ने किया। उनकी प्रथम व्यंग्य रचना 'सुनो भाई, साधु' का सृजन इसी उद्देश्य से किया गया जिसमें पुरुषार्थ विहीन और हारे हुए लोगों के मन में शक्ति भरने के लिए परसाई जीने बीड़ा उठाया।

हरिशंकर परसाई हिंदी साहित्य के एक ऐसे व्यंग्यकार थे जिन्होंने अपनी लेखनी से समाज की विसंगतियों और पाखंडों पर जमकर प्रहार किया। उनके व्यंग्यों में कबीर और गांधी के विचारों का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। परसाई जीने इन दोनों महापुरुषों के विचारों को अपने निबंधों में एक नई दृष्टि से प्रस्तुत किया है।

कबीर की तरह, परसाई जी भी समाज में व्याप्त आडंबरों और पाखंडों के खिलाफ थे। उन्होंने अपने व्यंग्यों के माध्यम से धार्मिक पाखंड, जातिवाद, और सामाजिक असमानता जैसे मुद्दों पर जमकर प्रहार किया। कबीर की तरह, परसाई जी भी एक निर्भीक और स्पष्टवादी लेखक थे। उन्होंने कभी भी सत्ता या स्थापित मान्यताओं से समझौता नहीं किया।

परसाई जी ने समाज की सोयी हुई जनता को फिर से जगाने के लिए संत कबीर की क्रांतिकारी वाणी को अपने निबंधों का स्वर बनाया। उन्होंने कबीर के चुटीली व्यंग्य पंक्तियों को अपने निबंधों की वाणी बनाया। कबीर जो कि हर युग में प्रासंगिक रहे उनकी प्रासंगिकता को परसाई जी ने अपने व्यंग्यों के माध्यम से सिद्ध किया।

कबीर ने जो भी कहा वह समाज में किसी न किसी रूप में अनाचार के रूप में ही व्याप्त था। चाहे वह धर्म हो अथवा धार्मिक कर्मकाण्ड, उनके विरोध में कबीर ने अपना स्वर सदैव मुखरित किया। परसाई जी ने कबीर के साधो, देखो जग बौरानाश जैसे पदों को अपने निबंधों में शामिल करके समाज की मूर्खता और अज्ञानता पर कटाक्ष किया है। उन्होंने कबीर के श्पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय जैसे दोहों के माध्यम से ज्ञान के दिखावे और पाखंड पर प्रहार किया है। 'सुनो भाई साधो' की भूमिका में परसाई ने लिखा है—

"अपने समय की विसंगतियों, पाखंडों, मिथ्याचारों के उद्घाटन और उन पर प्रहार के लिए मैंने अपने को कबीर की परंपरा से जोड़ा।" आलोचकों-सम्पादकों से पहले स्वयं परसाई ने अपने को कबीर की परम्परा से जोड़ लिया था। ...लगभग छह सौ वर्ष से अब तक भारतीय समाज क्यों विसंगतियों, पाखण्डों, बाह्याडम्बरों, रूढ़ियों, मिथ्याचारों, वैमनस्य, धर्माधता आदि में फँसा पड़ा है? कबीर के समय से आज ये सब कहीं अधिक विपुल मात्रा में है।

कबीर अंत समय में काशी न जाकर मगहर गए जिसके परोक्ष में कारण था कि हिंदू मान्यता के अनुसार काशी में मरने से स्वर्ग मिलेगा और मगहर में मरने से नरक स कबीर जीवन भर सच्चे ईश का ध्यान करते हुए 'राम' को पुकारते रहे और आनंद से काशी में रहे किंतु अपने अंतिम दिनों में जगत के समक्ष राम को ही चुनौती देते हुए कहा कि वे मगहर में ही मरेंगे। यदि राम सत्य में परमेश्वर की श्रेणी में आते हैं तो स्वयं को सिद्ध करें और उन्हें स्वर्ग में स्थान दें। ब्राह्मणों के फैलाए अंधविश्वास को उन्होंने प्रत्यक्ष चुनौती दी। इस संदर्भ में परसाई जी अपने व्यंग्य 'कबीर का स्मारक बनेग' सांप्रदायिक हीन भावना और आडंबर को आड़े हाथों लेते हुए पूछते हैं कि यह किसने तय किया कि कबीर की मिट्टी मुसलमानों के यहाँ मज़ार रूप में निर्मित हुई और हिंदुओं के यहाँ समाधि रूप में स्थापित हुई। वह कबीर जो व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि 'तू बामन तू बामनी जाया।'

गांधी विषयक विचार

राष्ट्र में व्याप्त विकृत राजनीतिक परिवेश के प्रति हरिशंकर परसाई के मन में अत्यधिक आक्रोश रहा, जिसकी खीझ और आक्रोश को उन्होंने व्यंग्य के माध्यम से भरपूर प्रयोग करते हुए, निकाला है और चुन-चुन कर प्रहार किए हैं।

राजनीति और व्यवस्था अपनी स्वार्थ लोलुपता के कारण सदैव से ही दूषित रही है। जनता के प्रति उपेक्षित व्यवहार और भ्रष्टाचार का बोलबोला देखते हुए परसाई जी ने इन समस्त विसंगतियों पर चुटीले व्यंग्य किए। परसाई जी ने लगभग सभी राजनीतिक पार्टियों की नीतियों और व्यवहारों के बखिये उखेड़ने का कार्य अपने लेखों और व्यंग्यों में किया स इनके व्यंग्य राजनीतिक विचारधारा से प्रेरित हैं। उन्होंने गांधी जी के सत्य, अहिंसा, और स्वराज के सिद्धांतों को अपने निबंधों में एक नई दृष्टि से प्रस्तुत किया। परसाई जी ने गांधी जी को एक ऐसे नेता के रूप में देखा जो समाज में बदलाव लाने के लिए प्रतिबद्ध थे। परसाई जी ने गांधी जी के सत्याग्रह और असहयोग जैसे आंदोलनों को अपने निबंधों में एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया है। उन्होंने गांधी जी के विचारों की प्रासंगिकता को स्थापित करते हुए बताया कि आज भी समाज में बदलाव लाने के लिए अहिंसक और शांतिपूर्ण तरीके अपनाए जा सकते हैं। परसाई जी ने गांधी जी के श्रम स्वराज के विचार को भी अपने निबंधों में महत्व दिया है। उन्होंने बताया कि गांधी जी का यह विचार आज भी ग्रामीण विकास के लिए एक महत्वपूर्ण मॉडल है। परसाई जी ने गांधी जी के सर्वोदय के विचार को भी अपने निबंधों में शामिल किया है। उन्होंने बताया कि गांधी जी का यह विचार समाज में समानता और न्याय स्थापित करने के लिए एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शक है।

परसाई जी ने स्वातंत्र्योत्तर भारत की तस्वीर पाठक के समक्ष रखते हुए अपने व्यंग्य निबंध में इस ओर संकेत किया है। उनका निबंध पत्र 'महात्मा गांधी जी को चिट्ठी पढ़ें' में इस संदर्भ में बात करते हुए वह कहते हैं कि राजनीति में दोमूहापन कितना बढ़ गया है। 'महात्मा' के नाम पर मतों को बटोरना आज भी जारी है। वह महात्मा जो सत्य अहिंसा और आदर्शों के प्रतीक माने जाते थे, उन्हें ही आज राजनेता स्वयं की कुर्सी बचाने के लिए छद्म आवरण ओढ़ भेद की खाल में भेड़िये बने बैठे हैं। 'उनके नाम पर सड़कें' बनाई जा रही हैं, उनका नाम महात्मा गाँधी मार्ग' रखा जा रहा है स यहाँ तक कि मोमबत्ती के पैकेट पर भी ...।

राजनीति में गांधीवाद एक बहुत बड़ी घटना थी जिसने पूरे देश को एक सूत्र में पिरोते हुए अंग्रेजों को इस देश से लाठी के ज़रिए ही खदेड़ दिया स वह लाठी जो कभी विरोध में, हिंसा हेतु नहीं उठाई गई। स्वयं को गांधी भक्त कहने वाले भी भ्रष्टाचार से अछूते नहीं रह पाए। 'गांधी निर्वाण दिवस' पर वह व्यंग्य करते हुए लिखते हैं कि 'यह गांधी निर्वाण दिवस' न होकर 'गोडसे गौरव दिवस' हो जाएगा और कोई भी व्यक्ति 30 जनवरी को राजघाट नहीं जाएगा स आप 'गांधी' होकर नहीं 'गोडसे' के बहाने याद किए जाएंगे और गोडसे महान व्यक्ति कहलाएगा।

भारतीय राजनीति का एक अन्य ज्वलंत मुद्दा 'हरिजन' पर भी अपनी बात कहने से नहीं रुकते। 'आप हरिजन वगैरह की चिंता मत कीजिए। हर साल कोटा रहता है कि इस साल गांधी जयंती तक इतने हरिजन मारेंगे स इस साल कोटा थोड़ा बढ़ा दिया गया था क्योंकि ...अमुक पार्टी के नेताओं ने राजघाट पर शपथ ली थी और अंत में इस निबंध को विराम देते हुए वे लिखते हैं, 'आप बेफिक्र रहें स आपका यश किसी न किसी रूप में सुरक्षित ही रहेगा आपका एक भक्त।' 'गाँधी जी की शाल' नामक व्यंग्य चित्र में गाँधी जैसे महात्मा द्वारा दी गई भेंट से राजनेता कैसे अपने व्यक्तित्व का महिमामंडन करते हैं, इस पर कटु व्यंग्य किया गया है। व्यक्तित्व में गुण न होने पर भी जनता का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने का यह तरीका एक अचूक अस्त्र की भांति है। इस रचना में ऐसा ही एक राजनेता है जो उनके विवाह के अवसर पर गाँधी जी द्वारा दी गई भेंटस्वरूप शाल को दशकों तक जनता के आगे बखान करते हुए अपने व्यक्तित्व का ढिंढोरा पीटते हैं लेकिन एक दिन जब वह शाल गुम जाता तो जैसे उनके व्यक्तित्व का मान-मर्दन ही हो जाता है स उनका आत्मविश्वास ही जैसे छिन जाता है।

स्वातंत्र्योत्तर भारत में देशवासियों की सेवा हेतु जगह-जगह पर सेवा संस्थानों का निर्माण किया गया लेकिन इन संस्थानों के कार्यकर्ताओं ने सेवा के बदले मिलने वाले अनुदान को व्यक्तिगत स्वार्थ हेतु इस्तेमाल करने का दुष्कर्म किया और जनता से भी चंदा वसूल करने लगे स ऐसी समाज सेवी संस्थाएँ और उनके कार्यकर्ताओं पर व्यंग्य का प्रहार करते हुए परसाई जी लिखते हैं, 'हे देशवासियों! गांधी युग में सेवा नामक जो धर्म था उसे गांधी जी के बाद धंधा बना लिया गया है स इस धंधे में जनता हमारी कर्जदार है।

सार्वजनिक हित के लिए पहले के नेता अनशन किया करते थे लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इस देश के लोगों ने

केवल अपने स्वार्थ के लिए इस पवित्र कार्य को अपनाना शुरू किया। अनशन सफल बनाने और जन भावनाओं के सहयोग के लिए बाबा सनकी दास जैसे लोग अनशन सफल बनाने के लिए सरकार को आत्मदाह की धमकी देते हैं। अनशनियों के प्राण रक्षा के लिए मंदिरों में प्रार्थना शुरू की जाती है। जातिवाद का पुट दिया जाता है, नेताओं की मध्यस्थता होती है, अखबारों में छपवाया जाता है। कोटि-कोटि जनता की माँग शहर में जातीयता का तनाव निर्माण करती है स कफरू लगवाने की स्थिति निर्माण करना आदि का सहारा लिया जाता है। जनतंत्र में जन भावनाओं का आधार होना जरूरी है, पर बाबा सनकी दास जैसे लोग अपने स्वार्थ के लिए टुच्ची-सी बात को राजनीतिक, सामाजिक 'ईशू' का आकार दे देते हैं। यह देखकर यह मानना पड़ता है कि स्वतंत्रता के बाद जनतंत्र की लगातार हत्या ही हो रही है।

राष्ट्र के निर्माण और विकास के लिए पंडित नेहरू ने जिन पंचवर्षीय योजनाओं का निर्माण किया था उसकी ज़िम्मेदारी देश के बड़े अधिकारियों, प्रशासनिक कर्मचारी आदि पर छोड़ दी गई और उनकी तरफ मुड़कर भी नहीं देखा गया। जिसका परिणाम यह हुआ कि रक्षक स्वयं ही भक्षक बन बैठा। उनके शब्दों में, 'यह है, राष्ट्रीय विकास का पौधा मगर ज्यों ही पौधा बड़ा भ्रष्टाचार की बकरी आइ। उसने चौकीदार से कहा, तू मुझे पौधा चर लेने दे। आखिर इसका दूध ही तो बनेगा। तू मुझे दुह लेना स चौकीदार ने बकरी को योजना के चबूतरे पर चढ़ जाने दिया और बकरी पौधा चर गई।

निष्कर्ष

हरिशंकर परसाई के निबंधों में कबीर और गांधी के विचारों का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। परसाई जीने इन दोनों महापुरुषों के विचारों को अपने निबंधों में एक नई दृष्टि से प्रस्तुत किया है और उनकी प्रासंगिकता को स्थापित किया है। परसाई जीके निबंध आज भी समाज के लिए उतने ही प्रासंगिक हैं जितने उनके समय में थे।

संदर्भ:

1. हरिशंकर परसाई, निबंध — कहत कबीर, पृष्ठ —2, संदर्भ—सुनो भई साधो, वर्ष —1964
2. हरिशंकर परसाई, निबंध — कहत कबीर, पृष्ठ —2, संदर्भ—सुनो भई साधो, वर्ष —1964
3. हरिशंकर परसाई, निबंध — स्नान, परसाई रचनावली—3, पृष्ठ —95

4. हरिशंकर परसाई, निबंध — बेईमानी की परत, परसाई रचनावली—3, पृष्ठ —89
5. हरिशंकर परसाई, निबंध दृ महायज्ञ या पाखण्ड यज्ञ, परसाई रचनावली—4, पृष्ठ —358—359
6. हरिशंकर परसाई, निबंध दृ शर्म, शर्म संस्कृति, परसाई रचनावली—4, पृष्ठ —114
7. हरिशंकर परसाई, कहत कबीर(निबंध संग्रह), राजकमल प्रकाशन, वर्ष—2015
8. परसाई को पढ़ना क्यों जरूरी है(लेख),लेखक रविभूषण [http% / samalochan.com@harishankar&parsai /](http://samalochan.com@harishankar&parsai/) , समालोचन (वेब पत्रिका)
9. हरिशंकर परसाईजी, कबीर का स्मारक बनेगा @https:@@hindikahani- hindi&kavita-com@Kabir&Ka&Smarak&Banega&Harishankar&Parsai-php
10. हरिशंकर परसाईजी, महात्मा गाँधी को चिट्ठी पहुँचे, <https:@@hindikahani-hindi&kavita.com@Mahatma&Gandhi&Ko &Chitthi&Pahunche&Harishankar&Parsai-php>
11. <https:@@hindikahani-hindi&kavita-com@Mahatma& Gandhi&Ko&Chitthi&Pahunche &Harishankar&Parsai-php>'4<https:@@hindikahani-hindi&kavita-com@HK&Harishankar&Parsai-php>) / समालोचन
12. हरिशंकर परसाई, सुनो भई साधो, भारत सेवक समाज, पृष्ठ—52
13. हरिशंकर परसाई, सदाचार का तावीज, दस दिन का अनशन पृष्ठ 120— 121
14. हरिशंकर परसाई, स्तंभ—सुनो भई साधो, निबंध—बकरी पौधा चर गई, पृष्ठ 25

डॉ० अनु

सहायक प्रवक्ता

विभाग — हिंदी

anurangil2@gmail-com

9416217004

वैश्य महिला महाविद्यालय रोहतक

हरियाणा

सारांश —

भारतीय संस्कृति अनादि काल से चली आ रही है। चिंतन भारतीय संस्कृति का प्रधान तत्व रहा है। भारतीय संस्कृति के विकास में वैदिक साहित्य, पुराणों, उपनिषदों, जैन एवं बौद्ध साहित्य आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, जिसने भारतीय संस्कृति को एक नई गति प्रदान की। मनुष्य स्वभाव से एक चिंतनशील प्राणी होने के कारण जब अपने आसपास की घटनाओं को तर्क एवं ज्ञान माध्यम से सुलझाने का प्रयास करता है तो समाज के सामने एक नया दर्शन एवं दृष्टिकोण प्रस्तुत होता है। मनुष्य की इसी चिंतनशीलता ने दर्शन को जन्म दिया है।

भूमिका —

दर्शन भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग है। दर्शन के विकास में प्राचीन काल से ही हमारे ऋषि-मुनियों एवं संतों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। संस्कृत हिंदी शब्दकोश के अनुसार दर्शन का अर्थ उस ज्ञान के संदर्भ में लिया जाता है— जो देखने से, साक्षात्कार करने से, तत्व ज्ञान सम्बंधी शास्त्र या विद्या से होता है जिसमें ब्रह्म, जीव, जगत, प्रकृति का विवेचन होता है।⁽¹⁾ दर्शन का यही तत्व हमें संत निश्चल दास एवं गुरु ब्रह्मानंद सरस्वती के दर्शन में भी देखने को मिलता है।

संत निश्चल दास और संत ब्रह्मानंद सरस्वती के काव्य में दर्शन —

संत निश्चल दास एवं संत ब्रह्मानंद सरस्वती उन संतों की श्रेणी में आते हैं जिन्होंने अपने दर्शन एवं चिंतन से समाज में जागृति पैदा की सन्त निश्चल दास एवं ब्रह्मानंद सरस्वती ने मनुष्य को परमानंद एवं मोक्ष प्राप्ति का मार्ग दिखलाया इन्होंने मनुष्य को सांसारिक बंधनों एवं माया से मुक्त रहने का संदेश दिया सन्त निश्चल दास एवं ब्रह्मानंद सरस्वती के काव्य में वेदांत दर्शन स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है सन्त ब्रह्मानंद सरस्वती ने शंकर के अद्वैतवाद, रामानुज के विशिष्टाद्वैतवाद, माध्वाचार्य के द्वैतवाद, निम्बार्क के द्वैताद्वैतवाद, वल्लभाचार्य के शुद्धाद्वैतवाद आदि के समन्वय पर बल देते हुए कहा कि

“द्वैत, अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, शुद्ध द्वैतवाद जिसको कहते हैं।

ऋषि मुनि जितने हुए सारे इनमें रहते हैं।”⁽²⁾

सन्त निश्चल दास ने कहा कि मनुष्य अज्ञानता के कारण ही माया से प्रभावित होता है। इन्होंने जीव एवं ब्रह्म की एकता पर बल दिया है। उन्होंने अपने कृति विचार सागर में कहा है कि ब्रह्म का ज्ञान प्रत्यक्ष संभव है। संत ब्रह्मानंद सरस्वती सर्वाधिक शंकर के अद्वैतवाद से प्रभावित थे। इसलिए उनके काव्य में अद्वैतवाद का प्रभाव देखा जा सकता है। संत ब्रह्मानंद सरस्वती ने ब्रह्म को

परमार्थिक सत्य माना है। उनके अनुसार यह संसार एक मिथ्या है। जीव की उत्पत्ति ब्रह्म से ही हुई है और अंत में वह उसी में विलीन हो जाता है। संत ब्रह्मानंद सरस्वती ने ब्रह्म, जीव, जगत, माया, मोक्ष आदि के संबंध में अपने विचार प्रकट करते हुए ज्ञान प्राप्ति पर बल दिया है।

भारतीय दर्शन में ब्रह्म को मूल तत्व माना गया है ऐसा माना जाता है कि संसार की सभी मनुष्य एवं वस्तुएं उसे एक ब्रह्म से पैदा हुई हैं तथा अंत में उसी में लीन हो जाती हैं। संत निश्चल दास ने ब्रह्म का स्वरूप करते हुए कहा है

“अंतर बाहिर एक रस, जो चेतन भरपूर।

विभुनभ सम सो ब्रह्म है, नहिं नेरे नहिं दूर।”⁽³⁾

संत निश्चल दास का मानना है कि ब्रह्म के स्वरूप को केवल ज्ञान के माध्यम से ही जाना जा सकता है। ब्रह्म की प्राप्ति के लिए मनुष्य को सांसारिक विषय वासनाओं, संबंधों, वैभव, कीर्ति आदि का त्याग करना होगा केवल तभी वह ज्ञान के माध्यम से ब्रह्म को पा सकता है। उनका मानना है कि जब मनुष्य को ज्ञान के माध्यम से यह पता चल जाता है कि इस जगत का अपना कोई अस्तित्व नहीं है, अपितु यह ब्रह्म का एक अंश है, तो वह ब्रह्म के सत्य स्वरूप को जान जाता है। संत निश्चल दास जी का मानना है कि जीव की उत्पत्ति ब्रह्म से ही हुई है। वह केवल अज्ञान और माया के प्रभाव से ही ब्रह्म क्यों स्वयं से भिन्न मानता है तथा आत्मा एवं परमात्मा के संबंधों को नहीं समझ पाता। संत निश्चल दास ने ब्रह्म एवं जीव के संबंधों की व्याख्या करते हुए कहा है:-

“हवै जिहिन जाने बिन जगत, मनहू जेवरी सांप।

नारौ भुजंग जग लिही लहै, सो अहं आपे आप।।”⁽⁴⁾

संत निश्चल दास ने निर्गुण ब्रह्म को स्वीकार करते हुए उसे कण-कण में व्याप्त माना है।

स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती ने ब्रह्म को पूरे ब्रह्मांड का स्वामी मानते हुए कहा है:- “सत्, चित्, आनंद स्वरूप और विश्वेश है।

अजर, अमर, करुणाकर आप रमेश हैं।

सत्साहिब, सतराम, सतनाम, अलकेश है।

अल्लाह, खुदा, गौड, नेचर, कुदरत अधनेश है।”⁽⁵⁾

ब्रह्मांड सरस्वती ने ब्रह्म को जगत के कण-कण में व्याप्त माना है। उनका मानना है कि ब्रह्म सभी जीवों के हृदय में निवास करता है तथा सभी की रक्षा करता है। इस संदर्भ में उन्होंने कहा है:-

“सर्वरक्षक, सर्वप्रेरक, सर्वधारक, सर्वपलक।

सर्वनियंता, सर्वभार्ता, सर्व उत्पादक सर्वधारक।”⁽⁶⁾

स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती के अनुसार मन एवं वाणी के द्वारा भी आसानी से ब्रह्मा तक नहीं पहुंचा जा सकता। इन्होंने ब्रह्म के

निर्गुण एवं सगुण दोनों ही रूपों को स्वीकार करते हुए कहा है:-

“एक राम दशरथ का बेटा, एक राम घट घट में लेटा।
एक राम का सकल पसारा, एक राम है सबसे न्यारा।।”⁽⁷⁾

भारतीय दर्शन में जीव को परमात्मा का अंश माना जाता है। संत निश्चल दास जी अद्वैत वेदांत से प्रभावित होने के कारण जीव एवं ब्रह्मा को अभिन्न मानते हैं। उनका मानना है कि सांसारिक आकर्षण एवं माया जीव और ब्रह्म की एकता में सबसे बड़ी बाधा है। उन्होंने जीव की व्याख्या करते हुए कहा है:-

“मलिनसत्त्व अज्ञान मैं, जो चेतन आभास।
अधिष्ठानयुक्त जीव सो, करत फल आस।।

संत निश्चल दास जी का कहना है कि जिस प्रकार बिंब प्रतिबिंब से भिन्न नहीं है उसी तरह जीव भी ब्रह्म से भिन्न नहीं है। ब्रह्म के बिना जीव का कोई अस्तित्व नहीं है।

स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती का मानना है कि जीव ब्रह्म का ही अंश है। परंतु सांसारिक आकर्षण एवं माया के प्रभाव से वह अपने वास्तविक स्वरूप को पहचान नहीं पाता। इस संदर्भ में सरस्वती जी कहते हैं:-

“जीव रहे प्रकृति के संग में।
रंगा जावे उसी के रंग में।।
भ्रम की तरफ जो मुख को मोड़ा।
सब दुःखों से नाता तोड़ा।।”⁽⁸⁾

स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती जी का मानना है कि अगर मनुष्य अपने रथ रूपी शरीर को मन रूपी लगाम से पड़कर ध्यान से चलाएगा तो वह भवसागर से पार कर अंत में ब्रह्म में लीन हो जाएगा। इसी संदर्भ में उन्होंने कहा है:-

“शरीर गाड़ी इंद्रिया छोड़े,
मन लगाम, बुद्धि गढ़वाला।
ब्रह्मानंद बैठा मतवाला।।
इसमें सफर करेंगे सारे।
सोच समझकर इसे चलाएं,
भव से हो निस्तारा।।”⁽⁹⁾

भारतीय दर्शन में ब्रह्म को सत् और जगत को असत् माना गया है। संत निश्चल दास जी इस संसार को नश्वर एवं परिवर्तनशील मानते हैं। संसार की निश्चरता पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा है:-

“जैसे स्वप्न होते बिन क्रमों।
त्यूं मिथ्याजगत भासत भ्रमतै।
जो ताको क्रम जान्यो लौरे,
सो मरुस्थलतजल वसन निचौरै।”⁽¹⁰⁾

स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती जी ने भी इस संसार को नश्वर माना है। उनका मानना है कि जिस जीव ने इस संसार में जन्म लिया है, उसकी मृत्यु भी अवश्य होगी। संसार की नश्वरता को व्यक्त करते हुए स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती जी कहते हैं:-

“प्रकृति का है खेल जिसको तू देखता है।
प्रकृति का है विकार जिसको तू देखता है।
तीन गुणों का है विस्तार जिसको तू देखता है।
एक रस नहीं है यह जिसको तू देखता है।
परिवर्तनशील है यह जिसको तू देखता है।”⁽¹¹⁾

अद्वैतवाद में माया को जगत की मूल शक्ति के रूप में स्वीकारा गया है तथा इस भौतिक जगत को माया का ही परिणाम माना गया है। सभी संत कवियों ने माया को मोहिनी कहा है जो जीव को को ब्रह्म से अलग या दूर कर देती है। संत निश्चल दास ने भी माया को मिथ्या तथा अविद्या माना है। संत निश्चल दास का मानना है कि जिस तरह जीव स्वप्न में वास्तविक संसार से भिन्न संसार की सृष्टि कर लेता है ठीक उसी तरह जीव माया के आवरण के कारण ब्रह्म के वास्तविक स्वरूप को नहीं पहचान पाता। जीव संसार में माया के आकर्षण में ही फँस कर रह जाता है तथा ब्रह्म को नहीं पहचान पाता। माया का वर्णन करते हुए संत निश्चल दास ने कहा है:-

“जीव इस भेदहीन चेतन स्वरूप माहिर,
माया सो अनादि एक सांत ताहि मानिये।
सत् और असत् विलच्छन स्वरूप ताको,
ताकि कूं अविद्या औ अज्ञान हूं बखानिए।

चेतन सामान्य ना विरोधी ताको साधक है,
वृत्ति मैं आरुढ़ वा विरोधी वृत्ति जानिए।
माया मैं आभास अधिष्ठान अरुण माया मिल,
इस सर्वज्ञ जग हेतु पहचानिए।”⁽¹²⁾

स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती जी ने माना है कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि माया के ही विभिन्न रूप हैं, जो जीव को ब्रह्म से मिलन के पथ से भ्रमित कर देते हैं और मनुष्य अपने पथ से भटक जाता है। इसी संदर्भ में सरस्वती जी ने कहा है:-

“काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार।
इन पांचों से हुए सब बेकार”⁽¹³⁾

सरस्वती जी ने आज्ञा तथा आलस को भी माया का ही रूप स्वीकार किया है। सरस्वती जी का मानना है कि अज्ञानता के कारण ही मनुष्य संसार में भटकता रहता है, जो अंत में उसके

दुखों का कारण बनता है।

भारतीय दर्शन में मोक्ष को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। वस्तुतः ऐसा माना जाता है कि मोक्ष के पश्चात् मनुष्य का पुनर्जन्म नहीं होता है और वह भवसागर के बंधनों से मुक्त हो जाता है। संत निश्चल दास जी ने अपने ग्रंथ 'विचार सागर' में एक कथा के माध्यम से बताया है कि राजा एवं उसके तीनों पुत्र आत्मज्ञान की प्राप्ति के लिए अपना सारा राजपाट त्याग देते हैं तथा गुरु से विद्या प्राप्त कर सारभूत तत्व को प्राप्त करते हैं:-

“ उत्तम मध्य कनिष्ठ, सुनि गुरु उपदेश।

ब्रह्म आत्म उत्तमलक्ष्यो रह्यो ना संसै लेस।

भ्रमन करत ज्यू पवनतैं, सुको पीपर पात।

शेष कर्म प्रारब्ध तैं, क्रिया करत दारसात।।⁽¹⁴⁾

स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती जी ने माना है कि मनुष्य का मन चंचल होता है, जिस वजह से वह ब्रह्म में लीन नहीं हो पता। मन को एकाग्र करके तथा सांसारिक आकर्षणों से छुटकारा पाकर ही मोक्ष को प्राप्त किया जा सकता है। सरस्वती जी ने श्री संदर्भ में कहा है:-

“ मन को अपने टिकाना चाहिए कर वैराग्य अभ्यास।

ब्रह्मानंद जो पूर्ण ब्रह्म का हो सर्वत्र प्रकाश।⁽¹⁵⁾

स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती जी ने मोक्ष को मनुष्य के जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य स्वीकार किया है तथा मन की चंचलता, अज्ञान एवं आलस को इसकी प्राप्ति में सबसे बड़ी बाधा माना है। उनका मानना है कि अपनी इंद्रियों को वश में करके ही मोक्ष की प्राप्ति संभव है।

निष्कर्ष— इस प्रकार हम देखते हैं कि संत निश्चल दास एवं स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती जी के काव्य में दर्शन के सभी तत्व जैसे माया, मोक्ष, जीव, ब्रह्म, जगत आदि का पर्याप्त वर्णन मिलता है। वस्तुतः संत निश्चल दास एवं स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती जी ने भारतीय दर्शन के विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया है। संत निश्चल दास एवं स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती जी ने अपने काव्य के माध्यम से मनुष्य को माया के आकर्षण से दूर रहते हुए मोक्ष प्राप्त करके ब्रह्म में विलीन होने का संदेश दिया है।

संदर्भ —

- 1 शिवराम वामन आपटे, संस्कृत —हिंदी कोश पृ. 790
- 2 संपा. डॉ. बाबूराम, संत ब्रह्मानंद सरस्वती ग्रंथावली, पृ. 120
- 3 विचार—सागर, दोहा, 4/90
- 4 विचार—सागर, दोहा 1/4
- 5 संपा. डॉ. बाबूराम, संत शिरोमणि ब्रह्मानंद सरस्वती, पृ. 60
- 6 डॉ. बाबूराम, संत ब्रह्मानंद सरस्वती ग्रंथावली पृ. 199

7 वही

8 श्री सतगुरु ब्रह्मानंद पचासा, पद 426, पृ. 45

9 (संपा.) डॉ. बाबूराम, संत ब्रह्मानंद सरस्वती ग्रंथावली पृ. 41

10 विचार—सागर—5/152

11 डॉ. बाबूराम, संत शिरोमणि ब्रह्मानंद सरस्वती, पृ. 65

12 विचार—सागर: तरंग—5 ध्रुवित्त 154

13 संपा. डॉ. बाबूराम, संत ब्रह्मानंद सरस्वती ग्रंथावली, पृ. 45

14 डॉ. इंदु बाला कपिल, संत निश्चल दास और उनकी दार्शनिक चेतना, पृ. 101

15 संपा. डॉ. बाबूराम, संत ब्रह्मानंद सरस्वती ग्रंथावली, पृ. 45

श्रीमती मनजीत,

पी.एच.डी शोधार्थी

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर,
रोहतक, हरियाणा।

सहायक प्रवक्ता हिंदी, (राजकीय महिला महाविद्यालय,
सोनीपत, 131001, हरियाणा)

मो. नं.— 9992324246

म. नं. 748.—20 ओल्ड डी.सी. रोड़ , शंकर कॉलोनी,
सोनीपत, हरियाणा।

शोध निर्देशिका

डॉ. सुमन राठी

सह—प्रोफेसर हिंदी (बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय,
अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा।)

त्रिगुणात्मक सृष्टि में खीरा जीरा और हीरा की महनीयता (ललित निबंध)

डॉ० जंग बहादुर पाण्डेय

सारांश –

यह सृष्टि त्रिगुणात्मक है। इस त्रिगुणात्मक सृष्टि में तीन की संख्या का महत्व असंदिग्ध है। कहावत है कि तीन में हैं या तेरह में। अर्थात् तीन में परिगणित होना श्रेष्ठता का बोधक है। देवता तीन ही सुप्रसिद्ध हैं – ब्रह्मा, विष्णु और महेश। लोक तीन हैं – आकाश, पाताल और भूलोक। यह सृष्टि त्रिगुणात्मक है – सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण। काल भी तीन ही हैं – भूत वर्तमान और भविष्य। पुरुष भी तीन ही हैं – उत्तम मध्यम और अन्य। प्रमुखतः तीन ही योनियां हैं – देव, दानव और मानव अथवा नर, नारी और किन्नर। तीन ही प्रकार के लोग इस संसार में उपलब्ध हैं – उत्तम, मध्यम और अधम। विद्यार्थियों के उत्तीर्ण होने के लिए तीन ही श्रेणियां हैं – प्रथम, द्वितीय और तृतीय। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग दिल्ली ने कालेज के शिक्षकों का तीन ही संवर्ग निर्धारित किया है – लेक्चरर, रीडर और प्रोफेसर। अब की भाषा में कहना चाहें तो सहायक प्राध्यापक, एसोसिएट प्रोफेसर और विश्वविद्यालय प्रोफेसर। हमारे परम आदरणीय गुरुदेव डा वचन देव कुमार व्यंग्य में कहा करते थे कि पाण्डेय जी! प्राध्यापक वह है जो पढ़ता और पढ़ाता है, रीडर वह है जो केवल पढ़ता है और प्रोफेसर वह है जो न पढ़ता है और न जो पढ़ाता है, मुफ्त का दो लाख प्रतिमाह वेतन पाता है। सरकार ने शिक्षा विभाग को तीन ही श्रेणियों में विभक्त किया है – प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा। सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक न्यूटन के तीन ही गति सिद्धांत हैं – प्रथम गति सिद्धांत – प्रत्येक वस्तु अपनी विरामावस्था (स्थिरावस्था) या गतिशील अवस्था में तब तक रहती है, जब तक बाहरी बल उस पर क्रियाशील न हो। द्वितीय गति सिद्धांत – आवेग परिवर्तन की दर अपने कारक बल के समानुपाती होती है, यह उसी दिशा में कार्य करती है, जिस दिशा में बल कार्य करता है। तृतीय गति सिद्धांत – प्रत्येक क्रिया के प्रतिकूल और समान प्रतिक्रिया होती है। पदार्थ की तीन ही अवस्थाएं हैं – ठोस, तरल और गैस। वायु भी तीन ही प्रकार की मानी गई है – शीतल, मंद और सुगंध। ज्वालामुखी भी तीन ही प्रकार की होती है – मृत, सुषुप्त और जाग्रत। भारतीय रेल की मूलतः तीन ही श्रेणियां हैं – पैसेंजर, एक्सप्रेस और मेल। ट्रेन में सीट (यानि बर्थ) भी तीन ही प्रकार के हैं – लोअर, मिडिल और अपर। इतिहास साक्षी है कि अयोध्या के वारिस के लिए चक्रवर्ती सम्राट दशरथ को भी तीन ही विवाह करने पड़े, तब कहीं वारिस (उत्तराधिकारी) मिले। प्रयाग राज के त्रिवेणी में तीन ही नदियों का संगम है – गंगा यमुना और सरस्वती, जहां महाकुंभ का आयोजन हो रहा है।

अस्तु! हमारे जीवन में तीन चीजों का बहुत महत्व है –

इनमें खीरा, जीरा और हीरा बढ़ते मूल्य क्रम में आते हैं। विशेष आयोजन, प्रयोजन ना हो तो सो काल्ड आर्गेनिक खीरा भी सौ के अंदर ही प्रति किलो बाजार में अब सालों भर उपलब्ध है। खीरा फल और सब्जी श्रेणी के बीच में कहीं स्थित है। यह सैलेड मतलब खांटी गंवई में सलाद में बहुतायत में प्रयुक्त होता है। हमारे बचपन में यह भादो में पड़ने वाली तीज और कुआर में पड़ने वाले अनंत और जीउतिया में ही दर्शन देता था। उसमें भी यदि यह तितुआ निकल गया तो मुंह, जीभ और मन सब खराब कर देता था। इसके लिए पहले ही से यह मैनड्रेट्री कर दिया गया था कि जहाँ से यह अपनी लता से विच्छेदित होता है उसी सिरे पर एक इंच बाद काट कर, आड़ा तिरछा चीरा लगा कर नून मतलब नमक लगा कर इसके छोटे वाले हिस्से से ही तब तक रगड़ना जारी रखो, जबतक इसके मुंह से गाज (झाग, फेन) नहीं निकलने लगे। इसके बाद फिर आधा इंच नीचे से काट कर खाने योग्य हिस्सा प्राप्त करना होता था। फिर भी तितुआ नहीं निकलने की कोई गारंटी नहीं होती थी।

खीरा स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है, यह हमारे शरीर को क्षारीय बने रहने में सहायक होता है। इसका सेवन सुबह में अत्यंत फलदायी होता है। दोपहर और उसके बाद यह महज एक आइटम रह जाता है, अधिक से अधिक पेट को साफ और ठंडा रखने वाला। शाम और शाम के बाद इसका सेवन आयुर्वेद ने निषेध किया है। इस समय यह जहर हो जाता है। इस संदर्भ में कहा गया है, सबेरे का खीरा हीरा, दुपहरिया का खीरा खीरा, आ रात का खीरा पीरा (पीड़ा)! लेकिन हमलोग तो विष पायी शिव के गण ठहरे। स्टैंडर्ड मेनटेन करने के लिए घर से लेकर पार्टी फंक्शन तक में इसे घोंच रहे हैं। आजकल इसकी कतरी (स्लाइस) आँखों के ऊपर रखने का भी ट्रेंड है।

खीरा को लेकर दो लोकोक्तियाँ बहुत प्रसिद्ध हैं। एक के अनुसार –

खीरा के मुख काटि कै, मलियत नोन लगाय।

रहिमन कडुवे मुखन कौ, चहियत यही सजाय।

इसमें अनर्गल, प्रलाप, अपशब्द और कटु बोलने वालों के साथ वही वर्ताव करने की सलाह दी गयी है जो खीरा के साथ किया जाता है। दूसरी लोकोक्ति में कहा गया है –

ऐसी प्रीत न कीजिये, जस खीरा ने कीन।

ऊपर से तो दिल मिला, भीतर फांकें तीन!।

मतलब आशय इसका भी स्पष्ट है। प्रेम, प्रीति में बाहर भीतर, सोच और आचरण में एकरूपता होनी चाहिए। हालांकि समय के साथ जैसे जखम भर जाते हैं, वैसे ही विज्ञान के बायोटेक्नोलॉजी

की बदौलत खीरा के भीतर के तीन फांक जो कुछ साल पहले तक शाश्वत सत्य लगते थे, वो फांक समाप्त हो गये हैं। मुझे लगता है खीरा ने अपने इस श्तेगलेपन को धरती पर के हर आदमी के स्वभाव में ट्रांसमीट कर दिया है। तभी तो किसी शायर ने कहा है:—

परत परत है हर चेहरा प्याज की मानिंद,

कई दिनों से कोई आदमी नहीं देखा!

एक दूसरे शायर ने एक कदम आगे बढ़ कर कह डाला:—

मिलते हैं एक आदमी में दस बीस आदमी,

जिसको भी देखिए, कई बार देखिए!

खीरा के बाद जीरा का नंबर आता है। यह औषधीय गुणों से युक्त एक मसाला है। भारतीय जीवन में यह शुभ और शगुन का प्रतीक है। विदा होती दुल्हन/ बेटे के खोइछा में यह जीरा अवश्य होता है। जैसे अंग्रेजी अल्फाबेट के लेटर क्यू और यू की जोड़ी है, जैसे, बीरु और जय की जोड़ी शोले में थी, धरम और वीर की जोड़ी धरमवीर में थी, जैसे जवाइन (आजवाइन) की जोड़ी मंगरइल (मंगरैल, कलौंजी) के साथ है, वैसे ही जीरा की जोड़ी मरीच (काली, गोल मिर्च) के साथ है। काली मिर्च काली होकर भी जीरा की अपेक्षा महंगी बिकती है। इसमें तीखापन लाल/ हरी मिर्च की तरह तो नहीं होता लेकिन अलग किस्म का अवश्य होता है। किसी भी आइटम में काली मिर्च, जीरा की अपेक्षा कम मात्रा में ही ली जाती है। जीरा को देखिए तो लगेगा हल्की स्वर्णिम आभा से दीप्त कोई तन्वंगी है। जीरा का उपयोग शफोरन में किया जाता है। फोरन माने छौंक। इससे भोजन का स्वाद बढ़ जाता है। इस जीरा को लेकर भी दो लोकोक्तियाँ मिलती हैं। एक में इसे बेहतर तो दूसरे में कमतर दिखाया गया है।

पहली के अनुसार, कूट पीस मरली हीरा, आ माड़ पसवली जीरा!

यहाँ हीरा वह हीरा नहीं जिसका जिक्र अभी बाकी है। बल्कि हीरा नाम की काम करने वाली, दिन रात खटने वाली एक आम घरेलू महिला है, जबकि जीरा जीरो फीगर मेनटेन करने में लगी रहने वाली फैशनेबल लेडी है जो डाइनिंग टेबल पर गार्निशिंग करके सारा क्रेडिट ले जाती है। दूसरी लोकोक्ति में कहा गया है—

ऊँट के मुँह में जीरा! यहाँ ना ऊँट से और ना ही जीरे से मूल व्यंग्य का कुछ लेना देना है। बात भयंकर पेटू और मक्खड़, मक्खी चूस पर भले कुछ लागू हो जाये तो हो जाये।

अब आइये हीरा पर! हीरा धरती का कठोरतम पदार्थ है। कोयला और हीरा एक ही मूल और कुल के हैं, लेकिन कोयला

कुलांगार और हीरा कुल दीपक बन जाता है। कोयला किलो क्या क्विंटल में, टन में, मीट्रिक टन में बिकता है, हीरा कैरेट में बिकता है और करोड़ों में बिकता है! कोयला भट्ठी में जाता है, हीरा, अंगुली की अंगुठी में, गले के हार में और राजा के मुकुट में जड़ता है। कोयला कठोर होकर भी मुलायम होता है, हीरा कठोरता का पर्याय ही नहीं अपत्य भी है। यह शीशे को आसानी से काट डालता है। कोयला हर पेट की आग बुझाने के लिए खुद आग बन कर राख बन जाता है। हीरा ईर्ष्या की अग्नि धधकाने में लगा रहता है। इतिहास में कोहिनूर हीरा जितना कीमती रूप में दर्ज है, उतना ही शापित रूप में भी कुख्यात है। हीरा को जहर माना गया है। पुरानी फिल्मों में इसे खाकर आत्महत्या करते हुए चरित्रों को दिखाया जाता रहा है।

हीरा बहुमूल्य होता है। जिनकी संतान उपलब्धियों के धारक होती हैं, हीरे से ही तुलित होती हैं। हीरा छिपा कर और सहेज कर रखने की सीख कबीर साहब ने अपनी एक साखी में जनता जनार्दन को दी है:—

हीरा तहां न खोलिए, जहां खोटी है हाट।

कसकर बांधो गाठरी, उठकर चल दो बाट।

कबीर साहब ने मानव जीवन को, मानव शरीर को एक तरफ क्षणभंगुर, नाशवान माना है तो दूसरी तरफ हीरे के समान कीमती भी माना है। इसका सदुपयोग (परोपकार) करना ही मानव जीवन की चरम सार्थकता है। जो लोग तिरासी लाख निन्यानवे हजार नौ सौ निन्यानवे जन्मों के बाद भी अपनी अधोगति के प्रति सचेत नहीं हैं, उनके लिए ही कबीर ने कहा—

रात बिताई सोय कै, दिवस बितायो खाय।

हीरा जनम अमोल था, कौड़ी बदला जाय।

डॉ० जंग बहादुर पाण्डेय

पूर्व अध्यक्ष हिंदी विभाग

रांची विश्वविद्यालय, रांची

चलभाष —879768765

9431595318, 9386336087

द्रुत डाक—चंदकमल —ru05@yahoo.co.in

सारांश :

संगीत और समाज का आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध है । समाज संगीत के बिना पशु समान है और बिना समाज के संगीत विकसित रूप नहीं पा सकता । एक सभ्य समाज में संगीत का बहुत महत्त्व है । समाज का चाहे आध्यात्मिक पक्ष हो या मानसिक पक्ष हो संगीत के बिना अधूरा है । संगीत समाज की रीढ़ की हड्डी है । मानव सभ्यता के साथ-साथ विभिन्न कलाएँ विकसित होती हैं इन 64 कलाओं में संगीत एक श्रेष्ठतम कला मानी गई है । संगीत कला में प्रवाह, ओज सौन्दर्य, मधुरता सहजता और सरलता के सभी गुण विद्यमान हैं । मनुष्य समाज का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है । इसी मानव मन में अनेक भावों को संगीत के द्वारा प्रकट किया जाता है । जिन भावों को भाषा व्यक्त करने में असमर्थ हो जाती है उसे संगीत से ही पूर्णता मिलती है । संगीत कला का उद्देश्य ही रसानुभूति करवाना है । यह मन को शान्ति, आनन्द और प्रेरणा प्रदान करती है । संगीत कला तो मनुष्यों के साथ-साथ पशु-पक्षियों पर भी प्रभाव डालती है । मानव के साथ तो इसका सीधा सम्बन्ध है । संगीत और समाज का आपसी गहरा सम्बन्ध है । संगीत समाज के आध्यात्मिक और मानसिक स्वर को ऊँचा उठाता है । संगीत से समाज में स्वस्थता और स्थिरता बनी रहती है । संगीत और उस देश की संस्कृति किसी भी देश-प्रदेश की पहचान होती है । इसको कायम रखना उसके नागरिकों का परम कर्तव्य होता है । संगीत के माध्यम से ही समाज की विभिन्न समस्याओं का समाधान और समाज में सुधार किया जा सकता है सामाजिक प्राणी अनेक संघर्षों तथा जीवन की समस्याओं के कारण अत्यन्त व्याकुल हो जाता है । उनकी व्याकुलता और अशान्ति को दूर करने में संगीत कला अत्यन्त सहायक सिद्ध होती है । कला के साथ-साथ सभ्यता और संस्कृति का विकास भी साथ-साथ होता रहता है ।

उद्देश्य :

समाज शब्द का प्रयोग मुख्य रूप से दो अर्थों को लिए हुए हैं एक संकुचित और एक व्यापक अर्थ में । संकुचित अर्थ में एक देश का प्रारूप निश्चित क्षेत्र, संगठन में ही सीमित रहता है । व्यापक अर्थ में "समाज" शब्द के अन्तर्गत समस्त विश्व समा सकता है । समाज सामाजिक सम्बन्धों का जाल है । जाल है और वह सदैव परिवर्तित होता रहता है । समाज तो एक संगठन है, जिसमें किसी व्यक्ति का सम्बन्ध होता है । समाज शास्त्र के विद्वानों ने इसे व्यापक अर्थ में ही ग्रहण किया है । समाज व्यक्तियों का वह समूह है जो किन्हीं सम्बन्धों अथवा व्यवहार के विशिष्ट नियमों द्वारा संगठित है और वह

उन्हें उन दूसरे लोगों से अलग करता है जो इन सम्बन्धों में सम्मिलित नहीं होते अथवा व्यवहार में उनसे भिन्न है । मनुष्य के सामाजिक प्रतिकूल वातावरण में कोई भी कला समाज में विकसित नहीं हो सकती । केवल अनुकूल वातावरण ही एक कला को विकसित करती है । संगीत को हर क्षेत्र और हर समाज के हर पहलू से गहरा सम्बन्ध होता है । संगीत के अध्ययन से पता चलता है कि चित को एकाग्रता और मन को स्थिरता केवल संगीत ही देता है । इनके साथ आध्यात्मिकता ज्ञान का विकास भी संगीत के द्वारा ही होता है और इसी विकास के द्वारा ही व्यक्ति का सर्वांगीण विकास भी इसी संगीत के द्वारा होता रहता है । मनुष्य संगीत के द्वारा सामाजिक व्यवहारों से उपर उठ जाता है, और उसको धर्म, समुदाय तथा जाति आदि सभी भेदों से मुक्ति पा जाता है, संगीत में संस्कृति के विकास के लिए एक अच्छे और सुसभ्य समाज की आवश्यकता होती है । सभ्य समाज और संस्कृति के विकास के लिए संगीत के स्वच्छ, पावन व पवित्र रूप की जरूरत होती है ऐसा संगीत जो अल्लाह और परमात्मा के मिलन का माध्यम बने । और दिनों दिन समाज उन्नति करे । जैसे-जैसे समाज में परिवर्तन आता जाता है, वैसे-वैसे उसकी कला में भी परिवर्तन आता रहता है । समाज और संगीत दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं और दोनों ही एक दूसरे से जुड़े हुए हैं ।

समाज एक संगठन ही है जिससे व्यक्ति का सम्बन्ध रहता है । व्यक्ति का धीरे-धीरे समाज, सभ्यता व संस्कृति का क्रमिक विकास इसी समाज में होता रहा है । सबसे प्रथम तो कबीले इत्यादि बनाकर जीवनयापन करना व्यक्ति ने सिखा उसके बाद विकसित होकर जाति वर्ग, राजा, प्रजा तथा परिवार इत्यादि के रूप में सामाजिक संरचना में परिवर्तन होता रहा । प्रसिद्ध विद्वान "राम-रामधारी सिंह दिनकर के अनुसार "जातियों का जैसा दार्शनिक विकास होता है, वैसी ही उनकी कला और उनके धर्म भी होते हैं" । समाज से ही संस्कृति जन्म लेती है, और संस्कृति से ही कलाओं का विकास होता है । संगीत का सम्बन्ध जितना मानव से है, उतना ही समाज से भी है, यदि मनुष्य संगीत का सच्चा साधक बन जाए, तो संगीत से समाज स्वयं ही उन्नत होता जाता है । कलाकार अपने मन की भावनाओं का इन्हीं कलाओं के माध्यम से समाज के सामने प्रस्तुत करता है जिससे समाज की सभ्यता और संस्कृति विकसित रूप पाती रहती है । संगीत को सुनने से जो आत्मिक सुख मिलता है उसकी तुलना संसार के किसी अन्य सुख से नहीं की जा सकती । संसार के जितने भी अन्य सुख हैं, वह काल

और परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं । व्यक्ति संगीत का आश्रय लेकर अपनी आध्यात्मिक, मानसिक व अन्य सुख प्राप्त करता है । वह इसी संगीत का सहारा लेकर जिस कार्य करने के लिए हम संसार में जन्मे हैं, उस परमतत्त्व की प्राप्ति कराता है । संगीत ही एक ऐसा सशक्त माध्यम है जिसमें व्यक्ति उस परमात्मा की प्राप्ति केवल संगीत कला के माध्यम से प्राप्त कर सकता है । वह उस परमतत्त्व से जुड़कर अपने समाज को भी सम्य और सुसंस्कृत करता है । दूसरे पहलू को देखें तो समाज के बिना कला का भी कोई अस्तित्व नहीं होता । संगीत को सामाजिक एवं भौगोलिक परिस्थितियों की उपज माना जाता है । यही कारण है कि पूर्वी और पश्चिमी देशों का संगीत एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न है यहां तक कि एक ही देश के उत्तर और दक्षिण में भी संगीत में भी भिन्नता पाई जाती है । यह उनकी भौगोलिकता का अन्तर है तथा उनके समाज की अलग-अलग परम्पराएं व संस्कार भी इसका कारण है । संगीत मानव की सहज प्रवृत्ति है । इसी सहज प्रवृत्ति के कारणों वह जन्म से लेकर मृत्यु तक संगीत की धारा में ही रहता है । वह संगीत के मूल स्वरूप से जुड़ा रहता है और उसका संगीत से बहुत निकटतम सम्बन्ध होता है । संगीत ही है जो प्रत्येक राष्ट्र और समाज के धार्मिक और सांस्कृतिक पहलुओं को छूता रहता है । और इन पहलुओं से सम्बन्ध रखता हुआ वह व्यक्ति को धार्मिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों की सफलता का सशक्त माध्यम भी रहा है ।

विश्लेषण :

कोई भी समाज बिना संगीत के उन्नति के शिखर को नहीं छू सकता । एक अच्छे समाज की पहचान उसकी सभ्यता संस्कृति की झलक उसकी कलाओं में होती है । कलाओं में संगीत कला सर्वश्रेष्ठ कला है । कोई भी कला इस कला के बिना अधूरी है, इसीलिए कहा जाता है कि कोई भी समाज बिना संगीत के उन्नति के शिखर को नहीं छू सकता । संगीत पर भी समस्त समाज की भावनाओं तथा विचारों का प्रभाव रहता है । परन्तु उसी समाज के संस्कार संगीत के माध्यम से अभिव्यक्ति होते हैं । समाज में धर्म के बिना समाज का अस्तित्व नहीं है; और धर्म का अस्तित्व संगीत बिना नहीं है । धर्म का जन्मदाता भी संगीत को ही माना जाता है । संगीत के द्वारा आध्यात्मिक विकास और समाज व सामाजिक प्राणी की बुद्धि का विकास केवल संगीत कला के द्वारा ही सम्भव है । इसलिए वैदिक युग में भारतीय संगीत का प्रयोग भक्ति और इश्वरोपासना के लिए किया जाता था । मध्यकाल में संगीत का प्रयोग मनोरंजन तथा विलासिता के

लिए किया गया । आधुनिक समाज में संगीत का स्वरूप बिल्कुल ही बदल चुका है । आजकल संगीत केवल व्यापार का माध्यम ही बनता जा रहा है । संगीत के माध्यम से दर्शकों के सामने अश्लीलता को परोसा जा रहा है तथा पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से भारतीय शास्त्रीय तथा लोक संगीत को बहुत हानि पहुंच रही है । आज का मानव यह भूल गया है कि संगीत आदि कलाएँ ही समाज की प्रतिष्ठा का घटक होती हैं ।

निष्कर्ष :

संगीत की उन्नति है तो व्यक्ति और समाज भी उन्नत होता रहता है । और समाज का यदि विकास होता है तो संगीत की भी उन्नति दिनों दिन बढ़ती है । क्योंकि संगीत समाज का अभिन्न अंग है । दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं । दोनों का विकास एक दूसरे की उन्नति के पर निर्भर करता है समाज की आत्मा संगीत में है । और एक अच्छा समाज उसकी सभ्यता और संस्कृति एक उत्कृष्ट संगीत पर निर्भर करता है । दोनों एक दूसरे के अभिन्न अंग हैं और संगीत और समाज का सम्बन्ध अटूट है ।

सन्दर्भ सूची

1. अमिता शर्मा, शास्त्रीय संगीत का विकास, पृ. 7
2. रविन्द्रनाथ मुखर्जी एवं भरत अग्रवाल, सामाजिक नियन्त्रण व सामाजिक परिवर्तन, पृ. 12
3. रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्ययन, पृ. 418
4. सीता राम चतुर्वेदी, भारतीय तथा पाश्चात्य रंगमंच, पृ. 687-688
5. ललित किशोर सिंह, ध्वनि और संगीत, पृ. 56

डॉ. अनिता शर्मा

संगीत गायन

एस.एन.आर.एल जयराम गर्ल्स कॉलेज

लोहार (माजरा)



ABSTRACT

The traditional stereotype of women as mothers and careers, with prime responsibility for running home and family, is being replaced by role models of strong, independent, and successful women in all spheres of life. Women can now do everything men can do, and they are often doing more successfully. Although there remains a lot of prejudice and discrimination by employers about the suitability of some jobs for women, the way women took over men's jobs. Even though women constitute almost half of the population, their participation in the workforce remains discriminatory especially when it comes to the police profession. Women have an equal opportunity and have the right to enter any occupation they choose to, and they ought to, fulfil the same role as men in the police.

The main objective of the paper is to assess the inequality and concern for women's rights. The universe of recent studies comprises women police in Haryana state. The current number of women police in Haryana is 610. Women police were selected randomly from various ranks. In all, we interviewed 150 women police. Primary and secondary data sources have been used to collect the information. The relevant information was collected by employing the interview schedule as a methodological tool. Certain types of information were obtained through direct observation and case study methods.

Equal employment opportunity has been relatively unsuccessful in creating a fully integrated police workforce. Despite the introduction of a range of policies such as equal opportunity and sexual harassment and a range of structures, the integration of police women across all ranks and positions has been modest. Indeed the principles espoused by equal opportunity are not reflected in the attitudes of most policemen, and the resulting practices have led to inequality in terms of job opportunities, retention rates and promotion prospects

INTRODUCTION

The nature of 'Police' is symbolized as masculine, and men are considered suitable to perform the duties and responsibilities in society being police personnel. But this stereotypic construction of 'Police' as masculine slowly

receding away. Women are continuously entering into police force and working with dedication and with their full efficiency. Now women's contribution to the police cannot be ignored, almost certainly necessarily significant. The term 'Women Police' comprised the notion of 'femininity' in police, which is not easily acceptable in a patriarchal society. Earlier Sociologists such as Louis Althusser considered the 'police' as a Repressive State Apparatus (RSA), that dominates over the working class using coercive means. However the notion of 'Police' has another connotation for the present study. The meaning of 'Police' in the present context can be conceptualized as "*an agency of the state, to maintain law and order...by enforcing legal provision and using formal, written regulation*". Through this sense, the Police are perceived merely as a 'controlling institution' that has the objective of maintaining stability in society, rather than dominating the working class. In this way, it is imperative to consider police a 'regulating agency' that obeys codified rules, without violating universal human rights.

'Policewomen' are seen as a homogenous category that performs similar tasks and duties as their male counterparts perform. However, there is a prevalence of biased attitudes towards them. They are subjected to external as well as internal psychological ailments. They perform simultaneously two roles (or even multiple roles), and one role stands up against as an obstacle to the additional role. Being a female, she has responsibility in the household due to the patriarchal notion of 'sexual division of work at their house'. And being a policewoman, she has a responsibility to perform in the public sphere. A former role discouraging them from performing the latter role. Apart from surviving a role conflict (policewomen and housemakers), they have to face numerous kinds of challenges which are related to the profession that they have chosen for their expectations and the livelihood of their family.

With time, women entered all professions and are performing well, and even performing far better than their male counterparts. The Constitution of India instructs for equality of status and opportunity for all citizens in the country. Article 16 of the Indian Constitution ensured "equality of opportunity in the matters of public

employment, without being discriminated". Also, Article 39(a) of the Indian Constitution that ensured "the citizens (men and women) are subject to have an equal right to possess adequate means of livelihood". There is increasing awareness among women about their rights, and they are well aware of the subjugation and exploitation that have been befalling them in male-dominated and patriarchal societies. The perpetuation improvement in the educational level of women made them aware of their relative status vis-a-vis men.

It is assumed that the job of the police is suitable for men only and women are not compatible with this job. This is because of the pre-constructed notion that police endorse masculine nature. Due to this 'structured and embedded' prejudice towards women for entering policewoman is not welcomed by family, community, and male officials of the Police Department. Also, there is an exception for this in some rare cases women received a lot of respect from the community and the family after joining into the force. She became the 'gaze of public perception' and had to face multiple kinds of segregation and discrimination. Persistence discrimination can be observed in different instances such as the location of job posting, kind of task and duty assigned to the policewoman etc. The kind of duties and tasks assigned to a policewoman differ from the duties or tasks assigned to a male police official, this occurred because of 'the prejudices and attitude the community, family and people have towards the policewomen.' This is because of the social perception that "women are inferior to the men and if the courageous or rigorous task would be assigned to women police, they would not be able to fulfil them." The inefficiency of tackling certain kinds of crime such as murder, kidnapping etc.; is another perception community members have about the policewomen. In this way, policewomen are considered incompatible with the police force, and they are not unwelcomed, and their work is not evaluated for recognition, appraisal, and reward. Though the status of women in policing has been considered indispensable, the use of their potentialities is yet inadequate, sidelined, and stagnant. It is a hundred years since women entered the police field but even today, they are not considered as equals to their male

counterparts. To date; in some vital areas of police; Women police remain underutilized and underestimated (Krishnamurthi, 1996).

The police profession is considered a masculine occupation all over the world. The Police profession is dominated by men, therefore, Women who happen to be there in the profession face discrimination and hand chip because of their feminine identity. The entry of women into the police profession is extremely late and they are not given important roles. They are not offered critical roles, thus deprived of recognition and share in power and status. They are often given soft tasks like entry of data related to complaints, escorting of women prisoners, and dealing with minors often as against women and children. Sometimes they are also asked to show their presence at a particular place of crime so that they can handle female offenders.

Entry of Women into police jobs is also not a smooth drive. They have to encounter many hurdles or barriers, starting from entry to the levels of promotion. In a patriarchal society like India, entry of women into the police job world not only incites problems for themselves but it would also have certain consequences for the policemen who are considered a natural incumbent. They do not like the entry of women into policing. It challenges the patriarchal mindset. They try to resist the entry of women into the police by giving an excuse for the absence of physical ability to control the situation. The police profession is regarded as a bastion of males only. Still, women in unconventional professions like army, air force, navy, and police are small in numbers, as these jobs require heavy duties, responsibilities, and commitments. Recently, In the US, Donald Trump has suggested a plan to ban transgender individuals from serving in the military- a move that could impact approximately 15,00 personnel stationed worldwide, including in combat zones. This gender debate between Republicans and Democrats has long been a contentious issue. As per the National Crime Record Bureau (NCRB) in India, the share of women in police was only 1.83 per cent in 2011 and it increased to 4.59 per cent in 2010.

In Haryana, there are about 3 to 4 percent of total policewomen. There is no higher post occupied by

women. The higher post includes the Indian Police Service, Deputy Inspector General (DIG), Superintendent of Police (SP) Deputy Commissioner of Police (DCP). DCP, DIG and SP posts are occupied by male officers. Women's employment in the police force is very narrow. Social taboos, patriarchy, constraints, and policy neglect do not allow women to enter the police profession. On the other side crime against women, children and violence is increasing which requires more women to be in the police force. But the entry of women into police service is considered against suitability and putting women with men at the same place as duty in charge at odd hours is still regarded as against the cultural and social norms of the society. Women should get equal opportunity in all aspects of life and it is also applicable to the police profession. Women are willing to be a part of the police profession in every wing. However, there is a certain social stigma for women to be in the police profession. A woman in a police job reduces the chances of her matrimony prospect. It becomes a deterrent factor to join the police profession. Society at large also thinks the entry of women into the police profession disturbs the prevailing social order of society. They are being treated as subordinate and subjected to gender-based violence and social exclusion. Women in police often complain about improper facilities, long duty hours, odd duty hours, their safety and security and prejudice against them. As a consequence, they are placed at the lower posts of police rank and made to do the office work which is simply recording statements and registering complaints. Sometimes they are taken as accompanied by women police. It turns out in resulting they have less experience in the field which further becomes a deterrent in their promotion. There is equal opportunity for men and women in all aspects of life, including the police profession. However, there is a lack of sociological research on women in the police profession. Literature is scarce on women in police protection in India. Furthermore, there is hardly any study on women police in Haryana. However, Haryana is quite ahead in sending women in sports like Wrestling, boxing, and kabaddi which require more physical strength as compared to other sports. Thus, it would be remarkably interesting to know why and how women are lagging in

the police profession. The research study on women police in Haryana will put systematic and scientific efforts towards understanding women in the police profession. During the period 2008 to 2014, the number of policewomen doubled its numbers from 1358 to 2734. In 2011-12, Haryana added 1000 additional officers.

Over time, many states allowed women to join the police through permanent recruitment in police departments. At the initial stage in 1948, Delhi and Punjab started to recruit women into police and at the end of the 1980s, nearly all states had women police personnel. The state-wise break of the strength of policewomen showed Maharashtra at the top by employing the maximum number of women in the police force (Rao, 1975).

FIELD OF THE STUDY

The study has been conducted in the Gurugram district, which is located in Haryana. A sample of 150 respondents has been drawn from the 275 universe of women police personnel of different ranks. Women police are selected randomly from police departments of various wings (Traffic, Control Room, etc.). In the District Gurugram for example, Women's Police Station, Districts Police Lines, Police Control Rooms, Women's Police Stations etc. A sample is drawn from each stratum of the Police profession, i.e., Inspector, Sub-Inspector, Assistant Sub-Inspector, Head Constable, and Constable.

Table – 1

Gender and Rank of the Police Personnel

Ranking in Police Department	Inspector	Sub-Inspector	Assistant Sub-Inspector	Head Constable	Women Constable/EHC
Male	74	174	340	565	3443
Female	6	34	30	90	450
Total	80	208	370	655	3893
Percentage of total female	7	16	8	13	11

Source: Office of Assistant Police Superintendent, Gurugram

From the Inspector, Sub-Inspector and Assistant Inspector category, we decided to interview all. We interviewed 5 women Inspectors, 15 sub-inspectors, 22 Assistant sub-

(RNI-UPBIL/2011/38102, ISSN-2231-5837)

inspectors, 30 Head constables, and 79 constables.

TOOLS AND TECHNIQUES USED FOR DATA COLLECTION

For the collection of data, a 'structured interview schedule' is being used for collecting responses from the respondents of this study. The case-study approach was also employed for collecting in-depth information about women police. The primary data is collected through the non-participation observation method. In-depth interviews narratives of the respondents, and case histories were collected which provided insights about the police profession.

Most policewomen are from Haryana only, which shows that mobility across the interstate for employment is less likely. They preferable joined their home state police force. It was observed that the majority of respondents belonged to families in which their parents were primarily engaged in agriculture and allied activities. There are majority of respondents live in a nuclear family structure with their husbands in the city area as they have a compulsion to stay or to be present during the duty hours of their job. So, it becomes almost intolerable to stay in a joint family structure at their living destination. Few women in the police profession are enthusiastic about having higher qualifications. Thus, they are limiting themselves to the minimum eligibility of education. The majority of the respondents have single children this is because they have decided not to produce more children as it becomes difficult for them to caring children during the duty hours of the day.

Table - 2

Challenges in the Police Profession

Categories of the Women Police	Challenges in the Police Profession				
	Tough	Moderate	Easy	Cannot Say	Total
Constable	56 (37.34)	14 (9.34)	-	9 (6.00)	79 (52.67)
Head Constable	18 (12.00)	5 (3.34)	-	7 (4.67)	30 (20.00)
Assistant Sub - Inspector	9 (6.00)	8 (5.34)	2 (1.34)	3 (2.00)	22 (14.67)
Sub-Inspector	3 (2.00)	7 (4.67)	2 (1.34)	3 (2.00)	15 (10.00)
Inspector/Station House officer	1 (0.67)	2 (1.34)	1 (0.67)	-	4 (2.67)
Total	87 (58.00)	36 (24.00)	5 (3.34)	22 (14.67)	150 (100)

The figure inside the bracket shows the Percentage of the Respondents.

From **Table -2** it is seen that 58 per cent of the respondents found that the nature of the police job is tough for them. The kind of duty they are performing is challenging. They have to work late at night, patrol the dangerous zone of the city, and deal with odd weather conditions and an environment at the workplace, which makes this profession very tough (Aleem, 1991, p.45).

Table - 3

Sexual Harassment at the Workplace

Categories of Women Police	Sexual Harassment at the Workplace			
	Yes	No	Cannot Say anything	Total
Constable	11 (7.34)	62 (41.34)	6 (4.00)	79 (52.67)
Head Constable	10 (6.67)	10 (6.67)	10 (6.67)	30 (20.00)
Assistant Sub-Inspector	4 (2.67)	6 (4.00)	12 (8.00)	22 (14.67)
Sub-Inspector	1 (0.67)	7 (4.67)	7 (4.67)	15 (10.00)
Inspector/Station house officer	-	3 (2.00)	1 (0.67)	4 (2.67)
Total	26 (17.34)	88 (58.67)	36 (24.00)	150 (100)

The figure inside the bracket shows the Percentage of the Respondents.

It is visible from Table 3 that there is 17.34 per cent of the respondents said that they are being sexually harassed at the workplace while performing their duties. About 58.67 per cent of respondents stated they were never sexually harassed at their workplace during duty hours of the day. About 24 per cent of respondent did not say anything about the sexual harassment faced at their workplace while performing their duty. the notion of sexual harassment has multiple connotations. But the ultimate intention is to 'chase the modesty of females' by performing this act.

Table - 4**Sexual Harassment Perpetrated at Workplace**

Categories of the Women Police	Sexual Harassment by Whom				
	Senior Officials	Instructors/ Trainers While Training	Co-Worker	Cannot Specify	Total
Constable	3 (2.00)	3 (2.00)	4 (2.67)	69 (46.00)	79 (52.67)
Head Constable	4 (2.67)	3 (2.00)	1 (0.67)	22 (14.67)	30 (20.00)
Assistant Sub - Inspector	1 (0.67)	1 (0.67)	2 (1.34)	18 (12.00)	22 (14.67)
Sub-Inspector	1 (0.67)	-	-	14 (9.34)	15 (10.00)
Inspector/Station house officer	-	-	-	4 (2.67)	4 (2.67)
Total	9 (6.00)	7 (4.67)	7 (4.67)	127 (84.67)	150 (100)

The figure inside the bracket shows the Percentage of the Respondents.

Table 4 depicts that there is about 6 per cent of respondent faced sexual harassment from their senior officials. They stated that senior officials tried to sexually harass them. About 4.67 per cent of the women reported that they were sexually harassed during their training for police jobs.

Table - 5
Frequency of Sexual Harassment at the Workplace Faced by Women Police

Categories of Women Police	Frequency of Sexual Harassment in Workplace					
	Once	Two Times	Many Times,	Never	Refuse to answer	Total
Constable	7 (4.67)	2 (1.34)	2 (1.34)	65 (43.34)	3 (2.00)	79 (52.67)
Head Constable	6 (4.00)	3 (2.00)	-	11 (7.34)	10 (6.67)	30 (20.00)
Assistant Sub - Inspector	1 (0.67)	1 (0.67)	3 (2.00)	7 (4.67)	10 (6.67)	22 (14.67)
Sub-Inspector	1 (0.67)	-	-	10 (6.67)	4 (2.67)	15 (10.00)
Inspector/Station house officer	-	-	-	4 (2.67)	-	4 (2.67)
Total	15 (10.00)	6 (4.00)	5 (3.34)	97 (64.67)	27 (18.00)	150 (100)

The figure inside the bracket shows the Percentage of the Respondents.

Further, we asked about the frequency of sexual harassment in the workplace. From Table -5, it is observed that about 10 per cent mentioned that they were harassed only once. It might be since after the first harassment; they

might have rebuked them, which has become the deterrent factor for the successive harassment.

Table-6
Opinions about the Discrimination at Workplace by Women Police

Categories of the Women Police	Discrimination at Workplace			
	There is discrimination	No Discrimination	Cannot Say	Total
Constable	29 (19.34)	23 (15.34)	27 (18.00)	79 (52.67)
Head Constable	17 (11.34)	4 (2.67)	9 (6.00)	30 (20.00)
Assistant Sub-Inspector	7 (4.67)	3 (2.00)	12 (8.00)	22 (14.67)
Sub-Inspector	1 (0.67)	9 (6.00)	5 (3.34)	15 (10.00)
Inspector/Station house officer	1 (0.67)	2 (1.34)	1 (0.67)	4 (2.67)
Total	55 (36.67)	41 (27.34)	54 (36.00)	150 (100)

The figure inside the bracket shows the Percentage of the Respondents.

From Table-6, it is seen that there are 36.67 per cent of the women find that they are being discriminated against as females in the workplace. They observed that they are seen as inferior in the workplace. Their male colleagues think that they are not suitable for this profession. Discrimination in the workplace occurs in the form of inequality in the allocation of type of duty, restriction for inter-communication with others, and marginalisation while taking some suggestions on certain issues. 27.34 per cent of the respondents find that they do not feel any kind of discrimination at their workplace. A significant portion of respondents did not respond on this issue. They are either hiding the truth or ignoring this issue of discrimination in the workplace.

Table -7
Preferences about Working in Odd hours or Late Night by Policewomen

Categories of Women Police	Preference for Odd Hour Duty or Late Night				Total
	Will Prefer to do	Will Not prefer to do	Depending upon the situation at that time	Cannot Say Anything	
Constable	7 (4.70)	17 (11.30)	45 (30.00)	10 (6.70)	79 (52.70)
Head Constable	2 (1.30)	5 (3.30)	19 (12.70)	4 (2.70)	30 (20.00)
Assistant Sub Inspector	1 (0.70)	7 (4.70)	12 (8.00)	2 (1.30)	22 (14.70)
Sub-Inspector	4 (2.70)	4 (2.70)	6 (4.00)	1 (0.70)	15 (10.00)
Inspector/Station house officer	-	-	4 (2.70)	-	4 (2.70)
Total	14 (9.30)	33 (22.00)	86 (57.30)	17 (11.30)	150 (100.00)

The figure inside the bracket shows the Percentage of the Respondents.

From Table 7, it is observed that 57.30 per cent of respondents believed that they preferred to perform their duty at odd hours or late at night only based on the situation at that time. If the situation, compelled them, to do so; they will perform other not sure about this. About 22 per cent of respondents agreed that they would not prefer to work at late night or odd hours. There 11.30 per cent of respondents did not say anything about this. This is because either they are ignoring this issue, or they have not conceptualized this. Only about 9.30 per cent of respondents are ready to work any time, even though late at night, or odd hours. There is variation that prevails along the rank in the police department to prefer working up to late night or odd hours of a day.

Conclusion:

Job satisfaction about the job was also being investigated among women police. The nature of job challenges varied among categories of women police. There are 58 per cent of the respondents found that the nature of the police job is tough for them. The kind of duty they are performing is challenging. They have to work late at night, patrolling the dangerous zone of the city, odd weather conditions and the environment at the workplace. There are multiple factors such as money, caste factor and political factors that

'political factor' play an important role at the time of recruitment as well as during working in the police force. An individual's affiliation with a political party or leader makes a great difference compared to those who do not have one. Sexual harassment is seen as common for policewomen, although such cases are being hidden by them, to protect their careers. The act of sexual harassment is done by senior officials, co-workers, and physical instructors during the training period. There were about three forth of policewomen who are satisfied with this profession, which is comparatively at a higher level after joining the police force. The majority of them are satisfied with their salary and social security in this profession is the most satisfying aspect.

REFERENCE

- Krishnamurthy, L. (1996), "Role Conflict and Tensions of Women Police", *The Indian Journal of Social Work*, 57(4), 615-629.
- Roy, S., M. Muhammad, K.S. Shukla, and S. Sahni (1975), "Women Police in India," *Police Research and Development*, 10-11.
- Aleem, S. (1991), "Women in Policing in India", in R.C.Dikshit, Giriraj Shah and Surendra Agarwal (eds.), *Police and Community*, Noida: Trishul Publications, 427-442.
- Ahuja, R. (1999). *Society in India: concepts, theories, and changing trends*.

Dr. Mithlesh
Assistant Professor(SOCIOLOGY)
Government College, Rithoj
Gurugram, Haryana(122102)

MOBILE NO- 9650029096
Mail id- guddisharma89@gmail.com

Abstract-

This study examines the competitiveness of trade in services between India and China using the Revealed Comparative Advantage (RCA) index. While India has a strong comparative advantage in IT services, professional outsourcing, and other business services, China dominates in transportation, construction, and financial services. The analysis based on World Trade Organization (WTO) data from 2005 to 2021, highlights structural differences in service trade patterns between the two economies. India's strength is rooted in its skilled workforce and service sector liberalization, whereas China's advantage stems from state-led initiatives and regional trade agreements. Despite their growth, both nations face challenges—India grapples with infrastructure and regulatory barriers, while China needs further market liberalization. The study concludes that future competitiveness will depend on policy reforms, innovation, and global economic integration strategies.

1.1 Introduction- International trade is the exchange of goods and services between the countries in all over the world. In the globalised world, there is a need of interdependence on the trade of the national economies of the world to stimulate the pace of growth of each country. It has a special significance for developing nations because they require machinery, capital goods raw material etc. Presently in the world, there is hard to find any economy which has no economic relations with the world nations. That is why; it is a common phenomenon of multilateral and bilateral relations between the countries of the world. The interdependence started increasing with the end of the World War II and has grown manifolds with the advent of world Trade Organization. Along with the trade liberalization on the basis of most favoured Nations, the economies are moving towards a faster pace of liberalization with the regional and bilateral trading agreements (Rahman, Mustafizur 2006). In recent years International trade has enlarged in a non-tradable form that is trade in services. Trade in services and is being flourished across the national boundaries in a bulk having high growth rates in comparison

of merchandise trade. There are so many services are being exchanged throughout the world ranging from health to software to engineering to telecommunication and so on. Trade in services is an integral part of an economy for the development and growth.

Definition of services Trade and supply modes:

GATS Covers four Modes of supplies of services which are:

(I) Mode-1 Cross Border trade- It includes the services trade from the territory of one member into the territory of another member.

(II) Mode-2 Consumption Abroad- It includes the services in the territory of one member to the service consumer of any other member.

(III) Mode-3 Commercial presence-when the service is provided within a country by locally-established affiliates, office or subsidiary of a foreign-controlled and owned company i.e. bank, hotel group and construction companies etc.

(IV) Mode-4 Movements of natural persons. The service is provided through the natural person of a member in the territory of any other member (World Trade Organization).

The economic activities like services are very important for the progress of any economy strict is contributing more than percent in the GDP of country like India. The fabulous escalation in the growth of Communication services information and worked as helping hand to promote the modern and traditional services not only within the country but also across the world which were not tradable before. Over the past two decades, the international trade in services has grown with world exports of commercial services US \$ 3,746.9 billion in 2010 from US\$780.4 billion in 1990. The crucial role of service trade can be seen through its influence on the competitiveness of goods. Services exports can aid the economic development of the small developing economies by enhancing, the exports diversifications through" services based on labour intensive services.

1.2 Methodology and Database

This study is based on quantitative analysis having the vast

objective is to investigate the fluctuations of services trade which on the computation of the Revealed Comparative Advantage (RCA) index for services for both China and India. The data have been taken from World Trade Organisation (WTO) Statistics for the period 2005-2021.

Revealed Comparative Advantage Index

The Revealed Comparative Advantage (RCA) index, also known as the Balassa (1965) index, is one of the most commonly used measures to identify a country's strongest and most significant economic sectors. It assesses the degree of specialization in a particular export sector, with the understanding that sectors with a high RCA value are more likely to sustain their competitive edge. As an ex-post index, RCA relies on actual export data to determine a country's comparative advantage. It is calculated by dividing the share of a specific sector in a country's total exports by the share of that sector in global exports. The RCA index for various services between India and China has been computed for the period 2005–2021 using the following formula:

$$RCA_{ij} = (X_{ij}/X_i)/(X_{wj}/X_w) \dots\dots\dots(1)$$

Where X_{ij} =exports of service j from country i .

X_i = total exports from country i

X_{wj} = total exports of service j from the world

X_w = total services export from the world.

If the RCA index value is greater than 1, the country has a comparative advantage in that sector. If the RCA index value is less than 1, the country has a comparative disadvantage in that sector. However, if the RCA index is equal to 1, the country's specialization in that sector matches the global average.

1.3 Review of literature:

India has a natural advantage in the labor intensive services and knowledge based services, On the other hand, China excels in the manufacturing Sector. The role of services in driving economic growth across Asia which highlights that the growth of services exports was nearly as rapid as that of manufacturing (Shepherd, b. 2019). The increasing role of services in the global economy and suggested Strategies to enhance the competitiveness of

ASEAN in the manufacturing sector in exchange of diverse services and resources from ASEAN Countries (Yang, C. 2009). The china's comparative advantage in high-tech Products is increasing but decreasing in high-price/quality products (Lemoine, F. & Unal-Kesenci, D. 2007). A robust analysis potential advantage and challenges related to service trade liberalization in the developing economies through suggesting significant economic benefits i.e. competitiveness, global integration and efficiency enhancement (McGuire, C. 2002). Legal and regulatory environment is also one of the factors to reach the full potential of any country and economic policy can only assist do and influence in the long run to increase the individual services Competitiveness (Fillat Castejon, C., Francois, J. F., & Wörz, J. 2008). Information technology (IT) Services dominating and contributing in the national income and employment .The policies can be helpful to increase the competitiveness like Special Economic Zones (SEZs) and tax incentives for IT and financial services (Bhattacharya & Mitra, 2019). India's comparative advantage has been largely attributed to the deregulation of its service industry. Research highlights the effects of India's economic reforms in 1991, which opened up trade and investment in important service industries including IT, finance, and telecommunications (Mukherjee, 2013). China's and India's approaches to the growth of the service industry are frequently contrasted in the literature. With programs like the Made in China 2025 plan and the Belt and Road Initiative (BRI), China's government has adopted a more state-led strategy, deliberately advancing important industries (Gao,H. 2018). Although India has a comparative advantage in some service industries, research shows that there are structural obstacles preventing its RCA from growing. These include underdeveloped industries including logistics and transportation, regulatory constraints, and deficiencies in infrastructure (Singh, 2023). The expansion of China's service trade is becoming more closely associated with its involvement in regional trade accords, including the

and the Belt and Road Initiative (BRI). Through these efforts, China is establishing itself as a regional leader in service industries such as financial services, logistics, and infrastructure (Lemoine & Ünal-Kesenci, 2020).

1.4 Result and Discussion

1.4.1 Commercial services

The RCA value of commercial services for India was 1.02 in the year of 2005 whereas its value has become stable during the study period and showed a minor fall in the year 2021 that has become 1.01. The value of RCA interprets that India has a significant Comparative advantage in her exports of Commercial services in the world market. It shows a significant comparative advantage of India during the study period of 2005-2021. On the other hand, the RCA value of China in 2005 and 2021 was same as of India which was that is also 1.02 and 1.0 a significant revealed comparative advantage throughout the study period. In overall analysis of revealed comparative advantage, represents that for the commercial services, India it and china both placed similar advantage in the global market.

1.4.2 Transportation

The Value of revealed comparative advantage of transport services for India was 0.71 in the year of 2005 whereas its value remained insignificant to 6.59 in 2021 which interprets that India has no comparative advantage in her exports of transport services in the global market. In terms of inter-temporal fluctuations of revealed comparative advantage of transport services during 2005-2021 it reveals declining and low comparative advantage and India depends importing transport services from the other countries of Asia e.g. China etc. On the other hand, the value of RCA of transport services for china was 1.06 in 2005 which revealed strong comparative advantage over transport services in the global market. According to the inter temporal movement of revealed comparative advantage over the period of seventeen years during 2005-2021 China has been sustaining her comparative advantage more than 1 for transportation services, which interprets that china placed more advantageously than

~~India in global market.~~

1.4.3 Travel services

The value of RCA of travel services for India was 0.73 in the year of 2005 whereas its value decreased to 0.42 in 2021. In terms of the inter temporal movements of revealed comparative advantage of travel services during 2005-2021 it shows India has no comparative advantage on travel services, rather India depends on importing of travel services from other countries e.g China and other Asian countries. On the contrary, the value of RCA of travel services for china was 1.16 in 2005 which indicates china's strong comparative advantage for Travel services in the global market. But according to the inter-temporal movements of RCA over the period of 17 years during 2005-2021, China has lost her Comparative advantage after 2010. In the year 2010, it was 1.01 but in the next year it became 0.98 after declines and there was a continuous fall in the revealed comparative advantage that has become 0.41 in 2021. The overall comparative analysis of revealed comparative advantage shows that china has placed more advantageously than India in the global market for the travel services exports.

1.4.4 Other Commercial services

The value of revealed comparative advantage of other commercial services for India was 1.39 in the year of 2005 which remained similar to 1.31 in 2021. It interprets India also having quite high Comparative advantage in the global market. In terms of the inter-temporal Fluctuations of revealed Comparative advantage of Other Commercial services during 2005-2021, there is a minor decline in the RCA in the 17 years. On the contrary, the value of revealed comparative advantage of other commercial services for China was 0.53 in 2005 which indicates China at had no comparative advantage over other commercial services in the global market and it became 0.80 in 2021. In overall comparative analysis of RCA it shows that for the other Commercial services, India placed advantageous in the global market but China had no comparative advantage in the global market.

1.4.5 Construction services

The Value of revealed Comparative advantage of Construction services was for India was 0.93 in the year

2005 where its value remained similar to 0.93 in 2021. This value had increased more than one during 2016 to 2019. It interprets for India having no comparative advantage in global market. In terms of inter-temporal movements of RCA for construction services during 2005-2021 which reveals that there is no comparative advantage from 2005 to 2015 for construction services in India. There is a slight movement of RCA value shows comparative advantage only for a few years from 2016 to 2019 but its value again decreased later on. On the contrary, the Value of RCA for China for construction services was 1.52 in 2005 which reveals a good Comparative advantage of china for that and increased up to maximum of 4.29 in 2019 and slight decreased to 3.45 in 2021 which also interprets that China has quite high comparative advantage for construction services in the global market.

1.4.6 Financial Services

The value of revealed comparative advantage of financial services in India was 0.31 in 2005 where its value became 0.26 in 2021 which interprets that India had no comparative advantage for financial services in the global market. In terms of the inter-temporal movement of RCA of financial services during 2005 to 2021, there is no any drastic change or improvement in the Comparative advantage for financial services of India. On the other side, the value of revealed comparative advantage of financial services of China was 0.08 in 2005 which just increased to 0.30 in 2021. It also interprets China having no comparative advantage and for financial services and even less than that of India having of India. In overall comparative analysis of RCA it concludes that for the financial services that India and China both equally having no comparative advantage in the global market for financial services.

1.4.7 Information technology and communication Services

The value of RCA of ITC services of India was 4.50 in 2005 where its value declined in 2021 to 2.94. It interprets that India had a comparative advantage for ITC services in

the global market. In terms of the inter-temporal movements of revealed comparative advantage of the ITC services during 2005-2021 it shows that the value of Comparative advantage of ITC declined slightly during the decade but the value has been above 4 up to 2016. Later on, it declined and became 2.94 in 2021. On the contrary, the Value of China's RCA for ITC services was 0.45 in 2005 which had increase up to 0.88 in 2021. The overall analysis of the Comparative analysis is that India has quite high comparative advantage for ITC services but China has no comparative advantage for ITC services in the global market.

1.4.8 Other Business Services

India's Revealed Comparative Advantage (RCA) in other business services was 1.55 in 2005 and slightly declined to 1.51 in 2021. This indicates that India maintains a strong comparative advantage in the global market for other business services. Analyzing the inter-temporal trends from 2005 to 2007, India exhibited a stable comparative advantage in this sector, with no significant fluctuations. In contrast, China's RCA for other business services stood at 0.84 in 2005. Examining the inter-temporal movements of China's RCA from 2005 to 2021 suggests that China has developed a comparative advantage in this sector over time.

Year	commercial services		transport		travel		Other commercial services		Construction		Financial services		Tele-Communication, Computers & Information Service		other business services	
	India	China	India	China	India	China	India	China	India	China	India	China	India	China	India	China
2005	1.00	1.02	1.47	1.42	1.04	1.15	0.76	0.78	1.25	1.07	0.50	0.35	1.01	0.52	0.88	0.84
2006	1.00	1.02	1.45	1.43	1.07	1.15	0.77	0.77	1.22	1.08	0.60	0.34	0.95	0.47	0.87	0.82
2007	1.00	1.01	1.46	1.43	1.13	1.18	0.73	0.76	0.99	1.05	0.57	0.27	1.06	0.45	0.77	0.86
2008	1.01	1.01	1.36	1.38	1.19	1.19	0.76	0.79	0.99	1.08	0.57	0.29	1.17	0.49	0.79	0.86
2009	1.01	1.02	1.34	1.36	1.21	1.34	0.80	0.75	1.13	1.36	0.66	0.32	1.22	0.53	0.76	0.81
2010	1.01	1.01	1.35	1.37	1.20	1.40	0.78	0.70	0.95	1.10	0.72	0.36	1.07	0.43	0.79	0.72
2011	1.01	1.01	1.42	1.31	1.21	1.49	0.75	0.69	1.01	0.86	0.75	0.32	1.02	0.43	0.75	0.75
2012	1.01	1.01	1.42	1.24	1.19	1.66	0.76	0.64	1.02	0.79	0.65	0.36	1.00	0.39	0.78	0.64
2013	1.00	1.01	1.40	1.19	1.17	1.76	0.78	0.62	1.06	0.71	0.66	0.41	1.04	0.36	0.77	0.61
2014	1.00	1.01	1.40	1.08	1.25	2.01	0.75	0.54	0.97	0.66	0.58	0.42	1.07	0.35	0.71	0.49
2015	1.00	1.01	1.35	1.02	1.28	2.16	0.76	0.51	0.81	0.93	0.52	0.37	1.05	0.37	0.73	0.47

Table-1.4.1 Revealed Comparative Advantage of India and China

1.5 Conclusion

The literature on the revealed comparative advantage of services trade in India and China presents a nuanced view of the strengths and evolving dynamics of both economies. India's comparative advantage is firmly rooted in IT, digital services, and professional outsourcing, driven by its skilled workforce and market liberalization. In contrast, China's comparative advantage, while initially tied to its manufacturing dominance, has increasingly expanded to logistics, financial services, and digital services, supported by state-led policies and regional integration initiatives. While both countries have made significant strides in services trade, they face distinct challenges in maintaining and expanding their RCA. For India, infrastructure bottlenecks and regulatory inefficiencies must be addressed to sustain growth in services trade. For China, deeper market liberalization and reforms in service-oriented sectors will be crucial for consolidating its emerging advantages. In the future, the competitiveness of both nations in global services trade will depend on their ability to innovate, adapt to global economic shifts, and further integrate into regional and global trade frameworks.

References:

- Ashish Arora and Alfonso Gambardella, (2005), [The Globalization of the Software Industry: Perspectives and Opportunities for Developed and Developing Countries](#) in , NBER Chapters, *National Bureau of Economic Research, Inc*
- Balassa, B. (1965) Trade Liberalization and Revealed Comparative Advantage. *The Manchester School of Economic and Social Studies*, 33, 99-123. <https://doi.org/10.1111/j.1467-9957.1965.tb00050.x>
- Banga, R. (2005). India & Services Trade: Trends, Patterns, and Future Prospects. *Indian Council for Research on International Economic Relations (ICRIER)*.
- Bhattacharya, A. (2020). Industrial location and disparity: the case of India.
- Chakraborty, D., & Mukherjee, S. (2013). How do trade and investment flows affect environmental sustainability? Evidence from panel data. *Environmental Development*, 6, 34-47.
- Chanda, R. (2017). Trade in services. In *Handbook of Globalisation and Development* (pp.36-58).Edward Elgar Publishing. <https://doi.org/10.4337/9781783478651.00009>
- De, P. (2013). Assessing barriers to trade in services in India: An empirical investigation. *Journal of Economic Integration*, 108-143.
- Eichengreen, B., & Gupta, P. (2010). The Evolution of India's Services Sector and Its Contribution to Economic Growth. *National Bureau of Economic Research (NBER)*.
- Fillat Castejon, C., Francois, J. F., & Wörz, J. (2008). Cross-border trade and FDI in services.
- Françoise Lemoine & Deniz Ünal-Kesenci, 2008. "[Rise of China and India in International Trade: From Textiles to New Technology](#)," [China & World Economy](#), Institute of World Economics and Politics, Chinese Academy of Social Sciences, vol. 16(5), pages 16-34, September.
- Gao, H. Digital or Trade? The Contrasting Approaches of China and US to Digital Trade”(2018). *Journal of International Economic Law*, 21, 297. https://unctad.org/system/files/official-document/tdstat47_en.pdf
- Joseph, K. J., & Parayil, G. (2006). India's Export of Software and IT Services: Role of External Demand and Factor Market Flexibility. *Economic and Political Weekly*. <https://www.researchgate.net/publication/258190338>.
- Lemoine, F., & Ünal-Kesenci, D. (2007). *China and India in international trade: From laggards to leaders?*, CEPII, Working Paper No 2007-19.
- McGuire, G. (2002). *Trade in services: Market access opportunities and the benefits of liberalization for developing economies* (Policy Issues in International Trade and Commodities Study Series No. 19). *United*

Nations Conference on Trade and Development.

- Myszkowska, M. (2014). The importance of services trade in global economy. *Ekonomia XXI wieku*, (04), 28-45.
- Nordås, H. K., & Rouzet, D. (2016). Services trade policy and trade performance: the case of India. In *Trade, Investment and Economic Development in Asia* (pp. 127-146). Routledge.
- Pravakar Sahoo and Ranjan Kumar Dash, (2014), [India's surge in modern services exports: Empirics for policy](#), *Journal of Policy Modeling*, 36, (6), 1082-1100
- Rahman, M., Shadat, W. B., & Das, N. C. (2006). Trade potential in SAFTA: An application of augmented gravity model. *CPD occasional paper series*, 61, 512.
- Rai, S. (2012). India's Services Trade Liberalization and its Impact on Employment: A CGE Analysis. *World Development*.
- Rashmi Banga and B.N.Goldar, (2004), [Contribution of services to output growth and productivity in Indian manufacturing: Pre and post reforms](#), Indian Council for Research on International Economic Relations, New Delhi Working Papers, *Indian Council for Research on International Economic Relations*, New Delhi, India
- Shahbaz Nasir and Kaliappa Kalirajan, (2013), [Export Performance of South and East Asia in Modern Services](#), *ASARC Working Papers*, The Australian National University, Australia South Asia Research Centre
- Shepherd, B. (2019). Productivity and Trade Growth in Services: How Services Helped Power Factory Asia. *ADB Working Paper 914*. Tokyo: Asian Development Bank Institute. <https://www.adb.org/publications/productivity-and-trade-growth-services>
- Shrivastava, A. K., Sharma, P., & Banik, A. (2021). Merchandise and Service Trade Deviations During COVID-19: A Performance Comparison

Between India and China. *FIIB BusinessReview*. <https://doi.org/10.1177/23197145211020738>.

- Singh, N. (2006). Services-led industrialization in India: Assessment and lessons. Available at SSRN 951735. <https://dx.doi.org/10.2139/ssrn.951735>.
- WTO statistic database
- Yang, C. (2009). *Analysis on the Service Trade between China and ASEAN*. International Journal of Economics and Finance, Volume(1), Pages. DOI or URL (if applicable).

Ms Jyoti

Research Scholar, Department of Economics, Baba Mastnath University, Asthal Bohar (Rohtak)

Dr. Madhu Ahlawat

Professor, Department of Economics, Baba Mastnath University, Asthal Bohar (Rohtak)



Abstract

“One Nation, One Election” (ONOE) proposes simultaneous Lok Sabha and State Assembly elections in India to enhance electoral efficiency, reduce costs, and ensure policy continuity. This research article critically examines ONOE's feasibility, benefits, and challenges within India's federal democratic framework. The study highlights the financial savings, governance stability, and increased voter participation associated with ONOE while also addressing concerns regarding regional diversity, electoral fairness, and administrative challenges. The constitutional and legal barriers are discussed, along with its implications for federalism and state autonomy. The paper further evaluates the potential impact on regional parties and democratic representation. Alternative models, such as staggered elections and phased implementation, are explored as viable solutions. The analysis concludes that while ONOE could transform India's electoral system, a balanced and phased approach is essential to ensure democratic integrity and constitutional harmony.

Keywords - Nation, Election, Democratic framework, Constitution, Administrative challenges

Introduction

"One Nation, One Election" (ONOE) proposes a revolutionary reform in Indian democracy, which plans to hold simultaneous elections to the Lok Sabha and all state assemblies. It aims to reduce the administrative difficulties, economic burden and obstacles in policy-making caused by frequent elections. However, this proposal is also surrounded by many constitutional, legal and administrative challenges.

India, due to its federal system and cultural diversity, is a complex democracy where independence of state and central governments is an important principle. The implementation of ONOE may not only change the electoral process but also affect the structure of Indian democracy. This paper has made a detailed analysis of the feasibility of ONOE, its potential benefits and challenges.

Potential benefits of ONOE

1. Efficiency of electoral process and cost savings - ONOE supporters argue that frequent elections put a heavy financial burden on the government exchequer. The 2019 Lok Sabha election cost about *₹60,000 crore*. If state and national elections are held simultaneously, the cost of the Election Commission, security forces and administration can be reduced significantly.

In addition, frequent elections divert government officials from their regular administrative work and engage them in electoral processes. ONOE can streamline the administrative system and use the government machinery more efficiently.

2. Stability in governance and continuity of policy-making - Frequent elections bring the government under the "Model Code of Conduct", which delays the implementation of new policies. Under ONOE, governments will be able to implement their policy agenda uninterrupted throughout their term, making the policy-making process more effective and continuous.

3. Increase in voter participation - Elections being held at different times sometimes deter voters from participating in elections. Under ONOE, if all elections are held simultaneously, voters may be motivated to vote in greater numbers. This can boost democratic participation.

Challenges posed by ONOE

1. Cultural and regional diversity - In a diverse country like India, each state has its own cultural, linguistic and political needs. Local issues may be more important for different states, and due to ONOE these issues may get suppressed in national elections. For example, issues like 'linguistic identity' in Tamil Nadu and 'Maratha reservation' in Maharashtra are important in local elections. If national elections and state elections are held simultaneously, regional parties will find it difficult to raise their issues prominently.

2. Electoral fatigue and voter confusion - Under ONOE, voters will have to decide for Lok Sabha and state assemblies simultaneously, which may confuse them.

Indian voters vote based on different priorities in national and state elections. If both elections are held simultaneously, national issues may dominate, leading to less focus on local administrative needs.

3. Resource management and security challenges - A huge amount of security forces, EVMs and Administrative resources will be required for the successful conduct of ONOE. Currently, elections are held in different phases, which makes effective use of resources possible.

If simultaneous elections are held across the country, deployment of security forces may become a big challenge. The possibility of electoral violence may increase in sensitive states and it may be difficult to ensure security of polling stations.

Constitutional and legal hurdles

1. Need for constitutional amendment - To implement ONOE, significant amendments will have to be made in the Constitution.

Article 83(2) determines the term of the Lok Sabha.

Article 172(1) defines the term for state assemblies.

Without amending these articles, it is impossible to implement ONOE. Also, it will be necessary to preserve the federal structure of the Constitution so that the autonomy of the states is not affected.

2. Impact on Centre-State relations - In a federal system, the states have the right to hold their elections. If all elections are held simultaneously, the states will have to follow the schedule set by the Centre. This may harm the federal structure of the Constitution and limit the independence of the states.

ONOE and its impact on Indian democracy

- Electoral freedom and fairness - ONOE will pose a major challenge to conduct free and fair elections. If Lok Sabha elections are held before the completion of the term of a state government, the voters of that state may be influenced by national political developments.
- Role of regional parties - National parties may

benefit more due to ONOE, as they can run a united campaign across the country. On the other hand, regional parties may be weakened, as they may be unable to present their state-specific agenda effectively at the national level.

For example, DMK fights elections on language and culture in Tamil Nadu, while TMC prioritizes Bengali identity in West Bengal. National parties are likely to gain more prominence due to ONOE, which may weaken regional parties.

Role and response of political parties

Political parties are divided in favour and against ONOE -

Supporters (BJP, some regional parties) – It talks about stability of governance, continuity of policy-making and reduction in administrative costs.

Opponents (Congress, TMC, DMK, other regional parties) – argue that ONOE will weaken the federal system and suppress regional issues.

Possible Solutions and Alternative Models

1. Staggered Elections - Under this, elections in some states can be held in groups, so that not all elections are held in the same year, but there is also no repeated electoral activity across the country.

2. Adjustments without constitutional reforms - ONOE can be partially implemented by partially adjusting the tenure of some state assemblies, thereby maintaining the independence of the states.

3. Technological improvements and wider availability of EVMs - To successfully implement ONOE, improvements in EVMs and voting technology will be necessary to make the election process more smooth.

Conclusion

ONOE could be a major reform for Indian democracy, but its implementation has many complexities. Its success will require a phased and balanced approach that protects constitutional values and makes the electoral process more effective.

References

- Aishwarya Lakshmi VM, 'An analysis on 'one nation,

one election' policy in India: is it the need of the hour?'.JSLSR,https://jslr.weebly.com/uploads/1/2/4/5/124513060/article_jslr_3.pdf

- Bhagat, P., & Pokharyal, M. P. (2020). CONCEPTUAL REFORMS ONE NATION–ONE ELECTION. *Ilkogretim Online*, 19(4), 3929-3935.
- Bansal, M. (2019). The Concept of One Nation One Election: An Analysis from Indian Perspective. *Think India Journal*, 22(4), 3077-3084.
- Dasarathi, Bhuyan, (2007) Role of regional political parties in India, 2007, Mittal publication, New Delhi, India, ISBN 818324-191-3.
- Dasgupta, S. (2023). 'One Nation, One Election', Fourth Committee. *The Wire*. <https://thewire.in/government/one-nation-one-election-fourth-committee>
- 'Electoral Statistics', Ministry of Statistics and Programme Implementation, http://mospi.nic.in/sites/default/files/Statistical_year_book_india_chapters/Electoral_Statistics.pdf
- Feasibility of holding simultaneous elections to Lok Sabha and State Legislative Assemblies', PRS Legislative research, <https://www.prsindia.org/report-summaries/feasibility-holding-simultaneous-elections-lok-sabha-and-state-legislative>
- Kaushik, A. K., & Goyal, Y. (2019). The desirability of one nation one election in India: Simultaneous elections. *The Journal of Social, Political, and Economic Studies*, 44(1/2), 110-120.
- Khare, S. (2022). One Nation One Election in India. *Issue 3 Int'l J. L. Mgmt. & Human.*, 5, 1309.
- Evers-Hillstrom, K. (2021). Most expensive ever: 2020 election cost \$14.4 billion. *OpenSecrets News & Analysis*. Retrieved from <https://www.opensecrets.org/news/2021/02/2020-cycle-cost-14p4-billion-doubling-16/>
- Prabhakar Praytush, (2023). Constitutional aspects and challenges for implementing One nation One

election in *International Journal of Research Publication and Review*, Vol.4, No-10, pp754-757, 2023.

- Reports of Election Commission.
- Shivani. (2021). One Nation One Election: A New Electoral Reform in India. *Supremo Amicus*, 24, 201.
- Singh A. Legal Service. India. *E Journal* <https://www.legalserviceindia.com/legal/article-1763-one-nation-one-election-constitutional-challenges.html>

Kundan Kumar

(Research Scholar)

Dept. of Public Administration, Magadh University,
Bodhgaya

Address – C/O Uday Prasad, Hanuman Nagar, Bazar
Samiti More, Rajabazar,
District - Jehanabad (Bihar) 804408

Contact No.– 8507304075

Email – acharyak.kundan@gmail.com

**ABSTRACT**

The problem of poverty is a very serious and complex problem in India. It is a curse. It is the most crying economic problem of our country. There is adversely affects of poverty on our health and skill. As a result of it, capacity to earn decreases. It is a relative term. It's definition changes when the economic condition of a nation changes. We may define international poverty line on the basis of per capita consumption expenditure as less than 1.9 0 US dollar per day. This research paper evaluates the serious problem of poverty in an underdeveloped country like India. It also analysis the trends and factore responsible for poverty in India.

Keywords : Poverty , trends, causes, poor, poverty line

INTRODUCTION

Indian economy is facing many economic problems such as unemployment, poverty , corruption and population explosion etc. But one of the biggest economic problem facing Indian economy is the problem of poverty.

A man is said to be facing the problem of poverty when he is enable to obtain the minimum amount of consumption that is required for our life, good health and efficiency. Food, clothing, housing, education and basic health needs are the basic requirements for life.

We can define the term, poverty into two ways that are absolute poverty and relative poverty. Absolute poverty is a condition when we do not have the financial means to acquire goods to sustain our life. These goods may be food, shelter and clothing. It may be defined by calorie criteria and minimum consumption expenditure criteria. What we eat in our food can be measured in calories. According to the planning commission of India, " every person must get 2400 calories in rural area and 2100 calories in urban area per day. If he is unable to get this minimum requirement, it means he is living below poverty line."

Review of Literature

Amarta Sen (1977) said ", The poor is not an economic class, nor convenient category to use for analysing social and economic movements. Poverty is the common outcome of a

variety of disparate economic circumstances and a policy to tackle poverty must, of necessity, go beyond the concept of poverty. The need for dimension is essential. " Sen asserts ", It is not sufficient to know how many poor people there are, but how exactly poor they are. " According to Jean Dreze (2017) ", Poverty line stands were set decades ago, at a time when even bare subsistence was far from assured for a large majority of the population. The poverty line is, of course, regularly updated for price increases, but not for the enhancement requirements of dignified living." N.Krishnaji (2012) has recently argued ", A single poverty line based on a calorie or expenditure norm is bound to be arbitrary depending wholly on who is setting up this line. " HDI , Report (1997) ", Someone can enjoy good health and live but be illiterate and thus cut- off from learning, from communication and from interactions with others. Another person may be literate and quite well educated but prone to premature death because of epidemiological characteristics or physical disposition. Yet , a third may be excluded from participating in the important decision- making processes affecting his/her life."

As per economic Survey 2016-17 ", It is important that UBI is not framed as a transfer payment from the rich to the poor. Its basis is rather different. UBU gives concrete expression to the idea that we have a right to a minimum income., merely by virtue of being citizens. This right requires that the basic economic structure be configured in a way that every individual gets basic income."

Objectives of the Study

The present study is based on the following objectives :-

1. To analyse the trends of poverty in India.
- 2 To evaluate the comparison of per capita income among different countries.
- 3 To analyse the comparison of poverty between the rural and the urban, comparison among different states and different nations. .

Research Methodology

In order to achieve the objectives of the present study, time series data on the relevant variables have been collected for

the period from 1973-74 to 2011-12. The secondary data have been collected from Word Development Report, 2020, NSSO reports. Besides, journals, magazines and periodicals relevant to the study have also been consulted.

Results and Discussion

The minimum consumption expenditure criteria states ", a person is living below the poverty line whose per capita consumption expenditure at 2011-12 is below Rs. 816 per capita per month in rural areas and below rupees 1000 per capita per month in urban areas."

On the other hand, relative poverty is defined from social perspective. As per this criteria ",that is living standard compared to the economic standard of population living in surroundings. So it is a major of income inequality.If the per capita income of a country is quite less in comparison to the other countries, such country is treated as relatively poor nation."

Table - 1

Per Capita Income of Different Nations (Year 2019)

Country	Per capita income (In US dollars)
Pakistan	1410
India	2120
Shrilanka	4020
China	10410
Japan	41410
United Kingdom	42220
United States of America	65850
Bangladesh	1940
Word Average	11571

Source : Word Development Report, 2020

It is revealed from the table that the per capita income of India is very low when it is compared to other developing and developed nations. As per the development report, 2020, 2120 US dollars, while the Word Average is 11571 US dollars. This shows that India's percapitaincomeislo was comparedtoothernations. So India is relatively poor nation.

TRENDS OF POVERTY

In India, percentage of people who are living below poverty line has declined. It is shown by the following table.

Table 2.

Year	No. of Poor (In crore)	Percentage of Poor in Total Population
1973-74*	25	54.9
2004-05*	40.72	37.2
2009-10**	35.47	29.8
2011-12 **	26.93	21.9

(Source :NSSO Reports)

* "Based on poverty line of Rs. 368 per capita per month in rural areas and Rs. 559 per capita per month in urban areas."

** 'Based on Tendulkar Methodology'

It is found from the above table that the population of the poor in India has decreased from 25 crore in 1973-74 to 26.93 crore in 2011-12. While percentage of poor in total population has also decreased from 54.9% in 1973-74 to 21.9% in 2011 -12. Thus it is clear from the table that in 2011-12 , 21.9% of our population was the poor.These people were living below the line of poverty.

Comparison between the Rural and the urban

It is evaluated from the study that percentage of people who are poor in rural areas is higher than the percentage in urban areas. This trend is shown from the table-3.

Table 3. Percentage of Population of rural and urban below the line of poverty

Area of rural/urban	1973-74 *	2004-05 *	2004-05 **	2011-12 **
Rural	56.4	21.8	42.0	25.7
Urban	49.0	21.7	25.5	13.7
Combined	54.9	21.8	37.2	21.9

(Source: NSSO Reports)

* "Based on the line of poverty of Rs. 368 per capita per month in rural areas and Rs. 559 per capita per month in urban areas."

** Based on Tendulkar Methodology

It is found from the table 3 that in 1973-74 , people living below poverty line is 56.4% in rural areas.While it is 49 % in urban areas. In 2011-12 , population living below poverty line has decreased to 25.7% in rural areas. But it is 13.7% in urban areas. It is also found that population living below the line of poverty is higher in rural areas when it is compared to urban areas.

Inter-state Comparison

It is found from the study that there is wide variations in the percentage of population living below the line of poverty in various states of India. It is shown by the following table.

Table 4. Inter-state comparison of population below the line of poverty (Tendulkar methodology)
(Percentage of Population living below the line of Poverty Line, 2011-12)

State	Rural population	Urban population	Combined
Himachal Pradesh	8.5	4.3	8.1
Punjab	7.7	9.2	8.3
Haryana	11.6	10.3	11.2
Uttarakhand	11.6	10.5	11.3
Uttar Pradesh	30.4	26.1	29.4
Madhya Pradesh	35.7	21.0	31.7
Assam	33.9	20.5	32.0
Odisha	35.7	17.3	32.6
Bihar	34.1	31.2	33.7
Manipur	38.8	32.6	36.9
Jharkhand	40.8	24.8	37.0
Chhattisgarh	44.6	24.8	39.9
All India	25.7	13.7	21.9

(Source: NSSO Reports)

It is found from the table that in many states of India as Chhattisgarh, Jharkhand, Manipur, Bihar, Odisha, Assam and Madhya Pradesh, there is a serious problem of poverty. More than 50 percent of poor were living below the line of poverty in these states. It is also found that more poor are living in rural areas when it is compared to urban areas in all the states except Punjab.

International Comparison

It is also found from the study that there are large variations in the percentage of population living below the line of poverty in different countries. In the study it is revealed that when poverty is compared at international level among different countries, all the countries has used a uniform line of poverty that the consumption expenditure is US \$ 1.90 per person per day.. The table- 5 shows the status of poverty of different countries living below the line of poverty.

Table 5 Comparison of Population of different countries living below the line of Poverty

Country	Percentage of Population living below the line of Poverty (US \$1.90, per person, per day)
Germany	<1 (Year 2016)
Japan	<1 (Year 2015)
UK	<1 (Year 2016)
Shri Lanka	<1 (Year 2016)
USA	1.0 (Year 2016)
China	0.5 (Year 2016)
Pakistan	4.0 (Year 2015)
Bangladesh	14.5 (Year 2016)
India	22.5 (Year 2011)

Source: Report of World Development, 2020)

As per the report of World Development, 2020, on an average, 9.9% population was living below the line of poverty of the world. It is also found from the table that the line of poverty in developed nations is quite less when it is compared to developing nations.

FACTORS RESPONSIBLE FOR POVERTY

Poverty is a serious economic problems for the developing countries like India. As trends of poverty is studied in the above section. It is found from the study that poverty has become a challenging problem for our country when it is compared to other countries. There are many factors responsible for poverty in India.

First, population has been rising very rapidly in India. According to the census 2011, the population of India was 121 crore. Its growth rate was 1.2%. " It is the major cause of poverty in India.

Secondly, there is less productivity in agriculture in India. As traditional and Outdated technology is adopted in agriculture. About 46.2% population is dependent on agriculture in India. The contribution of agriculture sector in national income is only 16.3%.

Thirdly, there is less utilisation of resources. India is rich in natural resources. But due to poor technology, we are unable to fully utilise our natural resources, physical resources and human resources. Our resources are unemployed.

Fourthly, prices are rising very rapidly. Rising prices have worst effect on the poor population of our country. In 2020-21, there has been 6.2% average rise in prices.

Fifthly, there is an acute shortage of capital and able entrepreneurship in India. Without capital formation, a country can not grow. If we have to utilise our resources and increase in income of the poor people, there is a requirement of capital formation and able entrepreneurs. Today, there is a need for such able entrepreneurs who are efficient, skilled and creative, having decision making power in bad time. Such persons can take risk in business. Unluckily, there is shortage of such efficient entrepreneurs.

Sixthly, there is unequal distribution of income in our country. The poor are becoming poorer and the rich are richer. **Seventhly**, outdated social Institutions system create obstacles in the path of economic development. These are caste, religion, illiteracy and backwardness. As a result of these customs, the poor have to waste a lot of money on unproductive activities. They spend their money on functions like marriage, death, festivals, etc. As a result their savings and investments decrease and demands increase.

Finally, we can say that some other factors as illiteracy, backwardness, low mental growth, fatalism etc. are responsible for poverty. According to Nurkse, "A country is poor because it is poor." This statement of Nurkse clears why there is poverty in underdeveloped countries.

Suggestions for Reduction in Poverty

(1) Slow rate of growth is the main factor of poverty in less development nations like India. So we have to increase economic growth rate of our country. To remove poverty, it is necessary to accelerate the rate of growth. Moreover, economic growth should be inclusive, i.e., it should benefit all sections of society.

(2) To remove poverty, we should make efforts to develop the agriculture sector. About 46% population depends on agriculture in India. So unless we develop the agriculture sector, it is impossible to remove poverty in rural areas. Agriculture should be mechanised and modernised. Use of HYV seeds, chemical fertilisers should be increased. More irrigation facilities should be provided. Farmers should be given more financial assistance.

(3) We have to increase the employment opportunities in the rural and the urban areas. If more employment opportunities are generated, the income of the people increases. As a result, the savings, investment and demand of the goods increase. Then there will be more production of goods and services in industries producing mass consumption goods as clothes, vegetables, soaps, oil, sugar, etc. This will result in more production, more

supply and hence lower prices of mass consumption goods. So poor persons can afford to buy more of such goods.

(4) If we want to reduce poverty, there should be stability in prices. If more the prices rise, the lower the standard of living of the poor. To bring about price stability, both agriculture and industries in the country should make full use of their production capacity. There should be no strikes or lockout. There should be adequate supply of raw materials and electricity according to the needs of the industries.

(5) Our population is rising rapidly. Its growth rate is 1.2 per cent per annum. To eradicate poverty, it is essential that rise in population should be checked. We should get more success in family planning. The poor and illiterate people should be aware about the bad effects of rising population in India.

(6) If we want to remove poverty, we have to generate employment opportunities. We should generate more employment opportunities in rural areas. By adopting multiple cropping and modernization of agriculture, we can remove under-employment and disguised unemployment in agriculture sector. Cottage industries and construction works should be launched vigorously in rural areas. Small industries, transport etc., should be expanded in urban areas. By introducing new education policy, educated unemployed can be provided job opportunities. Government should also aim at providing more self-employment to poor persons.

(7) Capital intensive technique is suitable for the western countries. It does not suit to more populated countries like India. So our country should adopt labour intensive technique that absorbs more labour. Then we may control unemployment problem that is the root of poverty. So Indian economy should develop a technique of production that absorbs more and more labour. By providing more opportunities of employment, we can remove poverty.

(8) We have to make Reduction in inequality of Income and Wealth: In India 31% share of GDP is in the hands of 10% richest people of the country. While the 10% poorest people have only 3% share of the GDP. Unequal distribution of income and wealth is the main reason of poverty. So government should reduce inequality of income and wealth. It is only possible by adopting appropriate fiscal and licensing policies. More taxes should be levied on rich persons and the revenue so generated should be used for welfare of poor class.

(9) Indian government should give more concessions to backward areas like Odisha, Bihar, Jharkhand, Chhattisgarh, Assam, etc. As more percentage the poor of our population live in these states. So Indian Government should provide special facilities and concessions to these states so that more foreign and domestic investors are

attracted to invest in these backward regions. Both public sector as well as private sector enterprises should also be established in these backward areas of the country so that new opportunities of employment may generate.

(10) We have to adopt effective Public Distribution System .We have to provide food at the low prices to the people who are actual poor and need food in the form of PDS. We have to provide this facility of PDS to the poor living in the rural areas and backward areas of the country.

(11) We have to implement Poverty Alleviation Programmes in effective ways.Our government is trying to frame various poverty alleviation programmes from time to time. But due to corruption, full benefit of these programmes does not reach the real beneficiaries. So we have to take strict steps for effective implementation of poverty alleviation programmes.

References

- 1 Amartya Sen (1977) ", Poverty and Economic Development ", in charan D. Wadhva (ed.),Some Problems of India's Economic Policy, New Delhi, p.246.
- 2 Himanshu (2012) ", Indian Undercountsiys poor", Mint, March 26, pp.1-2.
- 3 Jean Dreze, Sense and Solidarity (2017) , pp.54-5
- 4 Jran Dreze, Sense and Solidarity (Ranikhet,2017), pp.54-55.
- 4 M.L. Dantwala (1985) ",Garibi Hatao : Strategy Options" , Economic and political weekly, March 16, 1985.
- 4 N Krishnaji (2012) ", Abolish the poverty line ", Economic and political weekly, April 14, p.10.
- 5 Sandeep Bagchee (1987) ", Poverty Alleviation Programmes in Seventh Plan: An Appraisal ", Economic and political weekly, January 24 , p.140.
- 6 Ibid.,pp.4-5.
- 7 Government of India , Planning Commission, Report of the expert Group to Review the Methodology for estimation of poverty (Tendulkar committee) submitted in November 2009.p.2.

Postal Address

Dr. Bhupinder

H.No. 46, Friends Colony, Extension-9, Gali No -1,
Behind Nakashtra Property,
Near Omaxe City Gate, Delhi Road Rohtak
PIN-124001, Haryana
Mobile No 9812138717



Abstract

As the retail industry becomes more globalized, information technology has an influence on the industry's point-of-sale and point-of-supply. Everywhere, technology has altered consumers' purchasing habits. Retailers have both new possibilities and problems as a result of the expanding use of new technologies like social networks and smart mobile devices, as well as the increasing significance of in-store technology solutions. With increased speed and adaptability, information technology has permeated every aspect of retail, including daily operations for retailers, market intelligence, and data and information control to gain a competitive edge. So, this paper presents the results of the Role of information technology in retail Industry. Advancements in information technologies offer a possibility of implementing a great number of innovative solutions in retail. These solutions aim to increase the effectiveness of a retail enterprise and improve customer service. Information technologies may be applied to different areas of operations of a retail enterprise, for example supplies, stock control, logistics, customer service. Some of them are used for back-room operations; others are available for customers in a salesroom

Introduction

Retailing is becoming a high-tech, worldwide industry, and India is no exception. Some of the main elements driving India's organized retail development include the country's ever-increasing middle class's purchasing demands, fast evolving lifestyles, and ever-increasing wealth levels. In India, family-owned and unorganized retail businesses are giving way to organized ones. Today's Indian retail industry is advancing with higher aspirations, but it has several obstacles in terms of growth. Technology functions similarly to a catalyst. When used properly, it increases the effectiveness of any activity or procedure. Since the beginning of time, technology has played a significant role in business. The extent of progress has varied depending on the location. Television and the telephone were formerly seen as technological boundaries.

Long-distance telecommunications is still a technical marvel in remote Indian communities. The main results of technical efficiency are business efficiency and transactional smoothness. The local merchant used to address his family members and clients by their first names in the past. The communication was frequent and intensely personal. As a result, the retailer felt like a family member. Besides this the number of alternatives available in each product was minimal. Most significantly, a consumer never felt inclined to personally investigate the prospects for a better product/brand or maybe a better deal when there was a restricted selection of brands and items. Today, the situation is different since there are many companies in each category and a large number of items to meet individual needs. In addition, the number of stores and customers has grown significantly. As a result, sales promotion programs and buy plans have supplanted the store loyalty that was fueled by human relationships and interactions.. In this backdrop business processes as well as store management have become more challenging and complex. With such complexities backed with scarcity of time, it becomes important to implement some mechanism. Any such mechanism should not only save time but should also be accurate.

The retail industry is entering a new phase, driven by three technological pillars.

Consumers' buying experiences have been completely changed by technology, which has affected everything from where and how we pay to how we weigh value when making selections. The retail industry is currently seeing additional disruption due to developments in automation, artificial intelligence, and retail media. These developments are assisting the biggest firms in solidifying their positions through increased profitability, quicker expansion, or both. "After years of profit challenges due to e-commerce, retailers are now finding the right mix of in-store and online operations," says Simeon Gutman, Morgan Stanley's Hardlines, Broadlines, and Food Retail Analyst. "Big data is creating a fresh revenue stream through retail

media, which allows retailers to use their consumer insights for customized brand advertising. Automation is also making distribution more efficient and helping boost profits."Indeed, the valuation spread between the best-positioned companies and others is growing to around 40% compared with a historical average of 20%."The retailer of the future will leverage retail media, automation and AI to enable margin expansion, and consolidation and share gains will accelerate these drivers," says Gutman. "Margins could expand by more than 200 basis points for the best-positioned retailers over time from around 9.5% on average today."

Retail Media

Retail media is a type of advertising that uses retailers' unique customer data sets to create targeted ad campaigns. The biggest retailers benefit the most because they can invest more in these technologies, leading to faster growth and higher market share. Meanwhile, their high traffic offers new opportunities for advertisers to reach consumers and influence their behavior. Onsite advertising places the advertiser's products prominently on the retailer's website or search results page, while offsite advertising displays ads across the wider internet. Retail media is becoming one of the most profitable revenue streams for retailers, many of which partner with ad tech companies to implement their ad campaigns rather than developing the technology in-house. Analysts expect the fast-growing retail media category will reach \$130 billion, or around a quarter of total online ad spending, by next year, creating \$104 billion and \$26 billion opportunities, respectively, for retailers and their ad tech partners.

Automation

In a bid to cut operational costs and boost profitability, retailers could use automation to bring efficiency to up to 70% of routine tasks by 2025. This transformation may help streamline retail operations by managing and analyzing inventory, optimizing supply chains, automating point-of-sale systems and implementing self-checkout kiosks, among other applications. Meanwhile,

automating a distribution center can double productivity using half the labor, while automating a fulfillment center can reduce costs by about 60%, analysts estimate. Beyond cost savings, automation's other benefits include allowing retailers to deploy staff to more strategic or customer-facing roles; reducing the chance of human error in order management; improved quality control; and higher sales, resulting from an enhanced customer experience. The scale and complexity of larger retailers' operations create a prime opportunity to enhance efficiency via automation. With more areas open to innovation, the potential cost savings make the return on investment more appealing, while the larger retailers can afford to invest in robotics and autonomous systems in a way their smaller counterparts cannot. "Automation could reduce the best-positioned retailers' unit costs by as much as 20% over time, translating into margin expansion of 50 to 100 basis points," says Gutman.

Artificial Intelligence

AI has the potential to drive the next wave of growth in the retail sector, and new use cases are emerging all the time. Retailers are better able to collect and capitalize on consumer data to drive more customers to their platforms, analyze shopping trends, improve search results and [optimize distribution with robots](#), to name just a few examples. AI is a key component of retail media implementation as retailers leverage customer purchase data to better target and personalize advertising. The grocery sector offers a good example of the various uses of AI, which could enhance recommendations for online grocery shopping and lead to the development of the next generation of personal shopping assistants that could predict, suggest and order groceries. It could provide data for advertising, a main driver of growth in take-up rates and profitability for online grocery platforms. Analysts estimate that every percentage-point increase in advertising as a proportion of online grocery spending in 2025 would add an incremental \$2.8 billion to revenue. All told, the best exposed retailers could save between 5% and 10% of corporate costs with AI, yielding up to 25 basis

points of margin expansion over time. “Companies with extensive data sets, a willingness to explore alternative revenue streams and a strong focus on operational efficiency are likely to benefit the most,” says Gutman. “And the rewards could be substantial, both in terms of revenue growth and cost saving.

Role of Technology in the Retail Industry

1. E-Commerce Platforms and Online Retailing

One of the most revolutionary applications of technology in the retail sector has been the rise of e-commerce, which has been made possible in large part by improvements in e-commerce platforms. Businesses may effectively and efficiently offer goods and services online by using these platforms as digital storefronts. E-commerce platforms are more than simply websites for shops; they are complete systems with features for handling shipping logistics, managing inventory, processing payments, and offering customer support. By removing geographical restrictions, e-commerce platforms allow companies to access a wider audience. Growth depends on this worldwide accessibility, particularly for specialist items and niche sectors that could only have a small physical audience. Additionally, these platforms gather useful data that may be examined to learn more about the trends, interests, and behavior of consumers. Retailers may improve their operations, modify their marketing plans, and customize their products with the assistance of insights gleaned from this data. Modern e-commerce systems stand out for their ability to handle complicated consumer data with customization and flexibility, making them essential tools in the retailer's toolbox. Retailers may improve their operational capabilities and give their consumers more engaging and customized purchasing experiences by utilizing the power of e-commerce.

2. Point of Sale (POS) Systems

One of the primary applications of technology in retail that raises the usefulness and efficiency of contemporary retail operations is Point of Sale (POS) systems. They serve as the focal point for managing inventory levels, processing

transactions, and improving customer relations. By combining inventory management, payment processing, and sales into a single, user-friendly interface, these systems go beyond conventional cash registers. A more effective checkout procedure is made possible by this integration, which also offers real-time data that is useful for making wise business decisions. Retailers' business practices have been completely transformed by the developments in point-of-sale technology. In order to accommodate customers' increasing preferences, modern point-of-sale (POS) systems may take a wide range of payment methods, including credit cards, cash, mobile payments, and even cryptocurrency for digital transactions among consumers. Furthermore, [these systems are increasingly cloud-based](#), offering the flexibility to access business data from anywhere, facilitating better management and scalability for growing businesses. In addition to enhancing transactional efficiency, POS systems also play a critical role in improving customer service. They support [loyalty programs](#), handle returns and exchanges seamlessly, and even [track customer purchase history to personalize service and promotions](#). This capability helps retain customers and attract new ones by offering a more customized shopping experience. Overall, POS systems are more than just tools for transaction management; they are comprehensive solutions that empower retailers to manage their stores more effectively, making them indispensable in the technology-driven retail landscape.

3. Inventory Management Systems

Inventory Management Systems are crucial uses of technology in retail that streamline stock control, enhance operational efficiency, and reduce costs. These systems provide a comprehensive view of inventory levels, product placements, and movements across various sales channels, whether in-store or online. By automating stock monitoring and updating in real time, these systems help retailers avoid the pitfalls of overstocking or understocking, which can tie up capital or result in lost sales. These systems integrate seamlessly

with other retail technologies, such as POS and e-commerce platforms, ensuring that stock levels are synchronized across all sales points. This integration is particularly important in a retail landscape that often operates on multiple channels, helping to maintain consistency and accuracy in inventory data. Additionally, advanced inventory management systems employ predictive analytics to forecast demand based on historical sales data, seasonal trends, and other market factors. This predictive capability allows retailers to proactively manage their inventory by adjusting stock levels to meet anticipated demand, optimizing inventory turnover rates, and minimizing holding costs.

Moreover, effective inventory management contributes significantly to customer satisfaction by ensuring that popular products are always available and enabling faster order fulfillment. This improves the customer experience and bolsters the retailer's reputation for reliability and service excellence. In essence, inventory management systems simplify the complexities of stock handling and provide strategic insights that can lead to more informed decision-making, better customer service, and improved profitability in retail operations.

4. Digital Marketing

Digital marketing has become one of the indispensable uses of technology for retailers seeking to attract, engage, and retain customers in the digital age. By leveraging various online platforms and technologies, digital marketing allows retailers to reach a wider audience with precision and efficiency. This approach encompasses a range of strategies, including search engine optimization (SEO), pay-per-click (PPC) advertising, social media marketing, email campaigns, and content marketing. Each of these channels offers unique benefits and allows for targeted messaging and analytics that can be fine-tuned to the behavior and preferences of specific customer segments. The power of digital marketing lies in its ability to gather and utilize extensive data about customer interactions and preferences. This data-driven approach enables retailers to create highly personalized marketing

campaigns. For example, a retailer can identify customers interested in certain products through data analysis and target them with customized promotions or content that moves them further along the sales funnel. Furthermore, the immediacy of digital marketing allows retailers to respond quickly to market trends or changes in consumer behavior, adjusting their marketing strategies in real time for maximum impact.

Additionally, digital marketing is cost-effective compared to traditional marketing methods. It offers measurable ROI, enabling retailers to see how well their campaigns perform and which channels yield the best results. This accountability helps retailers optimize their budgets and resources more effectively, focusing efforts on strategies that drive sales and customer engagement. Overall, digital marketing extends the reach and visibility of retail businesses and enhances customer interactions, making it a critical component of modern retail strategy.

5. Customer Relationship Management (CRM) Systems

Customer Relationship Management (CRM) systems are vital uses of technology in retail that facilitate managing a retailer's interactions with current and potential customers. By consolidating customer data across different points of contact, CRM systems offer a comprehensive view of customer activities, preferences, and history. This centralized repository of information enables retailers to tailor their services and communications to meet each customer's unique needs, enhancing satisfaction and loyalty. CRM systems are instrumental in segmenting customers based on various criteria, such as purchasing behavior, demographics, and engagement history. This segmentation allows retailers to implement targeted marketing strategies that are more likely to resonate with specific groups. For example, special offers can be crafted for high-value customers to reward their loyalty or personalized email campaigns can be sent to customers who have abandoned shopping carts with reminders or additional incentives to complete their purchases.

Moreover, CRM systems facilitate better

customer service by providing staff with easy access to detailed customer information, including past purchases, preferences, and previous interactions with customer service. This access enables sales associates and support staff to provide a more personalized and informed service, significantly enhancing the customer experience. Additionally, advanced CRM systems integrate with other retail systems, such as e-commerce platforms and POS systems, allowing for seamless operations and a holistic approach to customer management. By effectively leveraging CRM tools, retailers can improve customer retention rates, increase sales, and build more profitable customer relationships.

6. Mobile Technology and Retail Apps

Mobile technology has revolutionized the retail industry, providing consumers with unprecedented convenience and retailers with powerful tools for engagement and sales. Retail apps are at the forefront of this transformation, offering features like mobile shopping, personalized notifications and loyalty rewards, all accessible from a consumer's smartphone. These apps enhance the shopping experience and provide retailers with valuable data insights and direct marketing channels to consumers on the go.

Key Features and Benefits of Mobile Retail Apps:

a) Personalized Shopping Experiences

Retail apps can utilize customer data to offer personalized product recommendations based on previous purchases and browsing history. This customization makes shopping more relevant and engaging for users, potentially increasing sales.

b) Location-Based Services

Apps can send geo-targeted notifications to customers near a store's location, offering special discounts or alerting them to in-store events. This proximity marketing effectively drives foot traffic to physical stores.

c) Enhanced Customer Loyalty Programs

Mobile apps facilitate the digital management of loyalty programs, making it easier for customers to

access their rewards and for retailers to push incentives that encourage repeat visits and purchases.

d) Streamlined Checkout Processes

Retail apps, with features like mobile payment and scan-and-go technology, reduce wait times and streamline the checkout process, improving the overall customer experience.

e) Increased Customer Engagement

Apps can keep customers engaged with the brand through push notifications about new products, sales, or updates, maintaining a direct line of communication.

7. Augmented Reality (AR) in the Retail Experience

Augmented Reality (AR) is transforming the retail industry by offering an interactive and immersive shopping experience that blends the digital with the physical. Through AR, customers can visualize products in a real-world context via their smartphones or AR-enabled devices, which not only enhances their shopping experience but also aids in making informed purchasing decisions. This technology is particularly effective in sectors like apparel, beauty, and furniture, where seeing a product in context can significantly influence a buyer's choice. For instance, AR allows customers to try on clothes or makeup virtually, providing a glimpse of how the products would look without needing a physical trial. This streamlines the decision-making process and minimizes the rate of product returns, a common issue in online shopping. AR helps customers visualize how furniture would fit and appear in their living spaces in the home decor and furniture sectors. Retailers like IKEA have pioneered AR, enhancing customer satisfaction and engagement and driving sales.

Moreover, AR can create dynamic and interactive store displays that attract and engage customers. By simply pointing their device at a display, customers can access a wealth of information about the product, see it in different colors, or view it in action. Some retailers also use AR for enhanced in-store navigation, helping customers find products more easily by overlaying digital signs and

information onto the store layout through their device screens. As retailers continue to innovate, AR is becoming an essential tool in bridging the gap between online and physical shopping, offering a personalized and enriched shopping experience that customers are increasingly expecting.

8. Artificial Intelligence (AI) and Machine Learning in Retail

Artificial Intelligence (AI) and Machine Learning are revolutionizing uses of technology in retail that enable more personalized, efficient and predictive shopping experiences. These technologies analyze vast amounts of data to provide previously unreachable insights, optimizing everything from inventory management to customer engagement and pricing strategies. AI in retail enhances the customer experience by personalizing interactions based on individual shopping behaviors and preferences. For instance, AI-driven recommendation systems analyze past purchases, search history and browsing patterns to suggest products that customers are more likely to buy. This improves the customer's shopping experience and increases the likelihood of purchases.

AI chatbots and virtual assistants provide 24/7 customer service, answering questions, resolving issues and guiding users through the shopping process, which enhances customer satisfaction and streamlines the shopping experience. In the backend operations, machine learning algorithms can predict demand trends, helping retailers manage their inventory more effectively. By forecasting which products are likely in high demand, retailers can optimize their stock levels, reduce overstock and understock situations, and minimize wasted resources. AI also plays a crucial role in dynamic pricing, where prices are adjusted in real time based on demand, competition, market conditions and customer willingness to pay. This strategy helps retailers remain competitive and can lead to increased revenue and profit margins.

9. Blockchain Technology for Enhanced Transparency

Blockchain technology is one of the least expected uses of technology in retail, but it is increasingly becoming a focal point in the retail sector because it enhances transparency

and security across various processes. Known primarily for its application in cryptocurrencies, blockchain offers significant benefits for retail operations, particularly in supply chain management and customer trust. The use of blockchain in retail supply chains ensures that all transactions and movements of goods are recorded on a secure, immutable ledger. This transparency is crucial for verifying the authenticity of products, especially in industries plagued by counterfeiting, such as luxury goods, pharmaceuticals and organics. Consumers can trace the product's journey from its origin to the shelf, increasing their trust in the brand and enhancing their overall satisfaction by ensuring product authenticity. Furthermore, blockchain facilitates greater transparency in transaction processes, strengthening security and reducing fraud. Payments made via blockchain can significantly decrease the fraud often associated with traditional payment methods. This is because blockchain transactions require verification from multiple points in the network, making unauthorized changes nearly impossible.

Blockchain holds potential in customer loyalty programs, in addition to supply chain and payment transparency. By tokenizing loyalty points on the blockchain, retailers can create a more secure and user-friendly system for earning and redeeming rewards. Customers can have full visibility of their transactions and balances, and because the data is decentralized, it reduces the risks of system failures or hacks affecting critical information.

10. The Role of Big Data in Retail

Big Data is revolutionizing the retail industry by allowing businesses to harness extensive datasets to improve decision-making and enhance customer experiences. Retailers use Big Data to analyze customer behavior, preferences and trends, which help personalize marketing efforts, optimize inventory levels, and improve customer service. The insights gained from Big Data analytics enable retailers to predict future buying patterns, tailor promotions, and effectively place products to maximize sales and customer engagement. Moreover, Big Data

facilitates better operational efficiency by providing insights into the supply chain, sales performance, and customer feedback. Retailers can use this information to streamline processes, reduce costs, and enhance product quality. By integrating Big Data analytics into their strategy, retailers stay ahead of consumer trends and create a more responsive and customer-focused shopping environment. Big Data is one of the most useful uses of technology in retail to gain valuable insights on customers and operational activities.

11. Internet of Things and Smart Store Technologies

The Internet of Things is one of the uses of technology in retail that transform retail environments into smart stores, where everything from shelves to shopping carts is interconnected. Internet of Things devices collect and transmit data in real time, enabling retailers to gain immediate insights into inventory levels, customer traffic patterns, and even product interactions within the store. This connectivity helps retailers optimize store layouts, improve inventory accuracy, and enhance customer experience by reducing wait times and ensuring product availability. Smart store technologies also extend to customer interactions. For example, smart mirrors in fitting rooms can suggest accessories or other items based on the clothes a customer is trying on. Internet of Things enabled carts can guide customers to their desired products using the most efficient route. These technologies make shopping more interactive and enjoyable and increase sales opportunities by [cross-selling](#) and up-selling products directly to the customer in the store.

12. Cyber security Measures in Retail

As retail increasingly shifts online, cybersecurity becomes paramount in protecting sensitive customer information and maintaining trust. Retailers invest in advanced cybersecurity measures to safeguard their e-commerce platforms and POS systems from data breaches and cyber-attacks. Encryption, secure sockets layer (SSL) certificates and robust firewall protections are standard practices that ensure customer data is transmitted securely

over the internet.

Furthermore, as cyber threats evolve, retailers adopt proactive strategies like threat intelligence and real-time monitoring to detect and respond to potential security incidents quickly. Training employees in cyber security best practices is also critical, as human error can often lead to vulnerabilities. By strengthening their cyber security measures, retailers protect their customers and assets and reinforce their reputation as trustworthy businesses.

13. Technology-Driven Payment Solutions

Technology-driven payment solutions enhance retail checkout by offering faster, more convenient, and more secure transaction options. Mobile payments, contactless credit cards, and digital wallets are becoming commonplace, driven by consumer demand for quicker and easier payment methods.

Additionally, these payment solutions provide retailers with valuable data that can be used to analyze purchasing trends and customer preferences. This data is instrumental in refining marketing strategies and improving customer service. As payment technologies evolve, they are expected to integrate more seamlessly with other retail systems, offering even greater efficiency and personalized shopping experiences.

Conclusion

Uses of technology in retail Industry come in a variety of ways, all made to simplify the work of retailers. The technology enables all the managers of the retail company to access important information almost up to the minute and consequently to take timely and quick decisions. The success of many companies may be related to the way they have improved the operation of their business through investment in technology. Modern technology is transforming the retail environment and has helped many companies expand their operations. E-retailing is advancing at a rapid rate with retail organizations realizing the growing importance of the sale of products through these new distribution channels. The larger the retailer is, the greater would be his dependence on technology. The constantly advancing and emerging

technologies thus have a dramatic effect on retail operations.

References

<https://www2.deloitte.com/content/dam/Deloitte/in/Documents/CIP/in-cip-disruptions-in-retail-noexp.pdf>
<https://retailnext.net/blog/10-ways-technology-improves-your-retail-business>
<https://www.bdc.ca/en/articles-tools/technology/invest-technology/benefits-technology-retail-businesses>
<https://www.business.com/articles/how-mobile-technology-is-changing-retail/>
<https://www.morganstanley.com/ideas/retail-technology-trends-2024>
<https://alicepos.com/uses-of-technology-in-retail/>

Dr Shaveta Kakkar

Assistant Professor

Vaish Mahila Mahavidyalaya Rohtak
(shavetakakkar80@gmail.com)

Abstract:

Human resources managers of modern organizations whether belonging to government, public or private sector face so many challenges. But employee turnover has always been one of the biggest issue organizations faced globally and it has always been a matter of debacle for academicians and human resources professionals. Employee's turnover in layman language means leaving the organization by employees at their own will or at the request/order of employer or by way of death or retirement but surely for time being it disrupts operations, performance and work team dynamics. In India, employees of Central Armed police Forces who look after the internal security in turbulent environment created by its neighbor countries and extremists within our country faces many challenges while performing duties. The authors of the paper observed through news and debates that personnel CAPFs leave their organization earlier. The purpose of this paper is to find out employee turnover rates of CAPFs. Organizational turnover has sometimes been defined as “the ratio of the number of organizational member who have left during the period being considered divided by the average number of people in that organization during the period. It is find that employee's turnover rate (ETR) in CRPF is more than other four forces but the mean value of ETR in all five forces is not different significantly. There are need to find out reasons that causes more ETR in 2017 for making this study strategically meaningful.

Keywords: ETR (Employee's Turnover Rate), CAPFs (Central Armed Police Forces), MHA (Ministry of Home Affairs), BPRD (Bureau of Police Research and Development).

Introduction:

“Human Capital will go where it is wanted and it will stay where it is well treated. It cannot be driven, it can only be attracted.” Walter Wriston, Former chairman Citibank.

Human resources play crucial role in the sustainability and development of an organization. Human capital is one of the significant determinants of competitive advantage of an organization. The survival and growth of organization depends on innovative capability of committed and dedicated employees. Parting with an organization the employees carry knowledge, experience, and culture and value system also with them which might be capitalized by competitors. Movement of employees out of an organization being a negative aspect lead to failure of employee retention strategies followed by it. A high rate of attrition reflects negative image of an entity in the eyes of stakeholders and public at large.

In India Central Armed Police forces(CAPFs) also called paramilitary forces includes CRPF (Central Reserve Police Force), ITBP (Indo Tibetan Border Police), SSB (Sashastra Seema Bal), CISF (Central Industrial Security Force), BSF (Border Security Force) under control of MHA (Ministry of Home Affairs), Govt. of India. Some of them protect the nation's border from external aggression and other assist different State Police Force at request of state government to maintain their law and order problems, insurgency and counter terrorism. Further, at the outburst of any type of natural calamities in India as well as beyond borders these forces extend their helping hands to civil population in rescue operations. But in the recent past years as per the report of MHA, 27862 employees of various cadres in Paramilitary force have taken premature retirement or resigned and this trend is continuously increasing year after year. It is a matter of great concern that our paramilitary forces personnel who discharge their duties 24X7 days in all weather for our safety and security leaving their jobs before their retirement age. The Government spends huge amount on their training and maintaining their combat capability. Obviously, decision of an employee to leave an organization is influenced by a variety of factors like getting better job and qualification, family problems and so on. The present study does not focuses on the factors causing attrition of CAPFs rather it has tried to measure and compare the attrition rate of

paramilitary force organizations on the basis of available report of MHA, GOI.

Objectives of the study:

- 1 To measure the change of employees' turnover rate in central armed police force.
- 2 To compare the turnover rate among central armed police forces.

Research Methodology:

The study is descriptive in nature and is mostly based on secondary data. The data are collected from published report of **BPRD** (Bureau of Police Research and Development) on data on police organization (**DOPO**). In which, number of employees and recruited person within year are given according different organization wise. Employee turnover is calculated by adding recruited person with no. of person/employee at the starting of the year and subtracting no. of person/employee at the ending of that year. Some data related voluntary retirement and resignation in CAPFs are taken from annexure-I to Rajya Sabha, Q.No.3094. The period of the study is six years from 2019-2024. Descriptive frequency and ANOVA statistics are used to compare the employee turnover rate among CAPFs. The result may be helpful to take decision and making strategiest about CAPFs.

Data Analysis and Interpretation:

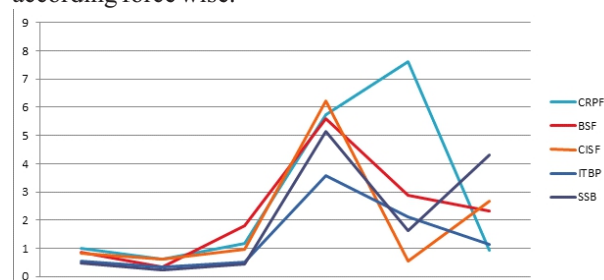
The data are analysis with the help of statistics described in research methodology. The results of the study are presented in tabular and graphical form. These are followings.

Table 1: Showing the turnover rates of different forces.

Years /Forces	BSF	CISF	CRPF	ITBP	SSB
2019	0.87	0.84	0.99	0.53	0.49
2020	0.35	0.61	0.60	0.35	0.24
2021	1.81	0.95	1.18	0.52	0.45
2022	5.6	6.24	5.75	3.57	5.14
2023	2.87	0.53	7.62	2.10	1.62
2024	2.32	2.68	0.93	1.15	4.3
Mean	2.3033	1.9750	2.8450	1.3700	2.0400
Std.Deviation	1.86025	2.2350	3.0384	1.2561	2.1477

(With the help of annexure I and II of this paper)

The above table shows the employees' turnover rate of different forces from year 2019 to year 2024. Turnover is the act of replacing an employee with a new employee and employee turnover rate is the measuring of the number of employees who leave an organization during a specified time period. Now the researcher is describes the rates according force wise.



The graph presents the employee turnover rate of different forces of CAPF. There are five forces i.e. CRPF, BSF, CISF, ITBP and SSB of which employee turnover rate (ETR) is calculated. In the above graph it is showed that employee's turnover rate of five forces is low during year 2019-2021 its means number of persons/employees who are leaving their organization is not more during this period (2019-2021) in above said organization. But in year 2022 employee's turnover rate of five forces is increasing highly and in year 2023 this rate is decreasing up to nearly its previous point of all forces excepting CRPF. In CRPF, ETR is increasing continuously from year 2020. But rate of increasing is higher in year 2022 which shows that number of leaving person is more in year 2017 of all forces and it is not better for their organization. In year 2024 ETR of CRPF is decreasing up to 0.93 which is near to the rate in year 2019 and in BSF and ITBP this rate is also decreasing. But ETR of CISF and SSB is increasing during this year. So it is concluded that there is not consistency in changes of turnover rate which is not good for the organization.

The mean value of ETR in CRPF is (2.8450) more than other four forces. So we can say that there is more movement of employee in this organization. The value of Std. Deviation and mean of ETR is less in ITBP it means as comparison of all forces movement ratio of

employee in ITBP is not more fluctuating and less personal movement in this organization. In the above table the mean and S.D. of ETR in different forces is not equal. So with the help of ANOVA statistics the researcher want to know the variance that differ these value. For this purpose there are making two assumptions by the researcher i.e.

H0: There is no significant difference in mean value of ETR.

H1: There is significant difference in mean of ETR.

Now to see the difference of mean turnover rates among different forces the researcher use ANOVA table.

ANOVA Table

ANOVA Table							
			Sum of Squares	df	Mean Square	F	Sig.
TR * forces	Between Groups (Combined)		6.890	4	1.722	.361	.834
	Within Groups		119.395	25	4.776		
	Total		126.284	29			

In this table the sig. value is 0.834 which is more than 0.05. It means the variance among different forces of mean ETR is not different and movement of employee's in organization is not differ significantly each other. So the statement of (H_0) null hypotheses is accepted. It means there is not significance difference in mean value of turnover rates.

Conclusion:

This paper is about of employee's turnover in CAPFs that describes rate of movement of employees in the organization. There are five forces included in CAPFs which protect the nation from internal and external belligerent. For this the researcher used ANOVA and graphs to present the turnover rates of different forces. It is concluded that movement of employees in CRPF is more than other forces but statistically the difference in movement of employees is not significantly. It is find out that there is higher movement of employees in year 2022 in a journey from year 2019 to year 2024 in all forces. So there are need to find the measures that causes of increasing turnover rate. It may be helpful to making strategy and finding factors about retain good employees.

References:

www.mhagov.in

www.bprd.nic.in

Abbasi, S.M. and Hollman, K.W. (2000). Turnover: the real bottom line. *Public Personnel Management*. 2 (3). p. 333-342.

Annexure 'I' to Rajya Sabha, Q.No. 3094 for 29.03.2016)

Bidisha, L. D and Mukulesh, B. (2013) Employee Retention: A Review of Literature. *Journal of Business and Management*, 14, 8-16.

Bluedorn, A., (1982), "The theories of turnover: Causes, effects, and meaning," *Research in the Sociology of Organizations*, Vol.1, pp.75-128.

Dr. Mita Mehta, Aarti Kurbett & Ravneeta Dhankhar (2014) "Study on Employee Retention and Commitment", *International Journal of Advance Research in Computer Science and Management Studies*, Vol 2, Issue 2, ISSN: 2321-7782, pp 154 – 164.

K. M., Surji. (2013). The Negative Effect and Consequences of Employee Turnover and Retention on the Organization and Its Staff. *European Journal of Business and Management*, Vol.5(No.25), 52-65

Michael O. Samuel & Crispin Chipunza(2009) "Employee Retention and Turnover: using Motivational Variables as a Panacea" , *African Journal Of Business Management* , Volume 3(8) , ISSN : 1993-8233 , pp 410 – 415.

Annexure: I (Number of employee's those quit the organization)

Forces/year	2019	2020	2021	2022	2023	2024
BSF	2108	860	4539	14014	7031	5579
CISF	1043	770	1234	8558	752	3816
CRPF	2831	1735	3480	17247	23050	2811
ITBP	409	284	426	2983	1748	955
SSB	364	183	356	4124	1308	3445

(Annual report of DOPO from BPRD organization website and Annexure 'I' to Rajya Sabha, Q. No. 3094 for 29.03)

Annexure: II (Average no. of employee's in CAPFs) calculated by formulas i.e. (no.of employees at the starting of the year+no. of employees at the ending of that year)/2.

Forces/year	2019	2020	2021	2022	2023	2024
BSF	2,42,761	2,47,295	2,50,897	2,50,184	2,44,915	2,40,095
CISF	1,24,502	1,26,580	1,29,864	1,37,081	1,42,643	1,42,433
CRPF	2,86,407	2,90,660	2,95,450	2,99,518	3,02,231	3,00,620
ITBP	77,115	80,489	82,638	83,511	83,210	82,746
SSB	74,698	76,628	78,491	80,220	80,672	79,965

Dr. Geeta Gupta,

Assistant Professor,

Vaish Mahila Mahavidyalya,

Rohtak

Dr. Nidhi Garg,

Assistant Professor,

Vaish Mahila Mahavidyalya,

Rohtak

Abstract:

Terrorism is currently a global problem that affects more than one country or region. It poses an equal threat to both the world and India. The ongoing cooperation between India's neighbour China and Pakistan has given rise to a new dimension of terrorism in South Asia, with India appearing to be the most affected. This article will examine many areas of China-Pakistan collaboration and assess their potential impact on India's security. Pakistan has always sheltered different terrorist organizations whose primary goal has been to cause unrest in India. Along with this, China has enlisted the assistance of Pakistan to destabilize India, one of its biggest rivals. China's ambitious One Belt One Road project, which is intended to promote economic development, also includes a hidden layer of terrorism and extremism. Under this project, China is attempting to surround India via the China-Pakistan Economic Corridor while simultaneously undermining Indian sovereignty. As a result of this goal, China has provided Pakistan with cutting-edge military weapons and equipment, which it is employing to bolster its terrorist organizations. Drones, guns, grenades, rocket launchers, and other military equipment provided by China are frequently captured by the Indian Army from militants attempting to cause unrest in Kashmir. Because of these factors, India's security situation becomes even more complex. India is also taking several steps to address this threat, including boosting the number of security forces, disrupting terrorists' financing networks, creating international collaboration, and exchanging intelligence with other countries. Terrorism is not only a military concern, but also a social and political one. India should comprehend and confront the core causes of terrorism. Under these circumstances, it is critical for India to find a permanent solution in order to encourage education, employment, and social peace. In short, the China-Pakistan axis is posing a severe security challenge to India through the use of terrorism. As a result, this article attempts to investigate these issues and propose suitable remedies and

alternatives.

Keywords: Terrorism, Security, Separatism, Extremism, Sanctions, Drones, Launch Pads

Introduction:

In today's modern global politics, terrorism is a problem that has impacted bilateral relations while also posing a serious threat to global security. This has impacted India as well. The China-Pakistan axis has used terrorism as an effective tool in the Indian subcontinent, pushing India to confront several problems. Actually, Pakistan was the first choice of the US and European countries because to its strategic location in South Asia, but since Osama bin Laden's killing in Abbottabad, Pakistan in 2011, their interest in Pakistan has decreased. There was a time when the US transported considerable amounts of weapons to Afghanistan via Pakistan in order to combat Soviet forces, and the Pakistani army was paid several billion dollars to do so. Pakistan exploited that money and weaponry to propagate terrorism in India's Jammu and Kashmir, and when US and European collaboration with Pakistan ended, it joined up with China to sustain its economy and the state of anarchy in India. This strategic collaboration between China and Pakistan is based on economic and military cooperation, which is a source of significant anxiety for India. China's One Belt One Road project not only creates a geopolitical atmosphere hostile to India, but it also encourages a steady flow of terrorism. To keep India unstable, China is supplying a substantial number of weapons and technology to Pakistan, allowing it to expand its army and military power. For Pakistan and China, economically and militarily robust India poses a significant challenge, and neither country can openly resort to war. As a result, significant efforts are being made to turn Jammu & Kashmir against the government by making it the focal point and stirring the local young. In addition, Pakistani and Chinese-sponsored terrorist organizations are attempting to strengthen their presence in these areas in order to put maximum pressure on India.

Pakistan sponsored terrorism in India:

Terrorism sponsored by Pakistan is a major threat throughout

South Asia. It impacts not just India, but also Nepal, Sri Lanka, and Bangladesh. Terrorist organizations operate the entire terrorism network, which is mostly supported by Pakistan's army and intelligence agencies. The primary goal of these organizations is to spread terror by destabilizing India and promoting the Pakistani agenda. Pakistan has traditionally used terrorism as part of its policies. Pakistan created instability in Kashmir by establishing terrorist groups such as Lashkar-e-Taiba and Indian Mujahideen. This not only endangered individual lives, but also produced a climate of dread and instability in society. Pakistan has tried to implement its military strategies through these groups while also attempting to



<https://www.indiatvnews.com/news/world-white-house-petition-to-declare-pakistan-state-sponsor-of-terror-sets-new-record-351020>

Pakistan use all of these strategies to successfully deflect the attention of its people and the world away from its own difficulties. Pakistan's actions have had a negative impact on India, as evidenced by the 2001 Parliament attack and the 2008 Mumbai attack. These attacks were an unsuccessful attempt to instill fear in both the Indian military and the general people. Following this, India implemented a number of effective ways to address the issue. To battle terrorists, Special Task Forces and Anti-Terrorist Squads were established under these techniques. The intelligence network was strengthened to ensure the flow of information, while terrorist camps across the border were attacked. At the political level, India attempted to expose Pakistan's terrorist operations in front of the United Nations and other international bodies, and was successful in drawing global attention to the situation. Pakistan has consistently denied these charges, Indian Journal of Social Concerns, Volume-14, Issue -63, Jan. - Feb. 2025, (An International Peer-Reviewed & Refereed Journal)

labeling them a conspiracy by India, although nations throughout the world have also denounced it in light of the country's growing awareness and internal atmosphere. Today, Pakistan-sponsored terrorism is no longer only an issue in India or the region; it has emerged as a real threat to global security. Terrorism is an idea, and it can only be eliminated by an idea. Today, all countries must unite and take the most drastic measures to put a stop to terrorism.

China's Role in Destabilizing India:

Asia's two great superpowers, India and China, are fast emerging in global affairs. Both superpowers have their own disputes, but one issue on which both countries disagree is terrorism. China fought India in 1962 and conquered Aksai Chin, which is now under Chinese control. Even after this, China claims sovereignty over

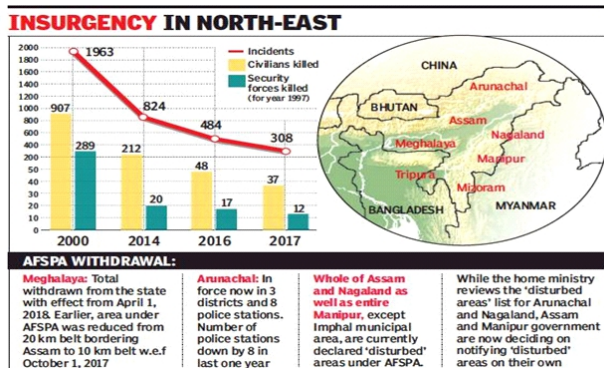


<https://www.guruswonder.in/post/how-and-why-china-invaded-india-in-1962>

China has now emerged as a major economic giant in the globe, and it is fully aware that any direct confrontation with India will result in its destruction, so it is using terrorism in partnership with Pakistan to achieve its goals. China is using separatism, extremism, and terrorism in India's North East to create widespread instability. In this step, China rejected the issue of the United Nations imposing sanctions on Jaish-e-Mohammed terrorist leader Masood Azhar. China donated cash to Alemla Jamir, the head of the NSCN (IM) organization, to incite instability in the North East, as reported by India's NIA in one of its intelligence reports. Jamir served as a cabinet minister for the National Social Council of Nagaland and is also associated to the erstwhile Naga Army. Jamir was apprehended by the NIA on the basis of documents

(RNI-UPBIL/2011/38102, ISSN-2231-5837)
JOURNAL IMPACT FACTOR NO. 8.01

containing a plan to cause trouble in the North East that was entirely tied to China. Wang Qing was arrested and deported to China in 2011 for being a Chinese spy while



<https://x.com/arunpudur/status/1670706760045432833/photo/1>

All of these occurrences demonstrate China's efforts to utterly destabilize India's North East through terrorist attacks and other means of violence.

Impact on India's National Security:

Terrorism is a serious menace to the entire world and a substantial impediment to the growth of any growing country. The growing closeness between China and Pakistan in South Asia is a source of concern for India and other neighbors. Pakistan has always been involved in terrorism-related activities, and China's financial and technical assistance exacerbates the problem. This is a significant challenge to India's national security. Previously, whether it was the attack on the Indian Parliament or the 2008 Mumbai attack, terrorists were effective in instilling fear in the country by crossing the



<https://nypost.com/2019/07/17/pakistani-authorities-arrest-leader-behind-2008-mumbai-hotel-attack/>

Today, amid the shifting dynamics, digital terrorism is emerging as a new menace. This targets significant Indian government and banking institutions. This is part of China and Pakistan's well-thought-out plot to create instability in India. Peace is returning to Jammu and Kashmir following the elimination of Articles 370 and 35-A. While Kashmiri youth used to attack army vehicles with stones, they now work alongside the army to put an end to Pakistan-sponsored terrorism in Jammu and Kashmir.

The calm elections held in 2024 demonstrate that the valley's residents have fully embraced the mainstream. The administration is taking strict measures to reduce rare terrorist attacks. Along with this, awareness is being raised among the general public.

India's Response Strategies against Terrorism:

In light of China and Pakistan's collaborative efforts, India has established a number of tactics to prevent the spread of terrorism. The primary goal of these measures is to eradicate the origins of terrorism, enhance the security system, and expand international collaboration. In light of this, India has established a special anti-terrorism unit to combat terrorist operations, as well as plans to improve police training at the state level. Most of these instances are carried out by terrorists from over the border, which is why the Indian government has begun to use digital equipment such as drones and satellites, as well as foot patrolling, to strengthen border security. To effectively respond to terrorists and undermine their morale, the army has targeted their launch platforms across the border. The government has attempted to combat terrorist financing



<https://indianexpress.com/article/india/india-others/terrorists-can-attack-soft-targets-during-barack-obamas-r-day-visit-top-army-officer/>

The government has encouraged cooperation among several agencies, such as RAW, IB, and NSG, in order to improve information and action coordination. It is also true that unless the country's citizens become aware, it will be impossible to entirely stop the terrorists' attempts. The government has also conducted several forms of awareness campaigns and supplied information to the general population on how to deal with any emergency crisis. Many anti-terrorism legislation have been passed on a global scale by bringing major countries such as the United States, United Kingdom, France, Germany, Italy, and Russia together. Many agreements have been formed to transfer information between countries. Aside from that, the government is focusing on cyber security, and fundamental education and employment standards are being met to prevent the country's youth from becoming involved in these activities.

Conclusion:

Terrorism is a major threat to not only any country, but the entire world. In the fight against it, India has not only implemented tough measures, but has also played a significant role in developing new policies by bringing other countries together. Along with the development of special troops to combat Pakistan-sponsored terrorism in India, the country has begun to use drones and satellites for increased surveillance. From eliminating terrorist launch pads on the border to presenting numerous dossiers against Pakistan on the international stage, India has been successful in its efforts, and the international community has placed a variety of penalties on Pakistan. To halt China's insurrection in the North East, Indian agencies detained several spies and banned many groups. The government has implemented unique awareness efforts in the Seven Sisters states, inspiring residents to join the mainstream. Terrorist events have been significantly reduced as a result of education and awareness, and the young of Kashmir and the North Eastern states are no longer following in the footsteps of terrorists. With this, India is heading toward a secure and affluent future, which will lead to a secure society and

India's emergence on the global scene as an economic superpower.

References:

1. Areström, F. (2020). State-Sponsored Terrorism: the Case of Pakistan.
2. Bain, W. W. (1994). Sino-Indian military modernization: the potential for destabilization. *Asian Affairs: An American Review*, 21(3), 131-147.
3. Bhoomik, A. (2004). Democratic responses to terrorism: A comparative study of the United States, Israel, and India. *Denv. J. Int'l L. & Pol'y*, 33, 285.
4. Bloomfield, A. (2021). The India-China bilateral relationship: a 'serious and enduring rivalry'. *Journal of the Indian Ocean Region*, 17(1), 5-23.
5. Crelinsten, R. D. (1989). Terrorism, counter-terrorism and democracy: The assessment of national security threats. *Terrorism and Political Violence*, 1(2), 242-269.
6. Feyyaz, M., & Husnain Bari, S. (2024). Understanding India and Pakistan's intriguing terrorism discourses. *Critical Studies on Terrorism*, 1-25.
7. Ghosh, P. A., & Das, M. (2020). Cyber terrorism and India's national security.
8. Gupta, A. (2023). Confronting Terror: A Comparative Study of India and Israel's Counterterrorism Tactics. *Jus Corpus LJ*, 4, 401.
9. Hoffmann, S. A. (1990). *India and the China crisis* (Vol. 6). Univ of California Press.
10. Jafa, Y. S. (2005). Defeating terrorism: A study of operational strategy and tactics of police forces in Jammu & Kashmir (India). *Police Practice and Research*, 6(2), 141-164.
11. Jamwal, N. S. (2003). Counter terrorism strategy. *Strategic Analysis*, 27(1), 56-78.
12. Kanwal, G. (1999). Proxy war in Kashmir: Jihad or state-sponsored terrorism?. *Strategic Analysis*, 23(1), 55-83.
13. Khemnari, S. (2018). Causes and effects of terrorism in India: An overview. *International Journal of Applied Information Systems*, 12(15), 29-32.
14. Kumar, P. *Pakistan Sponsored Terrorism: Security*

Threat to India.

15. Mahadevan, P. (2017). India and Global Discourse on State-sponsored Terrorism. *Rising Powers Quarterly*, 1(3), 185-201.
16. Panda, J. P. (2021). China as a revisionist power in Indo-Pacific and India's perception: A power-partner contention. *Journal of Contemporary China*, 30(127), 1-
17. Paul, T. V. (2005). The National Security State and Global Terrorism. *Globalization, Security, and the Nation State*, 49-67.
18. Perkovich, G., & Dalton, T. (2015). Modi's Strategic Choice: How to Respond to Terrorism from Pakistan. *The Washington Quarterly*, 38(1), 23-45.
19. Rajagopalan, R. (2019). Did India Lose China?. *The Washington Quarterly*, 42(1), 71-87.
20. Rehman, I. (2009). Keeping the dragon at bay: India's counter-containment of China in Asia. *Asian security*, 5(2), 114-143.
21. Shaikh, I. (2019). The impact of terrorism on Indian securities market. *Economic research-Ekonomska istraživanja*, 32(1), 1744-1764.
22. Singh, P. P., & Philip, D. (2023). Modelling & analysis of high impact terrorist attacks in India & its neighbors. *ISPRS International Journal of Geo-Information*, 12(4), 162.
23. Subramaniam, A. (2012). Challenges of protecting India from terrorism. *Terrorism and Political Violence*, 24(3), 396-414.
24. Wolf, S. O. (2017). Pakistan and state-sponsored terrorism in South Asia. *Terrorism revisited: Islamism, political violence and state-sponsorship*, 109-155.

Dr. Harsimran kaur,

Assistant Professor

Vipula

Research Scholar

Department of Defence and Strategic Studies

RIMT University, Mandi Govindgarh,

Punjab

"Beyond the Landfills: Transforming Rural Waste Management in India"

Ms.Gargi Sharma

Abstract:

In the contemporary era, there should be a significant focus on environmental preservation and safeguarding human health. Within this context, solid waste management demands considerable attention. It is imperative to promote awareness within society to minimize the generation of solid waste. Even though urbanization is on the rise worldwide, a significant proportion of the global population continues to live in rural areas, especially in low- and middle-income countries (LMICs). This demographic fact highlights the significance of tackling solid waste management (SWM) issues in these regions. Inappropriate methods of disposing solid waste, such as dumping and burning, can cause serious harm to the environment. Pollution of land, water sources, and the air can occur as a consequence, ultimately leading to the degradation of ecosystems and the loss of biodiversity. Rural waste management in India poses significant challenges due to diverse socio-economic factors, cultural practices, and inadequate infrastructure. This research paper aims to analyze the effectiveness of existing rural waste management practices in India, exploring the challenges faced and identifying potential strategies for improvement. Through a comprehensive review of literature and case studies, this paper seeks to provide insights into the current state of rural waste management in India and its future impact on rural India.

Keywords: Challenges, effectiveness, India, rural waste management, strategies

Introduction:

Solid Waste Management- The government's emphasis on cleanliness and sanitation has led to a notable expansion in India's solid waste management industry in recent years. The demand for effective and sustainable waste management techniques stems from the significant rise in trash generated as a result of population growth and fast urbanisation. The industry has benefited from the government's Swachh Bharat Abhiyan (Clean India Mission), which has increased demand for waste management solutions. During the forecast period (2021–2026), the solid waste management market in India is anticipated to expand at a compound

annual growth rate (CAGR) of 7.5% due to factors including expanding urbanisation, increased waste management awareness, and rising expenditures in waste management infrastructure. Due to rapid urbanization, economic growth and higher rates of urban consumption, India is among the world's top 10 countries generating municipal solid waste (MSW). The Energy and Resources Institute (TERI) said that India produces more than 62 million tonnes (MT) of trash annually. Of the whole amount of garbage produced, only 43 MT are collected; 12 MT are treated before being disposed of, and the remaining 31 MT are just dumped in wasteyards. The majority of the garbage produced is left unprocessed and even unrecorded. The nation's environmental and public health issues are mostly caused by inadequate trash collection, transportation, treatment, and disposal.

7.9 MT of hazardous garbage, 5.6 MT of plastic waste, 1.5 MT of e-waste, and 0.17 MT of biological waste are among the 62 MT of waste produced annually, according to a study published in the Journal of Urban Management (December 2021). According to a recent prediction by the Central Pollution Control Board (CPCB), India's yearly trash production is expected to reach 165 MT by 2030. The amount of hazardous, plastic, e-waste, and biomedical waste produced is also anticipated to rise accordingly.

Waste Management Is Essential in Rural Areas -The domestic waste generated in rural households of India is increasingly becoming an issue of serious concern. Though solid waste generated in rural areas is predominantly organic and biodegradable, it is becoming a major problem as the waste generated is not segregated in-situ and is of the order of 0.3 to 0.4 million metric tonnes per day, as reported by the Ministry of Drinking Water and Sanitation (MDWS), Government of India. Inconsiderate littering causes poor environmental sanitation resulting in unhealthy quality of living. Therefore, domestic-refuse should be handled responsibly. In order to manage waste in a desirable way, there should be a functional waste management system in place. Without a functional waste collection and disposal system at the Panchayat level, it is arbitrary to hold individual households responsible, or blame them of

irresponsibility. Lack of basic sanitary awareness and careless littering are the prime reasons for environmental degradation leading to poor standards of living. This urgently calls for appropriate and systematic handling of domestic refuse and only a properly designed functional waste management system can rescue our beautiful villages from the bane of pollution.

Literature Review:

In Katkar's (2012) study, optimization techniques were employed to determine the most efficient routes for municipal solid waste collection. The main aim was to develop a cost-effective system for managing solid waste. The research involved comparing the proposed approach with existing methods used by municipal authorities, focusing on cost analysis. The study highlights the critical importance of route identification for waste collection trucks, as a significant portion of the budget allocated for waste management is dedicated to collection. Even small improvements in collection operations can lead to substantial cost savings. The proposed collection system considers factors such as the locations of waste bins, road networks, and population density in the area under investigation. Additionally, it takes into account waste collection schedules, truck capacities, and characteristics. The study utilizes the minimal spanning tree technique to identify the shortest routes for collecting waste from all bins within the study region.

In Wang's (2011) study, an economic analysis and survey were conducted to assess the feasibility of implementing improved solid waste collection and treatment services in Eryuan. The research involved estimating the costs associated with managing solid waste and comparing them with the project's expenses. It was discovered that the average willingness to pay for these services equated to approximately 1% of household income, and collectively, this willingness to pay could only just cover the total project costs. The analysis revealed that the poorest households in Eryuan demonstrated a higher willingness to pay, both in terms of percentage of income and in comparison to wealthier households in areas where solid waste services were unavailable. This suggests that the poorest households possess a stronger demand for public solid waste management services, while wealthier

households have the means to resort to private measures in the absence of public services.

Khajuria (2010) conducted a research study focusing on two primary aspects of municipal solid waste management: the future requirement of landfill areas and waste disposal methods. The authors conducted correlation analyses among various factors related to municipal solid waste in Asian developing countries. They also estimated the future land area necessary for landfill sites for waste disposal in these countries. The study emphasized the importance of proper waste disposal to mitigate environmental health impacts and land resource degradation. Additionally, the researchers recommended the adoption of 3R (Reuse-Recycle-Reduce) technologies to address issues related to waste generation, safe disposal practices, and the conservation of productive land areas.

Onwughara (2010) explored different waste management hierarchy options and their environmental impacts, with a focus on health and social effects. The researcher proposed legislation of Extended Producer Responsibility to ensure sound waste management practices in developing countries like Nigeria, particularly emphasizing remanufacturing and reuse.

Niringiye (2010) investigated the willingness to pay for improved solid waste management in Kampala city using a logistic equation model. The study found a negative association between the age of household heads and their willingness to pay for solid waste management, while other variables showed no significant association. It suggested that introducing solid waste collection service charges could be successful if preceded by awareness campaigns about waste mishandling consequences and the benefits of proper waste management.

Markovic (2010) described the process of selecting an optimal solid waste management system in the city of Nis in Siberia. The research aimed at achieving maximal system efficiency and user satisfaction through system optimization. A multi-criteria method was employed for selecting the waste management system, involving detailed measurement and analysis of existing system parameters, definition of possible system variants, and the use of mathematical models like the Clarke-Wright

savings algorithm and Geographical Information System. The optimal solution aimed to improve the efficiency of the existing solid waste management system in Nis.

In Deshpande's (2006) research article, there is a focus on the significance of accurately quantifying and characterizing municipal solid waste at its source. The researcher conducts a review and outlines the key features of municipal solid waste, employing methods such as load count analysis, weight volume analysis, and material balance analysis to gauge waste quantity. The study emphasizes that the current municipal solid waste management system falls short and stresses the importance of raising awareness among residents regarding waste composition. It concludes that the design and implementation of appropriate solid waste management systems are crucial for maintaining sanitation and fostering a clean environment.

Objectives:

1. To create awareness about solid waste management practices in people of rural India.
2. To present the key challenges faced in rural waste management practices in India.
3. To explore the existing strategies and policies implemented by some government agencies, NGOs, and to address rural waste management challenges in India.

Research Methodology:

This research paper is based on data collected from secondary sources. The study's approach relied on examining and evaluating pertinent literature, employing methods like analysis, synthesis, critical thinking, and generalization. Secondary data sources encompassed research articles, websites, research publications, and books, forming the foundation for the study's exploration of waste management through a comprehensive review of various articles and research papers.

Problems Encountered by Rural Areas for Solid Waste Management:

With rapid urbanization, the country faces significant waste management challenges. Over 377 million urban residents across 7,935 towns and cities generate approximately 62 million tonnes of municipal solid waste annually. However, only a fraction of this waste is collected and treated, with a large portion ending up in

landfill sites. Efficient waste management hinges on proper waste segregation at the source, followed by recycling and resource recovery processes, and finally, the disposal of residual waste in sanitary landfills. However, the transportation costs associated with transporting municipal solid waste (MSW) to distant landfill sites pose a major limitation to this method. The major challenges faced by rural area for solid waste management are:

1. Lack of Infrastructure: Many rural areas lack proper waste collection, segregation, and disposal infrastructure. The absence of designated dumping sites and waste treatment facilities contributes to indiscriminate dumping and open burning of waste, leading to environmental pollution.

2. Limited Awareness and Education: There is often a lack of awareness and education among rural communities regarding the importance of proper waste management practices. Many residents are unaware of the health and environmental hazards associated with improper waste disposal, leading to continued unsustainable practices.

3. Cultural Practices: Traditional cultural practices, such as open defecation and littering, can hinder efforts to implement modern waste management systems. Changing deep-rooted behaviors and attitudes towards waste disposal can be challenging and requires targeted education and awareness campaigns.

4. Financial Constraints: Rural areas often have limited financial resources allocated for waste management infrastructure and services. Municipalities and local governing bodies may struggle to invest in waste collection vehicles, equipment, and personnel, further exacerbating the problem.

5. Inadequate Policy Implementation: Although India has national and state-level policies and regulations governing waste management, their implementation in rural areas can be inconsistent and ineffective. Limited enforcement of laws and regulations, coupled with a lack of monitoring and accountability mechanisms, undermines efforts to improve waste management practices.

6. Technological Constraints: Many rural areas lack access to appropriate waste management technologies and

equipment. Simple and cost-effective solutions suitable for rural contexts are needed to address waste collection, segregation, and treatment challenges.

7. Seasonal Variability: Rural areas often experience seasonal variations in waste generation, such as during festivals, agricultural activities, and tourist seasons. Managing increased waste volumes during these periods can strain existing waste management infrastructure and resources.

8. Inadequate Institutional Capacity: Rural municipalities and local governing bodies may lack the institutional capacity and expertise to effectively plan, implement, and manage waste management programs. Capacity-building efforts and institutional reforms are needed to strengthen local governance and improve waste management practices.

Initiatives by Various Stakeholders:

The Government of India has implemented various initiatives to address solid waste management in rural areas. Some of these initiatives include:

1. Swachh Bharat Mission (Gramin): Launched in 2014, the Swachh Bharat Mission (Gramin) aims to achieve universal sanitation coverage and eliminate open defecation in rural areas by constructing toilets, promoting behavioral change, and ensuring safe disposal of solid and liquid waste. The mission has a strong focus on solid waste management, including the construction of waste collection centers, segregation of waste at source, and promotion of composting and recycling.

2. Nirmal Bharat Abhiyan (formerly Total Sanitation Campaign): This program, launched in 1999 and restructured as Swachh Bharat Mission (Gramin) in 2014, focuses on promoting sanitation and hygiene practices in rural areas, including solid waste management. It emphasizes the construction of sanitary latrines, solid waste disposal facilities, and community-led initiatives for sustainable waste management.

3. Integrated Waste Management Scheme (IWMS): The IWMS, launched by the Ministry of Housing and Urban Affairs, supports rural local bodies in implementing integrated solid waste management projects. The scheme provides financial assistance for the construction of waste management infrastructure, capacity building, awareness

campaigns, and adoption of innovative waste management technologies.

4. National Rural Livelihood Mission (NRLM): NRLM, launched in 2011 by the Ministry of Rural Development, aims to alleviate poverty and promote sustainable livelihoods in rural areas. It supports the formation and capacity building of self-help groups (SHGs) and community institutions to undertake various activities, including solid waste management, as part of their livelihood enhancement initiatives.

5. Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee Act (MGNREGA): MGNREGA, enacted in 2005, guarantees 100 days of wage employment to every rural household for unskilled manual work. The program supports the creation of rural assets, including the construction of water conservation structures, rural sanitation facilities, and solid waste management infrastructure, to generate employment opportunities and improve livelihoods.

6. Rural Sanitary Marts: The Ministry of Drinking Water and Sanitation has launched the Rural Sanitary Mart scheme to promote the availability and accessibility of sanitation and waste management products in rural areas. These marts serve as distribution centers for toilets, waste bins, composting units, and other sanitation-related products, facilitating their adoption by rural households.

Several private companies have taken initiatives for solid waste management in rural India:

1. Tata Consultancy Services (TCS): TCS has implemented various waste management projects in rural areas through its corporate social responsibility (CSR) initiatives. For instance, TCS has supported the development of waste management infrastructure, including waste collection centers and recycling facilities, in rural communities. The company also conducts awareness and education programs on waste segregation and recycling practices.

2. Waste Ventures India: Waste Ventures India is a social enterprise that focuses on waste management solutions in rural and peri-urban areas. The company operates decentralized waste management systems, such as composting units and recycling facilities, in partnership with local communities. Waste Ventures India also

provides training and employment opportunities to rural youth in waste management activities.

3. Saahas Zero Waste: Saahas Zero Waste is a private company that offers waste management services, including collection, segregation, and recycling, in rural and urban areas. The company partners with municipalities, NGOs, and community-based organizations to implement integrated waste management solutions. Saahas Zero Waste also operates material recovery facilities (MRFs) and composting units to process recyclable and organic waste.

4. IL&FS Environmental Infrastructure & Services Limited (IEISL): IEISL, a subsidiary of Infrastructure Leasing & Financial Services Limited (IL&FS), provides waste management solutions in rural and urban areas across India. The company offers end-to-end waste management services, including collection, transportation, processing, and disposal. IEISL has implemented projects such as decentralized composting and biogas plants in rural communities.

5. Ramky Enviro Engineers Limited: Ramky Enviro Engineers Limited is a leading environmental services provider in India that offers waste management solutions in rural and urban areas. The company operates integrated waste management facilities, including landfill sites, composting units, and recycling plants, to manage various types of waste. Ramky Enviro Engineers Limited also undertakes community engagement and awareness programs to promote sustainable waste management practices.

Many other organizations, including startups, social enterprises, and multinational corporations, are also actively involved in addressing the waste management challenges in rural communities through innovative solutions and partnerships.

Several NGOs have been actively involved in initiatives for solid waste management in rural India:

1. Waste Warriors: Waste Warriors is an NGO that works to clean and manage waste in rural and urban areas of India, including regions near popular tourist destinations. The organization focuses on waste collection, segregation, recycling, and composting, and also conducts awareness and education programs to promote

sustainable waste management practices.

2. Goonj: Goonj is a well-known NGO that operates various initiatives related to waste management, including its "Vastra Samman" program, which collects and recycles discarded clothing and other textiles. The organization also runs projects to recycle and upcycle other types of waste materials, such as paper, plastic, and glass, in rural communities.

3. SWaCH Cooperative: SWaCH (Solid Waste Collection and Handling) is a cooperative of waste pickers and other informal waste workers that operates in Pune and Pimpri-Chinchwad, Maharashtra. The cooperative provides door-to-door waste collection services, segregates recyclable materials, and promotes composting in rural and urban areas. SWaCH also advocates for the rights and welfare of waste pickers.

4. Sustainable Green Initiative (SGI): SGI is an NGO that focuses on environmental conservation and sustainable development initiatives, including tree planting and waste management. The organization operates waste management projects in rural areas, promoting composting, vermicomposting, and biogas production to manage organic waste. SGI also conducts awareness programs and capacity-building workshops for rural communities.

5. Kasa Muktha Bellandur: Kasa Muktha Bellandur is an NGO based in Bangalore, Karnataka, that works on waste management and environmental sustainability issues. The organization collaborates with local communities, government agencies, and other stakeholders to implement waste segregation, recycling, and composting programs in rural and peri-urban areas. Kasa Muktha Bellandur also conducts clean-up drives and awareness campaigns to promote responsible waste management practices.

Many other organizations, both local and international, are also actively involved in addressing waste management challenges and promoting sustainable solutions in rural communities across the country.

Future Influence of Solid Waste Management in Rural India:

The future of solid waste management in rural India holds immense significance as the country continues to grapple

with the challenges posed by increasing urbanization, population growth, and environmental degradation. While much attention has been given to solid waste management in urban areas, the management of waste in rural regions is equally crucial for promoting sustainable development, ensuring public health, and preserving natural resources.

One of the key aspects of the future of solid waste management in rural India lies in recognizing and addressing the unique challenges faced by rural communities. Unlike urban areas, rural regions often lack access to formal waste collection services, recycling facilities, and disposal infrastructure. As a result, waste in rural areas is often disposed of indiscriminately, leading to environmental pollution, contamination of water sources, and threats to public health.

However, with the growing awareness of environmental issues and the increasing emphasis on sustainable development, there is a growing recognition of the need to improve solid waste management practices in rural India. This recognition presents an opportunity to implement innovative solutions that are tailored to the specific needs and constraints of rural communities.

One potential future direction for solid waste management in rural India is the promotion of decentralized waste management systems. Decentralized systems, such as community-based composting, biogas generation, and recycling initiatives, empower rural communities to manage their waste locally and sustainably. These systems not only reduce the environmental impact of waste disposal but also create opportunities for income generation and livelihood enhancement.

Furthermore, leveraging technology and innovation can play a significant role in the future of solid waste management in rural India. Mobile applications, IoT-enabled waste bins, and digital platforms can be utilized to improve waste collection, monitoring, and reporting processes in rural areas. These technological solutions can enhance the efficiency, transparency, and accountability of waste management systems, thereby promoting better governance and resource allocation.

Another important aspect of the future of solid waste

management in rural India is the promotion of community participation and stakeholder engagement. Empowering local communities to take ownership of waste management initiatives fosters a sense of responsibility and ownership, leading to more sustainable and resilient systems. Community-driven approaches, such as self-help groups, cooperatives, and women's collectives, can mobilize resources, knowledge, and social capital to address waste management challenges effectively.

In addition to technological and community-driven solutions, policy and regulatory interventions are essential for shaping the future of solid waste management in rural India. Governments at the national, state, and local levels need to enact and enforce policies that promote sustainable waste management practices, incentivize innovation, and support capacity building initiatives. Moreover, collaborations between government agencies, private sector entities, NGOs, and civil society organizations are crucial for fostering partnerships, sharing best practices, and mobilizing resources for waste management initiatives.

Overall, the future of solid waste management in rural India holds promise for transformative change and sustainable development. By embracing innovative solutions, fostering community participation, and strengthening policy frameworks, rural India can overcome the challenges of waste management and pave the way for a cleaner, healthier, and more sustainable future for all.

Conclusion:

Rural waste management in India presents a multifaceted challenge due to factors such as limited infrastructure, low awareness, and diverse waste compositions. However, various stakeholders have been actively engaging in initiatives to address these issues and promote sustainable waste management practices in rural areas.

One of the primary challenges has been the lack of adequate infrastructure for waste collection, segregation, and disposal in rural communities. To tackle this, several government initiatives have been launched, including the Swachh Bharat Mission (SBM) and its rural component, SBM Gramin. These initiatives aim to

improve sanitation facilities and promote cleanliness in rural areas, including proper waste management practices. Non-governmental organizations (NGOs) and community-based organizations (CBOs) have also played a significant role in implementing waste management initiatives at the grassroots level. These organizations conduct awareness campaigns, provide training on composting and recycling, and facilitate community participation in waste segregation and disposal.

Innovative approaches, such as decentralized waste management systems, have gained traction in rural areas. These systems involve setting up small-scale composting units or biogas plants at the community level, reducing the need for long-distance transportation of waste and promoting local resource recovery.

Furthermore, public-private partnerships (PPPs) have emerged as a viable model for improving waste management services in rural areas. By leveraging the resources and expertise of both the public and private sectors, PPPs can enhance waste collection, processing, and recycling infrastructure, thereby addressing the challenges of inadequate funding and technical capacity.

However, several barriers still impede effective waste management in rural India. Limited awareness and behavioral change remain key challenges, requiring sustained efforts in community engagement and education. Additionally, the lack of reliable data on waste generation and composition hampers the planning and implementation of effective waste management strategies.

In conclusion, rural waste management in India is a complex issue that requires coordinated efforts from various stakeholders, including government agencies, NGOs, communities, and the private sector. While significant progress has been made through initiatives like the Swachh Bharat Mission and community-led interventions, sustained commitment and innovation are needed to overcome remaining challenges and achieve sustainable waste management practices in rural areas. By fostering collaboration and leveraging diverse approaches, India can move closer to its goal of ensuring cleanliness and environmental sustainability in rural communities.

References:

1. Balasubramanian, M. (2018). Municipal solid waste management in India: status, problems and challenges. *IJEWM*. 2018; 21 (4): 253.
2. Coleman, R. M. (2011). The Human Rights of Sanitation for All: A Study of India. *Pac. McGeorge Global Bus. & Dev. LJ*, 24, 267
3. Gour, A. A., & Singh, S. K. (2023). Solid Waste Management in India: A State-of-the-Art Review. *Environmental Engineering Research*, 28(4)
4. Kulkarni, B. N., & Anantharama, V. (2020). Repercussions of COVID-19 pandemic on municipal solid waste management: Challenges and opportunities. *Science of the Total Environment*, 743, 140693.
5. Kumar, A., & Agrawal, A. (2020). Recent trends in solid waste management status, challenges, and potential for the future Indian cities—A review. *Current Research in Environmental Sustainability*, 2, 100011
6. Lakshminarayana, S., & Krishnaiah, Y. V. (2012). Urban Environmental Problems of Anantapur Municipal Corporation, Andhra Pradesh, India. *Journal of Applicable Chemistry*, 1(2), 182-195.
7. Malav, L. C., Yadav, K. K., Gupta, N., Kumar, S., Sharma, G. K., Krishnan, S., ... & Bach, Q. V. (2020). A review on municipal solid waste as a renewable source for waste-to-energy project in India: Current practices, challenges, and future opportunities. *Journal of Cleaner Production*, 277, 123227.
8. Malav, L. C., Yadav, K. K., Gupta, N., Kumar, S., Sharma, G. K., Krishnan, S., ... & Bach, Q. V. (2020). A review on municipal solid waste as a renewable source for waste-to-energy project in India: Current practices, challenges, and future opportunities. *Journal of Cleaner Production*, 277, 123227.
9. Vinti, G., Bauza, V., Clasen, T., Tudor, T., Zurbrugg, C., & Vaccari, M. (2023). Health risks of solid waste management practices in rural Ghana: A semi-quantitative approach toward a solid waste safety plan. *Environmental Research*, 216, 114728.
10. http://nirdpr.org.in/nird_docs/sb/doc5.pdf
10. <https://vikaspedia.in/energy/environment/waste-management/solid-and>

[liquid-waste-management-in-rural-areas](#)

11. <https://swachhbharatmission.gov.in/sbmcms/writereaddata/images/pdf/technical-notes-manuals/SLWM-in-Rural-Areas-Technical-Note.pdf>
12. http://nirdpr.org.in/nird_docs/sb/sb300818.pdf
13. <https://www.emergenviro.com/Blogger/Solid-Waste-Resource-Management-For-Rural-India>
14. <https://www.emergenviro.com/Blogger/Solid-Waste-Resource-Management-For-Rural-India>

Ms.Gargi Sharma

Assistant Professor,

Department of Commerce

DAV Centenary

College, Faridabad

Email- gargi.sharma1081@gmail.com



Abstract

Alternative Dispute resolution as the name suggests that it is substitute of traditional court system. The main objective of this method is to give speedy, easy, swift and handy justice. Alternate Dispute method is the Non-Judicial approach in which dispute is solved out of the court. It is also complementary to courts. Arbitration is the process in which dispute is solved by appointed private judge and judgement is binding on disputed parties and judge is impartial. There was dire need of alternative to adversarial court method. In other words Arbitration and Conciliation Act 1996 has taken birth for resolving the dispute but it was not satisfy the need. For reducing the burden of the courts and providing swift justice to people Arbitration and Conciliation Act 1996 was amended and Arbitration and Conciliation Amendment act 2022 was passed but this act also not achieve the objective of arbitration and conciliation in India.

Introduction

In India arbitration hub is recently promoted by the Indian Lawmakers and the changes is brought by the Arbitration and conciliation act 1996. The main objective of this act is to provide speedy and efficient justice through arbitration. In India various arbitration institutions are established especially in last five years. This system made tremendously change on the economic sector of India and also on global perception on “doing business” in India.¹ Arbitration is long tradition in India. In ancient India dispute is settled by tribunals which is chosen by the parties. During British era arbitration is recognised and encouraged by the Bengal regulations of 1772, 1780, 1781 and Cornwallis regulations of 1787. Therefore prior to the enforcement of Arbitration and Conciliation Act 1996 the Indian arbitration law was contained in three enactments the 1937 Act, 1940 Act and the 1961 Act.² For the enforcement of foreign awards a separate law is made i.e. Foreign Awards Act 1961 because 1941 Act did not deal with the enforcement. The Arbitration and Conciliation Act, 1996 has been drafted on the basis of UNCITRAL model. The earlier Acts of 1937, 1940 and 1961 were repealed. The working of this Act has also not been satisfactory. Report of Law Commission of 2001, Report of

Law Commission of 2014 reported various shortcomings and practical problems in this Act. Therefore several amendments were made in the Act during 2015.³

Literature review

Justice SB Malik, Commentary on the Arbitration and Conciliation Act (Universal Law, 2017) This book includes all the laws relating to arbitration and conciliation. The book contains all the Supreme Court judgments until 2017 on Arbitration.

Dharmendra Rautrey, Principles of Law of Arbitration in India (Wolters Kluwer, 2018) This book deals with the principles of Arbitration law in India. It clarifies the stages of arbitration proceeding, which may be used by the lawyers representing the parties in

¹(Shodhganga.inflibnet.ac.in, 2019) <https://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/180576/16/16_chapter%207%20conclusion%20and%20suggestions.pdf> accessed on 13 October 2019.

²(Lawcommissionofindia.nic.in, 2019) <<http://lawcommissionofindia.nic.in/reports/Report246.pdf>> accessed on 13 October 2019.

³'An Insight Into 2015 Amendment Act And 2018 Amendment Bill Arbitration Act, 1996' (Legal service india. com, 2019) <<http://www.legalserviceindia.com/legal/article-200-an-insight-into-2015-amendment-act-and-2018-amendment-bill-arbitration-and-conciliation-act-1996.html>> accessed on 13 October 2019. arbitration proceedings. Along with the stages, it also includes the case laws which is given by different courts in the country.

OUP India and Shashank Garg, Alternate Dispute Resolution (OUP India, 2018) ADR is the method in which two parties can resolve their dispute outside the courts through arbitration, conciliation and negotiation methods. With the rapidly increased in the business in India, the demand for the ADR system is also increased and this book includes all the contemporary aspects of the arbitration. It addresses the issues that have emerged with the amendment of the Arbitration and Conciliation act 2015.

R.S. Bachwat, Anirudh Wadhwa, Anirudh Krishnan (Eds), Law of Arbitration and Conciliation (Lexis Nexis, 2020)

This book contains all the provisions of the international

commercial arbitrations and foreign awards. It explains Model law, UNCITRAL Notes, Comments. It also includes the history of arbitration.

Dr. Anupam Kurlwal, *An Introduction to Alternate Dispute Resolution System* (Center Law publications 2020)

This book is a complete textbook of the ADR system which covers all the important topics. The literature has been thoroughly updated and also draws important amendments to the Arbitration and Conciliation Act 2015. The authors also laid down the important judgments of the High Court and Supreme Court on the Arbitration and Conciliation Act 1996.

Archit Sehgal “An Insight into 2018 Amendments Act and 2020 Amendment Bill Arbitration and Conciliation Act, 1996”

This article deals with the 2015 Amendments and also laid down the 2018 bill. It indicates the shortcoming in Amendment Act 2015.

This article discusses the Amendment 2015. This Amendment is the most important step in saving the cost and time which is biggest curse in the Indian arbitration. This is also failed and did not result in cultivating the culture of arbitration in India.

Bibek Debroy and Suparna Jain “Strengthening Arbitration and its Enforcement in India

This Article contained all the data of the Indian Arbitration courts. This also contained the data of Delhi HC and Apex Court judges and how many cases are pending in the courts. The courts are overburden due to the non-availability of the judges.

Context of the Study

In case of *Guru Nanak Foundation v. Rattan Singh & Sons* Supreme Court made observations “Interminable, time consuming, expensive court procedure prompted jurists to explore for an alternative forum, less formal, more effective and speedy for resolution of disputes avoiding procedural claptrap.”

*Food Corporation Of India v. Hari Prasad Kanoria & Others*⁴ Apex Court examined “We should make the law of arbitration simple, less technical and more accountable to the actual realities of the situations but must be responsive to the canons of justice and fair play and make the arbitrator adhere to such process and norms which will create confidence, not only by doing justice between the parties, but by creating sense that justice appears to have been done.”⁵

It is estimated that 31 million cases are pending in various courts of India, in which 59272 cases are pending in Supreme Court of India, 83 lakh cases are pending in HC of India and 270 lakh cases are pending in other courts of India. It is calculated that 12 million cases are awaited trial in Indian courts. The pendency of the cases list is also very high. In India total 32,656 civil suits are pending before the five High Courts with original jurisdiction in Bombay, Calcutta, Delhi, Madras, and Himachal Pradesh. Further the big issue which is faced by Indian judiciary is vacancies of judges. On 2016, 19.35% seat were vacant in the “Food Corporation Of India V. Chandu Construction And Another | Apex court Of India | Judgment | Law Casemine” (Casemine.com, 2019) <<https://www.casemine.com/judgement/in/5609ae56e4b01497114137d8>> accessed on 18 October 2019.

⁵ R. S. , C. S. P. , Aruneshwar Jindal Sastry Gupta, Supreme Court On Arbitration And Contracts: An Exhaustive Topical Referencer ... (2015). Supreme Courts, 42.45% in High Courts and 23.19% in subordinate courts. It is calculated further that the number of judges are also less than per million populations compared with the developed economies. Many litigants feel that after the amendments there are uncertainties, inflexibilities and technicalities in this act. People also find that arbitration method is so expensive, time consuming and distressing. In California arbitration panel are arranged and they are attached with the courts but in India there is no panel of arbitration is maintained that can work at lower levels in

consultation with courts. Arbitrators training is also not given to especially those who have not any judicial background and due to this the awards they passed can withstand judicial scrutiny.⁶ Further many projects are not completed on time which is agreed by the parties and due to this delay in completing the project. The delays in project give rise to dispute between the parties and project is not finished till a dispute is resolved. The funds are locked, loss to the government and corporate. There is no mechanism for allowing arbitrators who take much time to give awards. There is also no mechanism to see the expertise of arbitrators. The time rigidity is also another issue in which disputes are resolved by the arbitrator within one year and for the extension of time line parties are compelled to approach to courts to seek extension.⁷ There is proposal for amendment in the current Act and Amendment Bill 2009 is being considered. However in this also there is no clear definition of the scope, role and powers of the arbitrators. There are also no clear directions or provisions on the issue when two Indian parties can engage foreign seat when they are bound by the Indian law of Arbitration. Section 42A containing confidentiality is also not clear.⁸

The Arbitration and conciliation Amendment Act 2015 brought various changes and help the nations in supporting in international arbitration. Through this act parties are able to make E- Contract and also included a model fee schedule of tribunals and arbitrators. The time period for resolving the dispute is also fixed of a one year time limit and this time can be extended with the consent of the parties but not more than six months. It is interesting that fees of arbitrator is also incentivised by 5% per month for each delay month. In this amendment there are provisions for the fast track procedure defining that parties should give their acceptance of resolution within the time period of 6 months. The timeline for appointment of

⁶ sha R. S. , C. S. P., Aruneshwar Jindal Sastry Gupta, Supreme Court On Arbitration And Contracts: An

Exhaustive Topical Referencer ... (2015).shank garg, Alternative Dispute Resolution: The Indian Perspective Front Cover (Oxford University Press, 2018 2019).

⁷shashankgarg, ADR: The Indian Perspective Front Cover (Oxford University Press, 2018 2019).

⁸IBID arbitrator is six months and challenging the award has to be within one year. Arbitrator is also empowered to confer high cost on unreasonable adjournment.⁹

The Government of India decided to amend the Arbitration Act 1996 further and introduced the Amendment Bill 2019. The striking feature of this amendment is to do away with the retrospective nature of the 2015 Amendment Act. Section 26 of 2019 Amendment has clarified that any proceeding which has commenced before 2015 Amendment unless the parties otherwise agree, the amendments of 1996 by 2015 will not apply to the cases and any related court proceeding. Furthermore the confidentiality provision is also added in section 42A which “The minute that you go to arbitration, it's 100% confidential, so nobody ever hears about it”¹⁰. It is required for the arbitral institution that they have to maintain the confidentiality of the case except disclosure of award which is necessary for enforcement. This Bill also added section 42B in which arbitrator are not dragged in any unnecessary legal proceeding by the parties in any action taken by arbitrator in good faith for the parties. They are free from this fear of proceeding and exercise their function. The timeline of the proceeding is also become flexible by providing that section 29A would apply only after the completion of proceedings. Section 7 is also replaces the words “furnishes proof that” appearing under section 34(2) (a) of the act. The Supreme Court and the High Court is empowered to appoint arbitrators in the absence or failure of a procedure to appoint an arbitrator. Section 45 of part II of this act is also amended the provision and substitute the words “unless it finds” with the words “unless it prima facie finds”. In Section 11 of Arbitration and conciliation amendment bill 2019 High

Courts and Supreme Court of India have been empowered to designate specific arbitrator institution for making an appointment of arbitrators.

Research Questions

1. Whether the Arbitration and Conciliation Act provides mechanism for effective resolution of disputes in India?

a. Whether there are barrier to effectively resolved disputes through Arbitration and Conciliation in India?

b. Whether the Arbitration & Conciliation Act sufficiently addresses the barriers, if any?

⁹(Lawcommissionofindia.nic.in,2019)<<http://lawcommissionofindia.nic.in/reports/Report246.pdf>>accessed on 13 October 2019.

¹⁰Dr. Anupam Kurlwal, *An Introduction to ADR System*, 2011 P.76

2. What is the impact of Arbitration and Conciliation Amendment Act 2015?

3. Whether Arbitration and Conciliation bill 2019 is sufficient to achieve the objectives of arbitration and conciliation in India?

4. Whether institutions like Arbitration Council of India proposed in 2019 Bill will be effective in securing speedy resolution?

Aim and objects of the research is to study:

1. To assess the Arbitration and conciliation amendments in providing timely efficient and cost effective resolution of disputes.

2. The legal framework related to Arbitration and Conciliation in India.

3. The International framework related to ADR in general and Arbitration and Conciliation in particular.

4. To identify the role of courts in strengthening the Arbitration.

5. To study the effect to fire solution of disputes through

Arbitration and conciliation on pendency of cases in Indian Courts.

6. To identify barriers to the implementation and enforcement of effective provisions of Arbitration and Conciliation Amendment Act.

Methodology

The methodology adopted is by and large doctrinal in nature. The research intends to rely mainly upon the data collected from Acts, Bills, decided Cases, official records, Reports, Books, Journal Articles and published or unpublished dissertations etc. The thesis will be descriptive and analytical in presentation. Mode of citation shall be same, as is followed Journal of Indian Law Institute. Uniformity shall be maintained.

Tentative Chapterization

Chapter 1: Context and Methodology of the Study

Chapter 2: Significance and Contribution of ADR mechanisms

Chapter 3: Historical Evolution of Alternative Dispute Resolution mechanisms in India

Chapter 4: Existing Legal Framework on Arbitration in India

Chapter 5: Courts and Arbitration: During and After the Process

Chapter 6: International Framework and Select Foreign Jurisdiction on Arbitration

Chapter 7: Conclusion and Suggestions

Bibliography
1. 'An Insight Into 2015 Amendment Act And 2018 Amendment Bill Arbitration And Conciliation Act, 1996' (Legalserviceindia.com, 2019)

<<http://www.legalserviceindia.com/legal/article-e-200-an-insight-into-2015-amendment-act-and-2018-amendment-bill-arbitration-and-conciliation-act-1996.html>>accessed on 13 October 2019

2. Garg, *Alternative Dispute Resolution: The Indian Perspective* Front Cover (Oxford University Press, 2018 2019)

3. Jindal Sastry Gupta R, *Supreme Court On Arbitration And Contracts: An Exhaustive Topical Referencer ...* (2015)

4. (Lawcommissionof india. nic.in, 2019) <<http://lawcommissionofindia.nic.in/reports/Report246.pdf>> accessed on 13 October 2019
5. (Manupatrafast.in, 2019) <<https://www.manupatrafast.in/NewsletterArchives/listing/ILI%20Singh%20Associates/2017/Mar/Vol%20X%20Issue%20III.pdf>> accessed on 13 October 2019
6. Jindal Sastry Gupta R, Supreme Court On Arbitration And Contracts: An Exhaustive Topical Referencer ... (2015)
7. (Shodhganga.in flibnet. ac. in, 2019) <https://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/200686/4/04_chapter1.pdf> accessed on 13 October 2019
8. (Shodhganga.inflibnet.ac.in, 2019) <https://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/180576/16/16_chapter%207%20conclusion%20and%20suggestions.pdf> accessed on 13 October 2019
9. Yadav, *The 1996 Arbitration And Conciliation Act With Amendments Of 2015* (2015)

Dr. Santosh Kumar Sharma
(Ph.D)

M. COM, PGDIM MAT.MGMT.

MBA, LLB, LM WITH PhD.

[Mo.-9899882948-](tel:9899882948)

santosh.sharma2013@gmail.com

H. No. 5113 Sector- 03, Faridabad (121004)

Crime Control System: Women Against Crimes in Rewari District

Sangita Kumari, Dr. Pardeep Kumar Sharma

Abstract:

Crime has been defined in terms of ethics, sociology, geography, per capita and environment. In fact, a crime is an abuse committed against society and a criminal is a person who violates the legal norms of the society in which he lives. In the same way a criminal is a person who is caught and found guilty by law. Whereas law is the process which acts as a social equalizer and keeps us in control. Violation of laws and social practices is a crime. Crime occurs more or less in every society. Actually, it's happening somewhere. In order to reduce the number of people with criminal tendencies, efforts are being made mainly to control two types of crimes. Attempts are being made to reduce crime as a first aid or therapy and as a second control. The main difference between the two is that while treatment is the post-crime stage, control is the pre-crime stage. Treatment is concerned with the reformation of the offender and control is concerned with the change in social conditions and environment. Rewari district, located in Haryana, faces several challenges related to crimes against women, such as domestic violence, sexual harassment, dowry-related abuse, and gender-based discrimination. Despite legal provisions and government efforts, crimes against women persist, calling for more effective crime control strategies. **Keywords:** Crime, Geography, Attitudes, Violations, Legal Norms, Control, Criminal Tendencies, Medicine, Social Conditions, Environment, Crime Control Strategies.

Introduction:- Crimes are happening since all the individuals have started living in the group. Due to freedom, inter-relationship and conflict of interest, quarrels between them have increased and this has led to crimes. According to western scholars, the word 'polity' is derived from the Latin word 'da politia' which means 'civil rule'. In this type of governance, it is considered necessary to have a friendly relationship between the police and the citizens. A study of ancient Indian literature reveals that Ashoka, the ancient emperor of India, used the word police. Some scholars believe that the term police is derived from the term "Peel

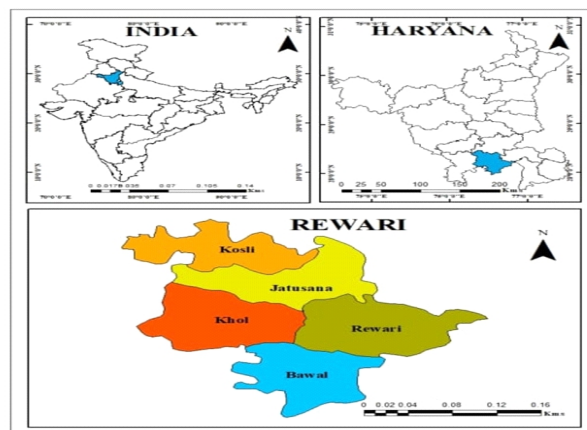
Man" which was first employed in Britain by Sir Robert Peel, but the nature and functions of police in India are much older. In the Pali language, the city guard is called police. The word police has not been properly defined in any police rules and act. Section 1 of the Police Act, 1861 defines the meaning of the word police as follows:

"The term" "police" "includes all persons who are covered under this Act." The meaning of the word police is as follows:

P = Polite, O = Obedience, L = Liability, I = Intelligent, C = Courageous, E = Efficient

It is clear from the above literal meaning of police that police is a person who is polite, obedience, liability, intelligence, courageous and efficient by nature.

Study Area:- The state of Haryana came into existence on 1st of November, 1966 as the 17th state of the Indian union. It falls in the north western part of India adjoining Delhi, the capital of the country and forms virtually a part of the National Capital Region (NCR). Haryana is bordered by Himachal Pradesh in the North, by Uttar Pradesh and Delhi in the East, by Rajasthan on its south-west and by Punjab and Chandigarh on its northwest. It covers an area of 44,212 km² and comprises 22 districts, 93 Tehsil, 140 community development blocks and 154 towns and 6,841 villages. The study area of District Rewari came into existence on 1st of November, 1989 as the 16th district of the Haryana. The Rewari district is extended between 27° 58' 03" to 28° 28' 20" north latitudes and 76° 16' 52" to 76° 51' 30" east longitudes.



Source: Prepare the Research Scholar using the help of Arc GIS

It is also part of the National Capital Region. It is located in Southern Haryana. It is bounded by Jhajjar district in the north, Gurgaon in its east and north-east and the district Mahendergarh on the west and Alwar district in south. The district headquarter is situated in Rewari city. It covers an area of 1594 kms and Rewari district have been divided in to three tehsils- Rewari, Bawal and Kosli and five blocks- Rewari, Jatusana, Kosli, Khol, and Bawal. It has 412 villages. Demographically Rewari has 900,332 populations as per 2011 census. In total population the Males population is 474,335 and Females population is 425,997. The sex ratio is 898 in 2011. Rewari has a standard literacy rate of 81.0% among male literacy 91.4% and female literacy is 69.6%. Rewari is well known for highly contribution in Indian army.

Types of Police in Rewari District: There are various types of police in Rewari district of which the major ones are as follows:

(I) General Police: People in the country and society follow the law seriously, the credit goes to the police. The security of the country and the administration of the state cannot be imagined without the police. The police protect the important election centers and the needy in the country and many states. Whether a person is misbehaving with someone in the state or a miscreant is teasing a girl on the way, the police silences the criminals with the language of their baton and punishes them for their crimes. As soon as the elections are held in the country, the police take upon themselves the full responsibility of protecting the country and society along with the smooth operation of the election system and the police try to do their job well and efficiently.

(II) Intelligence Bureau (I.B) : One of the oldest intelligence agencies in the world, the Intelligence Bureau is India's internal agency. It is commonly called IB. In 1947, the Central Intelligence Bureau was created under the Ministry of Home Affairs. The idea of its formation

was inspired by the following facts: In 1885, Major General Charles MacGregor was the Quartermaster General and head of the Intelligence Department of the British Indian Army. In the late 19th century, British India was under threat of Russian invasion, so the goal was to monitor the deployment of Russian troops in Afghanistan.

"

(III) Traffic Police: Traffic Police is the backbone of the country's traffic. The traffic police can control the daily traffic jams on the road. If there are more traffic jams on the roads, people will be unable to reach their destination on time. Traffic police reduce the problem of traffic jams so that the movement of vehicles is maintained smoothly. If there is any road accident, they control these problems. If any person violates the rules of road transport, then the traffic police can impose a fine on him. If you break more rules, your car can be seized, which you have to go to the police station and recover by taking legal action. The traffic police also make sure that no vehicle is stolen.

People have been allowed to ride bikes wearing helmets, but generally people are seen breaking the law. That's why the traffic police penalise them. At present, policemen provide more security to big politicians and rich people, which is an irony. Due to this, common people are deprived of their security. The police administration in our country should be alert and always aware, because they have to control the crimes happening in the society. But sometimes, the police are also complicit.

(IV) Homeguard Police: Home Guards were first established in 1944 in the Bombay Presidency. It was formed to assist the military forces in any emergency. The Home Guard organization is active in many states of India. But the Home Guard Department was established on 6th December 1946 to assist the police in controlling civil disturbances and communal riots in an organised manner. Here it is important to point out that the Home Guard is a voluntary party. After this, the concept of voluntary civil force was also adopted by many states. In the wake of Chinese aggression in 1962, the Centre advised the States and Union Territories to merge their existing voluntary organisation into a uniform voluntary

force known as the Home Guard.

(V) Railway Police: It was established on 2 July 1872. The Railway Protection Force is one of the best security forces in the country. It is a security force responsible for guarding the safety of railway passengers in the country, safeguarding the assets of Indian Railways and monitoring the use of railway facilities for prevention of anti-national activities. It is a central military security force with a distinct identity as a paramilitary force empowered to arrest, investigate and prosecute criminals. It is also commonly known by the short name of RPF. The Railway Protection Force is under the Ministry of Railways and has a strength of about 75,000 personnel.

(VI) Central Reserve Police Force (CRPF): Central Reserve Police Force (CRPF) is the largest of the Central Armed Police Forces of India. It functions under the Ministry of Home Affairs, Government of India. The primary role of the CRPF is to assist the State and Union Territories in police operations, law and order, and counter-terrorism. This is the he Crown Representative Police came into existence on July 27, 1939. After Indian independence, it became the Central Reserve Police Force on the enactment of the CRPF Act on 28 December 1949.

(VII) Women Police: There is a Mahila Thana in every district. Women safety is a very big issue in our country. That is why it is very important to be aware of the empowerment of women. According to government statistics, crimes against women are on the rise. It is also true that countless crimes against women go unreported. In this, many times the victim woman does not raise her voice, sometimes she is pressured and silenced. Women police stations are being opened everywhere in the country so that women are able to raise their voice against crimes. Women can lodge complaints in women police stations without any hesitation. Women are more sensitive to women's issues. In addition to the appropriate crime control system, the regional police, CID police, etc. also play their respective roles in controlling crime in the district, because the police administration in each state is at the regional level, so the police of each state is known by

~~the name of its state. For example, Haryana Police, Goa~~
Indian Journal of Social Concerns, Volume-14, Issue -63, Jan. - Feb. 2025,
(An International Peer-Reviewed & Refereed Journal)

Police, Uttarakhand Police, Uttar Pradesh Police, Bihar Police, Chhattisgarh Police etc.

Women Police System: Some common questions related to Women Police and Women Police Station can be:

- (i) What are the problems faced by women in a normal police station?
- (ii) What is a women's police station?
- (iii) What crimes can be reported at women's police stations?
- (iv) What is the procedure of proceedings in women's police stations?

Women's Desk: Now the government is also emphasizing on the establishment of women's desks in general police stations. In this, a separate desk is made in the police station, in which women can file their complaints. At the same time, if women are uncomfortable to go to the police station to file a complaint of any kind of crime, then go to the nearest women's station, where women can put their point in front of women police personnel without any hesitation.

The Rewari district police has taken a new initiative to crack down on crime against women. Under this, women help desks have started working in 8 police stations of the district from Tuesday. Separate mobile numbers have been issued for the convenience of women in all these police stations. Also, the DSP headquarters will act as the nodal officer.

Rewari Superintendent of Police Abhishek Jorwal said women help desks have been set up at police stations Sadar, Bawal, Kasola, Rampura, Kosli, Khol, Sector-6 Dharuhera and Rohtari. DSP Headquarters Hansraj has been appointed as the nodal officer, while help desk in-charge has been appointed separately in each police station. The SP said that any woman in the district can take the help of the police at any time and file a complaint. The women help desk in-charge will have to take action immediately after the complaint. Along with the in-charge, assistant female staff has also been appointed. Apart from this, women helpline number 1091 is also operational in Mahila Thana Rewari to help women.

~~The following officers have been given responsibility at~~
(RNI-UPBIL/2011/38102, ISSN-2231-5837)

JOURNAL IMPACT FACTOR NO. 8.01

the Mahila Thana Desk in Rewari district

Police Station Sadar Rewari - SI Sarveshtha, Thana Bawal - ASI Kavita, Police Station Kasola - ASI Poonam, Thana Rampura - HC Lalita, Police Station Kosli - SI Kapila, Open Police Station - ASI Archana, Sector 6 Police Station - ASI Neetu, Police Station Rohdai - HC Poonam.

Problems with ordinary police stations for women: In our country, ordinary people go home after hearing the name of the police station and the police, and women even hesitate to file a complaint. I don't have the courage to file a complaint. In normal police stations, women are not able to speak openly in front of male staff even if they gather the courage to file a complaint. Due to this, many times necessary action is not taken in sensitive cases and women do not get justice.

Women Police Station: In the staff of women police stations, from the station in-charge to the post of constable, there are women as policemen. The women police personnel working here are given special training to solve sensitive cases related to women. This makes it easier for women to lodge complaints and speak up without any hesitation. Generally, women police stations have been opened at the district level across the country, but in view of the facilities available to women, efforts are being made to open women police stations at the sub-divisional level in many states. A woman can go to the women's police stations and file a complaint about any crime that has happened to her. Cases of domestic violence, dowry harassment, molestation, rape, etc. can be reported here.

Process of proceedings in dowry women police stations: The process of proceedings in women police stations is the same as in normal police stations. Here the complaints of the women are registered by the women police and questions are asked about the crime committed with them. While complaints are filed directly in general police stations, counselling services are also provided to aggrieved women in women police stations. The main reason for this is that after the incident of crime, any victim is in a state of shock and women become more nervous in such a situation. Women police personnel working in

Mahila Police Stations are specially trained to handle such situations.

Conclusion: At present, the role of the police has undergone many changes due to new changes and technological revolution. Communication facilities like computers, mobile phones have made the work of criminals much easier and made it difficult for the police. The government has started the work of modernizing the police, computers are being installed in the police stations, mobile phones are being provided to the policemen. At present, 'cyber crimes' related to computers and the Internet are spreading rapidly. To combat these crimes, it is necessary to give computer training to the police. Terrorism has created problems for the police. The terrorists have better weapons and communication facilities than the police. The police should also be provided with the best quality of weapons, communication equipment and vehicle facilities. Police should also be trained to fight terrorists. Due to the threat of terrorism, the burden of security of important persons has also fallen on the police. For all these tasks, the police will have to be provided with the necessary means and made more capable.

Reference

1. Bhushan, P.S. Police and Society Manisha Publications Goalmarket, New Delhi, Page No. 105-111
2. S. Akhilesh, Police and Society, Radhakrishna Prakashan Pvt Ltd Ansari Marg, Daryaganj, New Delhi. Page No. 236-241
3. G. Visvesvaraya Translator: Society An Introductory Analysis R.M. McIver and Charles Page Prem Electric Press Mahatma Gandhi Marg. Agra, Page No. 319-20
4. Daghel, DS Criminology Vivek Prakashan Jawahar Nagar, Delhi, Page No. 413-417
5. Bhushan, P.S. Police and Society Manisha Publications, Gol Market, New Delhi. Page No. 110- 1156. NCRB. Crime in India-2022 snapshots (states & UTs). (2023). Available at : <https://ncrb.gov.in/uploads/nationalcrimerecordsbureau/custom/ciiyearwise2022/17016097489aCII2022Snapshots-StateandUTs.pdf>7. National Family Health Survey

(NFHS). India Fact Sheet (2021). Available at: http://rchiips.org/nfhs/NFHS-5_FCTS/India.pdf. Kumar S, Kuncharam SR. Determinants of women empowerment responsible for reducing crime against women in India. *Violence Gend.* (2020) 7:182–7. doi: 10.1089/vio.2020.00239. Maity S, Roy S. Analysis of growth and identifications of the determinants of crime against women: insight from India. *J Int Women's Stud.* (2021) 22:293–311. Available at: <https://vc.bridgew.edu/jiws/vol22/iss1/1710>. Gogoi B. Determination of social and economic factors affecting IPC crime against women in Assam. *International journal of early childhood. Spec Educ.* (2022) 1411. Koenig MA, Stephenson R, Ahmed S, Jejeebhoy SJ, Campbell J. Individual and contextual determinants of domestic violence in North India. *Am J Public Health.* (2006) 96:132–8. doi: 10.2105/AJPH.2004.05087212. Dwivedi AP, Rohra CH, Vishen MS, Mangavade AG. India as an emerging world power: Past, present and future contexts (multidisciplinary approach–VOL-1). Faridabad (HR): BMP Publisher. (2023).

13. International institute for population sciences (IIPS) and ICF In: National Family Health Survey (NFHS-5), 2019–21. India: Volume I. Mumbai (2021)14. Chaudhuri K, Chowdhury P, Reilly K. A new perspective on violent crime burden index: evidence from Indian districts. *Soc Indic Res.* (2013) 110:771–89. doi: 10.1007/s11205-011-9958-7.

15. Kabiraj P. Crime in India: a spatio-temporal analysis. *Geo J.* (2023) 88:1283–304. doi: 10.1007/s10708-022-10684-716. Raj P, Rahman MM. Revisiting the economic theory of crime a state-level analysis in India. *Cogent Soc Sci.* (2023) 9:2170021. doi: 10.1080/23311886.2023.217002117. Nautiyal T. Gender inequality and falling sex-ratio in India: an inter-state analysis. *International journal of Indian. Psychology.* (2023) 11:2369–78. doi: 10.25215/1102.23618. Barua R, Goel P, Sane R. The effect of age-specific sex ratios on crime: instrumental variable estimates from India. New Delhi: National Institute of Public Finance and Policy. (2017)19. Diez-Roux AV. Multilevel analysis in public health research. *Annu Rev Public Health.* (2000)

21:171–92. doi: 10.1146/annurev.publhealth.21.1.171

Sangita Kumari

Research Scholar of Geography
Department of Social Sciences
Baba Mastnath University
Asthal Bohar-124021, Rohtak (HR)

Dr. Pardeep Kumar Sharma

Associate Professor of Geography
Department of Social Sciences
Baba Mastnath University
Asthal Bohar-124021, Rohtak (HR)

ABSTRACT

Receipts of the Government are classified into Revenue Receipts and Non-Debt Capital Receipts. The receipts that neither increase any liabilities nor decrease the assets of the government are called revenue receipts. Revenue receipts include Tax Revenues and Non-Tax Revenues like interest receipts, dividends and profits from public enterprises and fees/charges levied for providing various services. Capital Receipts are those receipts of the government which either increase liability or cause reduction in the assets of the government. Non-Debt Capital Receipts include recoveries of loans, borrowings of the government and disinvestment of govt.'s equity holdings in public enterprises. The present paper deals with the study of trends in total receipts of central government of India.

KEY WORDS: Revenue Receipts, Capital Receipts, Disinvestment, Borrowings, Tax Revenue, Non Tax Revenue.

INTRODUCTION

The receipts of government include different sources from where government raises revenue. These receipts are of two types: Revenue Receipts and Capital Receipts.

Revenue Receipt: Revenue Receipts are current income receipts of the government from all possible sources such as taxes, profits of public enterprises, grants, etc. Revenue receipts neither increase any liability nor cause any reduction in the assets of the government. These receipts can be classified into Tax Revenue and Non-tax Revenue.

Tax Revenue: A tax is a compulsory payment that the people and the firms have to pay to the government of a country without reference to any direct benefit in return. It is imposed on the people by the government. A government gets revenue from various taxes like income tax, sales tax, service tax, excise duty, custom duty etc. Revenue from taxes has been a traditional source of income of the government. Income tax is imposed on those who earn income such as wages, salaries, rent, interest and profit. Sales tax is imposed on the sale of goods. When we purchase a commodity, a part of our payment goes to the government in form of sales tax. Service tax is the tax that we have to pay for use of a service such as telephone service. Excise duty is a tax paid by the producer

manufacturing a good. Custom duty is paid when a good is imported or exported. All taxes can be classified into two types: (a) Direct Taxes and (b) Indirect Taxes.

This difference between taxes depends on the liability of payment of tax to government and the actual burden of tax. In case of direct taxes, the liability of payment and the burden of the tax fall on the same person. For example, income tax is a direct tax because the person who is liable to pay income tax also bears the burden of this tax; The burden of this type of tax cannot be shifted on other person. But this does not happen in case of indirect taxes.

Non-Tax Revenue: The income that the government receives from the sources other than taxes is non-tax revenues. The main sources of non-tax revenues of the central government of India are:

(I) Commercial Revenue: It is received by government in the form of prices paid by people for goods and services that government provides. For example, people have to pay for electricity and for services of Railways, postal stamps, toll etc.

(ii) Administrative Revenue: It is received on account of administrative services of the government. They are as follow: (a) fees received in the form of passport fees, government hospital fees, education fees, court fee, etc. (b) fine and penalties: It is charged by government from law-breakers for disobeying rules and regulations. (c) License fee and permit fee (d) Escheat: It is the income that government receives by taking possession of property which has no legal claimant or legal heir. (e) Interest receipts (f) profits of public sector undertakings.

Capital Receipts: Capital Receipts are those receipts of the government which either generate liability or cause reduction in the assets of the government. The main sources of capital receipts of the central government are:

1) Borrowings: There are two sources from which the central government can borrow. They are:

▪ **Domestic Borrowings:** The government can borrow from domestic financial market by issuing securities and treasury bills. It can also borrow from people through various deposit schemes such as Public Provident Fund, Small Savings Schemes, and National Savings Scheme etc. These are the

borrowings of the government within the country.

▪ *External Borrowings:* In addition to domestic borrowings the government can also borrow from foreign governments and international bodies like International Monetary Fund (IMF), World Bank etc. Foreign borrowings by the government bring in foreign exchange into the domestic economy.

2) Recovery of Loans: State governments and local governments borrow from the central government. The loans recovered by the central government from state governments and local governments are capital receipts because recovery of loans reduces assets of the central government.

3) Disinvestment: Disinvestment means sale of the shares of public sector undertakings by the government. It is a main source of capital receipts by which the central government has been generating financial resources since 1991. Before 1991, the central government holds 100 percent of the shares of public sector undertakings. But after 1991, the government followed the policy of privatization of public sector undertakings. As a result, the government started selling out its shares to general public or to financial institutions. This selling of shares of public sector undertakings by the government is known as 'disinvestment of public sector undertakings.

RESEARCH METHODOLOGY

Through the present paper, it is tried to understand the trend in total receipts of Indian Government which include revenue receipts as well as capital receipts. For this purpose, secondary data is collected from various issues of India Budgets and Finance Accounts. Data from other publications of the government is also used wherever required. The Data is collected from 1980-81 to 2023-24 as per requirement. Simple averages and percentages are derived for the results.

RESULTS AND DISCUSSION

Results are divided in three sections. In the first section, trends in the total receipts of Government of India are studied. In the second section, trends in the revenue receipts of Government of India are studied and in the last section trends in capital receipts of Government of India are studied.

Trends in the Total Receipts of Government of India

(GOI)

Trends in the Total Receipts of Government of India are depicted in Table-1. Total receipts of GOI in 1980-81 were Rs. 20,291 crore which increased to Rs. 45, 14,884 crore in 2023-24. In 1980-81, share of revenue receipts was 60.98 percent to the total receipts whereas share of capital receipts was 39.02 percent to the total receipts. Share of revenue receipts was the maximum in 2016-17 which was 69.26 percent whereas share of capital receipts was only 30.74 percent to the total receipts of GOI in this year which is the lowest one. Share of capital receipts was the maximum in 2020-21 which was 53.54 percent to the total receipts whereas share of revenue receipts was the minimum in this year which was only 46.46 percent to the total receipts of GOI. This is due to the sudden increase in market borrowings and external debts. Corona Pandemic may be responsible for this.

Table-1

Trends in Total Receipts of Government of India

Total Revenue Receipts	12373	54954	192605	788471	1374203	1435233	1552916	1684059	1633920	2169905	2348413	2632281
Revenue Receipts/T total Receipts	60.98	58.49	58.93	66.21	69.26	67.13	67.04	62.81	46.46	57.23	56.04	58.30
Total Capital Receipts	7918	38997	134184	402248	609686	702650	763518	997301	1885195	1621353	1842061	1882603
Capital Receipts/T total receipts	39.02	41.51	41.06	33.78	30.74	32.87	32.96	37.19	53.54	42.76	43.96	41.70
Total receipts	20291	93951	326789	1190899	1984089	2137883	2316434	2681360	3517024	3791258	4190474	4514884

(Rs. in Crore)

Source: Government of India Budgets and Finance Accounts (various issues)

Trends in the Revenue Receipts of Government of India (GOI)

Trends in the Total Revenue Receipts of Government of India are depicted in Table-2. Total revenue receipts of GOI in 1980-81 were Rs. 12,373 crore which increased to Rs. 26, 32,281 crore in 2023-24. Out of total Revenue Receipts in 1980-81, Rs. 9358 crore were collected in form of Tax Revenue and Rs. 3015 crore in form of Non-Tax Revenue whereas in the year 2023-24, Rs. 23,30,631 crore were collected in form of Tax Revenue and Rs. 3,01,650 crore in form of Non-Tax Revenue. Collection in form of indirect taxes is comparatively more than that of direct taxes in almost all the years except 2010-11, 2018-19, 2022-23 and 2023-24. Income Tax and Corporation Tax are the main source of

income of the government. Excise Duty and Custom Duty are main indirect taxes that generate income to the government. GST was introduced in 2017-18. Rs. 4, 42,561 crore was collected in form of GST in 2017-18 which increased to Rs. 7, 80,000 crore in 2022-23. Interest receipts are the main component of Non-Tax Revenue. Rs. 1795 crore were collected in form of Interest receipts in 1980-81 which increased to Rs. 24,820 crore in 2023-24.

Table-2

Trends in Revenue Receipts of Government of India

Description	1980-81	1990-91	2000-01	2010-11	2016-17	2017-18	2018-19	2019-20	2020-21	2021-22	2022-23	2023-24
Tax Revenue(Net)	9358	42978	136658	569868	1101372	1242488	1317211	1356902	1426287	1804793	2086662	2330631
1)Direct Tax	1893	4903	49051	313501	521287	606216	723492	638363	583210	865386	1066827	1176268
Income Tax	438	1250	23766	102441	225214	258461	303508	298204	299689	427228	527616	582516
Corporation Tax	1311	5335	25177	209115	295960	347712	419953	340143	283507	438143	539202	595744
2)Indirect Tax	7465	36075	87007	256367	580085	636272	593719	718537	843077	939407	1019835	1152363
Excise Duty	3723	14100	49758	110222	286088	211393	204021	212988	367764	380508	307372	325429
Custom Duty	3409	20644	34163	97598	135372	78601	75231	71472	91070	144276	184753	200698
GST	---	---	---	---	---	442561	581559	598749	548777	675000	780000	---
Non- Tax Revenue	3015	11976	55947	218602	372831	192745	235704	327157	207633	365112	561751	301650
Interest Receipts	1795	8730	32811	19734	16229	13574	12145	12349	17113	21874	24640	24820
Total Revenue	12373	54954	192605	788471	1374203	1435233	1552916	1684059	1633920	2169905	2348413	2632281

Trends in the Capital Receipts of Government of India (GOI)

Trends in the Total Capital Receipts of Government of India are depicted in Table-3. Total capital receipts of GOI in 1990-91 were Rs. 38,997 crore which increased to Rs. 18, 82,603 crore in 2023-24. Capital Receipts in form of Market Borrowings were Rs.8001 crore in 1990-91 which increased to Rs. 11, 80,911 in 2023-24 which was almost 62 % of the total capital receipts. There was a sudden increase in Market Borrowings in 2020-21 as it was Rs 10,32,907 crore as compared to Rs. 4,73,968 crore in 2019-20. The government received Rs.8309 crore from small savings in 1990-91 and Rs. 4, 71,317 crore were received from this source in 2023-24. Capital receipts from Provident Fund and Recovery of Loans were almost same in different years except 2019-20 and 2021-22. Capital Receipts from Disinvestment were Rs.1, 00,045 crore in 2017-18 that was maximum and it was Rs.94,727 crore that the government received from disinvestment in 2018-19. Capital receipts in form of external loans were Rs. 3181

crore in 1990-91 that increased to Rs. 22,118 crore in 2023-24. External loans were the maximum in 2020-21 that were Rs. 70,180 crore. This may be due to the pressure to bring out the economy after corona pandemic.

Table-3

Trends in Capital Receipts of Government of India

Description	1990-91	2000-01	2010-11	2016-17	2017-18	2018-19	2019-20	2020-21	2021-22	2022-23	2023-24
Market Borrowings (net)	8001	73431	326399	338149	450728	422735	473968	1032907	704097	1108183	1180911
Small savings	8309	8316	11233	67435	102628	125000	240000	483733	551269	438919	471317
Provident Funds	2002	4922	12514	17745	15799	16059	11635	18514	10317	20000	20000
Special Deposits	7716	8452	---	---	---	---	---	---	---	---	---
Recovery of Loans	5712	12046	12420	17630	15633	18052	18316	19729	24737	23500	23000
Disinvestment Receipts	---	2125	22846	47743	100045	94727	50304	37897	13627	50000	51000
External Loans	3181	7505	23556	17997	7931	5519	8682	70180	36147	23874	22118
Total Capital Receipts	38997	134184	402428	609886	702650	763518	997301	1883105	1621353	1842061	1882603

Source: Government of India Budgets and Finance Accounts (various issues)

Conclusion

The study of the pattern of trends in total receipts of GOI shows that the dependency of the government on the capital receipts as compared to that of revenue receipts is increasing throughout the years. It is not a good symbol for the health of the economy because the capital receipts either decrease the assets of the government or increase the liabilities of the government.

REFERENCES

1. Nayak, A. (2017). A Study of Foreign Direct Investment in India. International Journal of Innovative Science and Research Technology. 2 (7). 487-488.
2. Singh, A.K., Shrivastav, R. K., and Gupta, L. Singh, A.K., Shrivastav, R. K., and Gupta, L. (2017). An Analysis of Trends and Patterns of Income Tax in India. VISION Journal of Indian Taxation, 4 (1), 40-41
3. Arjuna E. and Dolli, M. (2018). Trends and patterns A study of Karnataka indirect tax before GST. International Journal of Marketing and Technology. 8 (7). 12-14.
3. Ramamurthy, S. (2018). Indian Tax Revenue - An Analysis. International Journal of Economics. 6 (4). 28-29.
4. Arjuna E. and Dolli, M. (2019). Trends and Pattern of Tax and Non-Tax Revenue Analysis in Karnataka. Journal of Emerging Technologies and Innovative

Research. 6 (1). 2098-2099.

5. Naveen 2019, "Trends and Growth in the Receipts of Government of India", Ignited Minds Journals Vol. 16 (2), pp: 783 -785
Awasthi, R. and Nagarajan, M. (2020

Nayak, A. (2017). A Study of Trends and Patterns
Jalan, G. K. (2019). Impact of income tax on the

6. Jalan, G. K. (2019). Impact of income tax on the revenue of government of India. International Journal of Creative Research Thoughts. 7 (1). 843-844

Title of the Paper-“ **Trends in Receipts of Central Government of India**”

Name of the Author- Dr. Yogesh

Name of the Co-Author- Dr. Bhupinder

Designation- Assistant Professor of Economics

Present Place of Posting- Government P.G. College for Women, Rohtak

Email Id- y.ahlwat1981@gmail.com

Mobile- 9812795055

Various laws in India for Women Empowerment

Dr Kanwaljeet Kaur

INTRODUCTION

Women emerged as a distinct interest group in the nineteenth century principally in light of the fact that the bourgeoisie majority rule insurgencies of seventeenth furthermore, eighteenth century that prohibited women from their idea of equity. This qualification depended on sexual orientation. From that point forward women as a cooperative had pursued battle for acknowledgment of their rights as an individual. Women's execute multilateral part in the general public i.e. as a provider of her family, as a care taker of her family as a mother, spouse, girl and administration supplier to the general public. Notwithstanding the way that the Women's commitment to the nation's improvement is equivalent to that of their male partner, still they encounter various constraints that control them from fathoming their potential for extension. It was against this foundation that the government's everywhere throughout the world wanted to organize the interests of Women and their investment at each phase of the advancement process. Women as a center gathering of concern rose as a noteworthy subject in the Millennium Development Objective. The Millennium Development Goal are the eight objectives set by the United Nations in 2000 which will go about as measuring stick to decide the progression toward the annihilation of worldwide destitution. UN expressed that 'Sex Equality and Women Strengthening' as one of the Millennium Development Goals to be achieved by the year 2015. The term Women's strengthening infers the capacity of the Women take all the critical choices autonomously identified with her for the duration of her life expectancy that will guarantee her achievement in all parts of life.

Laws identified with ladies are arranged under two noteworthy classes:-

A. Indian Penal Code

Rape (Sec. 376 IPC) : An attacker, should be rebuffed with thorough detainment of either portrayal for a term which should not be under seven years, but rather which may reach out to detainment forever, and should likewise be subject to fine.

Hijacking and Abduction for various purposes (Sec.

363-373): Any individual who is stealing a minor for reason of asking or grabbing minor/ladies for prostitution or unlawful intercourse, should be rebuffed with detainment of either depiction for a term which may stretch out to ten years, furthermore, should likewise be subject to fine.

Manslaughter for Dowry, Dowry Deaths or their endeavors (Sec. 302/304-B IPC): Where the passing of a ladies is caused by any consumes or substantial damage or happens generally than under ordinary conditions inside seven years of her marriage and

It is demonstrated that soon before her passing she was subjected to mercilessness or badgering by her in laws or spouse, for or in association with, any request of share, such demise should be called —dowry death. Whoever confers endowment passing should be rebuffed with detainment of either depiction for a term which might not be under seven years, but rather which may reach out to detainment forever.

Torture, both mental and physical (Sec. 498-A IPC): Spouse or relative of husband of a ladies subjecting her to brutality, might be rebuffed with detainment of either portrayal for a term which may reach out to three years, and should likewise be subject to fine.

Molestation (Sec. 354 IPC): Whoever attacks or employments criminal power to any ladies, meaning to shock or knowing it to be likely that he will in this way shock her unobtrusiveness, might be rebuffed with detainment of either portrayal for a term which may reach out to five years, and should likewise be subject to fine.

B. Special Laws

Although all laws are not gender particular, the arrangements of law influencing women essentially have been inspected intermittently and alterations completed to keep pace with the rising necessities. A few demonstrations which have exceptional arrangements to protect women and their interests are:

The Dowry Prohibition Act 1961 restricts the demand, installment or acknowledgment of an endowment "as thought for the marriage", where "endowment" is characterized as a blessing requested or given as a precondition for a marriage. Endowments given without a precondition are not thought about endowment, and are

lawful, per segment 3(2). Requesting or giving of endowment can be rebuffed by detainment of up to a half year, a fine of up to Rs. 15000 or the measure of settlement (whichever is higher), or detainment up to 5 years. It supplanted a few bits of anti dowry enactment that had been sanctioned by different Indian states.

The Immoral Traffic (Suppression) Act (SITA) (1956) is the essential law managing the status of sex laborers. As per this law, whores can rehearse their exchange secretly however can't legitimately request clients in broad daylight. Sorted out prostitution (massage parlors, prostitution rings, pimping, and so forth.) is unlawful. For whatever length of time that it is done independently and deliberately, a lady can utilize her body in return for material advantage. Specifically, the law restricts a sex specialist to bear on her calling inside 200 yards of an open place. Dissimilar to similar to the case with different callings, sex specialists are not ensured under ordinary work laws, but rather they have the ideal to safeguard and recovery in the event that they want and have all the privileges of different subjects.

The Protection of Women from Domestic Violence Act 2005 is an Act of the Parliament of India instituted to ensure ladies from abusive behavior at home. Principally intended to give assurance to the spouse or female live-in accomplice from local brutality on account of the husband or male live-in accomplice or his relatives, the law additionally stretches out its insurance to ladies living in a family unit, for example, sisters, dowagers or Aggressive behavior at home under the demonstration incorporates real mishandle or the danger of mishandle whether physical, sexual, verbal, passionate or financial. Provocation by method for unlawful share requests to the lady or her relatives would likewise be secured under this definition.

The Sexual Harassment of Women at Workplace (Counteractive action, Prohibition and Redressed) Act, 2013 is an authoritative demonstration in India that tries to secure ladies from lewd behavior at their work environment. The Act will guarantee that ladies are ensured against lewd behavior at all the work places, be it in broad daylight or private. This will add to acknowledgment of their entitlement to sexual

orientation correspondence, life also, freedom and balance in working conditions all over the place. The suspicion that all is well and good at the working environment will enhance ladies' cooperation in work, bringing about their financial strengthening and comprehensive development. Under the Act, which additionally covers understudies in schools and universities and in addition patients in healing centers, managers and nearby specialists should set up grievance boards of trustees to explore all protests. Managers who neglect to agree will be rebuffed with a fine of up to 50,000 rupees.

The Family Courts Act, 1954: The Court set up to finish up upon issues identifying with family law like weddingreliefs, guardianship of kids, upkeep for spouse and youngsters and so on is named as Family Court. The Status of Women Panel in 1975 together with the report of the 59th Law Commission prescribe the Central Government to set up a different legal discussion to settle family question quickly before the start of the trial procedures. Subsequently it was chosen to build up a family court in India by the Act of 1984. The Family Court might have a similar status as that of a District Court and might practice the ward like wise and furthermore enabled to start suits and procedures in standard with the conditions stipulated by the Act. Where there is any shot for settlement of the question between the gatherings, the Family Court should defer the procedures and make strides for settlement at the most punctual. Under the Act a gathering to the debate can't guarantee the administration of a legitimate specialist starting at right, yet the Court should have the energy to choose a lawful professional. A distressed gathering may, notwithstanding, lean toward an interest to the High Court from a request of the Family Court. The High Court should outline administrators in the matters associated there with, in the wake of distributing in the Gazette. The Act additionally gives control on the Central and State Government to figure controls as recommended under the Act.

Aside from the previously mentioned lawful and established arrangements the Government of India has set up couple of exceptional activities for the security and

strengthening of women:

National Commission for Women is a statutory collection of the Government of India, for the most part worried about prompting the administration on all approach matters influencing ladies. It was built up in January 1992 under the arrangements of The Indian Constitution, as characterized in the 1990 National Commission for Women Act. The target of the NCW is to speak to the privileges of ladies in India and to give a voice for their issues and concerns. The subjects of their crusades have included endowment, governmental issues, religion, parallel portrayal for ladies in occupations, and the abuse of ladies for work. They have likewise examined police mishandle against women. The commission frequently distributes a month to month bulletin, *Rashtra Mahila* in both Hindi and English.

Reservation for Women in Local Self – Government

The 73rd Constitutional Amendment Acts cruised in 1992 by Parliament guarantee 33% of the aggregate seats for ladies on the whole chosen workplaces in nearby bodies whether in provincial zones or urban territories.

The National Plan of Action for the Girl Child for 1991- 2000, is an uncommonly figured activity design by the Government of India to secure and advance the Girl Child. This arrangement looks to anticipate female foeticide and child murder, dispense with sexual orientation separation, give safe drinking water and grub close homes, restore and shield young ladies from misuse, attack and mishandle.

National Policy for the Empowerment of Women, 2001:

The Department of Women and Child Development in the Service of Human Resource Development has arranged a—National Policy for the Empowerment of Women" in the year 2001. The objective of this Policy is to realize the progression, advancement and strengthening of ladies. The Arrangement will be broadly dispersed in order to energize dynamic interest of all partners for accomplishing its objectives.

Strategies of Women's Empowerment in India

The women in India are situated at an accepting end principally since they have stayed uninformed of their principal common also, protected rights. Male centric framework encroaches on each circle of a lady's life. In

such a circumstance frequently a dominant part of them are compelled to acknowledge the conventional practices that are hindering for both their and their youngsters' improvement. In spite of the fact that women have procured a level of budgetary and political self-governance and cognizance about their rights, yet they encounter vulnerability in achieving essential changes for killing sexual orientation disparities from the society.

The National Commission for Women have taken up the bludgeons for women's privilege and have vociferously requested a isolate criminal code for women and improved discipline for offenses against women. The proposition for making a different criminal code for women was intended to give speedy equity to the wronged women and accelerate the conviction rate. Be that as it may, this proposition neglected to earn bolster among the government and have been racked. A multi-layered system should be created to evaluate the center reasons for savagery against women. The state and society must give immediate help to casualty survivors to guarantee that the casualties can go ahead with their day by day life. In managing the issue of savagery against women imaginative levels of coordination and combination must be developed between government, common society and the family.

The state involves a focal position in starting positive approaches to end victimization women. In India it was state which started the main change measure when after part of verbal confrontation it changed the Hindu Succession Act in 1956 in which women were given equivalent appropriate to legacy.

Ceaseless broad unqualified budgetary and additionally enthusiastic help must be given to the women by both the formal set-up of the state like lawful framework, police, restorative and social insurance segments and so forth, as well as from the casual systems, for example, family, companions, kindred subjects, and neighborhood group gatherings. The possibility of self dependent autonomous women taking free choices of her life can be accomplished just by teaching women that will help them in accomplishing financial freedom, and in addition information and mindfulness about their rights. Uncommon accentuation must be given in teaching

women's on the legitimate and Human rights gave to them by the constitution. An outstanding women's activist essayist Martha Nussbaum contended that the way to improvement of women is to give them the front of equity. Regularly the wrongdoings against the women go unregistered in light of the heartless nature of the police in taking care of those issues. Along these lines formal preparing and sexual orientation refinement of police an unquestionable requirement be done as such that there is no considerable persecution of women at their hands. The legal which is in charge of giving equity to the abused women ought to likewise be sharpened on sexual orientation issues. The attention to judges and the supporters on the touchy sex issues is conceivable just on the off chance that they are instructed about them in law schools. The women's associations must endeavor to enable women by changing the states of mind of the general public towards the hurtful customary practices. A standout amongst the most fundamental errands of the different women associations and NGOs is to help women in modifying their lives and certainty. These objectives can be accomplished just if the women are enough instructed about their lawful rights and are monetarily sufficiently free to take autonomous choices of their own life.

The violence against the women in India is frequently bolstered and sustained by the indigenous societies and the religious pioneers. In this way the indigenous groups must attempt to set up instruments and methodologies that take out such age old merciless hones against the women. The religious pioneers and analysts must survey the consecrated original copies and teachings with a thought of to support populism and dignity for women.

Conclusion

Along these lines so, the Millennium Development Goal on sexual orientation correspondence and women's strengthening can be acknowledged in India just when the customary practices like female child murder, share passing, respect killings by khap panchayats, residential savagery, or sexual mishandle is wiped out. It is at exactly that point that sexual orientation equity and women's strengthening can turn into a reality.

References

1. Sen Amartya, Missing Women, British Medical Journal, 304, 587-588 (1992)
2. Bonjourplanetearth.blogspot.com.au (2014)
3. Sabharwal Sagun, K.G. Santhya and Shireen J Jejeebhoy, Determinants of Marital violence, Economic and Political Weekly, 47, 41-45 (2013)
4. www.freiheit.org_ielrc.org (2014)
5. National Commission on Population, National Population Policy 2000-Objectives, National Commission on Population, Government of India (2000(http://populationcommission.nic.in/npp_obj.htm))
6. Kishwar Madhu, Where daughters are unwanted, Manushi, 86, 15-22 (1995)
7. Jha P., R. Kumar, P. Vasa and N. Dhingra et al, Low Maleto female sex ratio of children born in India: nationalsurvey of 1.1 million households "Status of Women in India" by Shobana Nelasco, p.11
8. Kalyani Menon-Sen, A. K. Shiva Kumar (2001). "Women in India: How Free? How Equal?". United Nations. Archived from the original on 11September 2006. Retrieved December 2006.
9. "National Policy for The Empowerment Of Women (2001)". Retrieved 24 December 2006.
10. "Rajya Sabha passes Women's Reservation Bill". The Hindu (Chennai, India). 10 March 2010. Retrieved 25 August 2010.
11. "Women of India: Frequently Asked Questions". 19 December 2006. Retrieved 24 December 2006.
12. Singh, S., & Hoge, G. (2010). Debating Outcomes for _Working 'Women– Illustration from India, The Journal of Poverty, 14 (2), 197-215
13. "THE HINDU SUCCESSION (AMENDMENT) ACT, 2005". Indiacode.nic.in. 5 September 2005. Retrieved 3 April 2012.
14. "The Muslim Women (Protection of Rights on Divorce) Act". May 1986. Archived from the original on 27 December 2007. Retrieved 14 February 2008.
15. Crime in India 2012 Statistics, National Crime Records Bureau (NCRB), Ministry of Home Affairs, Govt of India, Table 5.1, page 385.
16. Intimate Partner Violence, 1993–2010, Bureau of

- Justice Statistics, US Department of Justice, table on page 10.
17. Intimate Partner Violence, 1993–2010, Bureau of Justice Statistics, US Department of Justice, table on page 10.
 18. Reuters, Thomas (2011-08-13). "The World's 5 Most Dangerous Countries For Women: Thomson Reuters Foundation Survey". Retrieved June 2011.
 19. Lakshmi Bai, Gayatri (2011-08-13). "The woman who conquered an acid attack". Retrieved August 22, 2007.
 20. Carney, Scott (August 22, 2007). "Acid Attacks on Women in India". Archived from the original on 24 August 2007. Retrieved August 22, 2007.
 21. Nadar, Ganesh (2011-07-11). "The woman who conquered an acid attack". Retrieved August 22, 2007.
 22. India's acid victims demand justice, BBC News, 9 April 2008
 23. "Child marriages targeted in India". BBC News. 24 October 2001.
 24. Chowdhury, Renuka (26 October 2006). "India tackles domestic violence". BBC News. 2006-10-27. Retrieved 25 April 2012.
 25. Mahapatro, Meerambika; Gupta, R N; Gupta, Vinay K (August 26, 2014). "Control and Support Models of Help-Seeking Behavior in Women Experiencing Domestic Violence in India". *Violence and Victims* 29 (3): 464-475.
 26. Mahapatro, Meerambika; Gupta, R N; Gupta, Vinay K (August 26, 2014). "Control and Support Models of Help-Seeking Behavior in Women Experiencing Domestic Violence in India". *Violence and Victims* 29 (3): 464-475.
 27. Mahapatro, Meerambika; Gupta, R N; Gupta, Vinay K (August 26, 2014). "Control and Support Models of Help-Seeking Behavior in Women Experiencing Domestic Violence in India". *Violence and Victims* 29 (3): 464-475.
 28. The Constitution of India, as modified upto the 1st Dec, 2007.
 29. Y.R. Manohar, 33rd Edition, 2010, the Indian Penal Code.
 30. S.K. Pachauri, Woman and Human rights.

Navigating the Complexities of Indo-U.S. Relations in the Context of Global Geopolitics

Aishwarya Awasthi



Abstract

Since the end of the Cold War in 1991, the global geopolitical landscape has undergone profound transformations, significantly influencing bilateral relations between major powers. Among these, Indo-U.S. relations have evolved from limited engagement to a strategic partnership marked by cooperation and occasional divergence. This paper delves into the intricate dynamics of Indo-U.S. relations within the broader context of global geopolitical shifts, including the rise of China, the War on Terror, and various regional conflicts. By analyzing key historical milestones, policy alignments, and strategic collaborations, the study elucidates how these global changes have shaped the bilateral relationship. Furthermore, it examines areas of convergence and contention, assessing their implications for future diplomatic and strategic collaborations. The findings suggest that while shared democratic values and mutual economic interests have fostered robust cooperation, differing regional priorities and strategic interests present ongoing challenges. The paper concludes by offering recommendations for enhancing Indo-U.S. relations amidst the evolving global order, emphasizing the need for adaptive strategies that address both common interests and divergent priorities.

Introduction

The geopolitical landscape since the dissolution of the Soviet Union in 1991 has been characterized by significant shifts that have redefined international relations and alliances. Among the most consequential of these shifts is the rise of China as a global economic and military power, the enduring impact of the War on Terror, and the myriad regional conflicts that continue to shape global stability. Within this evolving context, the bilateral relationship between India and the United States has emerged as a pivotal axis in regional and global geopolitics.

Historically, Indo-U.S. relations were marked by strategic ambiguity, especially during the Cold War era, where India's non-aligned stance often placed it at odds with U.S. geopolitical interests. However, the post-Cold War era has witnessed a significant transformation in this relationship, driven by converging economic interests, shared democratic

values, and mutual concerns over regional security threats, particularly those emanating from China's rise and terrorism. This paper aims to explore the complexities of Indo-U.S. relations against the backdrop of these global geopolitical shifts. It seeks to analyze how major geopolitical events and trends since 1991 have influenced the trajectory of Indo-U.S. relations, highlighting periods of alignment and divergence on various international issues. By examining historical contexts, policy developments, and strategic collaborations, the study endeavors to provide a nuanced understanding of the bilateral relationship and its future prospects.

Literature Review

Historical Evolution of Indo-U.S. Relations

The relationship between India and the United States has undergone significant transformations over the past three decades. During the Cold War, India's non-aligned stance often led to tensions with the U.S., particularly concerning India's nuclear policy and defense procurement practices (Pant, 2003). The economic liberalization in India during the early 1990s marked a turning point, opening avenues for enhanced economic cooperation and laying the groundwork for a strategic partnership (Narang, 2009).

Scholars like Ganguly (2001) and Pant (2008) have highlighted the gradual convergence of strategic interests between India and the U.S., particularly in the context of China's growing assertiveness in Asia. The establishment of the U.S.-India Civil Nuclear Agreement in 2008 was a landmark in this evolving relationship, symbolizing deepened trust and cooperation (Aiyar & Panagariya, 2010).

Impact of the Rise of China

China's meteoric rise as a global economic and military power has been a significant factor influencing Indo-U.S. relations. Scholars such as Sutter (2015) and Clapper (2017) argue that China's assertiveness in the South China Sea, Belt and Road Initiative, and military modernization have prompted both India and the U.S. to recalibrate their strategic priorities (Sutter, 2015; Clapper, 2017).

The strategic rivalry between India and China has led India to seek closer ties with the U.S., viewing it as a counterbalance to Chinese influence in the Indo-Pacific region (Rana, 2020). The Quadrilateral Security Dialogue

(Quad), involving the U.S., India, Japan, and Australia, exemplifies this strategic alignment aimed at ensuring a free and open Indo-Pacific (Wilson, 2019).

The War on Terror and Regional Conflicts

The September 11, 2001 attacks and the subsequent War on Terror have had profound implications for Indo-U.S. relations. India's cooperation in the U.S.-led global counterterrorism efforts marked a significant shift in bilateral ties, fostering closer intelligence-sharing and defense collaboration (Sinha, 2012).

However, regional conflicts and India's traditional non-aligned stance have sometimes led to divergent positions. For instance, India's relations with Pakistan and its historical support for Palestinian statehood have occasionally created friction with U.S. policies (Pant, 2008).

Economic and Trade Relations

Economic ties between India and the U.S. have expanded remarkably since the 1990s, with trade and investment flowing significantly in both directions (Bhagwati, 2002). The U.S. is one of India's largest trading partners, and the two countries have collaborated extensively in sectors such as information technology, pharmaceuticals, and aerospace (Bhagwati, 2002; Narang, 2009).

The negotiation of the U.S.-India Trade Policy Forum (TPF) underscores the economic interdependence between the two nations, aiming to resolve trade disputes and enhance market access (Narang, 2010).

Technological and Defense Collaboration

Technological collaboration has been a cornerstone of Indo-U.S. relations, encompassing areas such as space exploration, defense technology, and cybersecurity (Kapoor, 2014). Joint ventures like the U.S.-India Civil Nuclear Agreement and cooperative engagements in space missions illustrate the depth of technological cooperation (Aiyar & Panagariya, 2010).

Defense collaboration has also intensified, with joint military exercises, defense procurement agreements, and intelligence-sharing becoming more prevalent (Krepon, 2016). The establishment of the Defense Technology and Trade Initiative (DTTI) is a testament to the growing defense ties between the two nations (Krepon, 2016).

Challenges and Divergences

Despite the robust collaboration, Indo-U.S. relations are not devoid of challenges. Issues such as visa restrictions, trade imbalances, and differing strategic priorities occasionally create friction (Pant, 2008). Additionally, India's strategic autonomy and its nuanced approach to regional conflicts sometimes lead to divergences with U.S. policies (Rana, 2020).

Future Prospects

Looking ahead, scholars like Sanger (2020) and Jain (2021) posit that Indo-U.S. relations will continue to deepen, driven by mutual strategic interests and economic interdependence. However, the relationship will require careful navigation of emerging challenges and a commitment to aligning strategic priorities in a rapidly changing global order (Sanger, 2020; Jain, 2021).

Gaps in Existing Literature

While existing literature provides comprehensive insights into the historical and current state of Indo-U.S. relations, there is a need for more nuanced analyses that integrate the multifaceted impact of global geopolitical shifts. Additionally, empirical studies assessing the effectiveness of strategic collaborations and their outcomes on bilateral relations remain limited. This paper seeks to address these gaps by offering an integrated analysis of Indo-U.S. relations within the context of evolving global geopolitics.

Methodology

This study employs a qualitative research methodology, utilizing a comprehensive review of secondary sources, including academic journals, policy papers, government reports, and reputable news outlets. The analysis is structured around key geopolitical shifts since 1991, examining their influence on Indo-U.S. relations through thematic categorization. Historical case studies and policy analysis techniques are employed to elucidate the complexities and dynamics of the bilateral relationship.

The Rise of China and Its Impact on Indo-U.S. Relations

China's Economic and Military Ascendancy

Since the early 1990s, China has emerged as a formidable global power, experiencing unprecedented economic growth and expanding its military capabilities. China's Belt and Road Initiative (BRI) exemplifies its ambition to

enhance global connectivity and influence, spanning infrastructure projects across Asia, Africa, and Europe (Rolland, 2017). Concurrently, China's military modernization, characterized by advancements in naval power, missile technology, and cyber warfare capabilities, has altered the strategic balance in the Indo-Pacific region (Shambaugh, 2013).

Strategic Rivalry and the Indo-Pacific Strategy

The rise of China has been a catalyst for strategic realignment among major powers, notably the United States and India. The U.S. Indo-Pacific Strategy, articulated in 2017, aims to counterbalance China's influence by strengthening alliances and partnerships in the region (U.S. Department of State, 2017). India, sharing maritime boundaries with China and experiencing border disputes, views the U.S. as a strategic partner essential for maintaining regional stability (Mohan, 2020).

The Quad—comprising the U.S., India, Japan, and Australia—emerges as a cornerstone of this strategic alignment, focusing on ensuring a free and open Indo-Pacific through collaborative efforts in security, infrastructure, and economic development (Wilson, 2019). This multilateral framework signifies a collective approach to addressing China's assertiveness and fostering regional resilience.

Defense and Security Collaborations

In response to China's rise, Indo-U.S. defense and security collaborations have intensified. Joint military exercises such as the Malabar Navy Exercise exemplify the growing interoperability and strategic coordination between the two nations (Krepon, 2016). Additionally, the establishment of the Defense Technology and Trade Initiative (DTTI) facilitates the exchange of defense technologies and promotes defense industrial cooperation (Krepon, 2016).

Moreover, intelligence-sharing agreements and collaborative efforts in cybersecurity aim to enhance mutual capabilities in countering asymmetric threats posed by China's technological advancements (Kapoor, 2014). These strategic collaborations underscore the deepening security nexus between India and the U.S., driven by shared concerns over China's regional

ambitions.

Economic and Technological Dimensions

Economic interdependence between India and the U.S. serves as a counterbalance to China's economic clout. Bilateral trade has grown substantially, with both nations investing in each other's economies across sectors such as information technology, pharmaceuticals, and aerospace (Bhagwati, 2002). The U.S. remains one of India's largest trading partners, fostering mutual economic growth and stability (Narang, 2009).

Technological collaboration further strengthens this economic bond, with joint ventures in sectors like space exploration, renewable energy, and information technology. Initiatives such as the U.S.-India Space Collaboration Agreement facilitate cooperative space missions, enhancing technological exchange and innovation (Aiyar & Panagariya, 2010).

The War on Terror and Its Influence on Bilateral Relations

Post-9/11 Realignments

The September 11, 2001 attacks marked a pivotal moment in global geopolitics, leading to the U.S.-led War on Terror. India's strategic recalibration in response to this global shift has significantly influenced its relationship with the U.S. (Sinha, 2012). Aligning with the U.S. in counterterrorism efforts has enhanced bilateral trust and cooperation, particularly in intelligence-sharing and defense collaborations.

Counterterrorism Cooperation

India's cooperation in counterterrorism has been multifaceted, involving intelligence-sharing, joint training programs, and collaborative efforts in combating terrorism financing. The U.S.-India Comprehensive Global Strategic Partnership, established in 2010, underscores this cooperation, with counterterrorism being a key pillar (Pant, 2008).

Furthermore, India's role in regional security dynamics, particularly in countering terrorism emanating from neighboring regions like Pakistan and Afghanistan, aligns with U.S. strategic interests in promoting stability and combating extremist threats (Sinha, 2012). This shared objective has fortified the strategic partnership, fostering deeper collaboration in security and defense domains.

Challenges and Divergences

Despite enhanced cooperation, challenges persist in aligning Indo-U.S. approaches to counterterrorism. India's handling of internal security issues, particularly concerning Kashmiri militants and non-state actors, occasionally diverges from U.S. perspectives, leading to nuanced disagreements (Pant, 2008).

Moreover, differing approaches to regional conflicts and the complex geopolitical landscape of South Asia necessitate a delicate balancing act in bilateral relations. India's strategic autonomy and its efforts to maintain regional equidistance sometimes result in policy divergences with the U.S., particularly concerning Pakistan and Afghanistan (Rana, 2020).

Regional Conflicts and Bilateral Alignments

South China Sea Disputes

The South China Sea has emerged as a critical flashpoint in Indo-U.S. relations, primarily due to China's expansive territorial claims and militarization of disputed areas. India's maritime interests in the Indian Ocean and its participation in Freedom of Navigation Operations (FONOPs) conducted by the U.S. highlight the strategic convergence in ensuring maritime security (Sutter, 2015). Both nations view the South China Sea as a vital maritime corridor essential for global trade and regional stability. Collaborative efforts in advocating for international maritime laws and norms reflect their shared commitment to maintaining a rules-based order (Mohan, 2020).

Afghanistan and Pakistan

The prolonged conflict in Afghanistan and the complex dynamics with Pakistan have significant implications for Indo-U.S. relations. India's investment in Afghanistan's reconstruction and its role in regional security align with U.S. objectives of stabilizing Afghanistan and countering extremist threats (Sinha, 2012).

However, India's engagement with Pakistan, especially concerning cross-border terrorism, requires nuanced coordination with U.S. policies aimed at encouraging peace and dialogue between the two countries. Balancing strategic interests in both Afghanistan and Pakistan necessitates continuous diplomatic engagement and policy synchronization (Rana, 2020).

Middle East Dynamics

Indo-U.S. relations are also influenced by developments in the Middle East, particularly regarding energy security and regional stability. India's dependence on Middle Eastern oil imports intersects with U.S. interests in ensuring the free flow of energy resources and countering extremist influences (Bhagwati, 2002).

Collaborative engagements in the Middle East, including joint counterterrorism initiatives and economic partnerships, reflect the strategic alignment between India and the U.S. in addressing regional challenges (Pant, 2008).

Areas of Alignment and Divergence

Strategic Alignment

India and the U.S. share strategic interests in promoting a free and open Indo-Pacific, countering China's assertiveness, and enhancing defense and security cooperation. Initiatives like the Quad and joint military exercises exemplify their strategic alignment (Wilson, 2019).

Economic collaboration, technological exchange, and shared democratic values further strengthen their bilateral ties, fostering a comprehensive strategic partnership that extends beyond mere transactional relations (Narang, 2009).

Areas of Divergence

Despite substantial alignment, areas of divergence persist. Issues such as trade imbalances, differing approaches to regional conflicts, and India's strategic autonomy occasionally create friction (Pant, 2008).

For instance, India's non-aligned stance and its historical ties with countries like Russia sometimes lead to policy differences with the U.S., especially concerning defense procurements and regional alliances (Rana, 2020).

Moreover, human rights concerns and differing democratic practices occasionally become points of contention, necessitating diplomatic finesse to navigate these sensitive issues (Jain, 2021).

Implications for Future Diplomatic and Strategic Collaborations

Strengthening Strategic Partnerships

The evolving global order necessitates a robust and adaptive strategic partnership between India and the U.S. Enhancing defense collaborations, intelligence-sharing,

and joint technological initiatives will be pivotal in addressing emerging security challenges (Krepon, 2016).

Economic Integration and Trade

Further integration of economic policies and trade agreements can solidify the bilateral relationship. Addressing trade imbalances, enhancing market access, and fostering innovation-driven economic collaborations will be essential for sustainable growth (Bhagwati, 2002).

Multilateral Engagements

Active participation in multilateral forums and collaborative engagements in global governance institutions can enhance Indo-U.S. strategic coherence. Joint leadership in addressing global challenges like climate change, pandemics, and cybersecurity threats will reinforce their role as responsible global actors (Sanger, 2020).

Navigating Divergences

Proactively addressing areas of divergence through diplomatic dialogue and policy coordination will be crucial. Establishing mechanisms for conflict resolution and mutual understanding can mitigate potential frictions and sustain the momentum of the bilateral relationship (Jain, 2021).

Conclusion

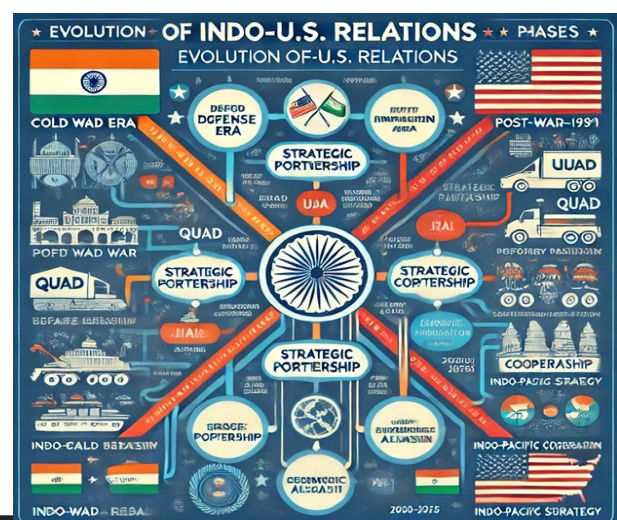
Indo-U.S. relations have traversed a complex trajectory marked by strategic alignments and occasional divergences, significantly influenced by global geopolitical shifts since 1991. The rise of China, the War on Terror, and various regional conflicts have reshaped the bilateral dynamics, fostering a strategic partnership grounded in shared interests and mutual concerns.

While strategic alignments in areas like defense cooperation, economic integration, and technological collaboration underscore the depth of the partnership, areas of divergence necessitate continuous diplomatic engagement and policy synchronization. The future of Indo-U.S. relations hinges on the ability to adapt to the evolving global order, addressing emerging challenges, and capitalizing on shared opportunities.

By fostering robust strategic collaborations, enhancing economic interdependence, and navigating divergences with diplomatic finesse, India and the United States can sustain and deepen their bilateral relationship. This partnership not only contributes to regional stability and economic prosperity but also plays a pivotal role in shaping the broader contours of global geopolitics.

References

1. Aiyar, S., & Panagariya, A. (2010). *India and the United States: Strategic Partners*. New York: Oxford University Press.
2. Bhagwati, J. (2002). *Free Trade Today*. Princeton, NJ: Princeton University Press.
3. Clapper, L. (2017). *China's Military Strategy and Indo-U.S. Relations*. Washington, D.C.: RAND Corporation.
4. Ganguly, S. (2001). *The United States and India: The Hard Road to Partnership*. New Delhi: HarperCollins.
5. Jain, R. (2021). *Democratic Alliances and Strategic Autonomy: The Indo-U.S. Paradigm*. *International Relations Journal*, 45(3), 289-305.
6. Kapoor, A. (2014). *Technological Collaboration in Indo-U.S. Relations*. *Technology and International Affairs*, 29(2), 134-150.
7. Krepon, M. (2016). *The U.S.-India Defense Relationship: Challenges and Opportunities*. *Defense Studies Review*, 12(1), 45-60.
8. Mohan, C. R. (2020). *India and the Indo-Pacific Strategy: Alignments and Divergences*. *Asian Affairs Journal*, 51(4), 567-582.
9. Narang, V. (2009). *India and the United States: An Uneasy Partnership*. New Delhi: Oxford University Press.
10. Pant, H. V. (2003). *India and the United States: The Evolution of a Strategic Partnership*. (RNI-UPBIL/2011/38102, ISSN-2231-5837)



- Asian Survey, 43(3), 501-520.
11. Pant, H. V. (2008). *India and the United States: A Critical Overview*. International Affairs, 84(2), 371-385.
 12. Rana, M. (2020). *Strategic Autonomy and Indo-U.S. Relations in the Age of China*. Strategic Analysis, 44(1), 33-47.
 13. Rolland, N. (2017). *China's Belt and Road Initiative: Economic Geography, Institutions, and Regionalism*. Cambridge: Cambridge University Press.
 14. Sanger, D. E. (2020). *The Indo-Pacific Strategy and U.S.-India Relations*. Foreign Affairs, 99(4), 112-126.
 15. Sinha, A. (2012). *India's Role in the Global War on Terror*. Contemporary South Asia, 20(3), 267-280.
 16. Shambaugh, D. (2013). *China's Future*. Polity Press.
 17. Sutter, R. G. (2015). *Asia's Cauldron: The South China Sea and the End of a Stable Pacific*. Yale University Press.
 18. U.S. Department of State. (2017). *U.S. Indo-Pacific Strategy*. Retrieved from <https://www.state.gov/u-s-indo-pacific-strategy>
 19. Wilson, I. (2019). *The Quad and Indo-Pacific Security*. Journal of International Security, 58(2), 201-220.

Aishwarya Awasthi
 Research
 Scholar(political Science)
 Chhatrapati Shahu Ji
 Maharaj University,kanpur

ABSTRACT

Social Entrepreneurship has been referred as a social movement field/ domain and profession. It is influenced by the entrepreneurial spirit of business enterprise that exploits opportunities to enhance social wealth. Entrepreneurship is related to economic activities and being ruthlessly profit making and social benefits or societal wellbeing. With the concept of Social Entrepreneurship has helped in serving the society in more meaningful manner than ever before along with living the spirit of entrepreneurship with its fullest. Economic Entrepreneurship focusses on economic needs, on the other hands, Social Entrepreneurship focusses on social needs. People involved in social entrepreneurship are those who have powerful ideas to improve people's lives and solve social problems on a large scale across the world. Social Entrepreneurship has increased its scope and importance in recent years. Social Entrepreneurship can change or impact on the social setup which developed nations accordingly. In this study, we shall discuss the concept of Social Entrepreneurship and characteristics of social entrepreneurs. We shall also discuss the relevance of Social Entrepreneurship in realizing the United Nations Sustainable Development Goals (SDGs).

KEYWORDS

Social Entrepreneurship, Social Innovation, Social Needs, Social Entrepreneurs, Economic Entrepreneurs.

INTRODUCTION

Entrepreneurship is the core force of economic growth; the economic development which one experiences is just due the prevailing force of entrepreneurship. The entrepreneurship has many different types. One of them is Social Entrepreneurship. This type of entrepreneurship is different in nature and has different blends of components. The main objective of Social Entrepreneurship stands different than the usual objectives of entrepreneurship. Its main objective to benefits for society as well as economic benefits. Most of the times, Social Entrepreneurship is used as a Social Service and Social Work. In Social Work, NGOs or Social Workers only focus on work which is being done for the poor or deprived section; it is not for profits, but for service. Social

Entrepreneurship is a very beneficial phenomenon as it addresses the bottom of the pyramid of market by offering products and services, which are both innovative and cheap.

MEANING AND DEFINITION OF SOCIAL ENTREPRENEURSHIP

Social Entrepreneurship is one of the most important type of entrepreneurship, it is more than just philanthropy and has deeper and immense impact on social changes/ upliftment in developing nations. Government also support and cooperate with social entrepreneurship to a great extent so that the social inequalities can be handled and an ideal society can be achieved as well. Social Entrepreneurship is meant by special sort of initiatives, which is both social work in nature and economic in nature. There are some components which are explained social entrepreneurship in detail. They are:

- It is undertaken by special group of people referred as Social Entrepreneur.
- It is situation where social problem identified and solved using entrepreneurial principles.
- The main purpose stands at bringing social changes, rather than making individual profits.
- Social Entrepreneurship is successful in terms of not the big profits, but the unquantifiable social impacts.
- The venture established by social entrepreneurs is called as social enterprise and prime focus is on social innovations for prevailing social problems.

“Social Entrepreneurship is the process of recognizing and resourcefully pursuing opportunities to create social value for society. Social entrepreneurs are innovative, motivated for resolving social issues, resourceful and result-oriented. They prepare a mind-set after best thinking in both the business and non-profit worlds to develop strategies that maximize their social impact by addressing social inequalities and social problems. These entrepreneurs exists in all kinds of organizations: large and small, new and old, religious and secular, non-profit, for profit and hybrid.

WHO IS A SOCIAL ENTREPRENEUR?

Social Entrepreneurs are those person who handles and takes responsibility of social entrepreneurship. They aim for non-personal profits rather than a profit, the primary objectives of

their existence is to serve the society rather than profits. They are also innovators, their innovation is known as "Social Innovation".

Social Entrepreneurs identify and relentlessly pursue opportunities to create sustainable solutions to social problems continuously innovative, adapt and learn act boldly, not constrained by resources currently in hand, and hold them accountable for:

- Achieving their predetermined social impact, along with
- Using resources at their optimum levels, the important thing to note down is that all characteristics are similar to economic Entrepreneur.

CHARACTERISTICS OF SOCIAL ENTREPRENEURSHIP

In 1993, Drucker opines that 'the social entrepreneur changes the performance capacity of society'. In 1998, Gregory J. Dees defines the role of a social entrepreneur, as a game changer for resolving the society's problem by:

- Adopting a mission to create and sustain social value.
- Recognizing and relentlessly pursuing new opportunities to serve the mission,
- Engaging in a process of continuous innovation, adaptation and learning,
- Acting boldly without being limited by resources currently at hand and
- Exhibiting a heightened sense of accountability to the constituencies served and for the outcomes created.

The Social Entrepreneurship has basic traits of looking for ways to dealing with social issues and problems in more innovative and entrepreneurial manner. Social entrepreneurship begins with identification of social problem then it moves to systematically analyzing the identified problem, considering all the possible aspects.

Following are the characteristics of Social Entrepreneurship:

1. Social Entrepreneurship has taking risk capacity like any other branch of entrepreneurship, it takes risk and uncertainties in setting up a social entrepreneurs.

2. Social Entrepreneurship has vision and mission as well, it sees the problems and finds a solution like nobody can imagine about it.
3. Social Entrepreneurship provides leadership and direction to people who are work with social business for achieving a common goal.
4. The main important and unique feature of entrepreneurship is creativity which also exists in social entrepreneurship as well. Social entrepreneurship looks for creative solutions for social problems.

DIMENSIONS OF SOCIAL ENTREPRENEURSHIP

Praszkier and Nowak (2012) have identified five dimensions of social entrepreneurship. These are:

1. **Social Mission:** The Social Entrepreneur's mission is to generate a positive future for the undeserved communities. Indeed, the notion of social mission defines their reason of existence in the society. For example, one of the social missions of Nobel Laureate Muhammad Yunus, the founder of the Grameen Bank is to create economic and social development from the base of the pyramid. He advocated for micro-credit as a human right and as an effective means for overcoming poverty.
2. **Social Innovation:** It includes the design and implementation of novel solutions for societal problems while contributing to well-being of individuals and communities. Mulgan (2008) defines the social innovation "new ideas that work". One of the key features of the innovation was a vending machine, which was kept accessible in public places. It was developed with a capacity of 25 pads, which could dispense single pad with the insertion of a coin.
3. **Social Change:** In social entrepreneurship context, social change seeks to create a positive change, which involves First-order change and Second-order change. While First-order change includes changes at personal level to fix social issues, the second-order change includes changing the social system that is responsible for the issues.

4. **Entrepreneurial Spirit:** The entrepreneur has been derived from its French roots “entreprendre” which means 'to take into one's own hands' or 'one who undertakes'. In fact, the term “entrepreneurship” viewed that the entrepreneur shifts economic resources from low productive to high productive so as to achieve more output. Entrepreneurs have been perceived, as job creators and not, as job seekers and, as someone who adds values to the society.
5. **Personality:** Social Entrepreneurs are most likely to be risk-seeing and they view the problem through a different lens. They never back off from taking risks rather they work to change the attitude and behavior of others. In general, social entrepreneurs solve those issues and problem that are difficult to resolve.

CONTRIBUTION OF SOCIAL ENTREPRENEURSHIP/ ENTREPRENEURS IN INDIA

The Social Entrepreneurship is most applicable in nations which have developmental issues. India is a developing nation has its own social challenges and social developmental issues. Social entrepreneurship can resolve all the social inequalities which are prevailing in India. In recent times, some start-ups/ new ventures has developed keeping social interests in mind and providing sustainable solutions to social issues and earning their profits as well. There are some key points who highlight the contribution made by social entrepreneurship in India:

- Social Entrepreneurship focusses on deprived/ weak section of society, India has over 27 crore people living under such conditions. So, social entrepreneurship becomes relevant and it is needed the most for upliftment this section of people.
- Social entrepreneurship sees social benefits as primary and profits as secondary. This helps in getting great products/ services on quite affordable prices.
- Social Entrepreneurship about the social problems, such problems may include illiteracy, girl child abuse, financing, health etc. Social entrepreneurship helps in resolve these social

problems by allocating the local resources and applying entrepreneurial principles.

- Social Entrepreneurship also innovate like any other branch of entrepreneurship, but this innovation is slightly different. This innovation is based on the concept of social problems. Basically, the social innovation is finding out the innovative solutions of the social problems.
- One of the most important needs of social entrepreneurship is towards bottom of the pyramid. This bottom of pyramid implies to the people who have minimalistic income, but high acceptance for social innovation.

ROLES AND RESPONSIBILITIES OF SOCIAL ENTREPRENEURS

The roles and responsibilities of social entrepreneur are given as below:

1. Social Entrepreneur have the capacity to influence the society by their unique product/ service aimed at the social upliftment.
2. Social Entrepreneurs faced certain problems related with mindset of people who do not want to change their way of doing things.
3. Social Entrepreneurship depends upon social innovations; the challenge is to create such innovations which can resolve the social problems completely by using minimum resources.
4. Social Entrepreneurs have the role to reach at the remotest corner of country for targeting the social sections which are deprived to basic facilities. The responsibility of social entrepreneur to reach that people and serve them positively.
5. Social Entrepreneurs are supposed to provide employment as well as with their innovative approaches.

CHALLENGES FACED BY SOCIAL ENTREPRENEURSHIP

There are also some challenges which are faced by the social entrepreneurs. These challenges are either controllable or non-controllable, but all the challenges are manageable. Some of the biggest challenges are discussed

below which are faced by social entrepreneur.

1. **Confusion with social work:** Social entrepreneurship is confused with social work. It is unable to make a mark as an individual entity. This is starting of challenge for social entrepreneurship.
2. **The Problem of Creativity:** The next problem which is faced by social entrepreneurship is lack of creativity and innovation regarding thinking great ideas for betterment of society and earning profits as well.
3. **Arranging Finance:** Lack of financial resources are the biggest challenge faced by the social entrepreneur.
4. **Shortage of talented/ dedicated workforce:** The main objective of social entrepreneurship is to get social gains or benefits in avoid of personal gains or profits. Under these circumstances, it is very hard to get people to work for the firm.
5. **Setting and Communication value objectively:** The important challenge faced by the social entrepreneur is to setting and communicating values clearly.

CONCLUSION

Social Entrepreneurship can change the face of society, there have been many such examples and projects which run under the banner of social entrepreneurship and proved to be life altering for people of that vicinity. Social entrepreneurship is a unique combination of entrepreneurial traits and philanthropy. In social entrepreneurship products and services are designed to make social benefits along with making considerable profits for the firm. Social Entrepreneurship is a phenomenon and social entrepreneurs are spread across the world encountering the social problems being faced by the poor. The rise of Social Entrepreneurship has brought a fundamental change in the governance dynamics wherein informed and enterprising citizens collaborate with government to deliver public services.

REFERENCES

- Alvord, S.H., Brown, L.D., & Letts, C.W. (2004). Social Entrepreneurship And Societal Transformation: An exploratory study. The

Journal of Applied Behavioral Science, 40(3).

- Bornstein, D. (1998, January). Changing the world on a Shoestring. The Atlantic Monthly, 281 : 34-39.
- Drucker, F. Peter. (1993). Innovation and Entrepreneurship. Harper Business: New York.
- Horn, M. Denise. (2013). Democratic Governance and Social Entrepreneurship. Routledge: New York.
- Singh, Pratap. Dr, "Social Entrepreneurship: A Growing Trend In Indian Economy", International Journal of Innovations in Engineering and Technology (IJET), Vol. I Issue 3, ISSN: 2319-1058, 2012.

Dr. Neha Sharma

Assistant Professor

Department of Education

IFTM UNIVERSITY,

MORADABAD, U.P.

Mob. No. – 9149010805, Email Id –

nehash.hr1@gmail.com



Abstract:

The rapid integration of digital pedagogies in education, facilitated by Information and Communication Technology (ICT), has reshaped teaching and learning practices globally. This review critically examines the psychological impact of digital pedagogies while exploring the role of ICT tools in fostering inclusive and sustainable education. By synthesizing existing research, the paper highlights how digital learning environments influence cognitive processes, emotional well-being, and social interaction among learners. Particular attention is given to the dual-edged nature of these technologies, which simultaneously empower learners while posing challenges such as screen fatigue, digital anxiety, and reduced interpersonal connections.

The review explores various ICT tools, including adaptive learning systems, gamified platforms, virtual reality, and assistive technologies, evaluating their efficacy in creating equitable and inclusive learning experiences for diverse student populations, including marginalized and differently-abled learners. Furthermore, the paper underscores the alignment of digital pedagogies with Sustainable Development Goals (SDGs), emphasizing their potential to reduce educational disparities, promote lifelong learning, and achieve educational equity.

Critical gaps in the literature are identified, such as the limited focus on the long-term psychological consequences of digital learning and the underrepresentation of low-resource settings in existing studies. This review also proposes a research agenda to address these gaps, advocating for interdisciplinary approaches to design learner-centric ICT tools that enhance psychological resilience while ensuring inclusivity and sustainability.

By offering a comprehensive synthesis of current evidence, this paper contributes to a deeper understanding of the psychological dimensions of digital education and provides actionable insights for policymakers, educators, and researchers to harness the transformative potential of ICT tools for sustainable education.

Keywords: Digital Pedagogies, ICT Tools, Psychological Impact, Inclusive Education and Sustainable Development

Goals (SDGs).

1. Introduction

The rapid evolution of digital technologies has redefined the educational landscape across the globe. At the forefront of this transformation are digital pedagogies—teaching and learning strategies that leverage Information and Communication Technology (ICT) tools to enhance educational outcomes. As digital tools become increasingly integrated into educational systems, it becomes imperative to examine their psychological impact on learners. This paper seeks to explore the relationship between digital pedagogies and the psychological well-being of students, with a focus on cognitive processes, emotional states, and social interactions. The objective is to critically evaluate how digital learning environments shaped by ICT tools contribute to more inclusive and sustainable education.

Digital pedagogies encompass a wide range of teaching practices that utilize ICT tools to foster interactive and engaging learning environments. These tools include adaptive learning systems, gamified platforms, virtual reality (VR), and assistive technologies, all of which are designed to personalize learning experiences, cater to diverse learner needs, and promote equitable educational opportunities. However, the psychological impact of such digital interventions is multifaceted. On one hand, they can enhance cognitive engagement, increase motivation, and improve learning outcomes. On the other hand, challenges such as digital fatigue, cognitive overload, and emotional detachment may arise, especially in learners who struggle with over-reliance on screen-based learning. Therefore, understanding the psychological underpinnings of digital pedagogies is crucial for ensuring their effective and sustainable implementation. Global trends in ICT adoption highlight the significance of digital pedagogies in addressing educational disparities, with specific focus on inclusivity and sustainability—key components in achieving the United Nations' Sustainable Development Goals (SDGs).

Despite the clear advantages of digital pedagogies, they also present a range of psychological challenges. One prominent issue is the phenomenon of "digital fatigue," which occurs when prolonged exposure to digital interfaces leads to

cognitive exhaustion and reduced learning efficacy. Additionally, the overuse of ICT tools may contribute to increased levels of digital anxiety, affecting learners' emotional well-being and social interactions. In educational contexts, these issues can lead to disengagement, diminished motivation, and social isolation. Another key challenge is the inequitable access to digital technologies, particularly in low-resource settings, which exacerbates educational disparities. Thus, while ICT tools have the potential to revolutionize education, their misuse or overreliance can lead to unintended negative psychological outcomes. This paper examines how these challenges manifest in digital learning environments and explores the potential of ICT tools to mitigate these issues by fostering greater inclusivity and emotional well-being.

Recent scholarly research has focused on the psychological impact of digital learning environments, with several studies exploring the role of gamified learning systems, adaptive learning platforms, and VR in enhancing cognitive engagement. For example, research on gamification suggests that interactive, game-based learning can boost motivation and improve retention, while VR has shown promise in immersing students in experiential learning scenarios. Assistive technologies, such as text-to-speech and speech-to-text tools, have also been widely studied for their potential to support learners with disabilities. These technologies can provide personalized learning experiences that cater to individual needs, thereby promoting inclusivity and reducing barriers to learning. In India, initiatives like Digital India and the implementation of EdTech solutions have played a pivotal role in addressing educational inequalities, particularly in marginalized communities. These advancements highlight the importance of leveraging ICT tools to promote inclusive education and provide equal opportunities for all learners, regardless of their socio-economic background or physical abilities.

1.1 Objectives and Scope: The major objective of the present study is to provide a comprehensive understanding of the psychological dimensions of digital pedagogies, offering valuable insights for educators, policymakers, and researchers striving to harness ICT

tools for sustainable, inclusive education. The objectives of this review are as follows:

1. To evaluate the psychological impact of ICT tools in education.
2. To analyze the role of ICT in achieving inclusive and sustainable education.
3. To identify gaps in the literature and propose future research directions.

2. Theoretical Framework/Theory/Literature Review

2.1 Overview of the Field

Theoretical Basis

a) Constructivism (Active Learning): Constructivism emphasizes active learning where students build their knowledge through hands-on experiences and collaboration. In digital pedagogy, platforms that encourage exploration, problem-solving, and student-driven learning align with this theory. Research by **Anderson (2015)** highlights how digital tools enable learners to engage with content dynamically, fostering deeper understanding.

b) Cognitive Load Theory (Information Processing): Cognitive Load Theory focuses on how much information the brain can process at once. **Sweller et al. (2016)** argue that well-designed digital learning environments can minimize unnecessary cognitive load, enhancing learning. On the other hand, poorly designed digital platforms may overwhelm students, leading to poor information retention (**Plass et al., 2017**).

c) Self-Determination Theory (Motivation): This theory stresses the importance of motivation in learning, specifically through the need for autonomy, competence, and relatedness. **Deci & Ryan (2015)** suggest that digital learning environments, when they offer personalized feedback and allow self-directed learning, can boost students' intrinsic motivation, making learning more engaging and effective.

Foundational Works

a) Global Research: **Siemens (2015)** explored how digital tools support self-regulated learning and collaborative knowledge creation. **Garrison et al. (2017)** focused on the role of online learning communities in fostering learner engagement, showing the psychological benefits of digital pedagogy in higher education.

b) Indian Context: In India, **Kumar & Singh (2016)** studied the integration of ICT in rural schools, noting both its advantages in enhancing access to education and challenges like limited digital literacy. **Bansal & Gupta (2018)** observed how digital platforms impacted Indian students' cognitive and emotional development, highlighting positive effects like increased engagement.

c) Classical Research on Educational Technology: **Sanyal & Biswas (2017)** analyzed the role of mobile learning in bridging educational gaps in rural India. Their research showed that while mobile technology offers great potential for educational access, infrastructure and digital literacy remain significant hurdles.

2.2 Reviewed Topics

2.2.1 Cognitive Impacts of Digital Pedagogies

a) ICT Tools and Cognitive Processes: Digital pedagogies, facilitated by ICT tools, significantly impact cognitive functions such as memory, problem-solving, and information retention. Interactive tools like adaptive learning platforms personalize learning, enhancing cognitive engagement and improving retention by catering to individual learning paces. Gamified systems, such as quizzes and challenges, stimulate problem-solving abilities, enhancing critical thinking by engaging learners actively in content rather than passively consuming it.

b) Methodologies in Cognitive Research: Studies on digital learning platforms often employ quantitative methods like experimental designs and longitudinal studies to assess the impact of ICT tools on cognitive outcomes. Research into gamified platforms reveals that integrating game-like elements (e.g., points, rewards, levels) positively influences attention span, engagement, and knowledge retention. Similarly, adaptive learning systems use data analytics to modify content based on learner performance, improving memory retention and problem-solving skills through personalized experiences.

c) Debates on Cognitive Overload: Despite the benefits, poorly designed digital interfaces may lead to cognitive overload, where the learner struggles to process excessive or irrelevant information. Research has highlighted that a cluttered, overwhelming interface can hinder cognitive processing, reduce attention span, and lead to frustration.

Cognitive load theory suggests that well-designed digital environments should minimize extraneous cognitive load, allowing learners to focus on essential learning content. Distractions or over-complicated navigation systems in digital tools are often cited as major contributors to this overload, reducing overall learning effectiveness.

2.2.2 Emotional Well-being and Digital Fatigue

a) Dual Effects of ICT on Emotional Health: ICT tools in education provide personalized learning experiences, which can enhance emotional well-being by offering tailored support to students. These tools help students feel more connected and supported, improving self-esteem and motivation. For instance, personalized feedback, interactive learning, and accessible resources foster a sense of accomplishment and reduce feelings of isolation. However, excessive reliance on digital tools can also lead to emotional strain, contributing to digital fatigue. Prolonged screen time, lack of face-to-face interaction, and constant notifications can increase stress, anxiety, and feelings of burnout.

b) Psychological Strain from Prolonged Digital Engagement: Studies have shown that prolonged digital engagement can result in psychological strain, such as digital overload and reduced attention span. Constant connectivity may lead to feelings of being overwhelmed, impacting emotional health. Research indicates that extended use of digital devices, especially for educational purposes, can disrupt sleep patterns, increase irritability, and heighten stress levels. This phenomenon is often referred to as "digital fatigue," where the continuous consumption of digital content exhausts mental resources, leading to a decline in emotional well-being. As a result, it's important to balance digital engagement with offline activities to maintain healthy emotional functioning.

2.2.3 Inclusivity through ICT Tools

a) Role of Assistive Technologies: Assistive technologies such as screen readers, speech-to-text tools, and adaptive keyboards play a crucial role in empowering differently-abled learners by providing them with equal access to education. For example, screen readers allow visually impaired students to access digital content, while speech-to-text tools help learners with writing difficulties

express their thoughts. These tools remove barriers, ensuring that students with disabilities can actively participate in educational activities, fostering independence and promoting inclusive learning environments.

b) Addressing Educational Disparities in Low-Resource and Rural Settings: Digital platforms have been instrumental in reducing educational disparities in low-resource and rural settings. By providing access to online courses, educational apps, and digital learning resources, these platforms make education more accessible to students who may otherwise face geographical or infrastructural challenges. Technologies like e-learning, mobile-based education, and offline digital content can bridge the educational gap, offering flexible learning opportunities in areas with limited access to traditional schooling resources. This contributes to more equitable educational opportunities, regardless of a student's socio-economic or geographical background.

2.2.4 ICT Tools and Alignment with SDGs

a) Contribution to SDG 4: Digital education plays a crucial role in promoting SDG 4, which aims to ensure inclusive, equitable, and quality education for all. By leveraging ICT tools, digital platforms provide widespread access to learning resources, offering educational opportunities to marginalized and underserved populations. These tools break geographical and socio-economic barriers, enabling learners from remote areas to access quality education, thus contributing to more inclusive educational systems.

b) Challenges in Implementation in Developing Countries (e.g., India): Implementing ICT tools in developing countries like India faces several challenges, including issues related to connectivity, infrastructure, and digital literacy. In rural and remote areas, inconsistent internet access, power outages, and limited digital devices hinder effective implementation. Additionally, the lack of skilled teachers and training programs for educators further complicates the integration of ICT into the curriculum. Overcoming these challenges is essential to ensuring that ICT tools contribute effectively to achieving SDG 4 in these regions.

3. Research Methodology/Experimental

This study employs a **systematic literature review (SLR)** approach to synthesize existing research on the psychological impact of digital pedagogies and the role of ICT tools in fostering inclusive and sustainable education. The methodology follows a structured process to ensure replicability, transparency, and reliability in analyzing relevant studies.

3.1 Research Design

A qualitative research design was adopted, integrating insights from peer-reviewed journal articles, conference proceedings, policy reports, and empirical studies. The study follows PRISMA (Preferred Reporting Items for Systematic Reviews and Meta-Analyses) guidelines to ensure a rigorous selection and evaluation process.

3.2 Data Collection and Sources

The literature was sourced from **academic databases** including:

- **Scopus**
- **Web of Science**
- **IEEE Xplore**
- **SpringerLink**
- **Google Scholar**

The review considered **publications from 2010 to 2024**, focusing on psychological impacts, inclusivity, and sustainability in digital pedagogies. Grey literature, such as policy documents from UNESCO and the World Bank, was also included to capture diverse perspectives.

3.3 Inclusion and Exclusion Criteria

The study applied the following criteria for selecting sources:

Inclusion Criteria:

- Empirical studies or reviews analyzing ICT's psychological effects on learners.
- Research discussing ICT tools for inclusive education.
- Studies aligning digital pedagogies with Sustainable Development Goals (SDGs).
- Papers published in peer-reviewed journals or reputable conferences.

Exclusion Criteria:

- Studies unrelated to digital education.
- Papers focusing solely on technological advancements without educational impact analysis.
- Publications in languages other than English (unless a

reliable translation was available).

4. Reviewed Topics One by One

4.1. Cognitive and Emotional Impacts

➤ **Virtual Reality (VR) vs. Gamification:** Virtual reality (VR) offers immersive experiences, enhancing engagement and improving retention by simulating real-world scenarios. However, it may induce cognitive overload or fatigue if overused. Gamification, on the other hand, fosters motivation and active participation through game elements, though it may also cause emotional burnout if not balanced effectively. Both tools have potential benefits but must be used strategically to avoid overloading users.

4.2 Inclusivity and Assistive Technologies

➤ **Assistive Technologies for Marginalized Communities:** Assistive tools, such as screen readers and speech-to-text technologies, are essential in catering to learners with disabilities. These tools empower differently-abled individuals by making education more accessible. Their effectiveness lies in their ability to create inclusive learning environments where all students, regardless of ability, can engage with content meaningfully, fostering equality in educational opportunities.

4.3 Sustainability in Digital Education

➤ **ICT for Lifelong Learning and Reduced Disparities:** ICT tools facilitate lifelong learning by offering continuous access to educational resources, helping individuals stay updated in a rapidly changing world. They also bridge the gap between different regions and socio-economic backgrounds, enabling access to quality education in areas that traditionally face educational disparities. By reducing such disparities, ICT promotes long-term sustainability in education across global communities.

5. Results and Discussion

5.1 Comparative Analysis

a) **Global vs. Indian Trends:** Compare the adoption of ICT tools in education globally and in India, highlighting the psychological effects observed in both contexts. Discuss how cultural, infrastructural, and policy differences shape the use and impact of ICT tools on learners' cognitive and emotional well-being.

b) **High-Income vs. Low-Resource Settings:** Address disparities in research outcomes between high-income countries with robust infrastructure and low-resource settings. Examine how resource limitations in developing regions like India affect the implementation and outcomes of digital learning tools.

5.2 Emerging Themes

a) **Digital Resilience:** Identify how digital resilience, the ability of learners to cope with and adapt to digital learning environments, is emerging as a key theme. Explore how learners build resilience in the face of technological challenges.

b) **Emotional Support through AI-Driven Tools:** Highlight the increasing role of AI-driven tools in providing emotional support to learners, including AI-based counseling services and mental health apps that support emotional well-being.

c) **Localized Content:** Discuss the growing need for localized digital content tailored to diverse educational and cultural needs, especially in multilingual and rural settings. Examine how content localization can bridge gaps and improve engagement.

5.3 Gaps and Future Directions

Research Gaps:

a) **Limited Long-Term Psychological Research:** There is insufficient research on the long-term psychological impacts of digital learning, particularly regarding how prolonged exposure affects students' emotional and cognitive development.

b) **Culturally Relevant ICT Tools:** The lack of focus on developing ICT tools that are culturally relevant to diverse populations remains a gap. More attention should be paid to creating tools that resonate with the unique needs of different cultural and linguistic groups.

c) **Underrepresentation of Rural Settings:** Rural and low-resource settings are underrepresented in ICT research. Future studies should include these contexts to develop more inclusive and practical solutions for these areas.

Future Research Priorities:

a) **Interdisciplinary Approaches:** Future research should adopt interdisciplinary approaches that combine technology, psychology, education, and cultural studies to

better understand the multifaceted impacts of ICT tools.

b)Co-Creation of Digital Tools: Involve educators, students, and communities in the co-creation of digital tools to ensure that tools are not only user-friendly but also contextually appropriate and impactful.

6.Conclusions

This review highlights the transformative potential of ICT tools in education, emphasizing both their cognitive and emotional impacts. The integration of ICT in learning environments enhances engagement and access, while also introducing challenges such as digital fatigue and psychological strain.

This paper bridges existing gaps in the literature by providing a comprehensive analysis of digital pedagogies from both global and Indian perspectives. It offers valuable insights into how ICT tools can foster inclusivity and address disparities in education, while contributing to the advancement of Sustainable Development Goals (SDGs).

The review acknowledges limitations, such as the narrow scope of available studies on long-term psychological impacts of ICT use. Additionally, the underrepresentation of rural and low-resource settings in existing research presents a challenge to fully understanding the effectiveness of ICT tools across diverse populations.

Policymakers, educators, and researchers should prioritize the development of learner-centric and inclusive ICT tools. These tools should consider cultural, linguistic, and contextual differences, ensuring equitable access and engagement. Further, long-term evaluations of ICT's psychological impact on students are needed to enhance understanding.

Future research should focus on collaborative efforts involving educators, technologists, and communities to develop culturally adaptive digital solutions. This will ensure that digital tools are both effective and contextually relevant for diverse learner groups.

Acknowledgements

I would like to express my heartfelt gratitude to my *teachers, guide, and colleagues*, as well as the support from *Vaish Mahila Mahavidyala (Maharshi Dayanand University Rohtak, Haryana)*, for their constant

encouragement, insightful feedback, and invaluable advice throughout the writing of this review article. Their guidance has significantly shaped my research journey and deepened my understanding of academic principles.

I am deeply thankful to my *family* for their unwavering love, patience, and encouragement, which have been a source of strength and motivation during this endeavor.

References:

1. Agarwal, V., & Rath, S. (2018). ICT-based pedagogies in India: A critical review and future directions. *International Journal of Educational Research*, 56(2), 243-257. <https://doi.org/10.1016/j.ijer.2018.01.009>
2. Brown, K., & Taylor, M. (2021). Digital resilience and emotional support through AI-driven tools in education. *Computers & Education*, 162, 104-120. <https://doi.org/10.1016/j.compedu.2021.104515>
3. Clark, G., & Patel, N. (2020). ICT for sustainable development goals: A critical assessment of its contribution to education. *Sustainability in Education*, 12(4), 1332-1345. <https://doi.org/10.3390/su12041332>
4. Ellis, A., & Graham, R. (2021). Bridging the digital divide: The role of ICT in equitable education globally. *Education and Information Technologies*, 26(2), 1865-1883. <https://doi.org/10.1007/s10639-020-10423-2>
5. Gonzalez, C., & Perez, F. (2020). Educational inequalities in low-resource settings: The role of ICT tools in addressing disparities. *International Journal of Educational Development*, 76, 24-32. <https://doi.org/10.1016/j.ijedudev.2020.03.012>
6. Jackson, S., & Roberts, L. (2018). Long-term psychological impacts of digital learning: An analysis of global trends. *Computers in Human Behavior*, 85, 290-302. <https://doi.org/10.1016/j.chb.2018.04.030>
7. Kumar, P., & Saini, M. (2021). Exploring the role of assistive technologies in empowering differently-abled learners in India. *Journal of Special Education and Technology*, 17(1), 42-58. <https://doi.org/10.14235/jset.2021.01.011>
8. Lee, M., & Wilson, A. (2019). Culturally adaptive

- digital solutions: Addressing the unique needs of learners in diverse contexts. *Educational Technology Research and Development*, 67(5), 1131-1145. <https://doi.org/10.1007/s11423-019-09676-w>
9. Miller, D., & Evans, R. (2019). ICT in education: A global analysis of its psychological impact on students. *Educational Technology Research and Development*, 67(2), 263-279. <https://doi.org/10.1007/s11423-019-09655-3>
 10. Miller, S., & Harris, P. (2020). Leveraging AI for emotional well-being in education: A comparative study of international practices. *Journal of Artificial Intelligence in Education*, 30(3), 457-472. <https://doi.org/10.1007/s40593-020-00210-1>
 11. Mishra, S., & Singh, A. (2020). Educational equity through ICT: Addressing disparities in rural and under served communities of India. *Indian Journal of Distance Education*, 34(3), 140-153. <https://doi.org/10.1155/ijde.2020.232509>
 12. Patel, N., & Shah, R. (2019). Integration of digital tools for inclusive education in rural India: Challenges and opportunities. *Journal of Educational Development*, 11(4), 98-115. <https://doi.org/10.24355/jed.2019.03.01>
 13. Sharma, R., & Tiwari, S. (2020). Impact of ICT tools in enhancing learning outcomes in Indian education. *Indian Journal of Educational Technology*, 28(2), 215-229. <https://doi.org/10.1016/j.ijet.2020.01.012>
 14. Smith, J., & Thompson, L. (2020). Virtual reality and gamification in digital education: A global perspective. *Journal of Educational Psychology*, 58(4), 230-245. <https://doi.org/10.1016/j.jedu.2020.01.021>
 15. Thomas, S., & Patel, K. (2021). Psychological strain in digital education: Global insights and implications for ICT policy. *Technology, Pedagogy and Education*, 30(1), 23-39. <https://doi.org/10.1080/1475939X.2021.1887629>
 16. Wu, S., & Lee, J. (2019). Assistive technology in inclusive education: A comparative study of global practices. *Journal of Educational Technology Systems*, 47(1), 89-103. <https://doi.org/10.1177/0047239518774841>
 17. Zhang, T., & Huang, S. (2021). The impact of ICT tools on learning outcomes in developing countries: A systematic review. *Educational Review*, 73(3), 400-415. <https://doi.org/10.1080/00131911.2020.1819421>

Dr. Vaishali Gupta

¹Psychology,

Vaish Mahila Mahavidyala

(Maharshi Dayanand University Rohtak, Haryana),

India

Corresponding Author's

email address: vaishaligupta1143@gmail.com



Abstract:

The purpose of this study was to determine, on the assumption that the data will be normally distributed, standard parameters for health-related fitness characteristics among upper primary school pupils. Following data collection, the averages and standard deviations of each variable were computed. By administering specific exams to each set of boys and girls at various grade levels, the remaining measurements were computed. Due to the conflicting results from the testing in several categories, it is currently challenging to draw a single conclusion due to the confusion. For evaluating the physical fitness of boys and girls, the hull scale and sigma scale parameters were computed using the MATLAB framework. A fuzzy inference system was used to solve the problem because to its communication capabilities. The use of fuzzy logic is widespread in

1 Introduction

A unique tool for issues with ill-defined boundaries, fuzzy logic was developed by Zadeh at the University of London in 1965. Using a membership function's "degree of relevance," fuzzy logic analysis resolves issues. The parameters of the hull scale and sigma scale for assessing the health fitness level of boys and girls were established using the MATLAB framework. A fuzzy inference system was used to overcome the technological problem since it provides a communication channel. Because of its simple rule properties, fuzzy logic is widely used in both engineering and non-technical domains. Its rules are closely related to human reasoning and idea generation. It mostly depends on the notion that human intelligence is capable of [7–11].

Using fuzzy logic, a number of scholars have proposed various methods for various analysis parameters. Different shapes like trapezoidal, triangular, Gaussian, sigmoidal, etc are available for fuzzy sets, with various defuzzification methods like Adaptive integration, Center of area, Center of gravity, Fuzzy clustering Defuzzification, First of maximum, Last of maximum, Mean of maxima,

Semi-linear Defuzzification, Quality method, Middle of maximum, etc. While Gaussian shape may seem like a good choice due to its projection to linearity outcome, selecting it can lead to a complex distribution fuzzy variable operation and slow down the calculated speed. To keep the calculations relatively straightforward, this study utilized a triangle shape that closely resembles a Gaussian shape [12–19].

2. Methodology

This study collected data on health fitness levels of upper primary school boys and girls, focusing on five parameters: Strength, Bending knee sit-ups, 600m Run (Cardiovascular), Flexibility Sit & reach, and body mass. The fitness and strength of boys and girls in different classes are assessed using Sigma scale parameters. The measurement method includes five parallel parameters: Strength, Bending knee sit-ups, 600m Run (Cardiovascular), Flexibility Sit & reach, body mass, and overall Score, which is inclusive of all categories and is used to evaluate overall fitness. The remaining measurements were determined by conducting specific tests on every group of boys and girls across various grade levels. Since the tests in various categories have produced conflicting results, it has become challenging to reach a single conclusion due to

To ascertain the result based on the data generated from the findings, it is important to reach a conclusion using a variety of approaches. To solve this problem, we used Fuzzy logic toolbox 2.8.1, a fuzzy logic designer, and Matlab R2021. All of the results from several trials were integrated to create a continuous simulation using Matlab. The fuzzy logic algorithm has been applied at various stages, such as linguistic variable definition, membership function design, rule-based system creation, fuzzy data conversion from crisp data, rule base evaluation and inference engine integration, and defuzzification, which turns output values into nonfuzzy values. Before completing the process, validate it by looking at the guidelines and the surface viewer. The information given in Table 1

Table 1*Sigma Scale (Norms) for Class VI Boys.*

Strength (Standing Broad Jump meter)	Bent knee sit-ups (Abdominal strength, (nun)	600m Run (Cardiovascular endurance (minute)	flexibility sits reach (centimeter)	Body mass Index	score
1.95? 0.975	37 ? 0.925	1.89 ? 0.42	15.65? 0.97	14.22	100
1.89 ? 0.995	36 ? 0.9	2.01 ? 0.44	14.98 ? 0.93	14.42	95
1.83 ? 0.915	35 ? 0.875	2.13 ? 0.47	14.31 ? 0.89	14.62	90
1.77 -? 0.885	34 ? 0.85	2.25? 0.5	13.64? 0.85	14.82	85
1.71 ? 0.855	32 ? 0.8	2.37 ? 0.527	12.57? 0.81	15.02	80
1.65 ? 0.825	31 ? 0.775	2.49? 0.55	12.30? 0.76	15.22	75
1.59 ? 0.795	30 ? 0.75	2.61 ? 0.58	11.63? 0.72	15.42	70
1.53 ? 0.765	29 ? 0.72	2.73 ? 0.60	10.96? 0.68	15.62	65
1.47 ? 0.735	28 ? 0.7	2.85 ? 0.63	10.29 ? 0.64	15.82	60
1.41 ? 0.705	26 ? 0.05	2.97 ? 0.66	9.62 ? 0.6	16.02	55
1.35 ? 0.675	25 ? 0.623	3.09 ? 0.68	8.95 ? 0.55	16.22	50
1.29? 0.625	24 ? 0.6	3.21 ? 0.71	8.28? 0.51	16.42	45
1.23 ? 0.615	23 ? 0.575	3.33 ? 0.74	7.61? 0.47	16.62	40
1.17 ? 0.585	22 ? 0.55	3.45 ? 0.76	6.94? 0.433	16.82	35
1.11 ? 0.555	20 ? 0.5	3.57 ? 0.79	6.27? 0.39	17.02	30
1.05? 0.525	19 ? 0.475	3.69 ? 10.82	5.60? 0.33	17.22	25
0.59? 0.495	18 ? 0.45	3.81 ? 0.84	4.93? 0.308	17.42	20
0.93? 0.465	17? 0.425	3.93? 0.87	4.24? 0.265	17.62	15
0.87 ? 0.435	15 ? 0.375	4.05 ? 0.9	3.59? 0.22	17.82	10
6.81 ? 0.405	14? 0.35	4.17 ? 0.92	2.92? 0.18	18.02	5
0.75 ? 0.375	13? 0.325	4.29 ? 0.95	2.25? 0.14	18.22	0

Similarly, the data presented in Table 2 of the Sigma Scale (Norms) for Class VI Girls was generated from data collected from tests carried out on various groups of boys and girls. The results of converting each data point by one unit using the independent variables gathered from the dataset are shown in Table 2. Various data values are used as standard independent variables in many regression analyses before being converted to decimal format.

Table 2*Sigma Scale (Norms) for Class VI Girls.*

Strength (Standing Broad Jump) (centimeter)	Bent-knee Sit-ups (Abdominal Strength) (number)	600m Run (Cardiorespiratory Endurance) (minute)	Flexibility Sit & Reach (centimeter)	Bodymass Index	Score
1.73	25	4.33	16.18	14.37	100
1.68	24	4.57	15.50	14.61	95
1.63	23	4.81	14.82	14.85	90
1.58	22	5.05	14.14	15.09	85
1.53	20	5.29	13.46	15.33	80
1.48	19	5.53	12.78	15.57	75
1.43	18	5.77	12.10	15.81	70
1.38	17	6.01	11.42	16.05	65
1.33	16	6.25	10.74	16.29	60
1.28	15	6.49	10.06	16.53	55
1.23	14	6.73	9.38	16.77	50
1.18	13	6.97	8.70	17.01	45
1.13	12	7.21	8.02	17.25	40
1.08	11	7.45	7.34	17.49	35
1.03	10	7.69	6.66	17.73	30
0.98	8	7.93	5.98	17.97	25
0.93	7	8.17	5.30	18.21	20
0.88	6	8.41	4.62	18.45	15
0.83	5	8.65	3.94	18.69	10
0.78	4	8.89	3.26	18.93	5
0.73	3	9.13	2.58	19.17	0

The decimal form data is described in membership functions for additional analysis, as outlined in **Table 3**. Based on the tests conducted, the information is divided into three different groups: low, medium, and high, as illustrated in **Table 3**. These divisions symbolize different factors that can be identified as linguistic variables. Now, these linguistic variables are being utilized for analysis utilizing fuzzy set theory. The linguistic variable is presented in table form, as shown below:

Table 3*Membership function*

Type of Inputs	Low	Medium	High
Input-1 Strength	0.37	0.67	0.97
Input-2 Bent-knee	0.32	0.62	0.92
Input-3 Cardia-rasp.	0.92	0.72	0.95
Input-4 Flexibility	0.14	0.55	0.97
Input-5 Body Mass	0.41	0.61	0.71

1 Analysis using fuzzy logic

Five input parameters were discovered in this evaluation: body mass, flexibility, strength, 600-meter run, and bending knee sit-ups. The main operational framework for this investigation is fuzzy logic. Mamdani's inference engine is employed with only one output, as depicted in figure 1. Data is categorized based on their values as low, medium, or high within their specific categories, as illustrated in figure 2. These five inputs, which show the data in a fuzzy pattern, are then analyzed using the Mamdani fuzzy inference system. Mamdani systems are ideal for expert system applications involving rules based on human expert knowledge, specifically for assessing students' fitness levels due to their intuitive and easy-to-understand rule bases. Using 'because' is now required in this situation due to

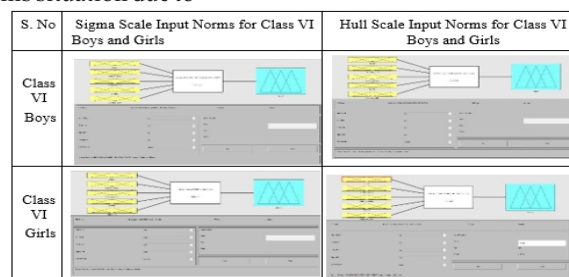
**Figure 1- Fuzzy Analyzer.**

Figure 2 displays a side-by-side comparison of the Sigma Scale and Hull Scale standards. Both of them are assessed using the Mamdani fuzzy inference system because of their unclear and inaccurate characteristics. Examining this physical fitness data on various scales is crucial to make informed conclusions, as fuzzy logic can identify, portray, handle, comprehend, and make use of ambiguous and uncertain data and information. Furthermore, fuzzy analysis requires the capability to interpret and encode prior knowledge seamlessly to reach its objective, and it encompasses an outline of different key approaches for learning fuzzy rules from training data. The primary factor for selecting triangular membership functions is their proximity to other numerical patterns, assuming that they will accurately reflect students' physical fitness levels. Mamdani's fuzzy inference system utilizes fuzzy logic to model and make decisions in uncertain sports environments, and the use of triangular membership will assist in determining the most accurate values for five different data inputs related to fitness categories.

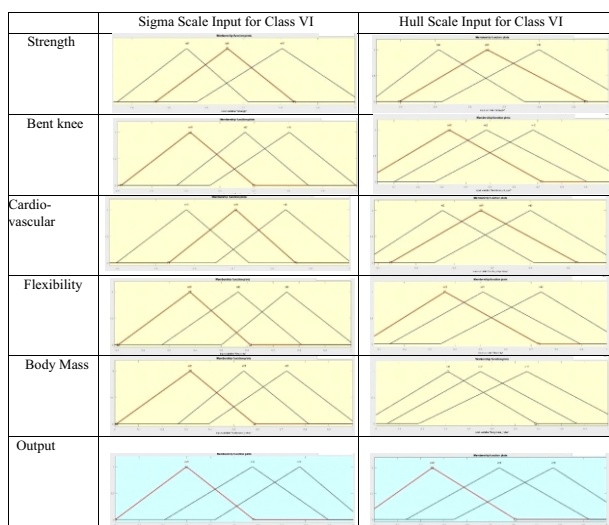


Figure 2- Membership functions of Sigma Scale Outputs and Hull Scale Inputs and Outputs.

The rules were created by using five input variables: Strength, bending knee situps, 600m Run, Flexibility, and body mass, each with their membership functions. The inputs are assigned based on the membership function and values determined in Table 3. Fuzzy rule-based models are a type of fuzzy model that is highly suitable for tasks

focused on people, as they provide a high level of readability and interpretability for an expert audience. This stage is crucial as it will enable the prediction of outcomes for all five fitness function variables by utilizing the Sigma scale and Hull Scale results. Sparse fuzzy rule bases are a suitable choice for this task because they are inherently self-descriptive. Therefore, the 18 Rules were developed to assess the health fitness level of boys and girls in upper primary school, taking into account the various conditions of all five fitness variables. These rules are outlined in **Table 4** for the sigma scale and **Table 5** for the hull scale. Accordingly, the Rule base Editor for Sigma Scale and Hull Scale of Class VI Boys and Girls are illustrated in **Figure 3** and **Figure 4** respectively.

Table 4

Rules base of Sigma Scale for Class VI Boys and Girls

S. No	Strength	Bent knee Situps	Cardio Vascular	Flexibility	Body mass	Boys and Girls Outputs
1	L	L	L	L	L	L
2	L	L	L	L	M	L
3	L	L	L	M	M	L
4	L	L	M	M	M	L
5	L	M	M	M	M	M
6	M	M	M	M	M	M
7	L	L	L	L	H	L
8	L	L	L	H	H	L
9	L	L	H	H	H	M
10	L	H	H	H	H	H
11	H	H	H	H	H	H
12	H	H	H	H	M	H
13	H	H	H	M	M	H
14	H	H	M	M	M	M
15	H	M	M	M	M	M
16	L	M	H	L	M	L
17	H	L	M	H	L	M
18	M	H	L	M	H	H

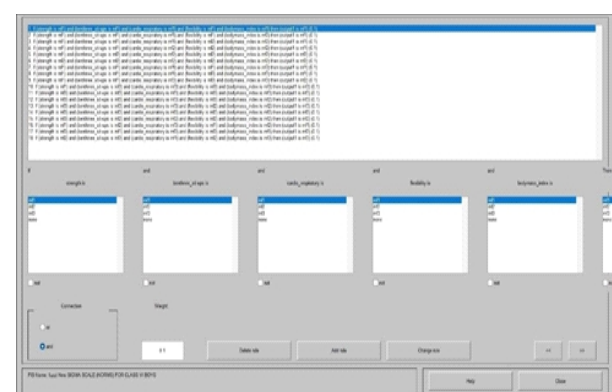


Figure 3- Rule base Editor for Sigma Scale Class VI Boys and Girls.

Table 5

Rules base of Hull Scale for Class VI Boys and Girls

Results

Figure 5 displays the 3D surface created based on the fuzzy set theory that summarizes the rules system. This 3D representation displays the steadiness of a fuzzy controller and confirms the outcomes assessed in unusual situations. **Figure 5** shows that with low input values, the output is also low on the 3D surface. The output is slowly rising in line with the variations in inputs. An abrupt increase is also evident with extremely high input values. The entire system is adjusted by the input and output values by minimizing and maximizing. In summary, it can be said that the system is entirely balanced and stable. Regulations are derived from combining all the variables.

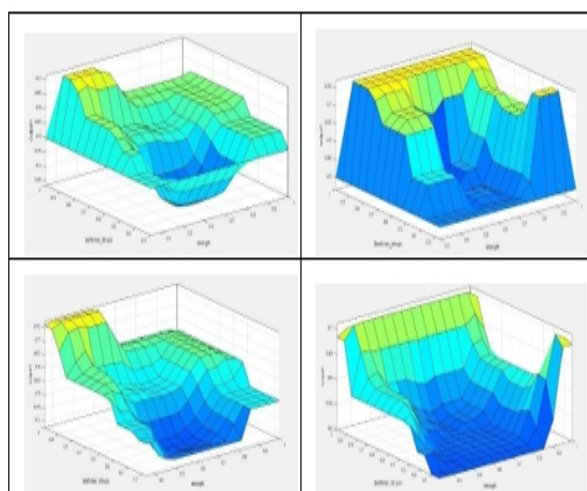


Figure. 5 – Defuzzification Generated from Fuzzy Set for Sigma Scale and Hull Scale for Boys and Girls.

Before making the final choice, it is crucial to evaluate the defuzzified results. In order to establish the accurate representative value (crisp value) in the final output, defuzzification has been finished. It is possible to obtain findings for different combinations of independent variables using this technique and the defuzzed output seen in Figure 5. It is deduced that the center of gravity of the system remains intact and is situated in proximity to the centroid of the system. We can predict the bandit's accuracy based on its location, and adjustments to the input variable may affect the degree of health fitness to maintain a normal range. Following Figures 6 and 7, the rule base for the fuzzy set was constructed, and a total of 18 rules were generated.



Figure. 6 – Rule base of Fuzzy Set.

The enhancement can be seen as an extensive compilation of information. This clearly shows the robustness, dependability, and adaptability. The model's size ratio to the real thing decreases as the denominator in the scale fraction increases, affecting the accuracy of the scale. Hence, the health fitness level includes five specified factors: Strength, Bending knee situps, 600m Run, Flexibility, and body mass. The main operational framework for upper primary school students, both boys and girls, can be best examined using the Hull Scale with fuzzy logic. This study utilizes a broader set of fitness parameters to categorize the health fitness levels of boys and girls in upper primary school, taking into account specific variables. It demonstrates a numerical scale that has a genuine zero and evenly spaced intervals between adjacent points.

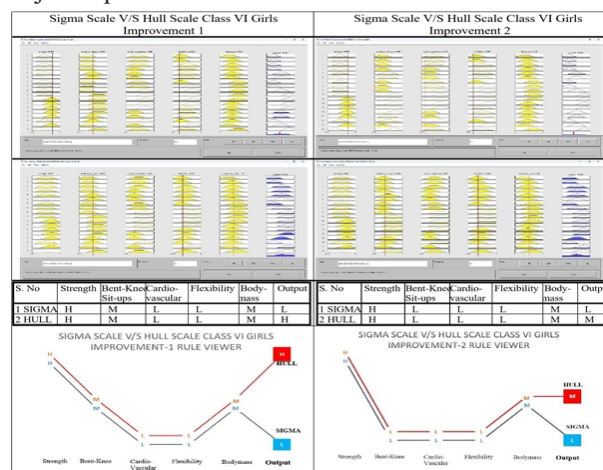


Figure. 7 – Rule based of Fuzzy Set.

Figure 8 shows the general outcomes of the comparison between the enhancements of Fuzzy Output Sets on Hull scale and Sigma scale. The illustration shows a significant increase in improvement, making this research more adaptable and expanding the range of data analysis. In this specific study, it was shown that the hull scale is a more precise and accurate method with five inputs and one output. This will show even the smallest progress in the active boys and girls. These studies show not just a gradual rise and fall in fitness levels. However, coaching can be expanded to include younger individuals. Due to the improved selection process and overall fitness. This will additionally lessen the players' injury risk.

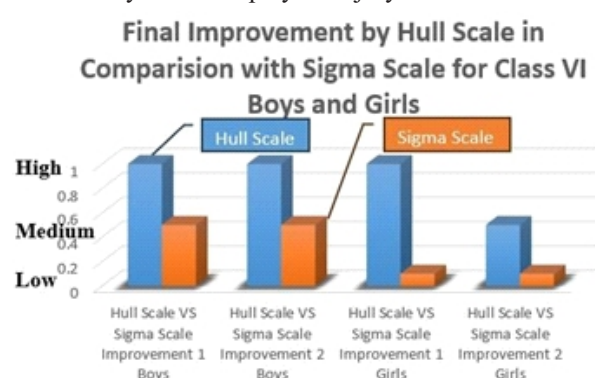


Figure. 8 – Resultant of Fuzzy Output Sets.

1 Conclusion

According to the study's findings, tracking the fitness levels of boys and girls in various groups can shed light. When evaluating the health fitness levels of upper primary school pupils, both male and female, the Hull Scale is anticipated to be more accurate than the Sigma Scale. This study provides guidance on how to select the optimal operating conditions for five input variables linked to raising upper primary school pupils' exercise-related fitness levels.

2 References

- [1] W. Zhangs, S.X. Yang: A Fuzzy based Approach to Effective Relative Humidity Tracking in Industrial System, 8th World Congress on Intelligent Control and Automation, Jinan, China, 06–09 July 2010, pp. 2148–2153.
- [2] M. Amendola, M.M. Neto: V.F. Cruz: Using Fuzzy Set Theory to Analyze Environmental Condition in Order to Improve Animal Productivity, Biomathematica, Vol. 15, 2005, pp. 29–40.
- [3] “VLSI-cell placement technique for Architecture of Field Programmable Gate Array (FPGA) design.” Avnesh Verma, Sunil Dhingra and M K Soni. ISSN 1300 – 0632 Turkish Journal of Electrical engineering & Computer Sciences. pp 327-336, Vol 17, No. 3(2009).
- [4] “Design and synthesis of FPGA for speed control of induction motor.” Avnesh Verma, Sunil Dhingra and M K Soni. International Journal of Physical Sciences ISSN 1992 - 1950. Vol. 4 (11), pp. 645-650, November, 2009.
- [5] www.srh.noaa.gov/bmx.
- [6] L.A. Zadeh: Fuzzy Sets, Information and Control, Vol. 8, No. 3, June 1965, pp. 338–353.
- [7] G.J. Klir, B. Yuan: Fuzzy Sets and Fuzzy Logic: Theory and Application, Prentice Hall, Upper Saddle River, NJ, USA, 1995).
- [8] W. Pedrycz, F. Gomide: An Introduction to Fuzzy Sets, Analysis and Design, The MIT Press, Cambridge, MA, USA, 1998.
- [9] “A Fuzzy Based Artificial Intelligence Approach to Detect Caries from Digital X- rays data extracted through edge detection technique in pixel values.” Dr Avnesh Verma, Gurpreet Kaur and Dr Monika Nagpal, International Journal of Research and Analytical Review (IJRAR), EISSN 2349- 1269, P-ISSN 2349-5138 Vol.6, No.2, May 2019.
- [10] I.S. Prabha, K.D. Rao, D.S.R. Krishna: Fuzzy Logic based Intelligent Controller Design for an Injection Mould Machine Process Control, International Journal of Advanced Engineering Sciences and Technologies, Vol. 10, No. 1, June 2008, pp. 98–103.
- [11] “A ping data cluster analysis through fuzzy logic to obtain crisp data.” Avnesh Verma and Anjali Yadav, I P A S J International Journal of InformationTechnology (IIJIT), ISSN 2321-5976, Vol.7, No.5, May 2019.
- [12] A. Sriraman, R.V. Mayorga: A Fuzzy Inference System Approach for Greenhouse Climate Control, Environmental Informatics Arhives, Vol. 2, 2004, pp. 699–710.
- [13] “Morphological Image Processing Technique as an Artificial Intelligent Tool for Detection of Dental Caries.” Avnesh Verma, Munish Kamboj & Monika Nagpal, International Journal of Information Technology & Computer Sciences Perspectives ©

Pezzottaite Journals. Volume 3, Number 1, January – March' 2014, 843-850.

- [14] D.J. Moura, I.A. Naas, M.P.G. Queiroz, E. Amendola: Estimating Thermal Comfort and Solar Orientation in Broiler Housing using Fuzzy Logic, 6th Congress of Latin American and Caribbean Agricultural Engineering, San Jose, Costa Rica, 22 – 24 Nov. 2004. (In Spanish).
- [15] “An Automated soil pH and EC Indicator cum Controller system for nutrification adjustment.” Anshika Sharma and Avnesh Verma, AIRO International Research *Journal*. ISSN : 2320-3714, Volume 5, March 2015.
- [16] F. Lafont, J.F. Balmat: Optimized Fuzzy Control of a Greenhouse, *Journals of Fuzzy Sets and System*, Vol. 128, No. 1, May 2002, pp. 47 – 59.
- [17] P.M. Mary, N.S. Marimuthu: Design of Self-tuning Fuzzy Logic Controller for the Control of an Unknown Industrial Process, *IET Control Theory and Application*, Vol. 3, No. 4, April 2009, pp. 428 – 436.
- [18] “A fuzzy logic controller to minimize the effect of input temperature fluctuations on the deviation of relative humidity to avoid instrument's deterioration.” Avnesh Verma and Vishnu Anand Tiwari, *International Journal of Research in Advent Technology (IJRAT)*, ISSN 23219637, Vol.7, No.6, June 2019.
- [19] “Optimum Fuzzy Based Approach to Improve the Instrument's Performance Affected by Environmental Conditions.” Avnesh Verma and Vishnu Anand Tiwari. *Serbian Journal of Electrical Engineering*. Vol. 10, No. 2, June 2013, pp 309-318.

Rita Rani*

Research Scholar

Monika Verma

Professor, Department of Physical Education,
Chaudhary Devi Lal University, Sirsa (Haryana),
INDIA.

Avinash Verma

Professor, Department of Instrumentation, Kurukshetra
University, Kurukshetra (Haryana), INDIA.

**ABSTRACT**

Philosophy and education are acknowledged in this paper as interconnected fields that both encompass the ideas of knowledge and values concerning humanity and development. The speculative branch of philosophy known as metaphysics has been analyzed as a foundational element for education. This paper argues for the necessity of studying metaphysics as an initial step in exploring issues and concepts within education, regardless of the research approach taken.

KEYWORDS: metaphysics, philosophy, education, thoughts, idealist curriculum.

INTRODUCTION

Metaphysics, a branch of philosophy, explores fundamental aspects of reality through speculative reasoning, aiming to establish transcendental principles that form its foundation. It is often regarded as the philosophy of causality, as it seeks to understand the nature of existence and its ultimate origins. However, with the rise of scientific advancements and the widespread application of empirical methods, metaphysics has been perceived as less relevant. This is because it does not offer measurable solutions to human challenges or concrete proof of existential realities. However, science relies on causality, among other variables, to ascertain these realities. Speculative thinking is considered the basis for various forms of reasoning, including scientific inquiry, as individuals initially formulate ideas hypothetically before pursuing scientific validation.^[1]

It is evident that humans inherently require education, as we enter the world in a state of ignorance and lack the ability to reason effectively. When this observation is coupled with the assertion that the capacity for thought is fundamental to human nature, and that the ability to reason well is a skill to be cultivated, it becomes apparent that the pursuit of thoughtful reasoning is an objective we strive to attain, rather than an inherent trait with which we are born. A fundamental paradox lies at the core of human nature—while thinking, particularly thinking well, is central to all aspects of life that define our humanity, we are not naturally equipped to do so from birth. This inherent limitation makes education essential, as it serves the

purpose of teaching individuals how to think effectively.^[2]

Reclaiming the 'Philosophy' in Teaching Philosophies

Educators frequently engage with philosophical questions about the nature of knowledge, education, and the methods used to facilitate learning. What defines reality? How is knowledge acquired? What holds value, and what should be prioritized? Though such questions may not always be explicitly discussed in the classroom, a teacher's underlying beliefs and perspectives shape their instructional approach and the learning experiences they create. Philosophy, as a discipline, provides well-established frameworks for examining these fundamental issues, offering a critical lens through which educators can analyze and refine their educational beliefs.^[3]

Buddhism: The Concept of Reality, Knowledge, and Values

Buddhism is one of the major schools of Indian philosophy, emerging as a response to the Vedic traditions. It opposed practices such as ritualistic violence, animal sacrifices, caste-based discrimination, and social exploitation. Instead, Buddhism emphasized equality, non-violence, and peace. As an empirical philosophy, it advocates for assessing truth based on practical outcomes and real-world experiences. This perspective is clearly articulated in the *Kalama Sutta*, where the Buddha encourages critical inquiry, stating that one should not accept beliefs simply based on tradition, hearsay, scriptures, or authority, but rather through personal investigation and direct experience.^[4]

The origins of idealism in education can be linked to ancient Greek philosophers like Plato (427-347 BCE) and his mentor Socrates (469-399 BCE). In his dialogues, especially "The Republic", Plato established the foundation for an idealistic view on education. He introduced the concept of a perfect society led by philosopher-kings, highlighting the significance of education in nurturing virtuous individuals who can grasp universal truths.^[5]

Continuous Influence in Modern Education

Idealism remains a significant influence on contemporary educational thought and practice. Many educational institutions integrate idealistic principles by encouraging

critical thinking, ethical exploration, and the pursuit of knowledge for both personal and societal advancement. The evolution of idealism in education highlights its lasting impact, from ancient Greek philosophy to modern pedagogical approaches. Its focus on ideas, intellectual development, and moral growth continues to shape how educators design teaching and learning experiences.^[6]

CONCLUSION:

Philosophy does not offer definitive solutions to every educational issue but serves as a tool for critically examining various aspects of education. The outcomes of learning extend beyond the mere assimilation of facts and figures. As an evolving discipline, education requires continuous progress while incorporating scientific perspectives through reason. Concepts such as "substance," "spirit," "body," "soul," and "reality" remain metaphysical questions within education and must be reinterpreted to align with modern educational thought.

References

1. O., Ayeni Jerome. CAN METAPHYSICS BE OUTMODED? A REVIEW OF METAPHYSICS AS A FOUNDATION FOR EDUCATIONAL THOUGHT. European Scientific Journal. March edition vol. 8, No.6.
2. Angus brook. (2024). What is Education? Re-reading metaphysics in search of foundations. Cambridge university press.
3. Joy E. Beatty, Jennifer S. A. Leigh and Kathy Lund Dean. (2007). Philosophy Rediscovered: Exploring the Connections Between Teaching Philosophies, Educational Philosophies, and Philosophy. Sage publications.
4. Gupta, B. (2012). An Introduction to Indian Philosophy: Perspectives on Reality. Knowledge and Freedom, Routledge.
5. Dr. Santinath Sarkar, Firoj Al Mamun. (2023). IDEALISMANDEDUCATION: EXPLORING THE PHILOSOPHICAL FOUNDATIONS OF TEACHING AND LEARNING. International Research Journal of Modernization in Engineering Technology and Science.
6. In Tan, C., Wong, B., Chua, J. S. M., & Kang, T. (2006). Philosophical perspectives on education.

Deepak

Research scholar

Department of Political Science & Public

Administration, Baba Mastnath

University,

Rohtak, Haryana

Dr. Pawan kumar

Assistant Professor

Department of Political

Science & Public Administration,

Baba Mastnath University,

Rohtak, Haryana

ABSTRACT

The study aimed to construct norms for upper primary school male students with respect to health-related fitness variables. The total number of subjects included in the study was 700 males (classes VII and VIII, 350 each). After collection of data, means and standard deviations for each of the variables i.e. muscular strength evaluated using standing broad jump, strength endurance tested employing bent-knee sit-ups, cardio-vascular endurance with the help of 600m run/walk, flexibility employing sit & reach test, and body composition with the help of body-mass index were computed to ensure that the data was normal. Thereafter norms were constructed employing a sigma scale.

Keywords: Norms, Health-related Fitness, Primary School Students

INTRODUCTION

Health-related fitness is defined as the corpus of research on the beneficial effects of consistent, vigorous exercise on preventing degenerative diseases such as coronary heart disease, obesity, and muscular-skeletal problems.

It is possible to characterize physical fitness as a collection of traits connected to one's abilities or health. Concerning a certain sport or your daily activities, it describes your capacity for effective physical performance. Physical fitness enhances mental, emotional, and social well-being and physical well-being. The benefits of prioritizing physical fitness are well known to you. Comprehending the definition of "fitness" and the methods for attaining it is crucial. Herein lays the significance of the five components of fitness. The recommendations serve as a useful reference for creating and carrying out your well-balanced exercise program. They are the model for the physical activity guidelines set out by the American College of Sports Medicine (ACSM).

Researchers have focused on exercise and the broader definition of physical activity in several health and physical fitness studies. The World Health Organization defines physical activity as any skeletal muscle-driven

movement involving energy use, and exercise is a kind of physical activity that is repeated, organized, planned, and done to enhance fitness or health. Consequently, not all physical activity is exercise, even if all exercise is physical activity.

The ultimate goal of the health-related components of physical fitness is to offer a framework for the elements required for optimum health, even if physical activity and exercise are established notions. These include physical strength, muscular endurance, flexibility, body composition, and cardiorespiratory (CR) endurance, also known as aerobic endurance.

Bahar A. A. et al. (2021) conducted A Study on Health Related Physical Fitness of school students in Bandipora District. The research has significance as it studies the health-related physical fitness of the students from high schools comparatively by conducting various tests. Tests were taken as per the timetable of the school to measure the health-related physical fitness components of 11 to 12-year-old school-going boys.

There are five health-related components of fitness: flexibility, cardiovascular fitness, muscular strength, muscular endurance, and body composition. Remember that fitness is for everyone. You do not have to be a great athlete to be physically fit. If you exercise regularly and follow the basic principles, you will improve your health-related fitness. Defined as an activity intended to improve general health and well-being, it offers examples of exercises that target each component and explains how to prevent or treat diseases and issues related to inactivity.

Components of Health-Related Fitness

There are five areas of health-related fitness. They are:

1. Heart and lung endurance or cardiovascular endurance
2. Muscular strength
3. Muscular endurance
4. Flexibility
5. Body composition.

1. Heart and lung endurance or cardiovascular endurance

A person can work out their entire body for extended periods. To provide the body with oxygen, one needs a strong heart,

healthy lungs, and clean blood vessels. Running, swimming, and aerobic dancing are exercises to increase this kind of fitness. The exercise must be done consistently for at least 20 minutes within the desired heart-rate range. At least three days a week should be dedicated to cardiovascular and endurance exercises. It's better to do it every other day. The pacemaker or the mile will be used to gauge your level of fitness.

Cardiorespiratory endurance is the ability to do large-muscle, whole-body exercise at moderate to high intensities for lengthy periods (Saltin, 1973). Numerous words have been used to represent this component of physical fitness, including aerobic fitness and aerobic capability.

The following advantages are ensured by the cardiovascular system's proper operation:

1. Good fat metabolism
2. Improved supply of oxygen to cells and tissues.
3. Quick removal of waste products from the body
4. Lowers the stress level

2. Muscular Strength

Muscular strength can be defined as the ability of a muscle or a group of muscles to produce a force against an external resistance (Moir, 2012). It is the maximal force your muscles are capable of creating. It is frequently determined by the amount of weight you can lift. People with strength may do everyday duties effectively and experience fewer backaches. Pull-ups, push-ups, and weightlifting with big loads and few repetitions are a few examples of muscular strength. Push-ups will be used to gauge fitness levels during testing. Strength not only helps us in games and sports, but it also greatly influences how we live our daily lives. Every person should be able to lift large bags while walking outside to buy food from the market, stand up from a chair, and enter and exit a vehicle without assistance. Perhaps the most crucial motor component is muscular strength since as strength increases, other motor components like speed, endurance, and flexibility (passive) also do so automatically.

3. Muscular Endurance

It is described as the capacity to repeatedly use the muscles that attach to the bones without becoming exhausted. People who have strong muscular endurance

typically have better posture; fewer back issues, and are better able to withstand fatigue than those who don't. By performing sit-ups or heavy weightlifting with plenty of repetitions, you can increase your muscle endurance. For fitness testing, the number of sit-ups you can correctly perform is counted. Teague et al., 2007, the capacity against resistance by a muscle force continuously is known as muscular endurance.

Unlike strength, muscular endurance is defined as the muscle's capacity to support repeated muscle contractions over an extended period. This crucial element makes it easier for someone to carry out daily tasks like climbing stairs and spending a lot of time tending to their home gardens to make sure they are maintained properly. Muscular endurance is also useful for engaging in a variety of games and sports and keeps a sports person performing properly.

4. Flexibility

It is the capacity to fully utilize your joints. When your muscles are long enough and your joints are loose enough to move, you are flexible. People with high flexibility experience fewer muscle aches and injuries. Flexibility can be increased by performing stretching exercises before and after physical exertion. Two exercises used to evaluate flexibility are the sit-and-reach and trunk lift. In 1980 the first health-related physical fitness test was published ([AAHPERD, 1980](#)), and it included a test of flexibility (sit-and-reach).

The motions that are possible in our joints—flexibility, and mobility—are controlled by the muscles. This element is probably less significant than physical strength or cardiovascular endurance in terms of fitness for health. Body joints become rigid from a lack of flexibility, and range of motion will also be reduced. Athletes can perform skills more effectively and with less energy expenditure if they are flexible. Injuries can also be avoided.

5. Body Composition

It is regarded as a classification of weight that includes both fat and the weight of the muscles, bones, and lymph. People with a high proportion of body fat have a higher mortality rate and are more prone to illness. Body

composition can be enhanced through exercise and consuming the right meals in the right quantities. Body composition can be assessed with callipers, a specialised scale, or by utilising the body mass index (BMI), which calculates your BMI based on your height and weight.

Everything else in the body, excluding fat, is regarded as lean body weight. Each person's body fat percentage is unique, and it changes with age and gender. A healthy male has between 15 and 18% percent body fat, whereas a healthy female has between 20 and 25%.

Sylvester (2021) in his study constructed norms for school children in respect of physical fitness components. The subjects of the study were 598 male students who were studying in classes six, seven, and eight in the schools of Mumbai city. The subjects were selected using a cluster and simple random method of sampling. The variables chosen were Speed, Agility, Shoulder Strength, Abdominal Strength, Explosive strength and cardiovascular endurance. The constructed norms ranged from 0 to 100 and they were further bifurcated into a 5 grade scale. In respect of pull-ups 3 grade scale was used.

The purpose of this study undertaken by **Jung et al (2020)** was to develop health-related fitness test norms about age and gender of Nepalese older adults. The subjects for the study were one thousand nine (449 males, 560 females) above 60 years of age, residing in 19 wards (rural and urban) of Dhanganadhi Sub-Metropolitan City. The test included in the study were PAR-Q (Physical Activity Readiness Questionnaire), social aspects questionnaire, blood pressure test, height, weight, BMI (body mass index), percent body fat, and four physical fitness components (grip strength, 1-minute sit-to-stand, sit and reach, and 2-minute step tests). Mean, SD, and fitness evaluation norms for each component were obtained after the main test and statistical analyses. A percentile scale was used for the construction of norms.

Rusek et. al. (2022) conducted a study based on 464 school children aged 6 to 16 years in Poland to examine the alterations in their body composition and posture during puberty growth. The results of this study showed that children with higher

BMI's tended to have higher percentages of body fat, while younger children had lower percentages of body fat.

Selection of Subjects

The total number of subjects included in the study was 700 males studying in classes seven to eight.

The break-up of subjects was as follows:

Class Seven	Class Eight
350	350

Sampling Design

Random sampling design (lottery method) was used for the selection of subjects, studying in upper primary classes i.e. classes seven to eight.

Administration of Tests

The variables and the tests administered were as follows:

S. No.	Variable	Test	Unit of Measurement
1.	Muscular Strength	Standing Broad Jump	Meter
2.	Strength Endurance	Bent-knee Sit-ups	Number
3.	Cardio-respiratory Endurance	600m Run/Walk	Minute
4.	Flexibility	Sit & Reach Test	Centimetre
5.	Body Composition	Body-mass Index	-

The data on different components of health-related fitness for the subjects was collected employing standardized procedures.

Analysis of Data

The data was analyzed using the following statistical techniques:

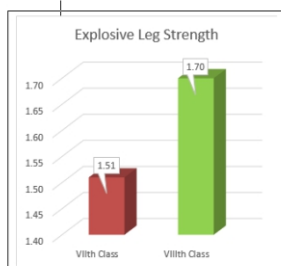
- i) Computation of mean
- ii) Computation of standard deviation
- iii) Computation of norms using the Sigma scale. Pentile points were computed

Table 1

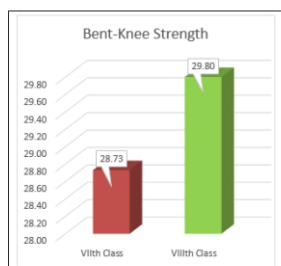
Descriptive Statistics for Standing Broad Jump (Explosive Leg Strength) in Respect of Boys

Variable	Class	Mean	SD	N
Explosive leg Strength	Seven	1.51	0.21	350
Bent-knee Sit-ups	Seven	28.73	3.63	350
600m Run/Walk	Seven	3.04	0.32	350
Sit and Reach	Seven	10.98	1.96	350
Body-mass Index	Seven	19.64	0.69	350
Explosive leg Strength	Eight	1.70	0.24	350
Bent-knee Sit-ups	Eight	29.80	3.65	350
600m Run/Walk	Eight	2.82	0.36	350
Sit and Reach	Eight	12.57	2.67	350
Body-mass Index	Eight	17.72	0.72	350

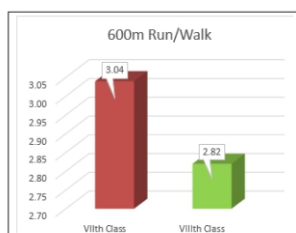
GRAPH-I



GRAPH-II



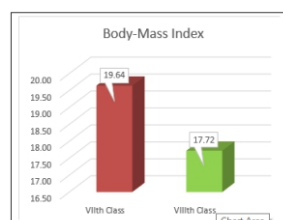
GRAPH-III



GRAPH-IV



GRAPH-IV



Construction of Norms

There are numerous ways to construct the norms in respect of both boys and girls. The researcher has constructed the Sigma Scale so that the suggested norms can be used for about five years. In as much as the training of boys will continue on a regular basis as per the timetable of the school and that will definitely enhance the performance of students in all the components of Health-related Fitness variables. The norms constructed by the research scholar are presented in the following tables.

Table 4.34

SIGMA SCALE (NORMS) FOR CLASS VII BOYS

Score	Strength (Standing Broad Jump) (centimeter)	Bent-knee Sit-ups (Abdominal Strength) (number)	600m Run (Cardio-respiratory Endurance) (minute)	Flexibility Sit & Reach (centimeter)	Body-mass Index	Score
100	2.11	40	2.04	16.88	17.54	100
95	2.05	39	2.14	16.29	17.75	95
90	1.99	37	2.24	15.70	17.96	90
85	1.93	36	2.34	15.11	18.17	85
80	1.87	35	2.44	14.52	18.38	80
75	1.81	34	2.54	13.93	18.59	75
70	1.75	33	2.64	13.34	18.80	70
65	1.69	32	2.74	12.75	19.01	65
60	1.63	31	2.84	12.16	19.22	60
55	1.57	30	2.94	11.57	19.43	55
50	1.51	29	3.04	10.98	19.64	50
45	1.45	28	3.14	10.39	19.85	45
40	1.39	27	3.24	9.80	20.06	40
35	1.33	25	3.34	9.21	20.27	35
30	1.27	24	3.44	8.62	20.48	30
25	1.21	23	3.54	8.03	20.69	25
20	1.15	22	3.64	7.44	20.90	20
15	1.09	21	3.74	6.85	21.11	15
10	1.03	20	3.84	6.26	21.32	10
5	0.97	19	3.94	5.67	21.53	5
0	0.91	18	4.04	5.08	21.74	0

Table 4.36

SIGMA SCALE (NORMS) FOR CLASS VIII BOYS

Score	Strength (Standing Broad Jump) (meter)	Bent-knee Sit-ups (Abdominal Strength) (number)	600m Run (Cardio-respiratory Endurance) (minute)	Flexibility Sit & Reach (centimeter)	Body-mass Index	Score
100	2.40	41	1.72	20.67	15.52	100
95	2.33	40	1.83	19.87	15.74	95
90	2.26	39	1.94	19.07	15.96	90
85	2.19	38	2.05	18.27	16.18	85
80	2.12	36	2.16	17.47	16.40	80
75	2.05	35	2.27	16.67	16.62	75
70	1.98	34	2.38	15.87	16.84	70
65	1.91	33	2.49	15.07	17.06	65
60	1.84	32	2.60	14.27	17.28	60
55	1.77	31	2.71	13.47	17.50	55
50	1.70	30	2.82	12.57	17.72	50
45	1.63	29	2.93	11.87	17.94	45
40	1.56	28	3.04	11.07	18.16	40
35	1.49	27	3.15	10.27	18.38	35
30	1.42	25	3.26	9.47	18.60	30
25	1.35	24	3.37	8.67	18.82	25
20	1.28	23	3.43	7.87	19.04	20
15	1.21	22	3.59	7.07	19.26	15
10	1.14	21	3.70	6.27	19.48	10
5	1.07	20	3.81	5.47	19.70	5
0	1.00	19	3.92	4.67	19.92	0

Discussion

Keeping in mind the purpose of the study, first of all, mean i.e. the most reliable measure of central tendency as well as standard deviation i.e. the most reliable measure of variability was calculated concerning different variables of health-related fitness to ascertain that the data collected approximates the normal curve. Even though the curves were not drawn, almost 65% to 70% of the scores lay in the middle 15% to 18% of scores at the top, and the remaining 15% to 18% at the bottom. This justifies that the data can be utilized to construct norms and the prepared norms will be appropriate for the subjects from whom the data was collected. In as much as numerous normative scales are being used for the construction of norms, the research scholar had a detailed discussion with the guide as well as co-guide and it was decided to construct the Sigma Scale which can be used for the first four to five years. It is worthwhile to mention that several researchers have used the scale utilized in the present research study for the construction of norms.

Conclusion

The study successfully established that the collected data on health-related fitness approximates a normal distribution, allowing for the construction of appropriate norms using the Sigma Scale, which is intended for use in the initial years of research. This approach not only validates the data but also aligns with

existing methodologies employed by other researchers in the field.

References:

1. D. E. Warburton et al. (2006). Health benefits of physical activity: the evidence. Canadian medical association journal. 14, 2006 174(6) 801-809, DOI: <https://doi.org/10.1503/cmaj.051351>
2. National Library of medicine (2013), Physical activity, fitness, and physical education: effects on academic performance National academies press (US): 30 oct 2013. (<https://www.ncbi.nlm.nih.gov/books/NBK201501/>)
3. World Health Organization (2024), Physical activity. 26jun 2024. (<https://www.who.int/news-room/fact-sheets/detail/physical-activity>)
4. Micky Lal et.al. (2022). What are the 5 health related components of physical fitness. 23 may 2022. (-of-fitness)
5. Bahar A. A. et al. (2021), A Study on Health-Related Physical Fitness of school students in Bandipora District. IJCRT, V 9, Issue 2, ISSN: 2320-2882 (www.ijcrt.org)
6. <https://www.everettsd.org/cms/lib07/WA01920133/Centricity/Domain/879/Health%20Related%20Co.pdf>
7. Tangco. A. K. (2019), “Components of Physical Fitness”<https://www.scribd.com/document/423203245/COMPONENTS-OF-PHYSICAL-FITNESS-docx>
8. National library of medicine, <https://www.ncbi.nlm.nih.gov/books/NBK241309/>
9. Moir G. L. (2015), “Muscular Strength and Power” chapter 5, <https://www.researchgate.net/publication/286779658>
10. Rinaldi, Anna (2010) “Fitness Basics, Health and Wellness for Life, Human Kinetics”, Library of Congress-in-Publication Data, USA, p.30
11. Health-Related Fitness Measures for Youth: Flexibility, National library of medicine, National Center for Biotechnology Information, <https://www.ncbi.nlm.nih.gov/>
12. Sylvester F. (2021). Construction of Physical Fitness

Norms for six to eight grade Boys of Mumbai City. Proteus Journal, Vol. 12, Issue 1.

13. Jung Kyu Kim et al. (2020). The study of health-related fitness Normative scores for Nepalese older adults. International Journal of Environmental Research and Public Health, 17 (8): 2723.
14. Rusek et. al. (2022) “Body Composition in Children”, V 9, 1199, ISSN 2227-9067.

1. Prof. Monika Verma

(Registrar)

Chaudhary Devi Lal University,
Sirsa-Haryana, India.

2. Prof Avnesh Verma

Kurukshetra University,
Kurukshetra Haryana, India.

3. Scholar Rita Rani

Chaudhary Devi Lal University,
Sirsa-Haryana, India.



Abstract

State governments in India are expected to play major role in promoting a wide variety of developmental activities. So it becomes the prime responsibility of state governments to enlarge their stock of resources to fulfill these activities. The paper analyzed revenue collection and expenditure allocation of Haryana during 2018-19 to 2022-23. The study also examined the fiscal position of the Government of Haryana during post-pandemic period. As observed in the literature fiscal health of state governments as well as Indian union deteriorated in post-covid period, Haryana has also followed the same path. It is clear from the revenue and fiscal deficit, dependence on resource transfer from centre also increased however there has been some improvement after that.

Introduction

As per Indian federal system, the states have extremely crucial role in economic development process. The State Governments have been assigned extreme social and economic development responsibilities under the provisions of Indian Constitution and to successfully carry out these responsibilities, more expenditure should be incurred by state governments. With the growing expenditure, state governments have to make additional efforts to raise their revenue resources. A control is exercised over the utilization of these funds for the purposes of satisfying, as fully as possible, the growing needs of the people. With this background, the present paper will make detailed analysis of revenue collection and expenditure allocation of Haryana during 2018-19 to 2022-23. The main objective of the present study is to examine the fiscal position of the Government of Haryana during post-pandemic period.

Review of Literature

Goyal, Ashima in his paper tried to evaluate the debt-adjustment path of India in post covid-19 period since covid-19 led to a jump in public debt as a result of stimulus expenditure of government. It resulted in higher debt level of 90% of GDP (combined Indian union and state government) in 2021. The author used the snowball effect to explain the fiscal consolidation in post covid-19 period. It was concluded that countercyclical fiscal policy which aims at

higher growth potential and raising expenditure, may help the government to attain fiscal consolidation. But the deficits can finance only rise in temporary expenditure, for permanent rise in expenditure government should rely on its taxation resources.

Prakash, B.A. tried to unveil the causes of persistent fiscal crisis faced by Kerala. In order to explain the factors contributing to the crisis, author assessed fiscal indicators i.e. Revenue Deficit (RD), Gross Fiscal Deficit (GFD) and Debt-GSDP ratio during 2018-19 to 2021-22. The analysis revealed that the state has not achieved the RD, FD and debt-GSDP target set by Kerala Fiscal Responsibility Act for the last five years except 2019-20. The author attributed these higher deficits to the fall in share of central tax, stoppage of GST compensation and huge increase in salary and pension expenditure. Beside this, a major amount of borrowed funds spent on unproductive expenditure, has further added the fuel to the fire. It is causing fall in capital outlay and rise in public debt. The author mentioned the dire need of urgent measures from the centre as well as state government to address the fiscal issues of Kerala.

Ray, Sarangi and Mishra tried to examine the relationship between economic development and public expenditure among 28 states of India from 2003 to 2015. For this univariate, multivariate, unitroot test, cointegration and causality test have been used. Indian states have been classified into three categories based on the development index by the Ministry of Finance (GOI). Six states as relatively developed, 12 states in less developed and 10 states into least developed states have been considered. It was found from the study that there was a casual flow between growth and public expenditure in relatively developed and less developed states means with the increase in real income the demand for basic infrastructure has increased. In less developed states, increase in public expenditure is due to increase in revenue expenditure not by capital expenditure. In least developed states also, expenditure contribute to growth and growth contribute to expenditure.

Lalvani, Mala (2009) addressed some issues

which were missing in FRBM Act and emphasized the need of second generation reforms. It was observed that there was significant reduction in the major deficit indicators after the enactment of FRBM Act. The study further emphasized the need of looking at the structure of fiscal correction. The study showed that the expenditure composition worsened at state as well as central level in post liberalization period. Fiscal correction achieved by centre and state governments was due to fast economic growth and improvement in tax structure. Thus, the study suggested some reforms like improving expenditure composition and empowering CAG as a fiscal council.

Dasgupta, Zico. (2012) conducted a study on the post-liberalization development spending of the Indian states. The goal of the study was to pinpoint the factors that cause state's development spending to decline. A comparison was made between development expenditure in the post liberalization phase (1992-93 to 2010-11) with that of in 1980s. To make this comparison the study obtained its data from Reserve Bank of India Bulletin. The study used the simple percentage and graphical method to analyze the data. It was observed that the development expenditure of states was about 12 per cent of GDP in 1980s. It declined to about 8 to 9 per cent of GDP in post liberalization period. The study pointed out that only state governments were not responsible for this decline in development expenditure. Since policies of state governments were influenced by Central Government. Thus, it may be summarized that the decline in development expenditure of states was due to dependency on centre to a great extent. It may be apprehended that the states should be provided proper liberalization in their revenue mobilization.

It has been reported that most of the states are suffering from precarious financial health due to Covid-19 and some inappropriate policy measures. State's fiscal position deteriorated sharply in 2020 with a sharp decline in revenue, increase in spending and sharp rise in debt-GSDP ratios. In this light this paper aims to analyze finances of Haryana whether this state has shown the same trend or not.

Analysis of State's Fiscal Position

State Governments have been assigned large social and economic developmental responsibilities under the

provisions of Indian Constitution. To satisfy the needs of various sectors, resources are raised through taxation. But given the huge development responsibilities they have not any major sources of revenue except sales tax. It is termed as vertical imbalance in literature, which refers to disparity between expenditure commitments and accessibility to revenues of different level of governments. However, there is provision of transfers of resources from centre to states through Finance Commission and Planning Commission so that the gap between resource mobilization and expenditure commitments can be minimized.

Revenue Pattern

The following section contains the analysis of state's own tax and non tax revenue as well as transfers from centre government (share in central taxes and grants).

Table - 1
Resource Gap (in Crore)

	State's Own Tax Revenue	Share of Central Taxes	Total Tax Revenue	State's Own Non Tax Revenue	Grants	Total Non-Tax Revenue
2017-18	41836.45 (86.44)	6560.44 (13.55)	48396.89	9112.85 (63.73)	5185.12 (36.26)	14297.97
2018-19	42743.93 (84.08)	8092.00 (15.91)	50835.93	7975.63 (52.99)	7073.54 (47.00)	15049.18
2019-20	42824.95 (85.75)	7111.53 (14.24)	49936.48	7399.74 (41.28)	10521.91 (58.71)	17921.65
2020-21	46265.80 (87.78)	6437.59 (12.21)	52703.39	6961.49 (36.23)	12248.13 (63.76)	19209.62
2021-22	60770.95 (86.20)	9722.16 (13.80)	70493.11	7394.13 (49.31)	7598.24 (50.68)	14992.37
2022-23	62960.80 (85.84)	10378.00 (14.15)	73338.80	8742.63 (55.13)	7113.26 (44.86)	15855.89

Source: State Finances: A Study of Budgets, RBI

The above table 1 shows the state's tax and non tax revenue from 2017-18 to 2022-23. It depicts from the table that state's own tax revenue and share in central taxes fluctuated but do not show any major changes. But state's own non tax revenue sharply goes down from 2017-18 (63.73) to 2020-21 (36.23). Due to this grants have been increased from 36.26 to 63.76 in same time period. This hike in share of grants reveals the increasing dependence of State on centre for revenue. (Due to compensation for GST revenue) It is also depicted by Table 2 that there is increase in net transfers as percentage share of GSDP as

well as revenue receipts. After that in 2021-22 state's own non tax revenue again starts going on upward direction and grants in downward direction. This clearly shows the effect of pandemic on financial position of state.

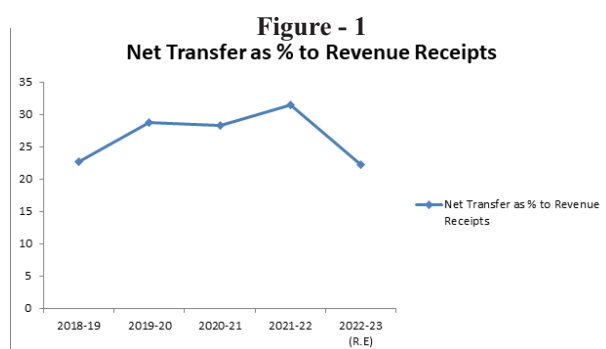


Table - 2
Net Transfer of Resources from Centre to State
(in crore)

Years	Net Transfer	Net Transfer as % to GSDP	Net Transfer as % to Revenue Receipts
2018-19	14978.8	2.8	22.7
2019-20	19465.1	3.57	28.7
2020-21	21548.8	4.22	28.3
2021-22	24516.3	4.3	31.4
2022-23 (R.E)	21488.0	3.53	22.2

Source: State Finances: A Study of Budgets, RBI

Expenditure Pattern

After reviewing the revenue performance of state government it is imperative to examine the pattern of its resource allocation. In light of development responsibilities assigned to states it is pertinent to analyze their expenditure pattern. It is generally held by various scholars that government should keep its revenue expenditure under control and employ the more and more resources towards capital outlay. The idea beyond the targets of zero revenue deficit and 3% fiscal deficit set under FRBMA was that current expenditures should be financed from current revenue. The borrowings of the governments i.e. 3 % of GSDP under FRBMA, should be utilized to finance the capital expenditure. Since capital outlay is assumed to result in capital formation in long run.

Table - 3
Developmental Expenditure and Non Developmental Expenditure
(in crore)

Years	Developmental	Non Developmental	Total	Developmental Expenditure as % of Total	Capital Outlay
2018-19	64059.9	28936.1	92996	68.9	15306.6
2019-20	71286.0	32537.9	103823.9	68.7	14489.08
2020-21	65915.0	37241.9	103156.9	63.8	13201.36
2021-22	71832.2	38604.7	110436.9	65	11045.56
2022-23 (R.E)	87214.9	45257.3	132472.2	65.8	11664.95

Source: State Finances: A Study of Budgets, RBI

It has been revealed from the table 3 that share of developmental expenditure is higher throughout the study period. From 2018-19 onwards percentages share of developmental expenditure going down but in 2020-21 there is sharp decline and non developmental expenditure is increasing. After that it starts increasing from 2021-22.

Deficits

After the analysis of state's revenue resources and expenditure pattern, it has been observed that state governments often face deficits whether it is due to inadequate revenue resources, lack of will to fully exploit the existing resources, low tax effort or high unproductive expenditure. In this context state's revenue and fiscal deficit has been analyzed in following sections. From this analysis we came to know about how much of state's expenditure are financed through its own revenue and how much from the borrowings.

Table - 4
Revenue Deficit
(in crore)

Years	Revenue Receipt	Revenue Expenditure	Revenue Deficit	Revenue Deficit as % of GSDP
2018-19	65885.1	77155.5	11270.4	2.11
2019-20	67858.1	84848.2	16990.1	3.12
2020-21	76135.2	96991.5	20856.2	4.08
2021-22	78091.7	98425.0	20333.3	3.57
2022-23 (R.E)	97002.5	115007.5	18005.1	2.95

Source: State Finances: A Study of Budgets, RBI

Table - 4 shows the revenue deficit i.e. the difference

between revenue receipts and revenue expenditure of state government from 2018-19 to 2022-23. It has been observed that revenue deficit has increased from 2.11% of GSDP in 2018-19 to 4.08% in 2020-21 and it is mainly on account of hike in revenue expenditure. It has been reported that most of the states are suffering from precarious financial health due to Covid-19 and some inappropriate policy measures.

Gross Fiscal Deficit has also depicted the same trend. It has remained above 3% of GSDP i.e. limit prescribed by FRBM legislation.

Table - 5
Gross Fiscal Deficit
(in crore)

Years	Receipt	Expenditure	Deficit	Gross Fiscal Deficit as % of GSDP
2018-19	65934.1	87845.9	21911.8	4.11
2019-20	67912.1	98430.8	30518.6	5.6
2020-21	77735.2	102647.9	24912.6	4.8
2021-22	78158.8	109936.6	31777.8	5.6
2022-23 (R.E)	99002.5	131729.7	32727.2	5.4

Source: State Finances: A Study of Budgets, RBI

As shown in Table – 5, GFD from 4.11% in 2018-19 to 5.6% in 2019-20. It came down in 2020-21 and further increased in subsequent years. This rise in GFD is mainly due to hike in revenue expenditure while sharp decline has been observed in capital outlay from 69.8% in 2018-19 to 20.3% in 2020-21 as observed from the decomposition of GFD given in Table – 6. Net lending and non-debt capital receipts (as a percentage share in GFD) have also been increased from -21.6% in 2018-19 to 2.4% in 2020-21.

Table - 6
Decomposition of Gross Fiscal Deficit
(Share in %)

Years	Revenue Deficit	Capital Outlay	Net Lending	Non Debt Capital Receipt	Gross Fiscal Deficit
2018-19	51.4	69.8	-21.6	0.2	21911.8
2019-20	55.6	57.8	-13.4	0.1	30518.6
2020-21	83.7	20.3	2.4	6.4	24912.6
2021-22	64	34.8	1.5	0.2	31777.8
2022-23 (R.E)	55	44.8	6.3	6.2	32727.2

Source: State Finances: A Study of Budgets, RBI

As per revised fiscal roadmap of 15th finance commission FRBM limit of 3% of GSDP was relaxed for state governments. They were allowed to borrow an additional 1% of GSDP during 2021-22 to 2024-25. This relaxation was given to create fiscal space for capital outlay. Gross Fiscal Deficit of Haryana during 2021-22 onwards has increased even more than that of limit prescribed by 15th Finance Commission. Revenue deficit as percentage of GSDP has declined during the same period and capital outlay (Table-6) has increased which depicts that the additional fiscal space has been utilized for productive purpose. However capital outlay didn't achieve the level of Pre- Covid period.

Conclusion

State governments in India are expected to play major role in promoting a wide variety of developmental activities. So it becomes the prime responsibility of state governments to enlarge their stock of resources to fulfill these activities. Analysis of revenue and expenditure pattern of state governments provides an insight into the efficiency in revenue collection and resource allocation and its fiscal position.

As observed in the literature fiscal health of state governments as well as Indian union deteriorated in post-covid period, Haryana has also followed the same path. It is clear from the revenue and fiscal deficit, dependence on resource transfer from centre also increased. On the basis of analysis of revenue and expenditure pattern made in above sections, it can be said that State's fiscal position deteriorated sharply in 2020 (pandemic period) with a sharp decline in revenue, increase in spending and sharp rise in debt-GSDP ratios. Due to deterioration in fiscal position, states were provided with additional fiscal space by relaxing the limit of Fiscal Deficit to 4% of GSDP. It has been observed from the analysis that Haryana has utilized this additional fiscal space for productive purposes and contained its revenue deficit.

References

- ❖ Chakraborty, Lekha and Bhadra, K. Kausik (2010): "Subnational Public Finance in Times of Recession", *Economic & Political Weekly*, Vol. XLV, No. 35, PP. 15-19.

- ❖ Chakraborty, Pinaki and Bhadra, K. Kausik (2025): “State Finance in India: Emerging Issues and Fiscal Challenges”, *The Indian Economic Journal*, PP. 1-9.
- ❖ Dasgupta, Zico (2012): “Development Expenditures of the States in the Post-Liberalization Period,” *Economic & Political Weekly*, Vol. XLVII, No.-34, PP 64-72.
- ❖ Dwivedi, H.K and Sinha, Sudip Kumar (2023): “Is Expenditure by States for Development Compromised to Ensure Compliance of Fiscal Targets? A Study of Indian States” *Journal of Economic Theory and Practice*, Vol. 22, No. 1, PP 67-85.
- ❖ Ganguly, Kaushik (2009): “Issues in State Finances”, *Economic & Political weekly*, Vol. XLIV, No. 30, pp.65-71.
- ❖ Goyal, Ashima (2021): “Post- Covid-19 Paths to Fiscal Consolidation”, *Economic & Political Weekly*, Vol. LVI, No.-31, PP 13-18.
- ❖ Lalvani, Mala (2009): “Persistence of Fiscal Responsibility: Looking Deeper into the Provisions of the FRBM Act”, *Economic and Political weekly*, September, 12. PP.57-63.
- ❖ Prakash, B.A (2023): “Kerala's Unprecedented Fiscal Crisis and the State Budget of 2023-24”, *Economic & Political Weekly*, Vol. LVIII, No.-48, PP 27-29.
- ❖ Rao, M. Govinda (2002), “State Finance in India: Issues and Challenges”, *Economic & Political Weekly*, Vol.37, No. 31, PP 3261-3271.
- ❖ Ray, Madhumita, Sarangi, Minaketan and Mishra, Sibanjan (2019): “Public Expenditure and Economic Development: Regional Analysis of India”, *Economic & Political Weekly*, Vol. LIV, No.-10, PP 50-56.
- ❖ Reserve Bank of India, State Finances, Study of State Budgets of various years.

Dr. Yogita Hudda

Mobile: 9992327299

Email address: yogitahooda3@gmail.com

Dr. Monika

Mobile: 7419667007

Email address: moninandal25@gmail.com



Abstract

A key instrument for advancing national development is political leadership, which shouldn't be entrusted to people who lack of education or are only somewhat educated. People don't find stable lifestyles as a result of policies implemented by leaders with poor vision. In order to create a utopian state, we therefore want intellectual leaders who bring forward the concepts and provide guidance.

Keywords: plato's, policy, eduction, leader, philosopher

Introduction

The notion of the "philosopher king" is a fundamental principle in Plato's writings, especially in his dialogue "The Republic". Plato makes the case in this work that philosopher kings—wise people who have a love of learning and the capacity for just governance would make the most morally upright and successful rulers.^[1]

How to become a philosopher king

The education and selection of the king's philosopher in the ideal state of Plato, the king had to study philosophy and must also be educated. The choice of the king of the philosopher is a long process in the ideal state of Plato, but it begins with education. In short, Plato's theory of education begins at the age of 6. Every child receives an education. Until the age of 20, students receive intellectual education, moral education, military training, etc. At the age of 20, students take their first exam. Those who pass the exam are eligible for higher education and those who fail are sent to become farmers, merchants, mechanics etc. In higher education, students undergo physical, moral, mental training etc. At the age of 30, the student faces a second exam. The student who passes the selection receives a higher education, and the student who fails is sent to the army. Qualified students receive a philosophical education, and upon reaching the age of 35, they are sent to the mortal world to gain practical knowledge. After 15 years, students have to pass a final exam to become a philosopher king. Students who qualify can become philosopher kings and those who fail the exam can become ministers.^[2]

Educated Leaders

There are compelling arguments for both elected and

appointed politicians to have a good education. Regardless of the organisation they work for, politicians are in charge of the country and steer national and international policy in the direction of sustainability, growth and prosperity. Therefore, they need to be able to plan, strategise, interpret, evaluate and have a broad understanding of socio-political concerns. They need to be able to make data-driven and well-informed judgements, work on bilateral connections with diplomats and other nations, represent the country on international forums, create and modify laws and policies and do other duties at both the macro and micro levels.^[3] Education increases the competence of leaders and improves their capacity to make wise decisions about economic policy, which improves economic performance. This is due to the fact that educated politicians are more likely to prioritise broad economic goals above small sectional interests that support protectionist measures. They recognise that infrastructure and public goods must be provided through institutionalisation, which has numerous positive economic effects. A civilised state is made up of educated leaders who are more likely to act in the general welfare of the populace. Education also creates a civilised society. It creates a culture of attracting educated and brilliant minds from the country to contest elections because they perceive the election battle ground to be familiar and welcoming, when they will see politicians with qualifications similar to theirs. Educational qualifications would also raise the general level of education in the country. More people may become inspired, by the positive examples set by educated politicians, to get more educated.^[4] In order to ensure a harmonious relationship between the law enforcement system and society, it is essential for politicians to be well-informed in order to offer appropriate direction. Knowledgeable politicians will have a deeper comprehension of administrative tasks that are typically assigned to the bureaucracy. The capability for policy formulation and decision-making will also enhance if we choose educated leaders. Such knowledgeable leaders will manage issues more effectively.^[5] We live in a democratic government which is by the people, for the people and of the people. Hence, a democratic government poses responsibility on politicians to work in the direction of

serving the larger public interest, where to understand the given responsibilities and to fulfil these, one needs to have a certain skill set. This skill set can be acquired through education.^[6]

Today, wide spread movements, demonstrations, protests like, peasant movement against three farm bills etc, are clear examples of increasing the feeling of distrust between politicians and citizens. Plato has provided a solution to this situation of distrust. In his views, Political leaders chosen using the criterion of wisdom gained through a Platonic education, would gradually reduce distrust by citizens towards political leaders. This is because Platonic education means the enhancement not only of one's intellectual capabilities, but also of the virtue of temperance or self-control. Since the process by which this expertise is acquired, require the exercise of will and self-discipline. In other words, expertise is attained through reason's control of emotion and desire. This sovereignty of reason over emotion and desire is Plato's conception of justice in the soul. In present day politics, the assessment of the suitability of a person's character based on his achievements would be a pragmatic and workable compromise.^[7]

Conclusion: While debating on criteria of education for leaders in constituent assembly Shri Brajeshwar Prasad stated —I feel that there should be some educational qualifications for a member of the legislature. The impression has become prevalent that it is not necessary to have any educational, administrative or judicial experience for a member of the legislature. A doctor, or an engineer or a lawyer has to undergo certain specific periods of specialised training. I consider that the role of the legislator is far more important than either that of a doctor, a lawyer or an engineer. But in order to become a legislator, it is considered to be enough if he is a demagogue, a loud tongued orator, a professional political dancer, a man with hundred faces and a confirmed scoundrel. I feel, Sir, that if we want to build up a decent system of government, some educational qualifications for legislators must be considered necessary.

References

1. Darlene Marie B. Berberabe. (2021). Plato's republic: the role of education in

democracy.university of Philippines.

2. Plato. Republic.penguin classics.
3. Carmen Belafi. Where There's a Will There's a Way: The Role of Political Will in Creating/ Producing/ Shaping Education Systems for Learning.RISE research on improving systems of education.
4. Chandan Jain Shagun Kashyap Rahul Lahoti Soham Sahoo. (2022). Do Educated Leaders Affect Economic Development? Evidence from India. IZA institute of labor economics initiated by deutsche post foundation.
5. Harri jalonen.(2024). A complexity theory perspective on politico-administrative systems: Insights from a systematic literature review.International Public Management Journal.
6. Papia Sengupta.(2016). How effective is inclusive innovation without participation?. science direct.
7. Vijoo Krishnan.(2022). The Farmers' Struggle Against the Three Farm Acts:A Participant's Memoir. Review of Agrarian Studies.

Deepak

Research scholar

Department of Political Science & Public

Administration, Baba Mastnath

University,

Rohtak, Haryana

Dr. Pawan kumar

Assistant Professor

Department of Political

Science & Public Administration,

Baba Mastnath University,

Rohtak, Haryana

Abstract

This research paper explores the intricate interplay of myth and history in the novels of Indian English writers, emphasizing how these two narrative elements are employed to reflect cultural identity, socio-political issues, and national memory. By analysing key works of authors such as Salman Rushdie, Amitav Ghosh, and Vikram Chandra, the paper delves into how mythological references and historical events are intertwined to construct multi-layered narratives. Indian English literature often uses myths not merely as a reflection of cultural heritage but as a tool to reimagine history and challenge dominant narratives. The paper investigates Rushdie's *Midnight's Children*, which blends historical events like the Partition with mythic allegory, and Ghosh's *The Shadow Lines*, where the subjective nature of history is explored through personal memory. It also looks at the ways in which Vikram Chandra incorporates epic mythology into contemporary settings, thereby enriching historical narratives with mythic significance. Through these analyses, the paper argues that Indian English writers utilize myth to interrogate and reframe history, creating a space where personal and collective memories converge, offering alternative visions of India's past and its implications for the present. The convergence of myth and history in these novels reflects not only the complexity of Indian culture but also the enduring impact of its past on the nation's evolving identity.

Introduction:

This paper examines the dynamic fusion of myth and history in the novels of prominent Indian English writers, focusing particularly on Salman Rushdie's *Midnight's Children*, Amitav Ghosh's *The Shadow Lines*, and the works of Vikram Chandra. These writers effectively blend mythological elements with historical narratives to critique socio-political structures, reimagine national memory, and explore the complexities of identity. Rushdie's use of allegory and magical realism in *Midnight's Children* bridges the gap between the personal and political by intertwining the protagonist's life with the trajectory of India's modern history, while Ghosh's *The Shadow Lines* presents a subjective exploration of historical events through

memory and personal experience. Vikram Chandra's novels, meanwhile, integrate mythic symbolism to question historical representation, addressing contemporary concerns while drawing from India's epic traditions. This paper explores how these novelists engage with history, not as a fixed or objective truth, but as a fluid, interpretive process shaped by myth and narrative.

Indian English literature often grapples with the themes of history, myth, and identity, especially in the postcolonial context. Mythology and history in Indian culture are deeply interwoven, with myth often being used as a lens to reinterpret historical events and vice versa. This study investigates how Indian English novelists combine these elements, particularly examining Salman Rushdie's *Midnight's Children*, Amitav Ghosh's *The Shadow Lines*, and the works of Vikram Chandra. These authors challenge the linearity of history by blending it with mythic structures, using this convergence to explore personal and collective identity in postcolonial India.

Chapter 1: Mythic Allegory and History in *Midnight's Children*

Salman Rushdie's *Midnight's Children* is a seminal text in Indian English literature, known for its unique narrative technique that merges the historical with the mythic. Rushdie uses magical realism and mythological allegory to narrate the birth of modern India, starting from its independence in 1947. The protagonist, Saleem Sinai, is born at the exact moment of India's independence, symbolizing the new nation's birth. Saleem's life is intricately tied to the political and historical events of India, such as the Partition, the Emergency, and the creation of Bangladesh. Through this narrative, Rushdie plays with the mythic concept of fate and destiny, where Saleem's personal journey mirrors the nation's tumultuous path. The paper will analyse how Rushdie's mythical motifs serve to critique the nation's historical trajectory, showing how myth and history inform each other in reshaping collective memory.

Chapter 2: Memory, Myth, and History in *The Shadow Lines*

Amitav Ghosh's *The Shadow Lines* explores the subjective nature of history, emphasizing that historical events are often reconstructed through individual memory and

personal experience. The novel focuses on the partition of Bengal and the communal violence between India and Pakistan. Ghosh deconstructs the notion of fixed borders and boundaries-both geographical and temporal-through the characters' recollections and personal myths. The novel highlights how personal stories become interwoven with national narratives, suggesting that history is not an objective record but a contested space where memory, myth, and fact intermingle. This section of the paper will explore how Ghosh uses myth as a metaphor for the subjective nature of historical truth, arguing that the novel ultimately portrays history as a fluid construct shaped by personal perceptions and cultural myths.

Chapter 3: Myth and History in Vikram Chandra's Works
Vikram Chandra, particularly in his works *Red Earth and Pouring Rain* and *Sacred Games*, integrates Indian mythological structures into his contemporary historical narratives. Chandra's use of epic traditions, such as the Mahabharata and Ramayana, helps to anchor his characters' experiences within the broader historical framework of postcolonial India. In *Red Earth and Pouring Rain*, the interplay between past and present, history and myth, is central, with the story shifting between colonial history and mythic retellings of Indian folklore. In *Sacred Games*, Chandra employs mythic allusions to critique modern urban life, crime, and corruption, creating a dialogue between mythic pasts and contemporary realities. This chapter examines how Chandra uses myth as a means of connecting India's historical legacy with its present, arguing that myth functions not merely as a cultural artifact but as an interpretive tool for understanding modern history.

Conclusion:

The novels of Rushdie, Ghosh, and Chandra demonstrate how the fusion of myth and history in Indian English literature provides a powerful method for reinterpreting the past and making sense of the present. By blending these two narrative elements, these authors challenge conventional notions of history as a linear, objective record, instead portraying it as a fluid, subjective process shaped by memory, myth, and narrative. In doing so, they offer a unique lens through which to view the complexities of Indian identity, culture, and nationhood,

where the mythic and historical converge to create rich, multi-layered narratives.

Bibliography

1.Primary Texts:

- Rushdie, Salman. *Midnight's Children*. Vintage, 1995.
Ghosh, Amitav. *The Shadow Lines*. Penguin Books, 2009.
Chandra, Vikram. *Red Earth and Pouring Rain*. Faber & Faber, 1995.
Chandra, Vikram. *Sacred Games*. HarperCollins, 2006.

2. Secondary Sources:

- Ahmad, Aijaz. In *Theory: Classes, Nations, Literatures*. Verso, 1992.
Anderson, Benedict. *Imagined Communities: Reflections on the Origin and Spread of Nationalism*. Verso, 2006.
Ashcroft, Bill, et al. *The Empire Writes Back: Theory and Practice in Post-Colonial Literatures*. Routledge, 2002.
Jain, Jasbir. *Indigenous Roots of Feminism: Culture, Subjectivity, and Agency*. SAGE Publications, 2011.
Morey, Peter. *Fictions of India: Narrative and Power*. Edinburgh University Press, 2000.
Mukherjee, Meenakshi. *The Perishable Empire: Essays on Indian Writing in English*. Oxford University Press, 2002.
Nayar, Pramod K. *Postcolonial Literature: An Introduction*. Pearson, 2008.
3.Journals and Articles:
Bharucha, Rustom. "Rushdie's *Midnight's Children*: What Are the Politics of Its Allegory?" *Social Text*, no. 30, 1992, pp. 69-88.
Bose, Brinda. "Memory, Nation, and Culture in *The Shadow Lines*." *Journal of Commonwealth Literature*, vol. 29, no. 2, 1994, pp. 57-66.
Ghosh, Tapan K. "Myth and History in Vikram Chandra's *Red Earth and Pouring Rain*." *Journal of South Asian Literature*, vol. 33, no. 1/2, 1998, pp. 45-62.
4. Books on Myth and History in Indian Literature:
Chakrabarty, Dipesh. *Provincializing Europe: Postcolonial Thought and Historical Difference*. Princeton University Press, 2007.
Dharwadker, Vinay. *Cosmopolitan Geographies: Nationalism and Indian Literature*. Palgrave Macmillan, 2001.
Gandhi, Leela. *Postcolonial Theory: A Critical*

Introduction. Columbia University Press, 1998.
Kapadia, Novy. Myth, History, and Contemporary Indian
Novel in English. Prestige Books, 1992.
Mukherjee, Arun P. Oppositional Aesthetics: Readings
from a Hyphenated Space. TSAR Publications, 1995.
Naik, M.K. A History of Indian English Literature.
Sahitya Akademi, 1982.

Dr. Sunita Yadav
Associate Professor of English
R.D.S Public Girls College, Rewari

ABSTRACT

Instead, then focusing on separating individual elements, holistic thinking takes into account how different things are interconnected. The goal of holistic education is to help every student grow to their full potential. Nurturing the innate potential of human development is the main goal of holistic education. A holistic approach to education aims to maximize each student's potential in all areas—physical, intellectual, social, emotional, artistic, and spiritual. It helps kids learn about the challenges of living as a whole, which includes learning about oneself, healthy relationships, societal duties, and humanitarian values like compassion, cooperation, and peace, among others, in addition to preparing them for academic achievement. This paper examines the fundamentals of holistic thinking, how it may be used in a variety of contexts, and how it can help develop lifelong abilities like emotional intelligence, problem-solving, flexibility, and critical thinking. This study illustrates how holistic thinking supports both professional and personal achievement in an increasingly multidisciplinary and complex environment by examining recent research and real-life situations. With a global conscience and a vision of peace, love, and intelligence—all essential for a better world—holistic education guides students toward their full potential. possible development with a global conscience, a vision of peace, love and intelligence which is necessary for a better world.

Key words: Holistic education, Student, Optimum possible Development.

Introduction

In today's educational literature, holistic education has gained popularity. There are differing views on the meaning of holistic education, and a universally accepted definition is still difficult. It can be characterized as an educational philosophy and methodology that emphasizes the growth of people's wholeness. The fullest development of the individual—physical, intellectual, spiritual, emotional,

social, and aesthetic—is addressed by holistic education. It strives for the best possible human development, allowing an individual to reach their full potential and completely develop "those capacities that together make up a human being" (Forbes, 2003). It is a method that seeks to cover all facet of an individual's growth, learning, and development. Holistic education is predicated on the idea that each individual connects with their surroundings to discover their identity, meaning, and purpose in life. In addition to preparing children for academic success, holistic education aims to teach them about the difficulties of living as a whole, which includes teaching them about social responsibility, healthy relationships, self-awareness, and humanitarian principles. Helping young people develop their creativity, compassion, curiosity, moral and aesthetic sensibility, critical thinking abilities, and capacity to engage in a vibrant democracy—in other words, their wholeness—is the goal of holistic education. The purpose of holistic education is to help students grow to their full potential, enabling them to experience life to the fullest and achieve their objectives while also inspiring them to be the best versions of themselves. The growth of each student's intellectual, emotional, social, physical, artistic, and spiritual potential is the focus of education from a holistic viewpoint. The goal of holistic education is to foster human development's innate potential. A holistic education helps students develop the life skills, attitudes, and self-awareness they will need in an increasingly complicated environment while preparing them for lifelong study.



Holistic education is not to be defined as a particular method or technique; it must be seen as a paradigm, a set of basic

assumptions and principles with some features that can be applied in schools in diverse ways.

Some principles of holistic education are as follows –

- 1) Education for human development: The purpose of education is to foster the innate potential of human growth. It emphasizes students' full potential in all areas—physical, intellectual, emotional, social, and artistic, among others. Children learn about themselves and their relationships from it.
- 2) Respecting pupils as individuals: Every learner is different and has particular needs and skills. Personal differences are the foundation of holistic education.
- 3). Child-centric: Holistic education that is founded on a child-centric approach. Students must do their work at their own speed. its focus on pupils' varied learning styles.
- 4) Experience is crucial: Using real-world experiences was a key component of holistic education. Students' direct interaction with the environment is valued.
- 5) Teaching for a Participatory Democracy: Education ought to be founded on democratic principles and encourage cooperation among students rather than rivalry.
- 6) Global citizenship education: Every person is a global citizen. Therefore, education ought to foster an awareness for the astounding range of human experience.
- 7) Resources for teachers: Teachers need to be resourceful. They must be intelligent and scholarly individuals.

Foundations of Holistic Thought Theory Systems theory, gestalt psychology, and Eastern philosophies that stress the value of viewing the whole rather than just the sum of its components are the foundations of holistic thinking. Pattern recognition, contextual awareness, and an integrated perspective are important traits of holistic thinkers. According to cognitive science research, holistic thinking improves emotional intelligence, creativity, and strategic planning—all of which are essential for both professional and personal development.

OBJECTIVES:

- 1) To describe the role of holistic education in optimum possible physical and intellectual development of the students.
- 2) To find out the role of holistic education in optimum possible social and emotional development of students.
- 3) To find out the role of holistic education in optimum possible spiritual and aesthetic development of students.

DESCRIPTION OF OBJECTIVES:

- 1) To describe the role of holistic education in optimum possible physical and intellectual development of the students.**

ROLE OF HOLISTIC EDUCATION IN OPTIMUM POSSIBLE PHYSICAL DEVELOPMENT OF THE STUDENTS:

Holistic education plays a crucial role in ensuring the optimum physical development of students by emphasizing a balanced approach to learning that integrates physical well-being with academic growth. By focusing on a balanced approach to learning that incorporates both academic progress and physical well-being, holistic education plays a critical role in guaranteeing children' optimal physical development. Holistic education acknowledges the significance of physical health in total development, in contrast to traditional educational paradigms that place a greater emphasis on intellectual accomplishments. In order to improve students' motor skills, strength, and endurance, it integrates physical activities like yoga, athletics, and movement-based learning.

In addition, it encourages good lifestyle behaviours such as adequate eating, mindfulness, and stress management, all of which contribute to long-term health. Holistic education fosters an active and health-conscious mindset, assisting students in developing the physical resilience and energy required to support

cognitive and emotional growth, eventually preparing them for a better and more productive future.

Role of Holistic Education In Optimum Possible Intellectual Development of The Students:

Holistic education plays a vital role in the optimum intellectual development of students by fostering critical thinking, creativity, and problem-solving skills. Because holistic education promotes critical thinking, creativity, and problem-solving abilities, it is essential to kids' optimal intellectual growth. Holistic education promotes interdisciplinary learning, experiential learning, and real-world applications in contrast to traditional education, which frequently places an emphasis on rote memorization and standardized testing. Through subject integration, analytical thinking, and open-ended conversation, it fosters intellectual curiosity. Furthermore, via the integration of social learning and emotional intelligence, holistic education aids students in improving their communication abilities and flexibility, which are critical for handling challenging situations.

This comprehensive approach ensures that students not only acquire knowledge but also develop the ability to think independently, innovate, and apply their learning effectively in various life situations, preparing them for lifelong success.

2) To find out the role of holistic education in optimum possible social and emotional development of students.

ROLE OF HOLISTIC EDUCATION IN OPTIMUM POSSIBLE SOCIAL DEVELOPMENT OF STUDENTS:

Holistic education plays a crucial role in fostering the optimum possible social development of students by nurturing interpersonal skills, emotional intelligence, and a sense of community. Through the development of social skills, emotional intelligence, and a feeling of community, holistic education is essential to promoting students' best

possible social development. Holistic education places more of an emphasis on empathy, ethical principles, and collaborative learning than traditional education, which frequently concentrates only on academic success. Students gain vital communication and teamwork skills via group projects, candid conversations, and hands-on learning, preparing them for interactions in the real world. Furthermore, holistic education fosters social responsibility, diversity appreciation, and cultural knowledge, assisting pupils in developing into kind and socially conscious people.

Holistic education provides students with the social skills they need to develop meaningful relationships, contribute constructively to society, and thrive in both personal and professional settings.

ROLE OF HOLISTIC EDUCATION IN OPTIMUM POSSIBLE EMOTIONAL DEVELOPMENT OF STUDENTS:

Holistic education plays a vital role in ensuring the optimum possible emotional development of students by fostering self-awareness, emotional intelligence, and resilience. Holistic education's contribution to pupils' best possible emotional development By encouraging self-awareness, emotional intelligence, and resilience, holistic education is essential to ensure that kids develop emotionally to the fullest extent possible. Holistic education highlights the significance of emotional well-being as a basic component of personal development, in contrast to traditional education, which mostly concentrates on academic achievement. It promotes reflection exercises, stress reduction strategies, and mindfulness, all of which aid students in properly comprehending and controlling their emotions. Holistic education helps students build solid interpersonal relationships and manage difficulties in a healthy way by encouraging open communication, empathy, and a supportive learning environment.

Additionally, it instills confidence, self-

motivation, and a positive mindset, preparing students to navigate life's complexities with emotional stability and resilience, ultimately contributing to their overall success and well-being.

3) To find out the role of holistic education in optimum possible spiritual and aesthetic development of students.

ROLE OF HOLISTIC EDUCATION IN OPTIMUM POSSIBLE SPIRITUAL DEVELOPMENT OF STUDENTS:

Holistic education plays a significant role in fostering the optimum possible spiritual development of students by encouraging self-reflection, inner awareness, and a deeper understanding of life's purpose. Holistic education plays a significant role in fostering the optimum possible spiritual development of students by encouraging self-reflection, inner awareness, and a deeper understanding of life's purpose. Unlike traditional education, which primarily focuses on intellectual growth, holistic education integrates ethical values, mindfulness, and a sense of interconnectedness with the world. Through practices such as meditation, moral education, and exposure to diverse philosophical perspectives, students develop a strong sense of purpose, inner peace, and emotional balance.

It encourages compassion, gratitude, and respect for diverse faiths, allowing children to have a larger perspective on life. Holistic education helps kids build a strong moral compass, resilience, and a feeling of fulfilment, preparing them to live meaningful and purposeful lives.

ROLE OF HOLISTIC EDUCATION IN OPTIMUM POSSIBLE AESTHETIC DEVELOPMENT OF STUDENTS:

Holistic education plays a pivotal role in the optimum aesthetic development of students by addressing the intellectual, emotional, social, and physical aspects of their growth, thus fostering a comprehensive

understanding and appreciation of beauty in various forms. Holistic education stresses the development of well-rounded people by including creativity, critical thinking, and emotional intelligence into the learning process, in contrast to traditional educational methods that mostly concentrate on cognitive learning. Students are inspired to experiment with artistic expression, interact with diverse cultural viewpoints, and form a close bond with the world through this method. Holistic education fosters self-awareness and empathy by emphasizing the development of the whole person, which empowers students to recognize the various manifestations of beauty in the world, whether it be in the visual arts, music, literature, or the natural world. This aesthetic development is not limited to the appreciation of art, but also includes the way students view and interact with the world, creating a mindset that values harmony, balance, and interconnection. Furthermore, holistic education gives students the tools they need to express themselves genuinely, allowing them to develop unique, individual perspectives that enhance their creative and artistic ability. It creates an environment in which students may thrive emotionally and cognitively, allowing them to build resilience, confidence, and a sense of purpose, all of which are necessary components for a really enriching aesthetic experience.

In this way, holistic education serves as a powerful vehicle for nurturing students' ability to experience, create, and appreciate beauty in its many forms, ensuring their optimum aesthetic development.

CONCLUSION

In conclusion, holistic learning stands as a powerful pathway to the complete growth of students, nurturing not just their academic intellect but also their emotional, social, and creative capacities. By embracing the interconnectedness of mind, body, and spirit, this approach fosters well-rounded individuals equipped with the skills to navigate a complex world. It encourages the

development of critical thinking, self-awareness, emotional intelligence, and creativity, all of which are essential for students to thrive in both personal and professional spheres. Holistic learning also fosters a deep sense of empathy and respect for others, cultivating a harmonious and inclusive mindset. Ultimately, by prioritizing the development of the whole person, holistic education empowers students to realize their full potential, ensuring they are prepared not only for academic success but for meaningful, impactful lives.

REFERENCES:

1. Clark, Edward T. (2001): Designing and Implementing an Integrated Curriculum: A Student-Centered Approach Brandon, VT: Holistic Education Press.
2. Conti, S. D. P. (2002): A study of holistic education and holistic perspective, Dissertation, USA: University of Columbia.
3. Hare John (2010): Holistic education: An interpretation for teachers in the IB programmes.
4. IB position paper : International Baccalaureate Organization.
5. Kothari, C.R (1985): Research Methodology and Techniques. New Delhi, Wiley Eastern.
6. Koul Lokesh (1984): Methodology of Educational Research, Vikash Publishing House Pvt. Ltd
7. Mahmoudi Sirous, Jafari Ebrahim, Nasrabadi Hasan Ali, Liaghatdar Mohmmmd Javad (2011): Holistic Education: An Approach for 21 Century.
8. Miller, R. (2000): Making Connections to the World: Some Thoughts on Holistic Curriculum. Brandon, VT.
9. Rudge, L.T. (2008): Holistic education: An analysis of its pedagogical application, Dissertation, USA: University of Ohio.
10. Siddhu, K.S (1990) : Methodology of Research in Education, Sterling Publishers Pvt. Ltd. New Delhi

Mrs. Priya Mittal
Assistant Professor,
Darsh College of Education,
Gohana
E-mail I'd: priyaamiital@gmail.com

Mrs. Suman
Assistant Professor,
Darsh College of Education,
Gohana
E-mail I'd: sumanchahal125@gmail.com

शोध सार:

नारी से ही धर्म है, नारी नर की खान ।
नारी से नर होते हैं, ध्रुव प्रह्लाद समान ।

परमात्मा की यह सृष्टि अनुपम और अद्वितीय है। चार श्रेणियों में विभक्त—स्वेदज—पसीने से उत्पन्न जैसे जूँ, अण्डज जैसे पक्षी—गण, उद्भिज जैसे जलीय जीव—जंतु, पिण्डज या जरायुज जैसे मनुष्य—पशु आदि और 84 लाख योनियों में मनुष्य अपनी गुणवत्ता के कारण शिष्ट और विशिष्ट है। इसीलिए महाकवि गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस में संपूर्ण सृष्टि को सिया राम मय मानकर जुगल कर कमलों को जोड़ कर प्रणाम निवेदित किया है:—

आकर चारि लाख चौरासी ।
जाति जीव जल थल नभ बासी ।
सीय राम मय सब जग जानी ।
करउं प्रनाम जोरि जुग पानी ।

नर और नारी का सृजन कर परमात्मा ने राहत की सांस ली और प्रसन्नता की अनुभूति की जिस प्रकार गाड़ी को सुचारु रूप से चलाने के लिए दोनों पहियों का मजबूत और टिकाऊ होना अपेक्षित है, उसी प्रकार समाज रूपी गाड़ी को सुचारु रूप से चलाने के लिए नर और नारी दोनों का समान और स्वस्थ होना परमावश्यक है। समाज को तब तक विकसित नहीं किया जा सकता, जब तक महिलाएं हर क्षेत्र में स्वतंत्र और सशक्त न हो जाएं। महिलाओं के अधिकारों, समानता और उनके योगदान को सम्मान देने के लिए दुनिया भर के तमाम देश हर साल 8 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाते हैं। इस दिन को मनाने का उद्देश्य समाज में महिलाओं की भूमिका को स्वीकार करना और उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना है। प्रतिवर्ष अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च को मनाया जाता है। महिला दिवस महज एक दिन का उत्सव नहीं है, बल्कि महिला सशक्तिकरण और समानता की दिशा में एक सार्थक एवं सकारात्मक कदम है।

महिला दिवस का इतिहास

महिला दिवस मनाने की शुरुआत 20 वीं सदी से हुई थी। 1908 में अमेरिका में कामकाजी महिलाओं ने कम वेतन, लंबे कार्य घंटे और मतदान के अधिकार की मांग को लेकर न्यूयॉर्क में प्रदर्शन किया।

इसके एक साल बाद 1909 में अमेरिका की सोशलिस्ट पार्टी ने 28 फरवरी को पहला राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया। बाद में क्लारा जेटकिन नाम की समाजवादी नेता ने 8 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस घोषित करने का प्रस्ताव रखा।

1911 में जर्मनी, आस्ट्रिया, डेनमार्क और स्विट्जरलैंड में पहली बार अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। संयुक्त राष्ट्र संघ (संघ) ने 8 मार्च 1975 को आधिकारिक रूप से अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाने की घोषणा की।

महिला दिवस का महत्व

महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देना, लैंगिक समानता की दिशा में काम करना, महिलाओं के अधिकारों की रक्षा करना, महिलाओं की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक भागीदारी को बढ़ावा देना, महिला शिक्षा, स्वास्थ्य और कार्यस्थल पर उनके हक को मजबूत करना।

भारत वर्ष में वैदिक काल से महिलाओं का सम्मान होता रहा है। भारतवर्ष में तीन देवियां हैं—लक्ष्मी, दुर्गा और सरस्वती। धन के लिए लक्ष्मी की, शक्ति के लिए दुर्गा की और विद्या के लिए मां सरस्वती की आराधना करनी पड़ती है। यह मातृ शक्ति का मान और सम्मान है। भारत में गार्गी, मैत्रेयी, सीता, सावित्री, अनुसूया, शबरी, अरुंधती, भारती जैसी नारियों ने अपने ज्ञान और तप से भारत का मान और सम्मान बढ़ाया है। मध्यकाल में नारियां तप त्याग में बांधा मानी गईं और उनसे दूर रहने की सलाह कबीर आदि कवियों ने दी—

छोटी—मैटी कामिनी, सब ही विष की बेलि ।

बैरी मारें दांव दै, ये मारें हंसि खेलि ।

जहां जराई सुंदरी, तू जनि जाइ कबीर ।

उड़िके भसम जो लागसी, सूना होय कबीर ।

सब सोने की सुंदरी, आवै बास सुवास ।

जो जननी होय अपनो, तरु न बैठे पास ।

नारी की छाया पड़त, अंधा होत भुजंग ।

कबीरा तिनकी कौन गति, जे नित नारी संग ।

तुलसी ने तो अपने मानस में यहां तक कह दिया किरू—

महावृष्टि फूटी चली क्यारी ।

जिमि स्वतंत्र भई बिगरहिं नारी ।

इतना से भी संतोष नहीं हुआ तो तुलसी बाबा ने गर्ग संहिता और चाणक्य नीति के श्लोक (अनृतं साहसं माया मूर्खत्वमिति लोभिता अशोचं निर्दयत्वं च स्त्रीणां दोषारु स्वभावजाः) का सहारा

लेते हुए नारियों में आठ अवगुण का उद्घोष लंकापति रावण के मुखारविंद से करा दिया—

नारी सुभाव सत्य कवि कहहीं ।

अवगुण आठ सदा उर रहहीं ।

साहस अनृत चपलता माया ।

भय अविवेक असौच अदाया ।

भरत से भी कैकेयी की भर्त्सना कराते हुए स्त्री मात्र को सकल कपट,अघ और अवगुणों की खान कहलाया हैरू—

विधिहु न नारि हृदय गति जानी ।

सकल कपट अघ अवगुण खानी ।

आगे चलकर गांव की गंवारियों ने अपनी निंदा स्वयं की हैरू—

कहं हम लोक वेद विधि हीनी ।

लघु तिय कुल करतूति मलीनी ।

अनुसूया ने सीता से स्त्री धर्म का वर्णन तो बड़े विशद रूप से किया,पर उन्होंने भी स्त्री मात्र को सहज अपावनि ही कहा —

सहज अपावनि नारि,पति सेवत सुभ गति लहइ ।

जसु गावत श्रुति चारि,अजहुं तुलसिका हरिहि प्रिय ।3/5

शबरी ने स्त्री —जाति को तीन बार अधम कहकर उसकी अत्यंत अधमता की घोषणा की हैरू—

अधम ते अधम अधम अति नारी ।

तिन्ह मंह मैं मतिमंद गंवारी ।

एक पत्नी व्रती राम ने भी स्त्री जाति की स्वेच्छाचारिता की शिकायत लक्ष्मण से की हैरू—

शास्त्र सुचितित पुनि पुनि देखिए ।

भूप सुसेवित बस नहिं लेखिए ।

राखिए नारी यद्यपि उर माहीं ।

जुबती शास्त्र नृपति बस नाहीं ।

मानस —अरण्य काण्ड

रीति काल में नारियां चहार दीवारी में कैद कर दी गईं और राज प्रासाद और भोग की वस्तु बना दी गईं । इन्हें असूर्य पश्या कहा गया । लेकिन आजादी के बाद महिलाओं की स्थिति में व्यापक सुधार हुआ । संविधान में उन्हें समता और समानता का अधिकार दिया गया ।भारत में पहली बार माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदरदास मोदी ने संसद् में 33: प्रतिशत आरक्षण देकर महिलाओं का मान सम्मान बढ़ाया है । झारखंड में हेमंत सरकार ने मंझया योजना और दिल्ली में रेखा गुप्ता सरकार ने महिला समृद्धि योजना के तहत (2500/रुपये)आर्थिक सहायता प्रदान कर महिलाओं की दशा और दिशा में सुधार एवं समृद्धि हेतु एक सार्थक एवं प्रशंसनीय कार्य किया है ।

इस संदर्भ में आधुनिक काल में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

का संस्मरण करना अत्यंत समीचीन है, क्योंकि नारी उत्थान एवं सम्मान के वे परम हितैषी रहे हैं । साकेत में उर्मिला एवं कैकेयी का, यशोधरा में गौतम पत्नी यशोधरा का और विष्णु प्रिया में चौतन्य महाप्रभु की धर्म पत्नी विष्णु प्रिया का उद्धार कर नारी की अस्मिता और महनीयता को स्थापित किया । यशोधरा के मुख्य पृष्ठ पर अंकित ये पंक्तियां नारी जीवन की त्रासदी और संवेदना का सर्वोत्तम इजहार करती हैंरू—

अबला जीवन हाय!तुम्हारी यही कहानी ।

आंचल में है दूध और आंखों में पानी ।

महिला दिवस कैसे मनाया जाता है?

=====

हर साल महिला दिवस के मौके पर विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली महिलाओं को सम्मानित किया जाता है । वहीं महिला अधिकारों और जागरूकता के लिए रैलियां और सेमिनार जैसे कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं । महिलाओं के स्वास्थ्य, शिक्षा और कैरियर से जुड़े विषयों पर चर्चा होती है ।आज भी मनु स्मृति का यह श्लोक महिलाओं के सम्मान का उद्घोष करता है किरू—
यत्र नार्यास्तु पूज्यंते,रमंते तत्र देवतारू ।

यत्रैतास्तु न पूज्यंते,सर्वास्तत्राफला क्रियारू ।

अर्थात् जहां नारियों की पूजा होती है, वहां देवता भी रमण करते हैं, जहां स्त्रियों की पूजा नहीं होती,उनका सम्मान नहीं होता, वहां किये गये समस्त अच्छे कर्म भी निष्फल हो जाते हैं ।अंत में हम कहना चाहेंगे किरू—

इस धरती से मातृ—शक्ति का मान नहीं जा सकता है,

नर के मन से नारी का सम्मान नहीं जा सकता है ।

बेटा घर में हो तो बेशक चूल्हा ठंडा रह जाए,

बेटी घर में हो तो,भूखा मेहमान नहीं जा सकता है ।

संदर्भ ग्रंथ:—

1श्री रामचरितमानस— तुलसीदास,गीता प्रेस गोरखपुर 2001

2 बृहत् निबंध भास्कर —डा वचनदेव कुमार भारती भवन पटना 2001

3 भारतीय संविधान —डा विद्यानंद झा —सरोज प्रकाशन , बोकारो झारखंड,2000

डॉ0 सोनी कुमारी

सहायक प्राध्यापिका,

राजनीति विज्ञान विभाग

रांची महिला कालेज, रांची

चलभाष —9835309090



सारांश

हिंदी कथा साहित्य में प्रेमचंद के बाद ग्रामीण जीवन की व्यथा—कथा पर अपनी धारदार लेखनी चलाने वाले कथा—शिल्पी फणीश्वरनाथ रेणु ही हैं। उनका जन्म बिहार प्रांत के पूर्णिया जिलान्तर्गत औराही हिंगना नामक ग्राम में 4.3.1921 ई. में हुआ और आकस्मिक निधन 11 अप्रैल 1977 को। उनके पिता का नाम शिलानाथ मंडल और मां का नाम पानो देवी था। रेणु जी जब बी एच यू में पढ़ रहे थे, तो उन्हें सुवास नाम की लड़की से प्रेम हो गया था, जो बाद में चेचक की बीमारी से मर गई। उसके प्रेम में पड़कर उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा छोड़ दी थी। रेणु ने तीन विवाह किये। प्रथम विवाह उनके पिता श्री ने 1941 में रेखा देवी से कराया था, जो अचानक लकवाग्रस्त होकर दिवंगत हो गई। पहली पत्नी से रेणु को एक पुत्री थी, जिसका नाम कविता राय है। दूसरा विवाह पद्मा रेणु से हुआ, जिससे रेणु को पांच संतानें हुईं—पद्म पराग रेणु, नवनीता राय, अपरजीत, दक्षिणेश्वर प्रसाद राय और वहीदा राय। रेणु ने तीसरा प्रेम विवाह लतिका जी से 1952 में किया। लतिका जी पी एम सी एच पटना में नर्स थीं। रेणु जी 1943-44 में जब दीर्घकालीन रोगग्रस्त हुए, लतिका जी ने उनकी भरपूर सेवा की। लतिका जी पर रेणु का दिल आ गया और नहीं चाहते हुए भी रेणु उनके साथ रहने लगे और अंततः 1952 में विवाह करना पड़ा। लतिका जी से उनकी कोई संतान न थी और वे हजारीबाग की रहनेवाली थीं।

आजादी के बाद साहित्यकारों ने देश के विकास के लिए अपनी लेखनी तो उठाई लेकिन उनकी रचनाएं सिर्फ शहर केंद्रित विकास तक ही सीमित रहीं। साहित्य में गांवों एवं अंचलों के लिए रिक्त पड़े इस स्थान की पूर्ति फणीश्वरनाथ रेणु ने की। गांव—जवार की भाषा में ही अपनी बात लिखने वाले रेणु को हिंदी साहित्य में आंचलिकता को महत्वपूर्ण स्थान दिलाने के लिए जाना जाता है। वे आंचलिकता के सजग प्रहरी माने जाते हैं। 1954 में प्रकाशित उनका मैला आंचल एक कालजयी आंचलिक उपन्यास है। रेणु का यह उपन्यास पूर्व में लिखित उपन्यासों की परंपरा से हट कर है और अपनी आंचलिकता को लेकर काफी प्रसिद्ध रहा। उपन्यास की भूमिका में रेणु का वक्तव्य इसे आंचलिक घोषित करता है—‘यह है मैला आंचल। एक आंचलिक उपन्यास, कथानक है पूर्णिया। मैला आंचल पूर्णिया जिले के एक पिछड़े हुए गांव मेरीगंज की कथा है। इसमें फूल भी है, शूल भी है और धूल भी है। गुलाब भी, कीचड़ भी चंदन भी। सुंदरता भी कुरुपता भी—लेखक किसी से भी दामन बचाकर निकल नहीं पाया है।’^१

फणीश्वरनाथ रेणु के इस विज्ञप्ति से प्रतीत होता है कि वे इस

अंचल को समग्र और यथार्थवादी दृष्टि से देख रहे हैं। वे न तो गांव को सीधे साधे जीवन का आदर्श मानकर चलते हैं और न कुछ वर्गों को हिमायत करने के लिए उसे असंतुलित टुकड़ों में बांटकर देखते हैं। अपनी समस्त कटुता, मृदुलता और नये संबंधों के साथ विकसित जो गांव हैं, अनेक जटिल संबंधों से जकड़े जो गांव हैं, उन्हें वे अखंड भाव से देखते हैं। राजनीति, अर्थनीति धर्मनीति सभी इस जीवन को अपनी अपनी सुंदर असुंदर रेखाओं से काटती हुई, उसे नया रूप दे रही हैं। कहा जा सकता है कि फणीश्वरनाथ रेणु ने मैला आंचल में अंचल विशेष की ही कथा नहीं कही है, बल्कि अपनी सशक्त जीवन शैली से कथा को इस प्रकार नियोजित किया है कि समस्त अंचल सजीव होने के साथ—साथ जीवन के सौंदर्य—असौंदर्य सद्—असद् की ओर बड़ी सूक्ष्मता से संकेत करता है और इस प्रकार यह कथन अंचल के ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक परिवेश से तथ्य आयोजन में रहकर जीवंत मानव संवेदनाओं मूल संघर्षों और अंतर्विरोध—ग्रस्त चेतनाओं की कहानी बन जाता है। निष्कर्षतः मैला आंचल को आंचलिक उपन्यासों की परंपरा में मील का पत्थर माना जाता रहेगा। मैला आंचल में आंचलिक भाषा का प्रयोग स्थानीय वातावरण को सजीवता प्रदान करने के लिए हुआ है। आंचलिक भाषा का प्रयोग तीन रूपों में हुआ है—लोकगीत कथाओं में, पात्रों के कथोपकथन में और उपन्यासकार द्वारा कहीं—कहीं वातावरण के सजीव स्वाभाविक चित्रण के लिए। रेणु का व्यक्तित्व और कृतित्व बहु—आयामी था। उन्होंने अपनी साहित्यिक यात्रा कविता लेखन से शुरू की थी, लेकिन बंगला के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार (ढोढ़ाई चरित मानस के रचनाकार) सती नाथ भादुड़ी के आग्रह पर कथा कहानी लिखने लगे और फिर आंचलिक उपन्यास के जनक कहे जाने लगे। उनका रचना संसार निम्नलिखित हैं—उपन्यास—1 मैला आंचल 2 परती—परिकथा 3 कलंक—मुक्ति 4 जुलूस 5 दीर्घतपा 6 कितने चौराहे 7 पल्लू बाबू रोड।।

कहानी—संग्रह—1 तुमरी 2 अग्नि खोर 3 आदिम रात्रि की महक 4 एक श्रावणी दोपहरी की धूप 5 अच्छे आदमी।

संस्मरण—1 ऋण जल—धन जल 2 वन तुलसी की गंध 3 श्रुत अश्रुतपूर्व।

3 रिपोर्टाज—1 नेपाली क्रांति कथा।

रेणु की कहानियों का एक महत्वपूर्ण संग्रह तुमरी है; जिसमें कुल 9 कहानियां हैं—1 रसप्रिया 2 तीर्थोदक 3 ठेस 4 नित्य लीला 5 पंचलाइन 6 सिर पंचमी का सगुन 7 तीसरी कसम अर्थात् मारे गये गुलफाम 8 लाल पान की बेगम 9 तीन बिंदियां। इस संकलन की महत्वपूर्ण कहानी तीसरी कसम अर्थात् मारे गये

गुलफाम! है जिस पर शंकर शैलेन्द्र ने 1966 में फिल्म बनाई थी और जिसके निर्देशक बासु भट्टाचार्य थे। हीराबाई की भूमिका वहीदा रहमान और हीरामन की भूमिका में सुप्रसिद्ध अभिनेता राजकपूर थे। फिल्म हाट बक्स पर पिट गई थी। इसमें तीन गुलफाम थे। तीसरी कसम का हीरामन ही सिर्फ गुलफाम नहीं था, रेणु दूसरे गुलफाम थे और तीसरे शंकर शैलेन्द्र। परदे पर दिखने वाले गुलफाम राज कपूर थे, पर परदे के बाहर वे एक सफल व्यावसायिक फिल्म निर्माता थे। लेकिन तीसरी कसम से राजकपूर की जो छवि निर्मित होती है—देहाती भोला—भाला, पवित्र मन का और फूल की तरह का निर्दोष, स्निग्ध चेहरा, एक आम भारतीय जन की की जीती जागती छवि—वह अविस्मरणीय है। हिंदी फिल्मों के इतिहास में यह दुर्लभ है। यह वास्तव में रेणु और शैलेन्द्र के भावों का प्रकटीकरण और प्रस्तुतीकरण था जिस समय शैलेन्द्र ने तीसरी कसम कहानी पढ़ी, उसी समय वह गुलफाम मारा गया। उन्होंने बासु भट्टाचार्य ने कहानी सुनते ही फणीश्वरनाथ रेणु को 23 अक्टूबर 1960 को एक पत्र लिखा—
बंधुवर फणीश्वरनाथ, सप्रेम नमस्कार। पांच लंबी कहानियां पढ़ी। आपकी कहानी मुझे बहुत पसंद आई। फिल्म के लिए उसका उपयोग कर लेने की अच्छी पासिबिलिटीज (संभावनाएं) हैं। आपका क्या विचार है? कहानी में मेरी व्यक्तिगत रूप से दिलचस्पी है। इस संबंध में यदि लिखें तो कृपा होगी। धन्यवाद। आपका शैलेन्द्र। रेणु इस पत्र को पढ़कर अभिभूत हो गये और पटना में आकाश वाणी की अच्छी खासी नौकरी छोड़ कर बम्बईया हो गये और आर्थिक दयनीय स्थिति के कारण कालांतर में वे भी गुलफाम बन गये।

दुमरी लोकप्रिय कथाशिल्पी फणीश्वरनाथ रेणु का अद्वितीय कथाशिल्प है, जिसमें सिलसिलेवार कई कहानियां गांव की भाषा में बतियाती हैं। इस संकलन की कहानियां पाठक को अभिभूत करती हैं। इन कहानियों ने रेणु को जिस ऊंचाई तक पहुंचाया है, वहां वे अपनी तरह के अकेले कथाकार नजर आते हैं। उनकी कहानियों के नायक भोले और निर्धन होकर भी अपने स्वाभिमान में किसी महाराजा से कम नहीं हैं। उनके भीतर का आदमी इतना बड़ा है कि बहुत बड़े कहे जाने वाले लोग भी उनके सामने बौने नजर आते हैं। ठेस का सिरचन हो, रसपिरिया का पंच कौड़ी हो, तीसरी कसम का हीरामन, या पंचलाइट का गोधन—इन सभी के भीतर इंसानियत को बचाने की बेहद बेचौनी है। ये कहानियां एक अंचल विशेष की होकर भी संवेदना और दृष्टिकोण के धरातल पर एक विराट परिदृश्य उपस्थित करती हैं। इसलिए हर जगह और हर भाषा के पाठकों को ये कहानियां अपनी बिल्कुल अपनी लगती हैं।

रेणु का कथेतर साहित्य भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। रिपोर्टाज लेखक के रूप में भी उनकी बहुत ख्याति है। नेपाली क्रांति कथा उनका सुप्रसिद्ध रिपोर्टाज संग्रह है। ऋण जल—धन जल, वन तुलसी की गंध और श्रुत—अश्रुत पूर्व उसके संस्मरणों एवं निबंधों का सुप्रसिद्ध संग्रह है। रेणु बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी रचनाकार हैं। उनकी रचनाओं में सामाजिक सरोकार के जीवंत रूप प्रस्तुत हुए हैं और उनकी रचना धर्मिता बहुरंगी और बहुधर्मी है। रेणु आंचलिकता के अमर कथा शिल्पी है।

संदर्भ ग्रंथः—

- 1 रेणु रचनावली—डा भारत यायावर, राजकमल प्रकाशन पटना, दिल्ली 2001
- 2 रेणु का बयां अंदाज कुछ और है!—डा भारत यायावर, राजकमल प्रकाशन पटना दिल्ली—2000'
- 3 अलक्षित गौरव रेणु—डा सुरेन्द्र नारायण यादव, राजकमल प्रकाशन पटना दिल्ली 2014
- 4 देशज अस्मिता और रेणु साहित्य—संपादक—डा अनंत सिन्हा—कीकट प्रकाशन, पटना 2016

डॉ० जंग बहादुर पाण्डेय

पूर्व अध्यक्ष हिंदी विभाग

रांची विश्वविद्यालय, रांची

चलभाष —879768765

9431595318, 9386336807

द्वुतडाक—pandey&ru05@yahoo.co.in



सारांश

अहिल्याबाई इतिहास की एक ऐसी शासिका हैं जिन्हें सबसे ज्यादा उनके द्वारा किये गए निर्माण कार्य और जनहित कार्यों के द्वारा जाना जाता है। अपने शासन के दौरान उन्होंने इतने अधिक मंदिरों का निर्माण करवाया कि आश्चर्य होता है। एक शासक अपने एक मात्र जीवन में इतने अधिक मंदिरों का निर्माण कैसे करवा सकता है पर उन्होंने करवाया। अध्यात्मिक और भक्ति भावना तो अहिल्याबाई में बचपन से ही थी। मल्हारराव ने जब सबसे पहली बार उन्हें उनके पिता के घर देखा था तो शिव जी के मन्दिर में आरती करते हुए ही देखा था। वे 'ओम नमः शिवाय' की मधुर कंठ से स्तुति कर रही थी। भक्ति का प्रखर तेज उनके चेहरे पर था इसलिए मल्हारराव इस छोटी सी बालिका से प्रभावित हुए बिना न रह सके। उन्होंने अपने एक मात्र पुत्र खंडेराव की जीवन संगिनी के तौर पर ही नहीं बल्कि भावी शासक के तौर पर भी अहिल्याबाई का चुनाव किया था। इसके बाद तो अहिल्याबाई के जीवन का एक क्रम निकल गया। वे जब शासक नहीं भी थी और मल्हारराव की सहायक के तौर पर कार्य करती थी तो अन्य स्थानों पर जाते समय देव स्थानों को देखना, उनके बारे में सोचना नहीं छोड़ती थी। युद्ध के दौरान अपने एक पत्र में मल्हारराव उन्हें निर्देशित करते हुए कहते हैं कि वे सीधा कार्य के स्थान पर ही जाएं रास्ते पर पड़ने वाले किसी देव स्थान पर फिलहाल न रुकें।

वे जानते थे कि अहिल्याबाई ऐसे स्थानों पर अवश्य रुकेंगी। यह उनका मन था जो देव स्थानों से गहरा जुड़ाव रखता था।

इसके पीछे एक बड़ा कारण यह भी था कि पूजा अर्चना के साथ इन मंदिरों के निर्माण और उनके रख-रखाव के प्रयासों के द्वारा बहुत सारे अकिंचनों को मदद मिलती थी। जिनके पास ठहरने के लिए जगह नहीं थी, खाने के लिए भोजन नहीं होता था, उन्हें इन मंदिरों में रैन बसेरे के लिए जगह प्राप्त होती थी। कुछ लोग तो हमेशा के लिए इन मंदिरों में बस जाया करते थे। ये मन्दिर निर्बलों का सहारा थे। किसी मंदिर में जब कथा का पाठ हो रहा होता तो वे इस बात की चिंता करती थी कि कथा कहने और सुनने वालों को प्रसाद और ठहरने इत्यादि का समुचित प्रबन्ध होना चाहिए। यह सारे कार्य एक तरह से उनकी दिनचर्या में शामिल थे। उनकी प्रतिदिन की दिनचर्या कुछ इस प्रकार थी। सुबह की पूजा अर्चना के बाद वे मन्दिर से बाहर निकलती थी। कोठी के पास बहुत से याचक इकट्ठे हो जाते। सामने अन्न के थाल रखे होते। अहिल्याबाई मंदिर के पास के चबूतरे में बैठा करती। एक-एक याचक आता जाता। अहिल्याबाई सबसे पहले अभिवादन करके उनका हाल चाल

पूछा करती। उनके घर की स्थिति, बड़े-बूढ़ों का हाल, फसल की स्थिति पूछती फिर उन्हें अनाज देती। इससे वे अपनी शासन व्यवस्था का भी अंदाजा लगा पाती थी। किस गांव में कुआं खुदवाना चाहिए, किसी गांव में लंगर शुरू करने के लिए कोई उपयुक्त व्यक्ति ढूंढती। किसी गांव के कमविसदार से कुछ कहना-सुनना होता, ऐसी कई तरह की योजनाएं उनके मन में चलती रहती। यह सब हो जाने के बाद जो अन्न बच जाता उसे पक्षियों के बीच बिखेर दिया जाता। मन में बन रही योजनाएं दोपहर में दीवान के सामने रखी जाती और फिर उन पर कार्यवाही की जाती थी।

अहिल्याबाई द्वारा किये गये ये निर्माण कार्य किसी एक जगह तक सीमित नहीं थे बल्कि पूरे देश में जगह-जगह उनके द्वारा बनवाये गए मंदिर देखने को मिलते हैं। एक स्त्री होकर जिस तरह से उन्होंने ये निर्माण कार्य किये वह बेहद सराहनीय है। जीवन में ज्यादा समय वे व्यक्तिगत रूप से अकेली ही रहीं पर उनका मन इन कार्यों में रमा रहा। "अहिल्याबाई ने अपने राज्य की सीमाओं के बाहर भारत भर के प्रसिद्ध तीर्थों और स्थानों में मंदिर बनवाए, घाट बंधवाये, कुओं और बावड़ियों का निर्माण किया, मार्ग बनवाए-सुधरवाए, भूखों के लिए अन्नसत्र खोले, प्यासों के लिए प्याऊ बिठलाई, मंदिरों में विद्वानों की नियुक्ति शास्त्रों के मनन-चिंतन और प्रवचन हेतु की। वे आत्म प्रतिष्ठा के झूठे मोह का त्याग करके सदा-भाव करने का प्रयत्न करती रही मरते दम तक"। (1)

ऐसे जनहित कार्य करते हुए वे स्वयं को कभी भी आगे नहीं रखती थी। ऐसी बहुत सी कहानियां हैं जिनसे पता चलता है कि इन कार्यों की पीछे उनकी स्वयं की कोई यश कामना नहीं थी। यह सब वे ईश्वर का ऋण समझ कर करती जाती थी।

यह वह समय था जब कई प्रकार के चोर, डाकू राज्यों के आसपास या जंगलों में रहा करते थे। जो मौका पाते ही आने जाने वाले यात्रियों पर हमला कर देते थे और उनके पास जो कुछ भी होता उसे लूट लेते। ऐसी ही एक कहानी है कि होल्कर राज्य में गनपतराव नाम का एक बड़ा डाकू था जो 'हाथ झुलाई' (यात्रियों को लूटने) का काम करता था। वह आने जाने वाले से पैसे, धन ले लेता, लोग उससे भय खाते थे। उसका उपनाम बट्टू सिंह था। एक दिन उसका हृदय परिवर्तन हुआ। वह लूट-पाट छोड़कर अहिल्याबाई की शरण में आ गया और अपने कर्मों का भोग करने के लिये दंड की मांग की।

उसने अपने कमाये एक लाख रुपये अहिल्याबाई से लेने को कहा पर वे तैयार नहीं हुईं। बोली-ऐसे पैसे का मैं क्या करूंगी। उसके बहुत आग्रह करने पर अंततः उस पैसे से तीर्थ यात्रियों के लिए इमारत तैयार करवाई गयी। गनपतराव राव प्रायश्चित के लिए

नर्मदा नदी के किनारे रहने चला गया। उसे यही दण्ड दिया गया। ऐसी कुछ और भी कहानियां मातोश्री के संदर्भ में सुनने को मिलती हैं कि उन्हें अपने नाम का मोह नहीं था। वे इसलिए कार्य नहीं करती थी कि लोग उन्हें जाने बल्कि वे इसलिए करती थी कि ईश्वर का कार्य है और इसे आगे बढ़ाना हमारा धर्म है।

इसी तरह एक और घटना जो उनके जीवन से जुड़ी हुई है—‘ एक बार एक कवि पंडित उनसे मिलने के लिए आये। वे अहिल्याबाई के लिए एक पुस्तक लिखकर लाये थे। पुस्तक को पंडित ने पढ़ना शुरू किया तो उसमें उन्हें सीता, सावित्री, गौरी, पार्वती से बढ़कर बताया गया था। अहिल्याबाई ने तुरन्त टोंका, पूछा — इस पोथी में यही सब है या और कुछ? कवि पंडित बोला— देवी आपने जितने बड़े— बड़े काम किये हैं वे सब इसमें हैं। उन्होंने पोथी स्वयं ले ली और बोली— तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा। भगवान की स्तुति में लिखा होता तो परिश्रम सार्थक होता। अब यह पोथी नर्मदा की धार को सौंप दी जायेगी। बाद में वह पोथी नर्मदा में फिंकवा दी गयी। यह उनके द्वारा लिया गया एक कठोर निर्णय था। आत्म प्रशंसा का पक्ष उन्हें अपने रास्ते से जरा भी विचलित नहीं कर पाया। ये ऐसे उदाहरण हैं जिनसे पता चलता है कि वे संतुलित रास्ते का ही चुनाव करती थी।

मातोश्री धर्म ग्रंथों में दी गयी शिक्षाओं का पालन करती थी। उनका पुस्तकालय अनेक दुर्लभ पुस्तकों से भरा हुआ था। निर्णय सिंधु, द्रोंणपर्व, ज्ञानेश्वरी, मथुरा माहात्म्य, मुहूर्त चिंतामणि, वाल्मीकि रामायण, पद्म पुराण, श्रावण मास आदि ग्रंथों की हस्तलिखित प्रतियां उनके पास थी। इन ग्रंथों का पठन— मनन चलता रहता था। उनके दरबार में ज्ञानी विद्वानों को यथा शक्ति सम्मान भी मिलता था। “संस्कृत के विद्वान खुशाली राम को दरबार में राज्य आश्रय दिया गया और महाराष्ट्र के प्रख्यात कवि मोरोपंत एवं अनंत फंदी का स्वागत सत्कार राज्य द्वारा किया गया था। ” (2)

मातोश्री ने समाज को सुखी, संपन्न बनाने के लिए इस तरह के अनेकों कार्य किये। अहिल्याबाई महेश्वर में जहां रहती थी वहां के कारीगर और मजदूरों से बहुत स्नेह करती थी। जब कारीगर मजदूरों के पास रहने के लिए मकान नहीं थे तो उन्होंने उनके लिए मकान बनवा दिए। वे इस बात को जानती थी कि पूरा देश एक है और उसे एक होना चाहिए। अलगाव किसी भी प्रकार का उचित नहीं है। उनकी धर्म परायणता को देखकर लोग उन्हें मातोश्री कहकर पुकारते थे। उन्होंने अपने शासित राज्य में हिंदुओं के साथ मुसलमानों को भी अपने पथ पर चलने का अधिकार दे रखा था। हैदराबाद राज्य के कुछ मुसलमान हैदराबाद छोड़कर महेश्वर बसने के लिए आ गए। उन्होंने

मातोश्री से अनुमति मांगी तो अहिल्याबाई ने अनुमति तो दी ही उनके लिए आवास का भी प्रबंध करा दिया। मातोश्री किसी को अपमानित करने में यकीन नहीं करती थी। जब भी कोई वैसी बात होती तो वे अन्यथा प्रयास करके किसी का अपमान नहीं करती थी। बल्कि उस बात को वही खत्म करती थी।

यह बेहद महत्वपूर्ण है कि उन्होंने समूचे देश में जगह — जगह मंदिरों, कुंडों, धर्मशालाओं का निर्माण करवाया। महेश्वर में रहते हुए वे इन कार्यों को कैसे कर पाई यह ध्यान देने वाली बात है। एक स्त्री होकर वे इन कार्यों को निरंतर करती रही यह उनकी मजबूत इच्छाशक्ति का परिणाम था। उनके पास उस समय मराठा साम्राज्य के अन्य शासकों के मुकाबले अधिक सम्पत्ति थी पर सोचने वाली बात है कि क्या इतनी अधिक थी कि वे इतना सब कुछ कर पाती। उसका एक कारण उनकी स्वयं की साधारण जीवन शैली भी थी। वे अपने ऊपर मासिक खर्च के तौर पर मात्र 300 रुपये महीना से अधिक खर्च नहीं करती थी। जबकि उस समय के अन्य शासकों का खर्च लाखों रुपये महीना था। उन्होंने एक —एक पैसा बचाकर मंदिरों का निर्माण कार्य करवाया था यह उनकी सकारात्मक क्षमता थी। युद्धों में खर्च होने वाला पैसा कभी किसी के काम नहीं आता वह विध्वंसक होता है। युद्धों से बसे— बसाये घर उजड़ जाते हैं। उन्होंने युद्धों से भी अपने राज्य का बचाव किया।

ऐसे निर्माण कार्य, सेवा कार्य सदियों याद किये जाते हैं। अहिल्याबाई होल्कर की दूरदृष्टि यह थी कि उन्होंने अपने आप को अपने राज्य तक बांधें नहीं रखा बल्कि पूरा भारत वर्ष ही उनका देश बन गया था। यह उनकी शासकीय दृष्टि थी। उनका कहना था जैसे— नदियां सबकी भलाई के लिए जल एकत्रित करती हैं और सबको बिना भेदभाव के उस जल को बांटती चलती हैं उसी तरह होल्कर राज्य भी अपने राज्य के अलावा संपूर्ण देशवासियों की सेवा करे तो उसमें हर्ज क्या है। पड़ोसी राज्यों के प्रति मातोश्री की नीति मैत्री, समता, सहयोग पर टिकी थी। इसलिए उन्हें सभी पड़ोसी राजाओं व नवाबों से सहयोग व सम्मान मिला। “पड़ोसी राजाओं और नवाबों में यदि आपसी कलह, राजगद्दी के लिए संघर्ष या कोई समस्या होती तो वह अहिल्यादेवी से सलाह लिया करते थे। ” (3)

इसका अर्थ यही था कि लोगों का उन पर अटूट विश्वास था। उनकी अदालत में तरह— तरह के प्रकरण आते थे वे हर मामले को ध्यान से सुनती और सबका सार लेकर अपना निष्कर्ष निकालकर तत्काल निर्णय सुना देती। “ मनुष्य की अपराधवृत्ति का विनाश हो, इसी आदर्श से प्रभावित रहे देवी के निर्णय ‘ खून का बदला खून ही न्याय नहीं है’ ऐसा उनका मानना था। घटना

की परिस्थिति, प्रसंग और अवसर का भी पता लगाना लगाया जाना चाहिए, अपराधी को स्वमेव आत्म सुधार का अवसर दिया जाना चाहिए। " (4) उनके जीवन के बहुत से ऐसे प्रसंग आते हैं जब उन्होंने लोगों को आत्म सुधार का मौका दिया। डकैत गनपतराव जब उनसे दण्ड मांगता है तो वे उसे नर्मदा के किनारे रहकर पूजा पाठ करने की सलाह देती हैं। इसी तरह तुको जी का बेटा मल्हार जब अपनी युवावस्था में पहुंचा तो कई प्रकार के उत्पात करने लगा था। अहिल्याबाई ने उसे कई बार आत्मसुधार का मौका दिया। वे सभी को आत्म सुधार का मौका दिया करती थी।

यह वह समय था जब भारत वर्ष में कई वर्षों से निरंतर बाहरी आक्रमणकारी अपना वर्चस्व स्थापित करने की कोशिश में लगे थे। आक्रमणकारियों ने इस देश के मंदिरों, यहां के स्थापत्य को, यहां के लोगों के हृदयों को भी कुचला था जिससे जनता में पराजय का बोध घर करता जा रहा था। अहिल्याबाई चाहती थी कि हमारे देशवासी अदम्य इच्छा शक्ति से भर उठें। "अहिल्याबाई को विश्वास था कि जिस जाति में पुनर्जागरण की प्रवृत्ति रहती है वह बाहर के आक्रमणकारियों के प्रहारों और अपने ही दोषों के मारे अधमरी भले ही हो जाए, परंतु मरती कभी नहीं। उन्होंने इस पुनर्जागरण को अपनी भीतर मूर्त किया था। " (5) इतिहास इस बात का साक्षी है कि एक दिन इस देश में भी पुनर्जागरण हुआ। लोगों ने स्वदेश के महत्व को समझा।

मातोश्री के स्थानीय कारोबार, देवधर्म, लंगर, पीने के पानी की व्यवस्था जैसे कार्य सदैव चलते रहते थे। उनका राज्य शासन जनहित के कार्य में अग्रणी रहा। अहिल्याबाई का हर छोटे से छोटा व्यवहार भी जनता के हित के उद्देश्य से हुआ करता था। इसके साक्ष्य होल्करों के पत्रों में जगह-जगह मिलते हैं। एक पत्र का उदाहरण प्रस्तुत है—

" (1) जनता को संतुष्ट रखना

(2) राज्य समृद्ध बनाना

(3) नियुक्तियों और खर्च के बारे में जो निर्णय किया है उसी के अनुसार खर्च करना होगा, उससे ज्यादा खर्च होने पर स्वीकार नहीं किया जाएगा।

(4) फौज से कहीं कोई नुकसान या तहस-नहस होने पर मामले की पूछताछ कर कुछ रकम घटाई जाएगी।

(5) किसी प्रकार की शिकायत प्राप्त होने पर परंपरा के अनुसार न्याय किया जाएगा। " (6)

एक राजा जनता को तभी प्रिय होता है जब वह न्यायप्रिय हो, प्रजा को सम्मुख रखकर सारे कार्य करे। मातोश्री ऐसी ही शासिका थी जिनका स्वयं का कुछ नहीं था उनका सारा प्रेम प्रजा

के लिए था।

मातोश्री ने अनेकों मंदिरों का निर्माण कराया। उनकी मरम्मत की। पुजारियों के रहने भोजन की व्यवस्था की। वह अपने आप में इतना अधिक है कि 'क्वीन ऑफ टेंपल' नाम उनके लिए बिलकुल सार्थक जान पड़ता है।

उनके द्वारा किये गए निर्माण कार्यों की सूची

1. अंबागांव— मंदिर में दिया बाती का इंतजाम किया।
2. अयोध्या— श्री राम मंदिर बनवाया। धर्मशाला बनवाई।
3. अमरकंटक— धर्मशाला बनवाई।
4. आनंद कानन —विश्वेश्वर ज्योतिर्लिंग के मंदिर की मरम्मत की।
5. आलमपुर — मल्हारराव होल्कर की मृत्यु यहां हुई थी। इसलिए यहां मल्हारराव की छतरी बनवाई और उसके सामने खंडेराव मार्तंड का मंदिर बनवाया।
6. उज्जैन— चिंतामणि गणपति का मंदिर बनवाया।
7. ओंकार मान्धाता— गौतमाबाई द्वारा शुरु किए गए गौरी सोमनाथ के मंदिर का काम पूरा किया। अमलेश्वर का मंदिर, एक उपवन तथा छतरी बनवाई।
8. काशी— 1785 में मणिकर्णिका घाट बनवाया। इसकी लागत 25 हजार रुपये आई थी। इसी वर्ष दशाश्वमेध घाट भी बनवाया। काशी विश्वेश्वर के मन्दिर की मरम्मत की।
9. केदारनाथ— धर्मशाला और पानी के कुंड बनवाए।
10. कोल्हापुर— मन्दिर की पूजा का इंतजाम किया।
11. गंगोत्री—, विश्वनाथ, केदारनाथ, भैरव और अन्नपूर्णा के चार मंदिर बनवाए तथा धर्मशालाएं बनवाई।
12. गया— विष्णु पद मंदिर बनवाया। एक लक्ष्मी नारायण का मंदिर बनवाकर वहां भगवान के प्रति सेवा भावना व्यक्त करने के लिए अपनी मूर्ति बनवाई।
13. चिंचवड़— गरीबों को दान दिलाने की यहां पर व्यवस्था की।
14. चिखलदा— नर्मदा परिक्रमा करने वालों के लिए लंगर शुरु किया।
15. चित्रकूट— राम का मंदिर बनवाया। उसमें राम पंचायतन की मूर्तियों की व्यवस्था की।
16. चौंड़ी—, अपने मायके के इस गांव में नदी पर एक घाट बनवाया और महादेव का मंदिर बनवाया। उसे अहिलेश्वर कहा जाने लगा।
- 17— जगन्नाथ पुरी— मुख्य मंदिर की पूजा व्यवस्था की। पुजारी को जीवन निर्वाह के लिए कुछ गांव दान दिए।
18. जांबगांव— रामदास स्वामी के मठ की मदद की।
19. जामघाट— एक सुंदर मार्ग द्वार बनवाया।

20. जेजुरी— मल्हार गौतमेश्वर मंदिर बनवाया। उसी के पास तालाब बनवाया।
21. तराणा— तील भांडेश्वर नामक शिव मंदिर बनवाया। एक बड़ा तालाब बनवाया।
22. त्र्यंबकेश्वर— एक बड़ा तालाब बनवाया।
23. देवप्रयाग— समुद्र सतह से 2236 फुट की ऊंचाई पर हिमालय में गंगोत्री के मार्ग पर अलकनंदा और गंगा के संगम पर स्थित इस स्थान पर लंगर शुरू किया था।
24. द्वारका—पूजन अर्चन की व्यवस्था की। पुजारी को कुछ गांव इनाम में दिए।
25. दारुकवन— नागेश्वर मंदिर में पूजा की व्यवस्था की।
26. नाथद्वारा— एक धर्मशाला बनवाई। वार्षिक दान व्यवस्था की। कुआं खुदवाया।
27. नासिक— श्री राम मंदिर बनवाया। धर्मशाला बनवाई। कुआं खुदवाया।
28. निफाड़— दिन्डोरी गांव के पास एक कुंड बनवाया।
29. नीलकंठ महादेव— एक शिवालय बनवाया। वह नीलकंठ महादेव के नाम से ही जाना जाता है।
30. नैमिषारण्य— धर्मशाला बनवाई।
31. परली— बैजनाथ मंदिर की मरम्मत की।
32. पशुपतेश्वर (नेपाल) —पूजा की व्यवस्था की।
33. पंढरपुर— श्री राम मंदिर बनवाया एवं दान धर्म की व्यवस्था की।
34. पुष्कर— एक मंदिर और एक धर्मशाला बनवाई।
35. पैठण— स्थाई लंगर शुरू किया।
36. पुणतांबे— एक घाट बनवाया।
37. प्रयाग— एक बड़ा घाट बनवाया।
38. बट्टीनारायण— श्रीहरि का मंदिर बनवाया, धर्मशाला बनवाई और कई कुंड बनवाए।
39. बिठूर— ब्रह्मघाट बनवाया।
40. बीड़— एक पुराने घाट की मरम्मत कराई।
41. भरतपुर — तेहरी—धर्मशाला बनवाई।
42. भीमाशंकर — पूजा के लिए अनुदान देकर व्यवस्था की।
43. भुसावल— वासुदेव मंदिर बनवाया।
44. मंडलेश्वर— एक घाट और एक शिव मंदिर बनवाया।
45. मथुरा—एक धर्मशाला बनवाई।
46. रामेश्वर— एक धर्मशाला बनवाई और लंगर शुरू किया। पूजा की व्यवस्था की।
47. रावेर— एक कुंड बनवाया।
48. वृंदावन लाल पत्थर को कुआं बनवाया, जिसमें 57 सीढ़ियां

हैं।

49. वेरुल— गौतमाबाई द्वारा बनवाए गए घृष्णेश्वर के मंदिर की मरम्मत की।
50. श्रीशैल्य— मल्लिकार्जुन नामक शिव मंदिर बनवाया।
51. संगमनेर — राम मंदिर बनवाया।
52. संबलग्राम — लक्ष्मी— नारायण मंदिर बनवाया।
53. सातारा— महादेव मंदिर के पास कुआं बनवाया।
54. सप्तशृंगगढ़— धर्मशाला बनवाई।
55. सुल्तानपुर— मंदिर बनवाया।
56. सुलपेश्वर— महादेव का विशाल मंदिर बनवाया। हर यात्री को एक कंबल और लौटा देने की व्यवस्था शुरू की। एक स्थाई लंगर शुरू किया।
57. सोमनाथ—, गजनी के महमूद ने सोमनाथ मंदिर को तोड़ डाला था वह सोमनाथ मंदिर फिर से बनवाया और उसमें मूर्ति की स्थापना की।
58. हरिद्वार— कुशावर्त और हरि की पौड़ी में विशाल घाट बनवाए और बड़ी-बड़ी धर्मशालाएं बनवाई।
59. हंडिया— 60— 70 फीट ऊंचा सिद्धनाथ मंदिर बनवाया। नर्मदा किनारे घाट बनवाया।
- 60— ऋषिकेश— गणपति मंदिर तथा अन्य अनेक मंदिर बनवाए।
- (7) (संदर्भ ज्ञात अज्ञात 495 496 497 498 पृष्ठ)

इतने निर्माण कार्य यह पढ़ने- सुनने में वृहत लगता है और कार्य हैं भी वृहद। इस निर्माण कार्य के पीछे अहिल्याबाई की मजबूत मनःस्थिति और दृढ़ इच्छाशक्ति थी। इन कार्यों को वे अनवरत ईश्वर की स्तुति की तरह करती गयी, स्तुति की ये कड़ियां समय के साथ विशाल से विशालतर होती गयी। धीरे-धीरे उनकी ये धरोहरें पूरे भारत में जगमागने लगी। आज उन्हें इसलिए भी याद किया जाता है कि धरोहर के रूप में उन्होंने देश को इतने मन्दिर और धर्मशाला दिये। वे पूरे देश को सदैव एक मानकर चली। उन्होंने अगर यह सोचा होता कि यह मेरा क्षेत्र नहीं है मैं अन्यत्र निर्माण कार्य क्यों कारवाऊं तो निर्माण का यह विशाल कार्य कमजोर हो जाता। पूरा देश एक है यही भावना उनसे इतने कार्य करवा सकी। देश और समाज सदैव इसके लिए उनका ऋणी रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ—

- (1) धर्मवीर भारती—अहिल्याबाई होल्कर (उपन्यास), प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1996, पृष्ठ—8
- (2) अरुंधती सिंह चंदेल, शिवकामिनी महादेवी अहिल्याबाई, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली—110002, पृष्ठ—107
- (3) वही " " पृष्ठ—98

- (4) वही " " पृष्ठ-100
- (5) धर्मवीर भारती-अहिल्याबाई होल्कर (उपन्यास) , प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1996, पृष्ठ-108
- (6) विनया खडपेकर- ज्ञात -अज्ञात, देवी अहिल्याबाई होल्कर, अनुवाद- छाया राजे, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, संस्करण-2010, पृष्ठ -141
- (7) वही " " , पृष्ठ-495 ,496,497,498

डॉ० अमिता

अतिथि अध्यापक -आचार्य

नरेंद्रदेव

कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

पत्र व्यवहार का पता- 426, एच

ब्लॉक, नारायणा विहार

नई दिल्ली-110028

मोबाइल-9891648030

सारांश

साहित्य का मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। साहित्य की विभिन्न विधाओं में नाटक एक महत्वपूर्ण विधा है। काव्य के मुख्यतः दो भेद हैं—दृश्य काव्य और श्रव्य काव्य। नाटक दृश्य काव्य के अंतर्गत परिगणित है। इसे पंचम वेद कहा जाता है।

हिंदी का प्रथम नाटक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के पिता गोपाल चंद्र रचित नहुष माना जाता है। हिंदी नाट्य साहित्य का सम्यक् विकास भारतेन्दु हरिश्चन्द्र युग में हुआ, अतः उन्हें आधुनिक हिंदी का जनक भी कहा जाता है। हिंदी में अनेक नाटककार हुए हैं और भविष्य में भी होंगे, लेकिन उन नाटककारों में लक्ष्मी नारायण मिश्र का शिष्ट और विशिष्ट स्थान है। लक्ष्मी नारायण मिश्र का जन्म उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले के बस्ती नामक ग्राम में 17 दिसंबर 1903 में एक साधारण ब्राह्मण परिवार में हुआ और निधन 17 अगस्त 1987 में। उनकी प्रारंभिक शिक्षा गांव के पाठशाला में हुई और उच्च शिक्षा वाराणसी में। उन्होंने 1928 में केंद्रीय हिंदू कालेज काशी से बी ए की परीक्षा पास की। 18 वर्ष की उम्र से ही उन्होंने अपना लेखन कार्य शुरू कर दिया था। अंतर्जगत् उनकी प्रथम काव्य कृति है, जिसका प्रकाशन 1925 में हुआ। तदुपरांत वे नाटक लेखन की ओर उन्मुख हुए। अशोक उनका पहला ऐतिहासिक नाटक है। उन्होंने प्रायः 3 प्रकार के नाटकों की रचना की है—पौराणिक, ऐतिहासिक और सामाजिक। भारत की सांस्कृतिक चेतना इनके सभी नाटकों में विद्यमान है। इनके नाटकों में भारत की आत्मा बसती है। इनके नाटकों पर इब्सन, जार्ज बर्नार्ड शा, मैटरलिंग आदि का खासा प्रभावित परिलक्षित होता है। उन्होंने कुछ नाटकों का अनुवाद भी किया है। उनका रचना संसार निम्नलिखित है—

- 1 अंतर्जगत्—कविता संकलन—1925
- 2 अशोक—ऐतिहासिक नाटक—1926
- 3 संन्यासी—समस्या नाटक—1930
- 4 राक्षस का मंदिर—सामाजिक नाटक—1931
- 5 मुक्ति का रहस्य—सामाजिक नाटक—1932
- 6 राजयोग—सामाजिक नाटक—1933
- 7 सिंदूर की होली—सामाजिक नाटक—1933
- 8 आधी रात—सांस्कृतिक नाटक—1936
- 9 गरुड़ ध्वज—पौराणिक नाटक—1945
- 10 नारद की वीणा—पौराणिक नाटक—1946
- 11 वत्सराज—ऐतिहासिक नाटक—1950
- 12 दशाश्वमेध—ऐतिहासिक नाटक—1950
- 13 अशोक वन—एकांकी संकलन—1950
- 14 विस्तता की लहरें—सामाजिक नाटक—1953

15 जगद्—गुरु—ऐतिहासिक नाटक—1955

16 मृत्युंजय—पौराणिक—नाटक—1955

17 चक्रव्यूह—ऐतिहासिक नाटक—1955

18 सेनापति कर्ण—ऐतिहासिक महाकाव्य—अपूर्ण

लक्ष्मी नारायण मिश्र मूलतः नाटककार हैं। इनके नाटक सामाजिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और पौराणिक कथानकों पर आधारित हैं। इनके नाटक प्रायः राष्ट्रीय भावना की भित्ति पर खड़े हुए हैं। इनमें अधिकांश भारतीय इतिहास के उपकरणों पर आधारित हैं। हिंदुओं और मुसलमानों को मिलाने के प्रयत्न में इन्होंने इतिहास और पुराण का सहारा लिया है। अपने नाटकों में इन्होंने अपनी कल्पना और इतिहास के मिश्रण से ऐसे कथानकों की सृष्टि की है, जो हिंदु मुस्लिम एकता का आदर्श दिखाते हैं और उनके विद्वेष को दूर करने का प्रयत्न करते हैं। इनके नाटकों में पौराणिक, ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक भारत का आधार ग्रहण किया गया है। इनके नाटकों में भारतीय शौर्य, देशाभिमान और स्वातंत्र्य प्रेम का चित्रण बहुत सुन्दर तरीके से हुआ है। वर्तमान भारतीय राजनीति में गांधीवाद की सबसे बड़ी देन हिंदू मुस्लिम एकता का सफल चित्रण मिश्र जी के नाटकों में हुआ है। इस ऐक्य भावना के प्रचार—प्रसार में इनके पात्र एक ऐसे रूप में रंगे हुए दिखाई पड़ेंगे, जिसे आदर्शवाद कहा जा सकता है।

इनके नाटकों के कथानक इतिहास, पुराण और कल्पना पर आधारित हैं। ऐतिहासिक नाटकों की दिशा में अशोक इनका प्रथम प्रयास है, जिसमें प्रेम और वीरत्व तथा श्रृंगार एवं वीरता का सुंदर समन्वय हुआ है। समाज की ह्रासोन्मुख समस्याओं को प्रस्तुत करने में संन्यासी, राक्षस का मंदिर, मुक्ति का रहस्य, राजयोग, सिंदूर की होली आदि नाटकों की अहम् भूमिका है। इतिहास एवं पुराण की प्राचीनता तथा आधुनिक समाज की समस्याओं में एकता स्थापित करना भी इनके नाटकों का प्रमुख लक्ष्य रहा है। इनके सामाजिक नाटकों द्वारा सामाजिक कुरीतियों एवं समस्याओं पर करारा व्यंग्य किया गया है।

लक्ष्मी नारायण मिश्र ने अपने प्रथम समस्या नाटक संन्यासी की भूमिका में लिखा है कि रू—इतिहास के गड़े मुर्दे उखाड़ने का काम इस युग के साहित्य में वांछनीय नहीं है। पर अपनी इस प्रतिज्ञा के विरुद्ध जो उन्होंने इतने ऐतिहासिक और सांस्कृतिक नाटकों की रचना कर डाली, इसका कोई न कोई कारण अवश्य रहा होगा। इस संबंध में एक साहित्यिक वार्तालाप में उन्होंने बताया है कि प्रसाद के नाटकों की प्रतिक्रिया में मुझे अपनी प्रतिज्ञा तोड़नी पड़ी। घनका कथन है कि—प्रसाद के नाटकों से भारतीय संस्कृति और जातीय जीवन दर्शन की जो हानि मुझे दिखाई पड़ी, भावी पीढ़ी के पथ भ्रष्ट होने की आशंका मेरे भीतर उपजने लगी, उसके निराकरण के लिए

मुझे ऐसे नाटक रचने पड़े, जिनमें हमारी संस्कृति और जीवन दर्शन का वह सत्य झलक उठे, जो कालिदास और भास के नाटकों में पहले ही निरूपित है।^१

लक्ष्मी नारायण मिश्र जी का मत है कि प्रसाद के नाटकों में रंगमंच पर जो आत्महत्याएं कराई जाती हैं, संवादों में जो अस्वाभाविकता पाई जाती है, प्रेम की अभिव्यक्ति में जो लंबे भाषण कराये जाते हैं, कौमार्य को विवाह से जो श्रेष्ठ माना जाता है, कल्पना में जो उन्माद भरा जाता है, वह भारतीय नाट्य पद्धति के विरुद्ध है। इसी कारण वे अपने नाटकों में आत्म हत्या, काव्यमय संवाद, प्रेमी प्रेमिका के लंबे भाषण और कौमार्य महत्व एवं कल्पना में अतिरंजना को स्थान नहीं देते। डा. दशरथ ओझा ने हिंदी नाटक उद्भव और विकास में लिखा है कि—^२ अब समय आ गया है कि मिश्र जी के विचारों की समीक्षा की जाए और इस बात का निर्णय किया जाए कि देश और जाति के हित के लिए उनकी ये गर्वोक्तियां कहां तक उपयुक्त हैं।^३

लक्ष्मी नारायण मिश्र के सभी सांस्कृतिक नाटक तीन अंकों में समाप्त होते हैं। संपूर्ण नाटक गीत रहित हैं। भाव चित्रण के साथ— साथ बौद्धिक विवेचन पर भी बल दिया गया है। अधिकांश घटनाओं को प्रारंभ में क्रिया के रूप में न दिखाकर पात्रों के संवाद में सूचित किया गया है, जो नाट्य कला की दृष्टि से उचित नहीं है। भाषा काव्यमयी न होकर सरल, स्वाभाविक, अंतर्जगत् के चित्रण में समर्थ, ओजस्वी, नाट्योपयोगी और मनोरम है। मिश्र जी इसे स्वीकार नहीं करते कि उनकी शैली का आधार भारतीय नाट्य शास्त्र नहीं, प्रत्युत पाश्चात्य नाट्य कला है। अंततः यह कहा जा सकता है कि नाटककार लक्ष्मी नारायण मिश्र जी की वास्तविक शक्ति उनकी मौलिक विचार धारा है—वह चाहे ऐतिहासिक स्तर पर हो, चाहे पौराणिक स्तर पर हो अथवा सामाजिक स्तर पर। साथ ही चरित्र प्रतिष्ठा और उसके भीतर से ब्राह्मणत्व का अनुपम आलोक और भारतीय संस्कृति का उदार स्वर्णिम चित्र इनके नाट्य साहित्य की सबसे बड़ी देन है।

संदर्भ ग्रंथ:—

- 1 हिंदी नाटक उद्भव और विकास —डा. दशरथ ओझा, राजपाल एंड हंस, दिल्ली 1961
- 2 लक्ष्मी नारायण मिश्र के नाटक—डा. उमेश चंद्र मिश्र, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद 1959
- 3 हिंदी नाटक कोश—डा. दशरथ ओझा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली 1975
- 4 प्रसाद के नाटक—डा. सिद्ध नाथ कुमार, अनुपम प्रकाशन पटना 1990
- 5 हिंदी साहित्य का इतिहास संपादक,—डा. नगेंद्र, नेशनल

पब्लिशिंग हाउस दिल्ली 2001

अमीर नाथ शर्मा
शोध छात्र, हिंदी विभाग
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर (बिहार)
चलभाष —8789076623

आधुनिक भारत में नैतिक मूल्यों के ह्रास के कारणों एवं प्रभावों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

कविता रुस्तगी, डॉ० नाहिद परवीन



सारांश —

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य वर्तमान भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों के निरंतर होते क्षरण के कारणों और प्रभावों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। भारत में विभिन्न भाषाओं, धर्मों और सांस्कृतिक मान्यताओं वाले लोग एक साथ निवास करते हैं। इसीलिए पूरे विश्व में भारत अपनी वसुधैव कुटुम्बकम् एवं अनेकता में एकता वाली संस्कृति के लिए जाना जाता रहा है। भारत के प्रत्येक भाग की संस्कृति उच्च नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिक ज्ञान पर टिकी हुई है। पिछले कुछ दशकों से भारतीय समाज में एक तीव्र परिवर्तन देखा जा रहा है, जो पाश्चात्य संस्कृति, आधुनिकीकरण और प्रौद्योगिकीय प्रगति के प्रभाव का परिणाम है। इनके कारण भारतीय समाज में लोगों, विशेषकर युवाओं द्वारा नैतिक मूल्यों के अनुसरण में कमी आ रही है। आधुनिक भारत में नैतिक मूल्यों का ह्रास एक गंभीर समस्या का रूप लेता जा रहा है। अतः वर्तमान समाज में इस समस्या की समाजशास्त्रीय समीक्षा के लिए इसके कारणों एवं प्रभावों का अध्ययन करना आवश्यक है। प्रस्तुत शोध विषय के लिए तथ्यों का संकलन द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से प्राप्त सामग्री द्वारा किया गया है। अंत में इस शोध पत्र में भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों के पुनरुत्थान हेतु कुछ महत्वपूर्ण सुझाव भी प्रस्तुत किये गये हैं।

कुंजी शब्द — आधुनिक भारत, समाज, संस्कृति, परिवर्तन, नैतिक मूल्य, ह्रास

प्रस्तावना —

नैतिकता भारतीय समाज का अभिन्न अंग रही है। नैतिकता के सिद्धांतों को नैतिक मूल्य कहा जाता है जैसेकि निःस्वार्थ सेवा, अहिंसा, सत्य, शिष्टाचार, सम्य संवाद, शांति, सहिष्णुता, नैतिक आचरण, लैंगिक सम्मान, बुजुर्गों के लिए सम्मान, पर्यावरण के प्रति सम्मान, मदद करना, क्षमा, सहानुभूति, करुणा, जिम्मेदारी और बंधुत्व इत्यादि। यह सभी मानवीय मूल्य भारतीय संस्कृति के मूल तत्व रहे हैं। नैतिक मूल्य मानव के अच्छे और सही कार्यों से संबंधित होते हैं। नैतिक आचरण ही व्यक्ति के अच्छे चरित्र को परिभाषित करता है। नैतिकता और नैतिक मूल्य हमारे देश की सांस्कृतिक विरासत है जिन्हे एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित करती रही है। ब्रिटिश शासन के प्रारंभ के साथ भारत में पाश्चात्य शिक्षा और संस्कृति का भी आगमन हुआ। पाश्चात्य संस्कृति और आधुनिकीकरण के बढ़ते प्रभाव के साथ धीरे-धीरे भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों और स्वदेशी परम्पराओं का महत्व कम होता गया। आज 21वीं शताब्दी में भारत एक ओर जहां विकास के नए-नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है तो वहीं दूसरी ओर हमारे समाज के मानव मूल्यों में तेजी से गिरावट आ रही है। इसके कारण हमारे समाज के विभिन्न क्षेत्रों जैसेकि पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, व्यवसायिक, धार्मिक, शैक्षणिक, तकनीकी और

प्रौद्योगिकी इत्यादि में नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है और परस्पर प्रतिस्पर्धा, वैमनस्य, स्वार्थ, ईर्ष्या आदि भावनाओं का विकास तेजी से होने लगा है। आज हमारी सबसे प्रमुख आवश्यकता समाज में नैतिक मूल्यों के क्षरण को रोकने और उन्हें पुनः स्थापित करने की है।

अध्ययन का उद्देश्य —

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य वर्तमान भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों के क्षरण के कारणों और प्रभावों पर प्रकाश डालना तथा समाज में नैतिक मूल्यों के क्षरण को रोकने के उपाय जानना एवं स्थिति में सुधार के लिए सुझाव देना है।

अध्ययन की प्रासंगिकता —

समाज के नैतिक मूल्यों पर निरन्तर विचार-विमर्श और अध्ययन की आवश्यकता होती है क्योंकि नैतिक मूल्य समय और परिवेश में परिवर्तन के साथ बदलते रहते हैं। आधुनिक भारत के वर्तमान सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश में नैतिक मूल्यों का क्षरण एक गंभीर विचारणीय मुद्दा है। अतः इस समस्या के कारणों, प्रभावों और समाधानों का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक है।

शोध पद्धति —

प्रस्तुत शोध विषय पर जानकारी प्राप्त करने तथा समीक्षा के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों स्रोतों से प्राप्त सामग्री का उपयोग किया गया है। सर्वेक्षण के लिए संरचित प्रश्नावली का उपयोग किया गया तथा द्वितीयक आंकड़े पुस्तक, अखबार, शोधपत्र, इंटरनेट इत्यादि के माध्यम से संकलित किए गए हैं और उनका पूरा विवरण शोधपत्र के अंत में 'संदर्भ ग्रंथ सूची' में दिया गया है।

अध्ययन का क्षेत्र —

प्रस्तुत शोध पत्र का अध्ययन क्षेत्र दिल्ली एवं गाजियाबाद महानगर है।

नैतिक मूल्यों के ह्रास के कारण और प्रभाव —

आज 21वीं सदी के भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों के ह्रास में कई कारकों की भूमिका है, जिन्हें निम्नलिखित बिन्दुओं के द्वारा समझा जा सकता है :

सांस्कृतिक संक्रमण —

एक समय था जब हमारे विचार, चिन्तन और व्यवहार सभी आदर्श नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण होते थे। भारतीय संस्कृति में माना जाता है कि जो नित्य प्रति माता-पिता का आदर सम्मान एवं बड़े बुजुर्गों की सेवा करते हैं उनकी आयु, विद्या, यश और बल में वृद्धि होती है। परंतु आज पश्चिमी संस्कृति की चकाचौंध में इन मूल्यों का महत्व कम होता जा रहा है। परिवारों में बुजुर्गों के प्रति सम्मान घट रहा है। बहुत से युवा अपने बूढ़े माता-पिता के साथ दुर्व्यवहार करते हैं। हमारे देश की अपनी स्वदेशी भाषाएं हैं जो शिष्टाचार और शालीनता के रंग में रंगी हुई हैं। उन्हें छोड़कर आज अंग्रेजी भाषा को ही

आधुनिकता का पर्याय समझा जाने लगा है। युवक और युवतियाँ भारतीय पहनावों को छोड़कर पश्चिमी वेशभूषा को अपना रहे हैं जोकि अभद्रता का पर्याय बन चुकी है। शराब व दूसरे ड्रग्स का सेवन करने वालों की संख्या भी तेजी से बढ़ रही है। आधुनिक समय में पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव इतनी तीव्र गति से हो रहा है कि अपने परंपरागत नैतिक मूल्यों को सुरक्षित रख पाना एक चुनौतिपूर्ण कार्य हो गया है।

सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन –

परस्पर सहयोग, भाईचारा, धार्मिक सहिष्णुता, ईमानदारी, प्रेम, दया, परोपकार की भावना एवं निःस्वार्थ सेवा भारतीय समाज के महत्वपूर्ण तत्व रहे हैं। आज अधिकांश लोगों का प्रमुख ध्येय धन कमाना, उन्नति करना और प्रतिस्पर्धा में दूसरों से आगे रहना है। आज सफलता प्राप्त करने के लिए लोग नकल, चोरी, हिंसा, हत्या, आर्थिक अपराध कुछ भी कर रहे हैं। रिश्वत और भ्रष्टाचार का तांडव समाज में खुलेआम हो रहा है। गलत और अनैतिक कार्य करने वालों को ईश्वर का भी भय नहीं होता है। नैतिक मूल्यों के क्षरण के कारण आज समाज में सभी स्वयं को असुरक्षित महसूस करने लगे हैं। मेहनती और ईमानदार लोगों को योग्यता और मेहनत के बावजूद उचित परिणाम नहीं मिल रहा है। आज हमारा समाज आदर्श विहीनता, अन्याय, असंतोष, अत्याचार, उपद्रव, अवसाद, अलगाव, अराजकता, असमानता, अपराध और हिंसा से घिरा हुआ है। समाज में नैतिक मूल्यों का क्षय उपरोक्त सभी समस्याओं के लिए उत्तरदायी कारण है।

पालन पोषण के तरीकों में परिवर्तन –

पहले संयुक्त परिवार प्रथा थी, जिसके अंतर्गत पारिवारिक रिश्तों को अधिक महत्व दिया जाता था। बच्चों को संस्कारित करने में घर के बड़े बुजुर्गों, माता-पिता एवं अन्य परिजनों का बड़ा हाथ होता था। सम्मान और सहयोग के स्रोत संयुक्त परिवार अब नहीं होते। परिवार में बड़े बुजुर्गों के ना होने तथा माता-पिता के पास समय के अभाव का प्रभाव बच्चों के पालन-पोषण और उनके संस्कारों पर विशेष रूप से पड़ रहा है। बच्चों द्वारा बड़ों की बात नहीं मानना और उनसे बहस करना अब एक सामान्य बात हो गई है। बचपन से ही बच्चे अपनी बात मनवाने की जिद करते हैं। कई बार बच्चों जिद पूरी ना होने पर घातक कदम तक उठा लेते हैं। आजकल अभिभावकों का नियंत्रण बच्चों पर से कम होता जा रहा है। आज हर श्रेणी के माता-पिता नैतिक संस्कारों के बजाय बच्चों की शैक्षणिक और व्यावसायिक सफलताओं पर अधिक ध्यान देते हैं। अभिभावक स्वयं अपने बच्चों को संस्कारों एवं नैतिक मूल्यों की शिक्षा नहीं दे पा रहे हैं। एक समय था जब बच्चे बड़ों के चरण स्पर्श करके आशीर्वाद लेते थे और उनका आदर करते थे। अच्छे संस्कारों के अभाव में आज युवा पीढ़ी में क्रोध और आशिष्टता की भावनाएं बढ़ रही हैं।

अधिशहरीकरण –

दिल्ली और गाजियाबाद सहित भारत के विभिन्न महानगरों में जनसंख्या घनत्व और सांस्कृतिक विषमजातीयता निरंतर बढ़ रही है। जिसके कारण विभिन्न सामाजिक वर्गों में परस्पर भेदभाव, प्रतिस्पर्धा और वैचारिक संघर्ष बढ़ रहा है। नगरीकरण का मानवीय मूल्यों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। वर्तमान समय में शहरों में परस्पर प्रेम और सहयोग की भावनाओं के स्थान पर ईर्ष्या और प्रतिस्पर्धा का समावेश होता जा रहा है। लोग संबंधों को निभाने से ज्यादा अपनी सुख-सुविधाओं और आर्थिक सफलता पर अधिक ध्यान दे रहे हैं। शहरों में बढ़ी संख्या में गरीब लोग सुविधाविहीन मलिन बस्तियों में रहने को विवश हैं। सम्पन्न बनने की चाहत में बहुत से निर्धन और जरूरतमंद लोग नैतिकता विहिन रास्तों का चयन कर लेते हैं जैसेकि जुआ, सट्टा, ब्लैक मार्केटिंग, चोरी, ठगी इत्यादि।

आधुनिकता के प्रति आकर्षण –

आधुनिक दिखने की चाहत भारतीय युवाओं के खान-पान और जीवन शैली तक को बदल रही है। बच्चों और युवाओं का बढ़ी संख्या में नशे की लत का शिकार होना आज की संस्कार विहिन आधुनिकता का परिणाम है। परंपरागत भारतीय पकवानों का स्थान जंग फूड ने ले लिया है जोकि लोगों के स्वास्थ्य के लिए बड़ा खतरा बन गया है। विवाह, परिवार और नातेदारी में संबंध औपचारिक बनते जा रहे हैं। आधुनिक समाज में तलाक की दर निरंतर बढ़ रही है। समलैंगिक संबंध तथा लिव-इन रिलेशनशिप जैसे रिश्ते भी बनने लगे हैं। अंग प्रदर्शन, पॉप म्यूजिक, क्लब, नाइट पार्टी, मनोरंजन और विलासिता की संस्कृति तीव्र गति से बढ़ रही है। व्रत और त्यौहारों में आध्यात्मिकता का स्थान दिखावा लेता जा रहा है। हर त्यौहार की ई-मार्केटिंग शुरू हो गई है। युवक-युवतियाँ अपने देश के परिधानों को छोड़ कर पाश्चात्य परिधान पहनने लगे हैं। आधुनिक दिखने की चाहत में वर्तमान पीढ़ी अपनी संस्कृति और नैतिक मूल्यों से विमुख हो रही है।

सोशल साइट्स का दुरुपयोग –

वर्तमान में सोशल मीडिया का प्रयोग व्यापक स्तर पर किया जा रहा है। एक ओर इंटरनेट और सोशल साइट्स जानकारी प्राप्त करने के शक्तिशाली उपकरण हैं तो दूसरी ओर यह नैतिक मूल्यों से भटकाने का भी कार्य कर रहा है। सोशल साइट्स पर युवक और युवतियाँ मित्रों की तलाश करते-करते कई बार गलत व्यक्तियों की संगति में पहुँच जाते हैं और अपराध की दुनिया से जुड़ जाते हैं। कई बार अमान्य रिश्ते बनाकर ब्लैकमेलिंग का शिकार हो जाते हैं। सोशल साइट्स पर अपनी व्यक्तिगत जानकारी देने से लोग ठगी और धोखाधड़ी के शिकार हो रहे हैं। सोशल साइट्स के माध्यम से अनैतिकतापूर्ण सामग्री का प्रसार हो रहा है। इस प्रकार सोशल साइट्स के गलत उपयोग से समाज में नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है।

नैतिक शिक्षा का अभाव –

वर्तमान शिक्षा प्रणाली बच्चों में नैतिक मूल्यों को स्थापित करने में विफल हो रही है। इसका प्रमुख कारण हमारी शिक्षा प्रणाली का स्वरूप बदल जाना है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में बच्चों को चरित्रवान और अच्छा इंसान बनाने के लिए नैतिक शिक्षा देने का अभाव है। वर्तमान समय में शिक्षण संस्थानों में अंग्रेजी भाषा, गणित, विज्ञान और अन्य व्यावसायिक पाठ्यक्रमों पर अधिक जोर दिया जा रहा है। मानवीय मूल्यों पर आधारित नैतिक शिक्षा को बहुत कम महत्व दिया जाता है।

नैतिक मूल्यों के उत्थान हेतु सुझाव –

हम सब विवेकशील सामाजिक प्राणी हैं। हम अपनी विवेकशीलता, अन्तः चेतना और नैतिक मूल्यों को जागृत करके ही नैतिक पतन की ओर अग्रसर होती हुई अपनी सांस्कृतिक विरासत को नष्ट होने से बचा सकेंगे। यह आवश्यक है कि वर्तमान पीढ़ी आने वाली पीढ़ी को नैतिक मूल्यों, संस्कारों, आदर्शों और कर्तव्यों का ज्ञान कराते हुए उन्हें भविष्य का एक योग्य नागरिक बनाये। एक सुरक्षित और उन्नतशील भविष्य के लिए परिवार, समाज और शिक्षण संस्थान सभी स्तरों पर नैतिक मूल्यों की शिक्षा देना आवश्यक है। प्रारंभ से दी गई नैतिक शिक्षा बच्चों को सही दिशा और सदमार्ग प्रदान करेगी। भारत सरकार द्वारा निर्मित 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' भारत में नैतिक शिक्षा को पुनर्स्थापित करने का एक गंभीर प्रयास है। यह नीति शिक्षा के सभी स्तरों पर नैतिक शिक्षा को मुख्य पाठ्यक्रम में एकीकृत करने पर जोर देती है। नई शिक्षा नीति बच्चों और युवाओं में नैतिक मूल्यों का विकास करने तथा उनके चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण साबित होगी।

निष्कर्ष –

आधुनिक भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों के ह्रास की समस्या उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। नैतिक मूल्यों को सुरक्षित रखने का सर्वप्रथम उपाय है आत्मचिंतन और स्वयं को जागृत रखना। अभिभावक, शिक्षक, समाज और सरकार सभी को चाहिए कि बच्चों की परवरिश पर प्रारम्भ से ही ध्यान दें और उन्हें नैतिक मूल्यों और शिष्टाचार संबंधी ज्ञान प्रदान करें। नैतिक मूल्यों के संरक्षण एवं पुनरुद्धार में सभी का प्रयास और सहयोग आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

- चावला, राजेश. 2023. सोशल मीडिया का बढ़ता प्रभाव. राधाकमल मुकर्जी : चिन्तन परम्परा. पृष्ठ संख्या 140–145.
- राजपूत, एस. के. 2023. मोरल वैल्यूज आर डाईंग आउट अमंग इंडियन युथ. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च इन साइंस, कम्युनिकेशन एंड टेक्नोलॉजी. 03(01). पृष्ठ संख्या 65–69.
- भक्त, डी. के. 2017. डिग्रडेशन ऑफ मोरल वैल्यूज अमंग यंग

जनरेशन : ए कंटेंपोरि इशू इन इंडिया. इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ इंटरडिसिप्लिनरी एंड मल्टीडिसिप्लिनरी स्टडीज. 03(5). पृष्ठ संख्या 128–133.

- सिरस्वाल, डी. आर. 2017. भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता. रिसर्च गेट. 8(8). पृष्ठ संख्या 86–91. उपलब्ध : https://www.researchgate.net/publication/337647728_bharatiya_samaja_mem_naitika_mulyom_ki_avasyakata।
- सिंह, जे. पी. 2016. आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन : 21वीं सदी में भारत. द्वितीय संस्करण, पी.एच. आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली. पृष्ठ संख्या 4–6, पृ. सं. 15–19.
- अनीता. 2015. भारतीय युवाओं में नैतिक मूल्यों का ह्रास : एक उभरता हुआ मुद्दा. एशियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड टेक्नोलॉजी. 05(1). पृष्ठ संख्या 80–83.
- दवे, अमित. कुमार. एवं दवे, पूनम. 2014. मूल्य शिक्षा की आवश्यकता. भारतीय आधुनिक शिक्षा. पृष्ठ संख्या 5–9.
- जॉर्ज, इमे एवं उयांग, डीमिनिक. 2014. बदलते समाज में युवा और नैतिक मूल्य. आईओएसआर जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस. 19(6). पृष्ठ संख्या 40–44.

कविता रुस्तगी

शोधार्थी

समाजशास्त्र विभाग

श्री वेंकटेश्वरा यूनिवर्सिटी, गजरौला, उत्तर प्रदेश

ई मेल – kavitarustagi59@yahoo.co.in

मो. न. – 9868429057

पता – 8/86, सेक्टर-3, राजेन्द्र नगर, साहिबाबाद,

गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश – 201005

डॉ० नाहिद परवीन

शोध निर्देशिका

समाजशास्त्र विभाग

श्री वेंकटेश्वरा यूनिवर्सिटी, गजरौला, उत्तर प्रदेश

ई मेल – drnahidparveen@gmail.com

मो. न. – 9528415168

सारांश —

भूमंडलीकरण ने शिक्षा के क्षेत्र में कई सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव डाले हैं। इसने शिक्षा के तरीके, प्रौद्योगिकी, और वैश्विक अवसरों में व्यापक परिवर्तन किया है। हालांकि, शिक्षा प्रणाली में असमानताएँ और सांस्कृतिक प्रभाव भी देखने को मिलते हैं। भविष्य में, शिक्षा नीति, शैक्षिक संस्थानों के नेटवर्क, और तकनीकी नवाचारों के माध्यम से भूमंडलीकरण के प्रभाव को बेहतर तरीके से समायोजित किया जा सकता है। भूमंडलीकरण एक बहुपरक प्रक्रिया है, जिसमें विभिन्न देशों, क्षेत्रों, और संस्कृतियों के बीच आर्थिक, सांस्कृतिक, और सामाजिक संबंध मजबूत होते हैं। यह एक निरंतर बढ़ती हुई प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से दुनिया भर में उत्पादों, सेवाओं, विचारों, और जानकारी का आदान-प्रदान हो रहा है। भूमंडलीकरण ने शिक्षा प्रणाली में वैश्विक दृष्टिकोण को लाने में मदद की है। अब, विभिन्न देशों की शिक्षा नीतियाँ और पाठ्यक्रम एक-दूसरे से जुड़ रहे हैं। वैश्विक दृष्टिकोण से शिक्षा प्राप्त करना छात्रों के लिए एक नए प्रकार का अनुभव है। विभिन्न देशों की शिक्षा प्रणालियाँ अब एक-दूसरे से अधिक मिल रही हैं, जिससे छात्रों को अन्य देशों में अध्ययन करने का अवसर मिलता है।

परिचय:

भूमंडलीकरण (Globalization) एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें दुनिया भर के देशों, संस्कृतियों, और समाजों के बीच आपसी संबंध और एक दूसरे से जुड़ने की प्रक्रिया होती है। यह प्रक्रिया आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, और राजनीतिक दृष्टिकोण से गहरे प्रभाव डालती है। विशेष रूप से, शिक्षा के क्षेत्र में भूमंडलीकरण का प्रभाव न केवल शैक्षिक नीतियों और प्रौद्योगिकी में बदलाव के रूप में देखा जा रहा है, बल्कि यह छात्रों, शिक्षकों, और शिक्षा संस्थानों के दृष्टिकोण को भी प्रभावित कर रहा है।

इस शोध पत्र का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि भूमंडलीकरण के कारण शिक्षा प्रणाली में क्या बदलाव आए हैं, और इन बदलावों ने छात्रों और समाज पर क्या प्रभाव डाला है। हम यह समझने की कोशिश करेंगे कि भूमंडलीकरण ने शिक्षा के तरीके, संसाधन, संरचनाएँ, और अवसरों को कैसे प्रभावित किया है। इसके साथ ही, हम शैक्षिक असमानताओं और भूमंडलीकरण के सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभावों को भी संबोधित करेंगे।

भूमंडलीकरण का परिभाषा और विकास

भूमंडलीकरण एक बहुपरक प्रक्रिया है, जिसमें विभिन्न देशों, क्षेत्रों, और संस्कृतियों के बीच आर्थिक, सांस्कृतिक, और सामाजिक संबंध मजबूत होते हैं। यह एक निरंतर बढ़ती हुई प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से दुनिया भर में उत्पादों, सेवाओं, विचारों, और जानकारी का आदान-प्रदान हो रहा है।

भूमंडलीकरण के प्रमुख घटक:

1. आर्थिक भूमंडलीकरण: इसका मुख्य उद्देश्य वैश्विक स्तर पर व्यापार, निवेश, और उत्पादन की प्रक्रिया को आपस में जोड़ना है। वैश्विक बाजारों का एकजुट होना और देशों के बीच आर्थिक निर्भरता इसका हिस्सा है।
2. सांस्कृतिक भूमंडलीकरण: यह वह प्रक्रिया है जिसके तहत एक संस्कृति के तत्व दूसरी संस्कृतियों में समाहित हो जाते हैं। जैसे पश्चिमी संस्कृति का प्रसार, अंग्रेजी भाषा का प्रचलन, और वैश्विक मीडिया का प्रभाव।
3. राजनीतिक भूमंडलीकरण: यह अंतरराष्ट्रीय संगठन, संधियों और देशों के बीच राजनीतिक संबंधों के निर्माण की प्रक्रिया है। जैसे संयुक्त राष्ट्र, विश्व व्यापार संगठन (WTO), और अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं का गठन।
4. सामाजिक भूमंडलीकरण: इसमें विभिन्न देशों के समाजों का एक-दूसरे से मेल-जोल बढ़ता है। इसका उदाहरण है प्रवासन, पर्यटन, और सामाजिक नेटवर्किंग प्लेटफार्मों का बढ़ता हुआ प्रभाव।

भूमंडलीकरण और शिक्षा का प्रभाव

भूमंडलीकरण ने शिक्षा प्रणाली को भी गहरे रूप से प्रभावित किया है। यह शिक्षा के तरीकों, योजनाओं, और उद्देश्य को वैश्विक दृष्टिकोण से बदलने में मदद करता है। यहां हम भूमंडलीकरण के प्रभाव को शिक्षा के विभिन्न पहलुओं में देखेंगे:

1. शिक्षा प्रणाली में वैश्विक बदलाव:

भूमंडलीकरण ने शिक्षा प्रणाली में वैश्विक दृष्टिकोण को लाने में मदद की है। अब, विभिन्न देशों की शिक्षा नीतियाँ और पाठ्यक्रम एक-दूसरे से जुड़ रहे हैं। वैश्विक दृष्टिकोण से शिक्षा प्राप्त करना छात्रों के लिए एक नए प्रकार का अनुभव है। विभिन्न देशों की शिक्षा प्रणालियाँ अब एक-दूसरे से अधिक मिल रही हैं, जिससे छात्रों को अन्य देशों में अध्ययन करने का अवसर मिलता है।

2. ऑनलाइन शिक्षा और डिजिटल तकनीकी प्रभाव:

इंटरनेट और डिजिटल तकनीक के माध्यम से शिक्षा को नया रूप मिला है। अब छात्रों को ऑनलाइन प्लेटफार्मों जैसे ब्लनतेमंत, मकग, और न्कमउल के माध्यम से विश्व स्तर की शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिल रहा है। यह विकास वैश्विक शिक्षा प्रणाली में एक बड़ा बदलाव ला रहा है। अब शिक्षा का उद्देश्य केवल स्थानीय स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि यह वैश्विक स्तर पर उपलब्ध हो गया है।

3. शिक्षा में व्यावसायिकता और वैश्विक प्रतिस्पर्धा:

भूमंडलीकरण के कारण शिक्षा प्रणाली को व्यावसायिक दृष्टिकोण से भी देखा जाने लगा है। शिक्षा अब केवल ज्ञान प्रदान करने तक

सीमित नहीं है, बल्कि यह एक व्यावसायिक गतिविधि बन गई है। शिक्षा संस्थानों को आर्थिक दृष्टिकोण से लाभ कमाने के लिए वैश्विक प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है। इसके परिणामस्वरूप, शिक्षा का मूल्य निर्धारण और संसाधनों का वितरण बदल रहा है।

4. अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा और शोध:

भूमंडलीकरण ने अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा के अवसरों को बढ़ाया है। अब, छात्र विभिन्न देशों में शिक्षा प्राप्त करने के लिए विभिन्न शैक्षिक संस्थानों का चयन कर सकते हैं। इसके अलावा, शिक्षा क्षेत्र में वैश्विक सहयोग भी बढ़ा है। शैक्षिक शोध और नवाचार में विभिन्न देशों के वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं के बीच सहयोग बढ़ रहा है। इससे वैश्विक ज्ञान का आदान-प्रदान हो रहा है और यह दुनिया भर में नवाचार को बढ़ावा दे रहा है।

अध्यान 3: भूमंडलीकरण और शिक्षा में सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव

भूमंडलीकरण के कारण शिक्षा में केवल संस्थागत बदलाव ही नहीं आए हैं, बल्कि इसके सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव भी गहरे हैं। ये प्रभाव सकारात्मक भी हो सकते हैं और नकारात्मक भी।

1. सांस्कृतिक प्रभाव:

भूमंडलीकरण ने विभिन्न संस्कृतियों के आपसी आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया है। इसके परिणामस्वरूप, शिक्षा में भी एक वैश्विक दृष्टिकोण विकसित हुआ है, जिससे छात्र विभिन्न सांस्कृतिक दृष्टिकोणों को समझने में सक्षम होते हैं। हालांकि, यह भी देखा गया है कि पश्चिमी संस्कृति, विशेषकर अंग्रेजी भाषा और पश्चिमी शिक्षा पद्धतियाँ, अन्य संस्कृतियों पर हावी हो रही हैं। इससे स्थानीय संस्कृतियों और भाषाओं का संरक्षण खतरे में पड़ सकता है।

2. शैक्षिक असमानता:

भूमंडलीकरण ने शिक्षा प्रणाली में असमानताएँ भी पैदा की हैं। विकसित देशों में उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रणालियाँ और संसाधन उपलब्ध हैं, जबकि विकासशील देशों में इनकी कमी है। इससे वैश्विक स्तर पर शैक्षिक असमानता बढ़ रही है, और इससे केवल कुछ चुनिंदा देशों और वर्गों के लोग ही वैश्विक शिक्षा के लाभ का आनंद ले पा रहे हैं।

3. शिक्षा में अवसरों की वृद्धि:

भूमंडलीकरण ने शिक्षा के क्षेत्र में नए अवसर भी प्रदान किए हैं। छात्रों को अब अधिक विविध और व्यापक शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलता है, और यह उन्हें वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करता है। उच्च शिक्षा के लिए विदेशी संस्थानों में प्रवेश पाने के अवसर बढ़े हैं। साथ ही, विभिन्न क्षेत्रों में नवाचार और नई दिशाओं के लिए शिक्षा के अवसर भी विस्तृत हुए हैं।

शिक्षा में भूमंडलीकरण की दिशा और भविष्य

भूमंडलीकरण के कारण शिक्षा में जो बदलाव आ रहे हैं, उनका भविष्य काफी हद तक तकनीकी प्रगति, वैश्विक सहयोग, और सामाजिक संरचनाओं पर निर्भर करेगा। यहाँ हम कुछ संभावनाओं की चर्चा करेंगे:

1. प्रौद्योगिकी का बढ़ता प्रभाव: शिक्षा प्रणाली में तकनीकी नवाचारों की भूमिका बढ़ने वाली है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), मशीन लर्निंग, और डेटा एनालिटिक्स जैसे क्षेत्रों में विकास के कारण शिक्षा प्रणाली में अधिक सुधार होगा। इससे व्यक्तिगत और कुशल शिक्षा प्रदान करने की संभावनाएँ बढ़ेंगी।

2. ग्लोबल शिक्षा संस्थान: वैश्विक शिक्षा संस्थान और विश्वविद्यालयों के नेटवर्क का विस्तार होगा। विभिन्न देशों के छात्रों को एक ही मंच पर आने और शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलेगा, जिससे अंतरराष्ट्रीय समझ और सहयोग को बढ़ावा मिलेगा।

3. शिक्षा के क्षेत्र में नीति सुधार: सरकारों और वैश्विक संगठनों द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में नई नीतियाँ बनाई जाएँगी, जो स्थानीय और वैश्विक आवश्यकताओं के बीच संतुलन बनाए रखेंगी। इसमें संस्कृति और भाषा के संरक्षण के साथ-साथ शिक्षा की गुणवत्ता और समानता पर भी ध्यान दिया जाएगा।

भूमंडलीकरण का भविष्य और शिक्षा की दिशा

भूमंडलीकरण का भविष्य शिक्षा के क्षेत्र में भी परिवर्तनकारी रहेगा। हम देखेंगे कि आने वाले समय में किस प्रकार शिक्षा की दिशा और प्रणाली में और बदलाव हो सकते हैं।

1. शैक्षिक संस्थानों का वैश्विक नेटवर्क:

भविष्य में शैक्षिक संस्थान वैश्विक नेटवर्क के रूप में कार्य करेंगे। छात्रों के लिए विदेशी विश्वविद्यालयों और संस्थानों में अध्ययन करने के अवसर बढ़ेंगे। यह छात्रों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा प्राप्त करने का अवसर देगा और उनके सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण को विस्तृत करेगा।

2. प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षा का विस्तार:

प्रौद्योगिकी के बढ़ते प्रभाव के कारण, शिक्षा की दिशा डिजिटल हो रही है। स्मार्ट क्लासरूम, ऑनलाइन कोर्स, और वर्चुअल लर्निंग प्लेटफार्मों का उपयोग बढ़ेगा। इससे शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ छात्रों को ज्ञान देना नहीं, बल्कि उन्हें वैश्विक स्तर पर उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करना सिखाना भी होगा।

3. शैक्षिक नीति में सुधार:

भविष्य में शैक्षिक नीतियों में बदलाव आएगा, जिसमें वैश्विक संदर्भ को ध्यान में रखते हुए शिक्षा का वितरण किया जाएगा। इसमें शैक्षिक असमानताओं को कम करने और प्रत्येक वर्ग के लिए समान अवसर सुनिश्चित करने की कोशिश की जाएगी।

भूमंडलीकरण और शिक्षा की सामाजिक एवं सांस्कृतिक चुनौतियाँ भूमंडलीकरण के प्रभाव से जहाँ एक ओर शिक्षा का दायरा विस्तृत

हुआ है, वहीं दूसरी ओर कुछ सामाजिक और सांस्कृतिक चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। इन चुनौतियों का सामना करते हुए शिक्षा के क्षेत्र में कई बदलाव और सुधार की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

1. सांस्कृतिक विविधता का संरक्षणरू भूमंडलीकरण के कारण कुछ सांस्कृतिक पहचान और भाषाएँ खतरे में पड़ सकती हैं। शिक्षा प्रणाली में स्थानीय संस्कृतियों और भाषाओं का महत्व बनाए रखना एक चुनौती बन गया है। उदाहरण के लिए, यदि वैश्विक शिक्षा प्रणाली पूरी तरह से अंग्रेजी आधारित हो जाती है, तो स्थानीय भाषाएँ और संस्कृतियाँ धीरे-धीरे हाशिए पर चली जा सकती हैं।

2. शिक्षा में असमानता: भूमंडलीकरण के कारण उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा के अवसरों की असमानता बढ़ी है। अमीर और गरीब देशों के बीच शिक्षा में अंतर बढ़ रहा है। विकसित देशों में शिक्षा प्रणाली अधिक उन्नत और समृद्ध है, जबकि विकासशील देशों में संसाधनों की कमी के कारण शिक्षा का स्तर संतोषजनक नहीं है।

3. शिक्षा का व्यावसायिकरणरू भूमंडलीकरण ने शिक्षा को एक व्यापार में बदल दिया है, जहाँ शिक्षा संस्थान आर्थिक लाभ की ओर अग्रसर हो रहे हैं। इस कारण शिक्षा का उद्देश्य अब केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं रह गया, बल्कि इसे एक व्यापारिक गतिविधि बना दिया गया है।

सन्दर्भ ग्रंथ:

1. Robertson] R- (1992)- Globalization: Social Theory and Global Culture- Sage-
2. Giddens] A- (1990)- The Consequences of Modernity- Polity Press-
3. Held] D-] & McGrew] A- (2007)- Globalization Theory: Approaches and Controversies- Polity-
4. Sen] A- (1999)- Development as Freedom- Alfred A- Knopf-
5. Carnoy] M- (2004)- Globalization and Education: Realizing the Educational Potential of a Globalized World- Stanford University Press-
6. UNESCO (2000)- The Education for All Global Monitoring Report- OÜford University Press-

प्रो. राजकुमारी सिंह

शिक्षा विभाग

आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद

संपर्क सूत्र-9760187147